श्री तिलोक जैन ज्ञानमाला नं.२

श्री सत्यबोध

रचयिता:

स्याद्वाद वारिधि आशु कविवर्य पूज्यपाद

श्री तिलोक ऋषिजी महाराज

प्रकाशक:

श्री जैनधर्म प्रसारक संस्था,

सदर बाजार, नागपूर.



द्वितीयावृत्ति प्रत [illegible]

मूल्य २। रुपये

श्री वीराब्द २[illegible]

विक्रमाब्द १९[illegible]

ईसवी सन १९[illegible]

प्रकाशक

श्री जैन धर्म प्रसारक संस्था,
सदर बाजार, नागपूर

मुद्रक,

रा त्रिं देशमुख, बी एजी
सरस्वती प्रेस, नागपूर

सुवर्ण नामावली.

स्तंभ-मुनि श्री आनंद ऋषिजी महाराज.

संरक्षक- श्री नेमीचंदजी सरदारमलजी पुगलिया,
इतवारी नागपूर.

आजीवन सदस्य. (Life Members)

१ श्री हीरचंदजी नानुलालजी पारख, सदर नागपूर.

२ ,, मानकचंदजी सेरमलजी सुराना, सदर नागपूर.

३ ,, केसरीमलजी रीखबचंदजी, धामक

आश्रयदाते.

१ श्री नंदरामजी चांदमलजी बोहरा, पीपला.

२ ,, लालचंदजी रतनचंदजी भटेवडा, राहू.

३ ,, फतेराजजी धनराजजी सिंगी, सिंधी.

४ ,, हीरालालजी ताराचंदजी पुगलिया, बाबुलगांव

५ ,, सकल जैन संघ बनोसा (दर्यापूर)

६ ,, जैन संघ चादूर बाजार, जि. उमरावती.

७ ,, हीरचंदजी नानुलालजी पारख, सदर नागपूर.

प्रथमावृत्तिकी विना.



(१) इण जगतमांहे प्राणीमात्रने धर्ममार्गमांहे अवश्य प्रवर्त्तन हुवो चाहिजें. कारण इण दुःखमय संसारसमुद्रमांहे नरकादिक चारु गतिमांहे जीव, ज्ञानावरणीयादिक अष्टकर्मना योगें मोहादिक शत्रुका वश हुयने संसारिक धन कुटुंबादिकना अल्पपौद्गलिक सुखामांहे राच्यां थकां जन्म, जरा, मरणादिक अनेक प्रकारका दुःख सहन करीं परिभ्रमण करतां अनंता पुद्गल परावर्तन काल व्यतीत हुइ गयो ! परंतु सर्वोत्कृष्ट अनंत सुखमय एहवो अनादि श्रीवीतराग प्रणीत दयामय जैनधर्म केवारें पण जीव पामी शक्यो नहीं. ते श्रीजैनधर्म केहवो छे ? के जेम आंधला पुरुषने मार्गें चालतां ज्येष्टिका (लाकडी) आधारभूत होय छे, तेम जीवने मोक्षका अनुपम सुखांकी प्राप्ति होवण वास्ते श्रीजैनधर्म निश्चयें आधारभूत छे. अनादि मिथ्यात्वना योगें काम, क्रोध, लोभ, मोह, मत्सरादिकना धारण करणारा जीवांने ज्ञानावरणीयादिक कर्मायकी मुक्त करीने पोताना स्वस्वभावमांहे रमण करणार ते एक उक्त धर्मनुं सेवन छे. ए धर्मने यथार्थ शुद्ध श्रद्धा पूर्वक आराधवाथीं जीव, चतुर्गति रूप संसारको अंत करीनें जिहां जन्म नहीं, जरा नहीं, मरण नहीं, रोग नहीं, दुःख नहीं, एहवा अकलंक, अक्रिय, अकर्मी, अक्षय, अवेदी, अणाहारी, अबंधक, अभोगी आदिक अनंत सुखमय सिद्धरूप स्थानक प्रत्यें पामे छे.

(२) हवे ते सिद्ध स्थानक पामवाने योग्य तो मात्र मनुष्य गतिमांज रहेला जीव छे; कारण के नरक तिर्यंचादिक गतिमांहेला जीवांने सिद्धपणुं पामवानो अभाव छे. ते मनुष्यपणुं पण जीव, अनंतीवार पाम्यो, पण अनार्य देशमांहे उत्पन्न होवणासुं अथवा आर्यकुलमांहे उत्पन्न हुवो तो आभिग्रहिकादिक मिथ्यात्वना प्रसंगथी शुद्ध स्याद्वादरूप श्रीजैनधर्म पामी शक्यो नहीं, तेथी ते सर्व भव व्यर्थ गया. हवे इण समय शुभ कर्मोदयें करी मोटी पुण्याइसुं मनुष्य गति, आर्यदेश, उत्तम कुल, संपत्ति, नीरोगी शरीर, दीर्घायु सुगुरुनो संयोग, इत्यादि शुभ सामग्री मिली छे, तेम छतां जो विषय कषायादिकमांहे तल्लीन हुइने समकित दर्शनरूप धर्मनी प्राप्ति करणमांहे प्रमाद करोला, तो प्राप्त हुवेला इष्ट संजोगको विनाश हुयने फेर घणा कालतांई संसारचक्रमांहे परिभ्रमण करणो पडसे. एहवो अवसर तथा सर्व प्रकारनो संयोग वारंवार मिलणो घणो मुष्कील छे ज्ञानसंपादन करने आत्माको कल्याण करण वास्ते, पूर्वकृत दुष्कर्मनो बदलो देवण वास्ते, तथा सर्व साधर्मीभायामांहे ज्ञानको प्रसार जो (पंडित पुरुषांपासें सूत्रको व्याख्यान श्रवण करणासुं तथा ग्रंथ प्रसिद्ध करणासुं हुवे छे) ये होवण वास्ते धर्मकीज पूर्ण आवश्यकता छे; धर्म सरीखी प्रिय अने श्रेष्ठ वस्तु इण जगत्मांहे दुसरीं कोई पण नहीं छे. सांसारिक संतति अने संपत्ति केवल अनित्य छे. जिहां सुधी शुभ कर्मांको उदय रेवे छे, तिहां सुधी सर्व इष्टवस्तुको संयोग आयें मिले छे; जद अशुभ कर्मांको उदय होवे, ते वखतें सर्व इष्ट

वस्तुको वियोग हुयने अनिष्ट संयोगका प्राप्ति हुवे छे संसारमांहे विवाह आदि आरंभिक कार्य प्रयोजनमांहे हजारा रुपिया मोठा उच्छरंगसु खर्च कर देवाछा, सु वो तो फक्त सांसारिक इणहाज भवका यश कीर्तिको कारण छे, अने धर्मनिमित्तें जो द्रव्य खर्च होवे तो इण भवना तथा परभवना सुखको तथा मोक्षना सुखनो पिण कारण छे इण वास्ते समस्त जैन बंधुका अंत करणमांहे धर्मका जागृत प्रेरणा निरंतर रेवण वास्ते तथा धर्मको उद्योत करण वास्ते प्रयत्न करने धर्मनिमित्त यथाशक्ति द्रव्य अवश्य खर्च होवणो चाहाजे इतरीज हमारी सर्व जैन बंधुने विनंति छे

(३) ओ पुस्तक छपायने प्रसिद्ध करता वांचणारा सज्जनलोकांप्रतें इण पुस्तकमांहे दाखल करेला ग्रंथाकी हमें किंचित् सूचना करा छा

(४) इण पुस्तकका आदिमें श्रावकाने नित्य उभयकाल करवा योग्य छे आवश्यककी करणीरूप प्रतिक्रमणसूत्र छे, तिको अर्थ सहित दाखल कीनो छे कारण श्रावकने कोई पण शास्त्र वांचणा भणीजणा, तिके सर्व अर्थ सहित भणाजणा चाहिजें कारण यथार्थ अर्थ धारणामें होवे तोहिज यो ग्रंथ अनुभव सहित भणीया कहेवाय, नहीं जरा सुवाका पाठ प्रमाणें समजवो उणमांहे पण पडिक्कमणादिक छे आवश्यक तो नित्य सांझ सवार क्रिया करती वेला काम आवे छे इण वास्ते उणका अर्थ तो अवश्य धारणाइज चाहिजें, जिणसू, मात्र मूलपाठ जाणनारा लोकांने जे काइ क्रिया करणको अनुभव होवे, वा लोकांसु अर्थ सहित जाणनारा मांहे कितराक दरजे अनुभवकी वृध्दि होवे छे, अने उणका फल पण उतराज दरजे जादा होवे छे इण प्रमाणें सिध्दांतमांहि भगवंत फुरमायो छे

(५) और, क्रिया करणार पुरुषका आत्माका अध्यवसाय आश्रया पिण फलका अधिक न्यूनता कही छे तथापि अर्थ धारणार अने अर्थ न धारणार या दोनु जिणाका आत्माका अध्यवसाय (प्रणामकी धारा) सराखा होय, तो पण अवश्य अर्थ न धारणारासु अर्थ धारणाराने अत्यंत अधिक फल प्राप्त होवे छे इण वास्ते अर्थकी धारणा करणी आवश्यक छे, इण हेतुसू आवश्यक सूत्र तथा अन्यग्रंथ उपरसु सामयिकादि सूत्रकी पाटीयां सार्थे पाठका अर्थ पण दाखल कराया छे ए सब हमारा साधर्मी भाई अर्थसहित भणजिणको उद्यम करेल इणतरे हमे पूर्ण आशा राखा छा

(६) श्रीजैनधर्ममांहे महान् विद्वान् परम पंडित पूज्यश्री श्री १००८ श्रीकानजी रिखजी महाराज नी संप्रदायना स्वामीजी श्री १००८ श्री अयवंता रिखजी महाराज तस शिष्य स्वामीजी श्री १००८ श्री तिलोकरिखजी महाराज महाप्रभाविक हुवा माहाराजसाहेबको जन्म संवत् १९०४ की चैत्र वदि ३ के दिन हुवो संवत् १९१४ का माहावदि १ गुरुवारके दिन माहाराजसाहेब स्वामीजी श्री अयवंतारिखजी माहाराज पासें वैराग्य भाव पामाने मोठा उत्साहसू दीक्षा ग्रहण कीनी संवत १९३६ को चोमासो दक्षिण देश घोडनदीमांहे कराने अहमदनगर, आंबोरा, हिवरो, पूना, सतारा औरंगाबाद, धुलिया वगैरे अनेक ठिकाणे विचरता भव्यजीवाने सम्यक्त्व प्रतिलाभा संसारसु तारिया छे संवद् १९४० को चोमासो करणवास्ते आषाढशुद्ध ९ के दिन अहमदनग

शहेरमांहे पधारिया, उणाहिज दिन तप चढने सावणवदि २ रविवारके दिन माहाराजसाहेब देवलोक हुवा. ऐसा उत्तम पुरुषांको वियोग घणा भायाने दुःसह हुयने श्री जैनधर्मका महा पंडित पुरुष रत्नमांहेला एक अमुल्यरत्नकी खामी पड गई.

(७) **स्वामीजी श्रीतिलोकरिखजी माहाराज** अल्प आयुष्य मांहे, जेम पृथ्वी मंडलमांहे सूर्य प्रकाश करी अंधःकारनो नाश करे छे, एम मिथ्यात्वरूप अंधःकारनो नाश करीने भव्य जीवरूप कमलने विकश्वर करण वास्ते, सिद्धांतानुसारें मोठा मोठा ग्रंथांका रचना करी घणा भव्यजीवाने प्रतिबोधी परोपकार करणमांहे मोटो श्रेय लीनो छे. माहाराज-साहेबको स्वभाव चंद्रनी पेरें शीतल, समुद्रनी पेरे गंभीर, मिष्टवचनी, बालब्रह्मचारी करुणाका सागर, इत्यादिक गुणे करी सहित हुयने वां पुरुषांमाहे कवित्वशक्ति, वाक्चातुर्य, समय-सूचकता श्रीजैनसिद्धांत तथा षट्शास्त्रना पारंगामी वगैरे अनेक गुण प्रशंसनीय हुता. माहाराज साहिबका गुणाकी स्तुतिकरां जितरी थोडीज छे.

(८) माहाराजसाहेब निरंतर साधु संबधी पाडिलेहण, प्रमार्जन त्रिकाल काउस्सग्ग ध्यान, तथा धर्मसंबधि व्याख्यानादिक कार्य करीने परिवरिया पछे शेष रहेला वखतमांहे किंचित् मात्र पण प्रमाद सेवन करता नही था, पण जैन सिद्धांतमांहेसुं आनंद श्रावकादिक महापुरुषांका चरित्रानुसारें चौढालिया, छे ढालिया वगैरेकी रचना करता हुता, तथा वैरा-ग्य भावने दर्शावणारां अनेक लावणीया, पद, सवैया तथा श्रीजिनेश्वरस्तुतिरूप घणा स्तवन, सझाय, छंद, श्रीचंद्रकेवली, श्रेणिकादिकना चरित्र, रास प्रमुख अनेक छोटा मोटा ग्रंथाकी रचना कीनी छे, अने वे इतरा तो रमणीय छे, के जे ग्रंथ बांचणासुं जेहवो भावार्थ वां ग्रंथामें दरसायो छे, तेवाज भावार्थ की हुबेहुब असर बाचणवालाका मनमांहे ठसिया विना रेवेज नहीं, ऐसी खुबी माहाराजसाहेबकी कविता मांहे वापरी छे. थोडाकालमांहे माहाराज साहेब इणतरे प्राकृत भाषामें कवितारूपें साठ शीत्तरहजार ग्रंथकी जोड करी जिनधर्मने दीपायो छे.

(९) उपर लिख्या मुजब माहाराज साहेबका रचेला ग्रंथ प्रत्येक जैनधर्मी श्रावकने बांचवा भणवा योग्य जाणीने उणमांहिला केइ केइ ग्रंथ इण पुस्तकमांहे दाखल करिया छे, जिणने सर्व साधर्मि भाई वाचने भणीजने जरूर धारणा करेला, इणतरेकी हमारी अभिलाषा पूर्ण करणमांहे हमारा साधर्मी भाई पछात पडसी नही. जो जो ग्रंथ इण पुस्तकमांहे दाखल करिया छे, तिके सर्व हमारा साधर्मी भायाने घणाज उपयोगी छे. और दुसरा श्रावक लोकां पासें माहाराज साहेबकी जोडको ग्रंथ घणो शिल्लकमांहे पडियो छे, पण हाल वे प्रसिद्ध हुवा नही सु मोटी दिलगीरी मालमं पडे छे, कारण प्रस्तुतसमयमां विद्वान पुरूष थोडा लाधे छे, जिणवास्ते पंडित पुरूषांका रचेला ग्रंथ जो प्रसिद्ध नही होसी तो ज्ञानकी वृद्धि किण तरे होसी ? इण वास्ते ज्यां श्रावक लोकांपासे माहाराजसाहेबका रचेला ग्रंथ होसी वे प्रसिद्ध करणमांहे प्रमाद करेला नही, ऐसो हमांने भरोसो छे.

(१०) ओ पुस्तक श्रीजैन धर्मको उद्योत हुयने ज्ञानको प्रसार होवण वास्ते, तथा भव्यजनांकी समकित दृढतर होवण वास्ते, तथा श्री तिलोकरिखजी माहाराजका गुण

प्रगटकरण वास्ते श्रीदेव गुरु धर्म प्रसादे छपायने हमारा प्रिय सकल जैन बधु आगल सादर करियो छे

(११) इण प्रतिक्रमण सत्यबोधका पुस्तकनी महाराजसाहेबका अतिशयका कारणसू नाचे लिख्या मुजब ज्यां सजनलोका उदारमने करी श्रीजैनधर्मको उद्योत हुवणवास्ते आगाउ मदत दानी छे, ताके बोहोत प्रशसनीय छे जेम हस पक्षीकी चचूमाहे एहवाज कोई जातना पुद्गल रह्या छे, के तेहथी तेहनी चचू सदाकाल दुग्धनेज ग्रहण करणका स्वभाववाली होय छे, तेम सदगुणाजनाका अन करणना परिणामने विषे एहवाज कोई उत्तमजातिना पुद्गल रहेला छे, के ते थकी तेहना बुद्धि सदाकाल सत्कार्य करवाना विषेज प्रवर्तमानथकी रहे छे इण प्रमाणेज सर्व जैन बधु आगासू धर्मको उद्योत करणवास्ते हरएक प्रकारकी मदत करणका उमेद जादा राखेला, इसा हमे पूर्ण आशा राखांछा

नाव	रूपिया
मुता नवलमलजी किसनदास, अहमदनगर	२२५
साह बिरदीचदजी चुनालाल, राहाता	२२१
मुता मोकमदासजी हानारामल, सातारा	२२१
गुगलिया हुकमचंदजी नेमीदास, अहमदनगर	११५
ओसवाल पेमराजजी पन्नालाल, अहमदनगर	१०१
गुंदेचा माइदासजी छोगमल, अहमदनगर	६१
गुंदेचा मोताचदजी रतनचंद, अहमदनगर	६१
मुणोत पनराजजी शिवदास, अहमदनगर	६१
मुता हजारामलजी आगरचद, अहमदनगर	६१
सींगी बनेचदजी दौलतराम अहमदनगर	६१
गाधी गुलाबचदजी रतनचद, आंबोरी	५१
कोटेचा तिलोकचदजी आसकरण, धुलिया	५१
मुता खुबचदजी रुणकरण, हिवडा खानरा	५१
गाधी हिंमतमलजी हामीरमल, माहादपटेलका चिचोंडा	५१
गाधी बछराजजी राजमल, महादपटेलकी चिचोंडी	४१
भंडारी माणकचदजी मोतीचद, अहमदनगर	४१
गाधी तेजमलजी राजमल, अहमदनगर	३१
नाहार नदरामजी बालाराम, धुलिया	२५
गाधी किस्तूरचदजी भिकलदास, माहादपटेलकी चिचोंडा	२५
मुता नेमादासजी प्रेमल, गुलेजगड ...	२५
मुणोत हुकुमचद जवानमल, हिवडा खानरा	२५
गुंदेचा जितमलजी किसनदास, नांदूरबारागाव	२५

ापना.

(१२) इण ग्रंथमांहे कितराक शब्द हामे शास्त्रका बराबर जाण न होवणासुं वे सुधारणवास्ते असमर्थ हुया छां. पण सुज्ञविद्वान लोकां इण पुस्तकमांहेला सामायिक, प्रतिक्रमण, तथा पच्चक्खाण वगैरेका पाठ अने अर्थमांहे तथा और कोइ ठेकाणे चुकां होइ होसी तो वे सर्व हमाने अज्ञ जाणी हमारा उपर दोष न राखनां आप बाचने सुधारने हमाने लिखेला, एहवो सुज्ञ लोकामांहे एक प्रकारको स्वाभाविक गुणज होय छे; वास्ते इण बदल जादा लिखणको कांइज कारण नही छे, पिण भुल बदल मिच्छामि दुक्कडं देने हमाने आलोयणा कीधी चाहिजे. इण ग्रंथमांहेला मूल पाठको अगर अर्थको तथा स्तवन सज्झायादिक बाकी विषयको कोइ एक शब्द अगर अक्षर न्यून, अधिक अशुद्ध रीतें, आघो पाछो जाणतां, अजाणतां वगैरे कोई प्रकारें भूलथी लिखिज गयो होसी तथा ग्रंथ छपावणमांहे कोइ प्रकारको दोष लाग्यो होसी तथा ग्रंथको अविनय अशातना जाणतां अजाणतां हमारी तरफसुं होइ होसी, तो ते सर्व मन वचन कायायें करी श्रीअरिहंत सिद्ध केवली भगवंतनी साखें सर्व दोषप्रत्यें हमानें मिच्छामि दुक्कडं होजो. अपराधकी क्षमा होजो.

(१३) ओ पुस्तक छपावणका काममांहे तथा शुद्ध करणका काममांहे हमारा प्रिय जैन बंधु भाई भीमसिंहमाणेक घणी तसदी लीनी छे, जिण बदल उणारो आभार माना छां. श्रीजिनधर्मका उद्योत करणको उद्यम करने हमारा बंधु निरंतर श्रेय लेसी, इसी हामे चाहना राखा छां. किं बहु बिलेखनेन शुभं भवतु.

विज्ञप्ति.

[१] इण पुस्तकका ५७ पानमे पडिक्कमणाकी विधीमांहे संलेहणा आठारें पाप स्थानक कहीने इच्छामि ठामि कहिजे इणतरे लिख्यो सु केइ श्रावक इण मुजब केवे छे ने केई संलेहणा आठारें पाप स्थानक कहीने दश प्रकारको मिथ्यात्व तथा केइ श्रावक २५ प्रकारको मिथ्यात्व तथा चौदे स्थानाकीया जीवांरी आलोयणा करीने पछी इच्छामिठामिनी पाटी कहे छे सु आप आपकी गुरु आमना तथा परंपरा प्रमाणे कहीजें.

[२] तथा सामायिक पारवानी विधिमांहे काउस्सगमांहे इरियावहीकी पाटी चिंतववी लिख्यो छे परंतु केइक श्रावक लोगस्सकी पाटी चितवे छे वास्ते आप आपकी गुरु आमना प्रमाणे करवो इण पुस्तकका दुजा पानमें तिक्खुत्ताकी पाटी मांहे " पयाहिणं वरेमि वंदामि " लिख्यो छे सु केइ भाया इणतरे केवे छे तथा केइ भाया " पयाहिणं वंदामि " केवे छे, सु आप आपकी गुरु आमना तथा परंपरा प्रमाणे केवणो.

श्रीः

॥ द्वितियावृत्ति तथा जीवनचरित्रकी प्रस्तावना ॥

धर्म-कर्म-गुण-राशि-दर्शकम्
मान-मोह-मद-मार-मर्दकम्
अज्ञ-जीव-तिमिरापहारकम्,
"सत्यबोध" कथन यथार्थकम् ॥ १॥

प्रियवाचकवृंद ! प्रात स्मरणाय, पूज्यपाद महात्मा श्री तिलोक ऋषिजी महाराज विरचित प्रतिक्रमण सत्यबोधकी उपयोगिता, लोकप्रियता, समाजके किसी भी तत्त्वज्ञ पुरुषसे छिपी नहीं है, आज उसके द्वितीय संस्करणके अवलोकनका लाभ जो समाजको मिल रहा है इसका श्रेय प्रथम तो अहमदनगर निवासी श्रीसंघ तथा तत्प्रांतवर्ती श्रीसंघको है । कारण जिस समय पूज्यपादका शरीरावसान अहमदनगरमें हुवा उस समय वहांके विज्ञ श्रावकवर्गने अर्थात् जिनका सुवर्ण नामावली प्रथमावृत्तिके प्रस्तावनामें दी है उन लोगोंने महाराजश्रीके विरचित उपलब्ध स्फुट कविताओंका संग्रह करके पुस्तकाकारमें मुद्रित कराया जिसके अवलोकनका सौभाग्य आजभी समाजको प्राप्त हो रहा है । परंच यह पुस्तक इतना पर्याप्त संख्यामें प्रकाशित नहीं हुई थी कि समस्त अभिलाषी जनोंकी इच्छापूर्ति हो सके इस लिए स्थान स्थान पर पुन उसकी संस्करणसूचक शब्द स्वर्गीय गुरुवर्य श्री रत्नऋषिजी महाराज तथा पंडितरत्न मुनि श्री आनंदऋषिजी महाराजके श्रवणरंध्रपर पडते थे

गुरुवर्य श्री रत्नऋषिजी महाराजका वियोग विक्रमाब्द १९८४ मिति ज्येष्ठ कृष्णा ७ सप्तमी सोमवारके दिन हिंगणघाटके नजदीक अल्लीपुर में हुवा उस वर्षमें मुनि श्री आनंदऋषिजी महाराज ठाणे २ का चातुर्मास हिंगणघाट में हुवा चातुर्मास समाप्त होनेपर वहासे विहार करके मांटोरा, वरोरा, चादा, वणा, पांढरकवडा, जेला, सिंधी वगैरह क्षेत्रोंको स्पर्शते हुए नागपुर सदरबाजारमें पधारना हुवा विक्रमाब्द १९८५ के ज्येष्ठ कृष्णा सप्तमीके रोज गुरुवर्य श्रीरत्नऋषिजी महाराजका जीवनचरित्र मुनि श्री आनंद ऋषिजी महाराजने श्रावकोंको सुनाया, और उसके साथ यह भी सुनाया कि महाराज श्री के हृदयमें साधुधर्म पालते हुए समाजसेवा, विद्याप्रेम, एकता वगैरह सद्गुण विद्यमान थे, अत उनके स्मारक स्वरूप कोई ज्ञानप्रचारक संस्था यहा स्थापित होवे तो ठीक है, ऐसा उपदेश होनेपर वहांकी जनताने उत्सुक होनेपर " श्री जैनधर्म प्रसारक संस्था " स्थापित की जिसके द्वारा छोटे २ ट्रेक्ट प्रकाशित होकर अपना नाम वह सार्थक कर रही है

विक्रमाब्द १९८५ में मुनि श्री आनंद ऋषिजी महाराज का चातुर्मास सदर बाजार नागपूर में हुवा उस समय पारशिवनी निवासी श्री तिलोकचंदजी सेठिया और श्रावक संघ महाराज श्री के दर्शनार्थ आया था उन्होंने वार्तालाप करते हुए यह प्रस्ताव उपस्थित किया कि श्री तिलोक ऋषिजी महाराज विरचित प्रतिक्रमण सत्यबोध नामक

जो पुस्तक है, उसीके पठनसे हमारे क्षेत्रमें धर्मजागृति हुई है, अब वह पुस्तक अलभ्य है. यदि उसका दूसरा संस्करण होना हो तो ५०० पांचसो रूपिया उसके लिए देता हूं. तदनंतर यादगिरिनिवासी सुज्ञ श्रावक **श्रीमान् नवलमलजी सुरजमलजी धोका** तथा घासा (अहमदनगर) निवासी **श्रीमान् रतन चंदजी जसराजजी छाजेड** और कई एक उपस्थित धर्म प्रेमी लोगोंने प्रतिज्ञाही नहीं बल्कि रूपियोंकी हुंडी कर दी. जिनकी सुवर्ण नामावली इस आवृत्तिके आश्रयदाताओंकी श्रेणिमें दी गई है। और उन्हीं लोगोंके उत्साहसे अहमदनगरवाले **श्रीमान् नवलमलजी किसनदासजी मुथाकी** अनुमति मंगाकर पुनरावृत्ति का कार्य प्रारंभ हुवा. अत: इस श्रेयका भागी आश्रयदाता वर्ग तथा **श्री जैन धर्म प्रसारक संस्था** सदर बाजार नागपूर का कार्यकर्ता मंडल है.

इस पुस्तकके पुनरावृत्ति के साथही आज ४९ वर्ष के बाद पूज्यपाद **श्री तिलोकऋषिजी महाराज का** जीवन चरित्र भी आप लोगों के सन्मुख रखने का सौभाग्य प्राप्त हुवा है, कारण कि जिस समय पूज्यपाद स्वर्गारूढ हुए उस समय **गुरुवर्य श्री रत्नऋषिजी महाराज श्री** की छोटी अवस्था थी. जीवनचरित्र संकलन करनेकी शक्ति तथा सामग्री उनके पास नहीं थी. जब आप विद्याभ्यास करने के लिए मालवामें पधारे, उस समय से पूज्यपादके जीवन चरित्र का शोध करने लगे. विद्याभ्यास करके तथा मालवा, मेवाड, वागड, गुजरात आदि देशोंमें विचरकर तेरह वर्ष के बाद दक्षिण देशमें पधारे और अपने रचना किए हुए **तिलोक चंद्रिका** नामक पुस्तकमें पूज्यपाद के चरित्र विषयक कुछ सारांश बातें लिख दी परंच वह लेख पर्याप्त नहीं हुवा, जनताकी प्रेरणा बराबर होती रही.

अवसर पाकर गुरुवर्य **श्री रत्न ऋषिजी महाराज** अपने शिष्य मुनि **श्री आनंदऋषिजी** महाराजसे भी फरमाया करते थे कि " हे आनंद ! पूज्यपाद महाराज श्री का जीवन चरित्र पूर्ण नहीं हुवा. गुरुवर्य के उद्‌गारको श्रवण करके मुनि **श्री आनंद ऋषिजी** महाराज पूज्यपाद के जीवन चरित्र का संकलन करने लगे. अधिकांश बातों का संग्रह तो गुरुवर्यसेही हुवा था. फिर मालव देशसे कविवर्य, महामना, पंडित रत्न मुनि **श्री अमीऋषिजी** महाराज का दक्षिण देशमें पदार्पण हुवा. उनके पाससे पूज्यपाद चरित्र नायक के हाथ का लिखा हुवा सूक्ष्माक्षरवाला एक पत्र प्राप्त हुवा, जिसमें जन्म कुंडली, तथा जीवन पर्यंतकी दिन चर्या विशद रूपसे लिखी थी. महासतीजी **श्री नंदूजी** महाराज आठ वर्ष तक मालव देशमें विचरे थे. उनके द्वारा तथा दक्षिण देशमें विराजती हुइ पुज्यपाद की अग्रशिष्या सती शिरोमणि **श्रीरामकुवरजी** महाराज और पूज्यपाद के दर्शन किए हुए वृद्धों के द्वारा तलाश करके अवशिष्ट चरित का अतिसंक्षिप्त संग्रह किया था.

विक्रमाब्द १९८८ के चातुर्मासमें बोदवड (खानदेश) निवासी श्रावकोंका अत्यंत आग्रह हुवा कि **पूज्यपाद श्री तिलोकऋषिजी महाराजका** जीवनचरित्र प्रकाशित

किया जाय तब जीवन चरित्रके रचनाका भार व्याकरणाचार्य, साहित्य शास्त्री, विद्यानिधि, विद्वद्रत्न, प राजधारी त्रिपाठीजी मु खैराटा, पोष्ट सपिगौर, (गोरखपुर) ने सहर्ष स्वीकार किया

जीवनचरित्र तैयार हो जानेके बाद मुनि श्री **आनदऋपिजी महाराज** और त्रिपाठी शास्त्रीजीका यह विचार हुवा कि अपना विहार दक्षिण देशके तरफ हो रहा है, वहाके शास्त्रज्ञ, सुश्रावक **श्री किसनदासजी मुथा** वगैरहकी सम्मति लेनेके बाद यह जीवनचरित्र प्रगट किया जाय अहमदनगर पहुचनेपर जीवनचरित्र प्रकाशित करनेके विषयमें चर्चा छिडी साधु रूपमहिनैपा मुथाजीने कहा कि आजकल जितने जीवनचरित्र छपते हैं, वे प्राय (अतिशयोक्तिसे परिपूर्ण रहते हैं) " एक हाथकी ककडी नौ हाथका बीज " इस कहावतके अनुसार है जिनका आद्योपात अवलोकन तथा चरित्रसे मननीय अनुकरणीय विषयोंका साराश समझना भी कठिन हो जाता है फिर **श्री पुनमचदजी** भडाराजी ने कहा कि ठीक है आप लोग पहले इसका अवलोकन करें, पीछे न्यूनाधिक, आस्ति नास्तिका अनुकूल उत्तर दें

तदनंतर दुपहरमे बारह बजेके बाद **श्रीमान् किसनदासजी मुथा, श्रीमान् कुदनमलजी फिरोदिया वकील, श्रीमान् मगनमलजी गांधी, श्रीमान् हीरालालजी गाधी (टिळक), श्रीमान् उत्तमचद्जी बोगावत वकील, श्रीमान् घोंडीरामजी मुथा, श्रीमान् पुनमचद्जी भंडारी** वगैरह सुश्रावक एकत्रित हुए सबकी सम्मतिसे पडित रत्नमुनि **श्री आनंद ऋपिजी महाराज** जीवनचरित्र सुनाने लगे जिस समय चित्रालकार काव्य, और ज्ञानकुजरका वर्णन आया, उस समय उन हस्तलिखित पत्रोंको देखनेकी मुथाजी वगैरा श्रावकोंकी अभिलाषा हुई उन सब प्रमाणभूत दर्शनीय अद्भुत लेखोंको देखकर सब श्रावकोंका अत करण आल्हादित हुवा

फिरोदिया वकील साहबने फरमाया कि जिस महापुरुष **श्रीतिलोक ऋपिजी महाराज**के द्वारा दक्षिण देशमे जैनधर्मका पुनरुद्धार हुवा ऐसा कहा जाता है और जनताको चमत्कृत करनेवाले उनके हस्तलिखित ऐसे २ लेख विद्यमान है, उनका जीवनचरित्र क्यों न प्रकाशित किया जाय ? मेरी तो यह राय है कि जिस तरीकेसे वे ग्रामानुग्राम विचरे हैं, उसी तरीकेसे विशदरूपसे प्रकाशित किया जाय तथा सब चित्रोंका फोटो दिया जाय यदि इन चित्रोंका फोटो नहीं दिया जायगा तो इन अद्भुत कृतियोंके विषयमें जनताको संशय होगा

इसपर उपस्थित सज्जनोंका एकमत होनेपर जीवन चरित्र प्रकाशित करानेका पूर्ण निश्चय हुवा परन्तु फिरोदियाजीके कथनानुकूल सब चित्रोंके छपानेमें बहुत द्रव्यका व्यय था, इसलिए यह काम पूरा न हो सका इस जीवन चरित्रके अवलोकनका लाभ जो आज समाजको मिल रहा है, इसका पूर्ण श्रेय श्रीमान् **रतनलालजी कोटेचा**, श्रीमान् **कन्हैयालालजी** कोटेचा, बोदवड तथा वहाके श्रीसघको है, क्योंकि उन्हीं लोगोंके अत्यंत आग्रहमे यह काम प्रारम हुवा

दक्षिण प्रांतवर्ती पीपला [अहमदनगर] निवासी श्रीमान् **चांदमलजी सोभाचंदजी बोरा** तथा श्रीमान् **तेजमलजी नंदरामजी बोराजीने** चित्रालंकार काव्य, शील-रथ, और ज्ञानकुंजरके पत्रोंको प्रकाशित करके संस्थाको अर्पण किया उसीसे जीवन चरित्रकी विशेष शोभा हुई है, उस श्रेयके भागी पीपलानिवासी श्रावक हैं.

इसके पश्चात् सकल श्रमणसंघसे सादर निवेदन है कि पूज्यपाद विरचित ग्रंथोंका अबतकभी बराबर पता लगता जाता है. अद्यावधि जितने ग्रंथोंका पता लगा है, उनका नाम तो प्रायः जीवनचरित्रमें दिया गया है. अब यदि किसीभी व्यक्तिके पास कोई ग्रंथ होवे तो कृपाकर सिर्फ उस ग्रंथका नाम, रचनाका देश काल, सूचित करें, ताके उसको दूसरे संस्करणमें संकलित किया जायगा, और आप लोगोंका उस बाबतमें आभार माना जायगा.

इस पुस्तकके अंदर लेखक तथा मुद्रकके असावधानतासे तथा दृष्टिदोषसे बहुतसी अशुद्धियां रहनेकी संभावना है, उसको सुधारकर बांचे.

गच्छतः स्खलनं क्वापि, भवत्येव प्रमादतः
हसंति दुर्जनास्तत्र, समादधति नाः ।

इत्यलम्

निवेदक.

गुलाबचंद पारख. भैरुदान बद्धाणी.
मंत्री. उपमंत्री.

श्री जैनधर्म प्रसारक संस्था,
सदर बाजार, नागपूर.

आभारदर्शन

इस बडी पुस्तकको प्रकट करनेमें ज्ञान प्रेमिओंने निम्न प्रकार आर्थिक सहायता देकर संस्थाके उत्साहको बढाया है। अत. सामार धन्यवाद दिया जाता है।

७०० रु. श्रीमान हीरचंदजी नाथुलालजी पारख सदर बाजार नागपूर.

५०० ,, ,, नवलमलजी सुरजमलजी बोका, यादगिरी

१०१ ,, ,, आसकरनजी रतनचदजी बैद, मुंगेली

१०० ,, ,, स्वर्गवासी राजमलजी बोरूदिया गनोरी निवासी की धर्मपत्नी श्रीमती जडाव बाई

५१ ,, ,, भयाशकर चतुरभुज, उमरावती.

५१ ,, श्री जैनसघ, चांदूर बाजार, (उमरावती)

५१ ,, ,, मूलचदजी केसरीचदजी कोचर, एलीचपूर

५१ ,, ,, मगनीरामजी आचलिया की धर्मपत्नी श्रीमती लछमीबाई पींपळखुटा

२०॥ ,, श्रीमती केसरबाई, बोरीनिवासी मारफत श्री लालचदजी रघुनाथदासजी, चोदवड

३०० ,, श्रीमान् रतनचदजी जसराजजी छाजेड, घ्रसा, (अहमदनगर) पहिलेसे १५० पुस्तकके ग्राहक बने।

२५० ,, दानवीर श्रीमान् शेठ नेमीचदजी सरदारमलजी पुगालिया, इतवारी नागपूरवाले १२५ पुस्तकके ग्राहक बने

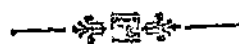
१०१ ,, रायबहादुर श्रीमान् शेठ फूलचंदजी चादमलजी नाहार, बरेलीवाले ५० पुस्तकके ग्राहक बने

२ ,, श्रीमान् घेवरचदजी केसरीचंदजी चोपरा, पोहना, (हिंगणघाट)

श्री नवलमलजी किसनदासजी मुथा अहमदनगरवालोंने इस पुस्तकके द्वितीय संस्करण की आज्ञा दी इस लिये, भुसावलनिवासी श्री सागरमलजी ओस्तवाळ, नागपूर सदर बाजार निवासी, श्री भैरुदानजी बद्धाणी, आदिने प्रुफसशोधनका काम किया है इसलिये तथा प्रेस मेनेजरने कई प्रकार की सुविधा कर दी इसलिये, इन सब सज्जनोंका आभार मानते हैं

प्रकाशक.

विषयानुक्रमणिका.



श्री ति ` षेर्ज महरज

ॐ र्जी चरित्र ॐ

॥ ओ३म् ॥

लेखकके दो शब्द.

संसारसागरस्यान्तं, गन्तुमीहास्ति चेद्यदि ।
चरित्रं महतां पोतं, कृत्वा गच्छन्तु भावुकाः ॥ १ ॥

हे भव्यपुरुषो ! इस संसाररूपी समुद्रसे पार होनेकी इच्छा यदि आप लोगोंकी है, तो महान् पुरुषोंके चरित्ररूपी नौकापर आरूढ होकर सुखसे जाइये, अर्थात् यदि आप दुःखमय जगतमें सुखसे जीवन व्यतीत कर परलोकको सुधारना चाहते हैं तो, सब उपायोंको छोडकर सिर्फ उत्कृष्ट चरित्र संपन्न महात्माओंका चरित्र पढिये और तदनुसार अनुकरण कीजिए । इस समय भाषा साहित्यके अंदर इतनी अधिक संख्यामें नूतन पुस्तकें निकल रही हैं कि जिनका नामोल्लेख करना अशक्य है; परंतु इन पुस्तकोंके अवलोकनसे " विनायकं प्रकुर्वाणो रचयामास वानरम् " इस लोकोक्तिके अनुसार फलस्वरूप उन्नतिके स्थानमें अवनति ही दृष्टिगोचर हो रही है, अर्थात् समाज प्रतिक्षण चारित्र शिथिल व अनुत्साही हो रहा है। आज यदि इन पुस्तकोंके चतुर्थांशमें **स्वर्गीय स्वामी अजरामरजी महाराज**, तथा चरित्रनायक पंडितवर्य **श्रीतिलोक ऋषिजी महाराज**, वर्तमान शतावधानी पंडित **रत्नचंद्रजी स्वामीजी महाराज**, आदिकी जीवनी तथा उनके साहित्यके समान पुस्तकें प्रकाशित होती तो आज समाज उन्नतिके शिखरपर अवश्य पहुंच गया होता । क्योंकि—

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः ।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥ १ ॥

अर्थात् जिस रास्तेसे श्रेष्ठ पुरुष गमन करते हैं, उसीका अनुकरण करके तदनुयायी समाज भी चलता है, इस लिये आध्यात्मिक तथा पारमार्थिक लाभको सेवन करनेवाले महान् पुरुषोंका जीवनचरित्र यदि जनताके सामने रक्खा जाय तो चरित्र नायकके प्रारंभिक कर्तव्य तथा उनके गुणोंके साथ अपने कर्तव्य तथा गुणोंकी तुलना करके " हेयोपादेय " अर्थात् बुरेका त्याग और अच्छेका ग्रहण करके समाज मनुष्यजीवनका लाभ ले सकता है.

पूर्वकालमें जो प्रसिद्ध महात्मा और विद्वान् हो गये हैं, वे अपने शारीरिक आध्यात्मिक कर्तव्यको करते हुए आत्मिक, मानसिक, सामाजिक उन्नतिके लिए तीर्थंकर, गणधर, साधु, श्रावक तथा अन्य सच्चरित्र पुरुषोंके चरित्रावलोकन तथा लेखनमें ही समय व्यतीत करते थे । देखिये जैनशास्त्रोंमें—चरितानुयोग, कथानुयोग—प्रभावक चरित, नेमि निर्वाण, वगैरह तथा वैदिक मतोंमें रामायण, महाभारतादि ग्रंथ, कि इनके रचयिता सत्पुरुषोंने संसारमें प्रसिद्ध भव्य पुरुषोंके चरित्रलेखन द्वारा अपने साहित्यमें कितना उच्चपद प्राप्त किया है ? साथ ही साथ इसके श्रवण करनेसे पुण्य होता है, दुरित विध्वंस होता है, इत्यादिक तात्त्विक

प्रलोभन देकर अपने भावा सतानोंका चित्त आकर्षित कर समाज व धर्मको भी उन्नतिके उच्च शिखरपर पहुचाया है।

जीवनचरित्र वह वस्तु है कि जिसका अवलवन करके सकटरूपी ससार सागरमें पडकर भी मनुष्य जीवनरूपी नौकाको पार कर सकता है, परतु जीवनचरित्रके नायक सब कालमें सब जगह प्राय कम मिला करते हैं, कहा भी है--

शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे।
साधवो नहि सर्वत्र चन्दनं न वने वने ॥ १ ॥

अर्थात् हर एक पर्वत में माणिक्य पैदा नहीं होता है, प्रत्येक हाथी के मस्तकमें मुक्ता उत्पन्न नहीं होता है, ससारमें सब जगह साधु पुरुष नहीं मिलते हैं, न तो हर एक वनमें चदन उत्पन्न होता है साराश यह कि जगतमें स्थल स्थलपर ऐसे महापुरुष प्रगट नहीं होते हैं कि जिनका जीवनचरित्र लिखा जाय। जीवनचरित्र सच्चरित्र साधु पुरुषोंका लिखा जाता है, साधु वे हैं, यथा—

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णा,
त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभि प्रीणयन्त ।
परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यं,
निजहृदि विकसन्त सन्ति सन्त कियन्त ॥ १ ॥

अर्थात् जिनके मन वचन कायमें पुण्यरूपी अमृत भरा हो, त्रिविध पापसे एकान्त निवृत्त हो, उपकारके कतारोंसे ससारको तृप्त कर दिया हो, अपने गुणोंका प्रशसावाद छोडकर परमाणु मात्र भी परगुणको पर्वतके समान दरशाया हो, और जिनका हृदय प्रफुल्लित हो, ऐसे सत दुनियामें कितनेक होते है ? अर्थात बहोत थोडे, परन्तु इस पृथ्वीका नाम वसुधरा है, कहीं न कहीं ऐसे नररत्न पैदा होही जाते हैं श्रीमहावीरप्रभु ऐसे तीर्थकर, गौतम–सुधर्मा स्वामी ऐसे गणधर, श्रीरामचद्र ऐसे बलदेव, श्रीकृष्ण सरीखे वासुदेव और श्रीनेमिनाथ भीष्म समान ब्रह्मचारी, इसी वसुधराके गोदमें पैदा हुये थे ऐसी ऐसे वीर पुरुष विद्यमान हैं और होते जायगे।

उसी रत्नगर्भा वसुधरापर पवित्र मालव देशमें **चरित्रनायक पूज्यपाद महात्मा श्रीतिलोक ऋषिजी महाराज** भी विक्रमीय २० वी शताब्दीके प्रारभ कालमें श्री स्थानकवासी जैन सम्प्रदायमें पैदा हुये थे, जिनका आमूल जीवन वृत्तात जाननेके लिये जैन समाज तथा अन्य समाजके लोग भी लालायित हो रहे थे, अच्छे २ उच्च आदर्श पुरुषोंने जिनका जीवन चरित्र प्रकाशित करनेके लिये अपना अपना अभिप्राय प्रगट किया था

सन् १९२७ इसवीमें कच्छसे **श्री १००८ श्री नागचन्द्रजी स्वामीने, पूज्यपाद श्रीतिलोक ऋषिजी महाराजके** सुशिष्य रत्नत्रयाराधक **बाल ब्रह्मचारी श्री रत्न ऋषिजी**

महाराजका स्वर्गवास हो जानेपर, उनके सच्छिष्य **पंडितवर्य श्री आनंद ऋषिजी महाराज**के पास एक पत्र निम्न आशयका भेजे. वह पत्र इस प्रकार है.

कच्छ मुजपुर–जैन स्थानक

ता. ८-९-२७

परम पुनीत पूज्यार्ह, मुनिकुलमंडन, शास्त्रज्ञाने गरिष्ठ मुनि महोदय, श्रीमान् मुनीजी **श्री आनंद ऋषिजी** की सुयोग्य भावनामा चातुर्मासिक स्थान–

हिंगणघाट

आप महोदयनो पत्र ता. १८-८-२७ नो लखेल मळ्यो. वांची प्रमोदानुभव थयो. घणे वखते तमारा समाचार मळवाथी संयमरागवृद्धी थई. हे संयते! गुरुरूप वृक्षपर शिष्यरूप लता संजीवनी रहे छे. संसारसंबंधी मोह रागोत्पन्न छे. गुरु संबंध वीतराग भाव-पोषक बल अर्पे छे. तस्मात् कारणे गुरुवियोगे हृदय व्याकुलता उपजे, ए संभव छे; परंतु वियोग विरह ए पण एक स्थितिदायक छे. किं ? जे गुरुनी हयाती सुधी जेटला प्रमाणमां जे गुरुदेवने ओलखवानी जरूर, सेवानी उपासनानी, लाभ लेवानी, तरवानी ज्ञान पिपासा तृप्त करवानी, हृदय अंतःकरण अने मगज अने जीवनने संस्कारी बनावी समर्थ बनाववानी असाधारण अगत्य होय,तथापि गुरूनी हाजरी हयाति दरमियान न थवा पाम्युं होय, ते गुरुदेवना वियोगरूपी अग्नीथी सदाकाल अथवा केटलेक काल दाह अने भानकारक थाय छे. आप मुनि गुरुस्मरण, ध्यानादिवडे गुरु अने प्रभु शासन दीपाववाने समर्थ बनो, एज अमारी प्रबल पण समर्थ भावना छे, के जे आपने प्राप्त हो.

आप महोदय! आपना सद्गत गुरुदेवनुं स्मारक कोई पण रीते करवा इच्छो छो? स्मारक कोई पण संस्था द्वारा साध्य थाय. विद्या, आश्रय, अने स्थान द्वारा थई शके; परंतु आपनी शक्ति संयोग साधन अने परिस्थितिपर आधार राखे छे. अने कशुं पण न थइ शके तेवा संयेगो होय तो आप श्रीमानना संप्रदायमां भूतपूर्व मुनिराजोनी काव्यकृति, लेखकृति, अने ग्रंथकृति विगेरे जे होय तेने सुविहित रीते गोठवी छपावी प्रगट करवानो उपदेश, प्रबंध अने व्यवस्था करावरानी जरूर अमोने समजाय छे छेवट **श्रीमान् रत्नऋषिजी महाराज** अने **श्रीमान् तिलोक ऋषिजी महाराज** ना जीवनचरित्र छपावी प्रगट करावबानी अने ते जोवानी अभिलाषा छे. आपनाथी बनी शके तेम होय तो प्रयास सेवशो. हाल एज संयमानुराग राखजो इत्योम् वीरम्

भवदीय

मुनि नागचंद्रजी अने मुनि मंडलनी यथायोग्य वंदना, शांतिः।

एवम् और भी अन्य २ संत व आर्याजी तथा सुश्रावकोंकी भावना तथा अभिलाषा महाराजश्रीका जीवनचरित्र प्रकाशित होनेकी उत्पन्न हुई; परंत **श्री आनंद ऋषिजी** इस विषयमें तटस्थ रहे. कारण कि अल्पावस्थामें आपको छोडकर आपके गुरुवर्य **श्रीरत्न ऋषिजी** महाराज स्वर्गारूढ हुए, अतः समाजका सब भार आपके आश्रित हुवा. नित्य नैमित्तिक व्याख्या-

नादिक कार्यों के पश्चात् आए हुए जिज्ञासु जनोंके साथ प्रश्नोत्तर वगैरहमें सब काल व्यतीत हो जानेसे समयका अभाव था।

स. १९८८ के चातुर्मासमें जोदवड़में श्रीउत्तम ऋषिजी के अध्यापनार्थ मैं आया उस समय श्रीआनन्द ऋषिजी ने इस विषयकी चर्चा मेरे सामने रक्खी कि " मेरे अध्ययनकालमें पूनासे अहमदनगर तक जितने स्थानोंमें पूज्यपाद श्री तिलोक ऋषिजी महाराजका पदार्पण हुवा था, प्राय सब आप देख चुके है उस कालमें वृद्धोंद्वारा तत्तत्स्थानोंमें महाराजश्रीके विषयमें बातें सुन चुके हैं और महाराज श्री के हाथका लिखा हुवा दिनचर्यापत्रका उतारा बहुत कुछ मेरे पास है, यदि आपकी इच्छा होवे तो पूज्यपाद महाराजश्री का जीवनचरित्र अवलोकन करनेका लाभ सबको दीजिये, परन्तु इस जीवन-चरित्रमें सिर्फ जितनी बातें वृद्धोंके द्वारा आपके श्रवणपथमें आई हैं जो महाराज श्री के हस्तलिखित प्रमाणभूत हैं, वेही बातें मध्यरूपसे दरशाई जाय "

इस बातको स्वीकार कर आज निशिगुणसपन्न, जैनागमकेसरी, कवीन्द्र, प्रात स्मरणीय, पूज्यपाद श्री १००८ श्री तिलोक ऋषिजी महाराजका संक्षिप्त जीवनचरित्र समाजके सामने उपस्थित करनेमें मुझको अत्यत आल्हाद पैदा होता है, परंच उसके साथ ही साथ खेद यह उत्पन्न होता है कि जिस महान् पुरुषका यश माल्वा, मेवाड, मारवाड, पजाब, कच्छ, गुजरात, महाराष्ट्र, वराड, निजाम स्टेट आदि देशोंके कोने २ में आज भी सब मनुष्योंके श्रवणरंध्रमें अमरवत् गुंजारव कर रहा है, तथा जिनके पच परमेष्ठीके कविताको आबाल वृद्ध श्रावक श्राविकागण प्रतिक्रमणमें अहर्निश प्रेमपूर्वक गान करते हैं, उस जग-द्विख्यात आदर्श महात्माका चरित्र मेरे ऐसे साधारण व्यक्तीसे लिखनेका साहस करना मानो सूर्यको देखनेके लिए दीपक जलाना है। तथापि--

सोई भरोस मेरे मन आवा, कोन सुसग बडाई पावा।
धूमौ तजे सहज करुआई, अगर प्रसग सुगध बसाई ॥ १ ॥

परम वैष्णव रामचद्रचरणानुरागी गोस्वामी तुलसीदासजीके इस उक्तिके अनुसार यथामति लिखनेके लिए लेखनी उठा रहा हू क्योंकि जिस महात्माके अलौकिक कर्त-व्योंको श्रवण तथा अवलोकन कर श्रोतागण वशाके शब्दपर मोहित हुये नागके समान डोलने लगते हैं, उसी परम शास्त्रविनयी महान पुरुषका परम पावन यश मेरे आत्मा तथा बुद्धीको अवश्य पवित्र करेगा

अहिंसाप्रवर्तिगजनेगरी इस चरित्रनायककी परिमितकालीन अद्भुत कर्तव्योंका यदि मैं अपने अल्पबुद्धिसे वर्णन करूं तो भी वह एक बृहत् पुस्तक हो सकता है इस भयसे सुक्ष्मरूपमें यह चरित्र दिया जाता है कि जिसका आद्योपान्त वाचन श्रवण मनन कर जिज्ञासुगण परम लाभ उठावेंगे और यदि इस लेख में व्यवहारिक तथा साहित्य सम्बन्धि लेखोंकी अधिकता या न्यूनता दृष्टि गोचर होवे तो लेखक को क्षमाप्रदान करेंगे

पं राजधारी त्रिपाठी गोरखपुरीय।

संस्कृते पूज्य पादस्य गुरुपरम्परा हित जीवनचरित्रम्

नत्वाऽथ शासनपति महंतसु वीरम्,
स्तुत्वा गिरं निखिलजन्मिगुरोश्च तस्य ॥
जिज्ञासुवर्गप्रमुदे ऋषिपुङ्गवानाम्,
पाटावलिं वितनुते स्वश्रुतक्रमेण ॥ १ ॥

आदित्यवंशप्रभवाः खलु कोशलेन्द्राः,
काले गतेऽथ विदिता रघुवंशनाम्ना ॥
एवं हि संयतिसमाजमहर्षिवर्गाः,
जाताः 'कहान्' जि ऋषिगच्छप्रसिद्धिभाजः ॥ २ ॥

श्रीमत्सुपूज्यपदवीं ऋषिपुंगवानाम्,
रूढः 'कहान्' जी ऋषिरद्य न भूतलेऽस्ति ॥
जागर्ति तद्गुणगणप्रखरस्तथापि,
एतावता स विदितो विदितप्रभावः ॥ ३ ॥

तत्पादयार्तिरमचङ्कृषिवर्गमुख्यः,
ताराऋषिस्सकलशास्त्रविचारदक्षः ॥
कालाऋषिस्तदनु पूज्यपदेऽधिरूढः,
एवंक्रमेण बखस् (बख्तू) ऋषिपूज्यपादः ॥ ४ ॥

पूज्योऽथधन्य (धनजी) ऋषिरग्रसरो मुनीना,
भयवंतशिष्यप्रवरः खलु तस्य जातः ॥
तच्छिष्यलोकविदितः प्रथितप्रभावो,
जातस्त्रिलोक इति लोकललामभूतः ॥ ५ ॥

अस्त्येकं रतलाम नाम नगरं शोभाशिरोमण्ण,
यस्मिन्श्रीदुलिचन्द नाम विदित श्रीमानभूच्छीलवान्
नानू नाम निरूपिता गुणवती साक्षात्क्षमारूपिणी,
भार्याजीजनदस्य धन्यदिवसे सन्तानरत्नत्रयीम् ॥ ६ ॥

वेदाकाशनिधीश्वराख्यगणिते चैत्रे शुभे हायने,
पक्षे कृष्णतमे तृतीयदिवसे विष्णुर्दिवेशेष्विव ।
नक्षत्रेषु यथा हिमांशुरभव पुत्र " सुराणा " मणि ,
गोत्रोद्धारणकारण स विबुधैर्नाम्ना तिलोक कृत ॥ ७ ॥

धन्येऽब्दे नगरञ्च पण्डितमणि प्राप्तोऽयवन्तामुनि ,
साध धर्मपरैरपारमतिभि शिष्यैस्तथा साधुभि ।
तस्योपाधिपराङ्मुखे सुवचने प्राप्ता विराग सती,
श्रीनानू शरण गता मुनिपते सन्तानरत्नै सह ॥ ८ ॥

वेदैकग्रहरात्रिभूषणमिते माघे च पक्षे सिते,
सौम्यर्क्षे प्रतिपत्तिथौ निजवयोद्धि पञ्चके हायने ।
पूर्णे सर्वकलाभिरङ्कविकलश्चन्द्रो यथा स्व गुरु,
स्वीकृत्य प्रवर मुनिं जिनमुनिर्जातस्तिलोक प्रभु ॥९॥

काले स्वल्पतमे तपोभिरमल सम्प्राप्य ज्ञानामृत,
निर्माय स्वयश शरीरमभर पूर्वार्जितै कर्मभि ।
कायोत्सर्गपरायणेन मनसा ध्यायन्प्रभु शाश्वत,
मोहग्राहभयावह जगदुदन्वन्त तरीतु सदा ॥ १० ॥

शास्त्राणां समुपेत्य सप्तदश च भृश यथा पक्षिणा,
नित्य पोषणतत्पर मुनिवरं शान्त नितान्त रतम् ।
तद्भक्तिरसानुभावभरिता पीयूषमवर्षिणी,
ध्यानज्योतिरपास्तकिल्बिषमिम प्राप्ता कविरत्नप्रभा ॥११॥

एषा षष्ठिसहस्रपद्यरचना रम्या मुनेर्भारती,
गायन्ती स्तुतियोग्यदिव्यपुरुषान्सीताचरित्रादिषु ।
लोकानुग्रहहेतवे सुविदुषां चेतःप्रसादाय च,
पूर्णा शान्तरसेन जन्हुतनया गङ्गेव विभ्राजति ॥ १२ ॥

हंसा वै सरसीमिव प्रतिदिनं फुल्लैःसरोजैर्युतां,
नानाभावविभावितां समभजन्वाणीं गुणग्राहिणः ।
विद्वान्सो मुनयः प्रसिद्धयतयो वार्ताप्रसङ्गादिषु,
प्राशंसन्नतिहर्षिता मुनिपतेरष्टावधानां प्रभाम् ॥ १३ ॥

गोकर्णप्रमिते द्वितीयमलिखद्यो मूलसूत्रन्दले,
शद्वैः स्पष्टविभासितैः सुविमलं शास्त्रं सपुच्छीसुणम् ।
लोकास्तस्य प्रशस्तलेखनकलानैपुण्यवारांनिधे-
र्गाम्भीर्यप्रतिमापनेऽप्यविभवो मुग्धा इवाश्चर्यतः ॥ १४ ॥

चित्रं वर्णमयं मुनेर्भगवतीशास्त्रानुसारं चितं,
श्रीसिंहासनहस्तिपालसहितो विज्ञायते कुञ्जरः ।
मन्ये तद्व्यरचि प्रवीणमुनिनाऽगाधामपारामपि,
एनां चित्रकलानदीमतिबलामालोढितुं यत्नतः ॥१५॥

एवंन्चाश्वयुतःसुवर्णरचनादेदीप्यमानो रथः
शीलाङ्कैःसुविराजितो विरचितःसम्मोहनश्चेतसाम् ।
अन्तं याति विषादकण्टकयुता या मोहभूमेरिमान्,
शीलादीन्परिशीलयन्सुमनसः स्वान्तं समारुह्य यत् ॥१६॥

पूर्णा जैनमतानुयायिभिरहो मार्गस्य काठिन्यतः,
आसीद्वैभवदीप्तदक्षिणदिशा शून्या मुनीनां गणैः ।
आत्मानं परितोष्य बोधपयसा जित्वा पिपासामपि,
धर्मोद्धारणकारणेन मुनिना सेयं सनाथीकृता ॥ १७ ॥

नोट—१ आठ प्रश्नोंका उत्तर देना यह अष्टावधान नहीं किंतु एकसाथ-लिखना-पढाना-पासमें बैठे हुए लोगों के भाषण का अनुमान करना ऐसे आठ अवधान करते थे

प्राप्तो " घोडनदे"ऽत्र रत्नमिव तं श्रीरत्ननामा मुनिः,
प्राप्त्या यस्य सुचण्डमार्गजलधमेन्ध कृतार्थोऽभवत्
आपाढे नवमीदिन सितदले प्राप्त स दीक्षाव्रती ,
शिष्यत्व रसपायकग्रहहिमज्योतिर्मिते हायने ॥ १८ ॥

शिष्यैरस्तसमस्तदोषनिचयै' संसेवित श्रीमुनि.,
ग्रामंग्राममुपेत्य शास्त्रकथित धर्म समादिष्टवान् ।
य श्रुत्वा बहुलाप्यजैनजनता जैन मत शाश्वतं,
ससारोदधिपोतरूपिणमिम संश्रित्य शोभायते ॥ १९ ॥

एव वर्षचतुष्टय मुनिवरै स्वीय प्रयासाम्बुभि ,
सिक्तो धर्मतरु सुगंधसुमनोभि सेवित स्थापित ।
ससारीयविपाकमोहमदिरोन्मादेन मत्तो जन,--
श्छायां यस्य समेत्य सौख्यजननीं प्राप्नोति शान्ति शुभाम्॥ २० ॥

संप्राप्त. स मुनीश्वरोऽथ नगरं प्रावट्समतुं यापितु,
तत्राकस्मिकरोगरुग्णवदनो ज्योति पर चिन्तयन् ।
आकाशश्रुतिरत्नचन्द्रगणिते वर्षे सिते श्रावणे,
प्राप्तो दिव्यदशा द्वितीयदिवसे वैमानिकै सत्कृत ॥ २१ ॥

आयात स्मृतिमार्गमप्यविरत दत्ते वियोगो मुने
शल्यानीव मन सुधी ततमसा सान्द्रं मुनीनामपि ।
किन्त्वेन सुविचार्य शास्त्रवचन शाम्यन्ति तेषा व्यथा ,
कालेऽस्मिन्नवसर्पिणीति गदिते को वामरत्व गत ॥ २२ ॥

समाप्य मानपर्वीं निखिलोध्वपुसा,
लोके परत्र च चिर खलु मोदते य ।
श्रीपूज्यपादकमलस्य गुरोश्च तस्य,
शृण्वन् स्तुवन् गुणगणान् मुदमाप्नुवन्तु ॥२३॥

॥ पूज्यपाद श्री तिलोकऋषिजी महाराजका जीवन वृत्तान्त ॥

महाराज श्री की गुरुपरम्परा.

विक्रमसंवत्सरके पन्द्रहवीं शताब्दी के प्रारम्भ कालमें सूरत निवासी वीरजी वोरकी पुत्री फूलाबाई के कुक्षिसें **लवजी** नाम के पुत्र उत्पन्न हुए. वे अनेक शास्त्रोंका अभ्यास कर माता पिताकी आज्ञानुसार **लोंकागच्छ** में दीक्षा धारण कर शुद्धाचार पालन करते हुए शास्त्रानुसार शुद्ध सद्बोध तथा जैन मान्यओ के शुद्धाचारको सभी जनताके हृदयमें भरते हुए ग्रामानुग्राम विचरने लगे। उनके पश्चात् **श्री सोमजी ऋषिजी** पाटपर विराजमान हुए, तत्पश्चात् **पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी** महाराज पाटपर सुशोभित हुए, और वही से उनके नाम से सम्प्रदाय की स्थापना हुई, पूज्यश्री को ४०००० चालिश हजार गाथाएँ कंठस्थ थी, यह परम्परा द्वारा सुना जाता है. यद्यपि ऋषिसम्प्रदाय सर्वसम्प्रदायोंमें प्राथमिक तथा प्रवर्तक कही जाती है तथापि जैसे सूर्यवंशीय राजगण प्रबलप्रतापी राजा रघुके कालसें रघुवंशी कहलाये, वैसेही **पूज्यश्री कहानजी ऋषिजी** के नामसे यह **ऋषि सम्प्रदाय** विख्यात हुवा। पूज्यश्रीके बाद क्रमसे **पूज्यश्री तारा ऋषिजी, पूज्यश्री काला ऋषिजी, पूज्यश्री बक्षुऋषिजी** आचार्य पदपर आरूढ हुए. पूज्यश्रीके छठवें पीढीमें तपस्वीराज **श्री देवजीऋषिजी** महाराज विराजमान है। पूज्य **श्री बक्षूऋषिजी** महाराजके पाटपर **पूज्यश्री धनजी ऋषिजी** विराजमान हुए, उनके प्रथम शिष्य **श्रीअयवंता ऋषिजी** द्वितीय **श्रीखबाऋषिजी** महाराज हुए. **श्री अयवंता ऋषिजी** के पाटवी शिष्य चरित्र नायक **श्री तिलोक ऋषिजी** महाराज हैं जिनका सूक्ष्म जीवनचरित्र आपके करमें सुशोभित है. आपके पाटवी शिष्य **श्री रत्नऋषिजी** महाराज हुए. प्रशिष्य **श्री आनन्द ऋषिजी** महाराज विद्यमान हैं. महाराज श्री के शिष्य प्रशिष्य परम्परा सविस्तर परिशिष्ट में दिए है. और महाराज **श्री खबाऋषिजी** के प्रशिष्य **पूज्यश्री अमोलक ऋषिजी** महाराज विद्यमान हैं, जो कि जैनशास्त्रोंका भाषान्तर तथा ग्रंथ निर्माण कर समाज में सुशोभित हैं। **श्री अयवंता ऋषिजी** महाराजके द्वितीय शिष्य **श्री लालजी ऋषिजी** महाराज थे आपके शिष्य विद्वद् रत्न मुनि **श्री दौलत ऋषिजी** महाराज थे जिनके पाटवी शिष्य मुनि **श्री मोहन ऋषिजी** महाराज विद्यमान हैं।

॥ अध्याय ॥ १ ॥

महाराजश्रीकी जन्मभूमि तथा पूर्वचरित.

मालवदेशमें बहुत प्राचीन कालसे वसा हुवा **रतलाम** नामका शहर है, वहांपर ओसवाल जातिके सुराणा गोत्रमें उत्पन्न हुए समृद्धिसंपन्न प्रतिष्ठित **श्रेष्ठी " दुलीचंदजी "** नामक श्रावक रहते थे। पर्याप्त संपत्ति इहलौकिक सुखसाधनका कारण होनेपर भी आप सदैव " **पद्मपत्रमिवांभसा** " अर्थात जलमें कमलदलके समान निर्लेप रहते थे. किसीनें क्या कहा है:-

वसन् विषयमध्येऽपि न वसत्येव बुद्धिमान् ।
सचसत्येव दुर्बुद्धिरसत्सु विषयेष्वपि ॥ १ ॥

अर्थात् बुद्धिमान पुरुष सांसारिक विषय वासनाके बीचमें रहकर भी उससे उदासीन रहते हैं, दुर्बुद्धि लोग अनित्य विषयोंमें सांसारिक साधन नहीं होनेपर भी सदा उसीमें लीन रहते हैं। शेठजी बाह्यदृष्टिसे व्यवहारिक व्यापारादिक कार्योंको करते हुए बहुधा अपने समयको सन्त-मुनिराजोंकी संगति तथा शास्त्रके अभ्यास-श्रवण मननमें बिताते थे। अपने तन धनको धर्मके लिये न्योछावर करनेको सदा कटिबद्ध थे

दुलीचंदजी शेठ की धर्मपत्नीका नाम नानूबाई था यह बाई पवित्रता पतिव्रता आचार विचारकी लावण्यमयी मूर्ति थी दोनों सध्यामें सामायिक, प्रतिक्रमण तथा भगवद्भजन, सत्पात्रदान इत्यादि सत्कर्मोंमें प्रवृत्त रहती थी। बाईजीका जितना धार्मिक ज्ञान तथा चरित्र ऊंचा था, उतनाही सांसारिक व्यवहारमें पतिके साथ अपना अनुपम प्रेमभाव प्रगट करके वास्तविक अर्द्धांगिनी शब्दको सिद्ध कर दिखाया था।

इस प्रकारसे सांसारिक सुखका अनुभव करते हुए रत्नगर्भा बाईजीके कुक्षीसे प्रथम धनराजजी दुसरे कुंवरमलजी ये दो पुत्र और हीराबाई एक पुत्री उत्पन्न होनेके बाद विक्रम संवत् १९०४ के चैत्र कृष्ण तृतीया बुधवार को एक ऐसे पवित्रात्मा प्रगट हुए कि उस भव्यात्माका शरीर संस्थान कमलनेत्र सुवर्णवत् मनोहर भव्याकृतिको देखकर प्राणीमात्रके हृदयमें अपूर्व आल्हाद पैदा होता था अत एव यथार्थ तिलोकचन्द्र नामसे वह लोकमें विख्यात हुए उनका हस्तलिखित जन्मपत्र इस प्रकार है-

विक्रम शुभ संवत् १९०४ शके १७६९ उत्तरायणे रवौ वसंततौ चैत्रमासे कृष्ण पक्षे तृतीयायां तिथौ घट्य ६।०। चित्रानक्षत्रे घट्यादय १०-३७ व्याघातयोगे ३९-० सूर्योदयादिष्ट घटी ३३-५०। सूर्य मीन सक्रांतेगतांशा १२ समये जन्म।

जन्माग चक्रम्



तिलोकचंद्रजी जब कुमारावस्थामें थे,उसी समयसे व्यवहारिक लिपिज्ञानके साथ माताके द्वारा धार्मिक शिक्षा भी बहुत कुछ प्राप्त कर [illegible] और [illegible] आयुजीके विषयमें [illegible] चार माह पहले ही आपके पिताजीका जीवन प्रदीप [illegible] सुखसे आप एकांत वंचित रहे।

॥ अध्याय ॥

वैराग्य

विक्रम संवत् १९१४ में श्रीमज्जैनाचार्य [illegible] कहानजी ऋषिजी महाराजके [illegible] ने जालनाधारा महाराज अपने शिष्य वर्गसे [illegible] पधारे, आपके

थे। अपने पुत्रों और पुत्रीको साथ लेकर त्रिलोकचंद्रजीकी माता नानूबाई भी समाजमें
ठी थीं। उस रोज महाराजश्रीका व्याख्यान "न वैराग्यात्परो बन्धुर्न संसारात् परो रिपुः"
र्थात् वैराग्यसे बढकर कोई अपना बंधु नहीं है, और सांसारिक विषयोंसे बढकर कोई
त्रु नहीं है; इस विषयपर अत्यंत प्रभावशाली व्याख्यान हुवा। व्याख्यान श्रवण करते ही
पतिवियोग दुःखिता नानूबाईको शुद्ध वैराग्य उत्पन्न हुआ और पितृहीन अपने चारों
संतानोंको छोडकर दीक्षा लेनेके लिये अपना दृढ निश्चय कर लिया.

माताकी यह दशा देखकर **हीराबाई** जिसकी सगाई आंबावाले श्रीलछमनदासजी
नवयुवकके साथ हो चुकी थी, वह भी माताकी अनुगामिनी होनेके लिये तयार होगई. परि-
वारके तथा इतर संबंधी लोगोंने सांसारिक बातोंसे बहुत कुछ प्रलोभन दिया. परंच वह बाइ
अपनी कुमारी अवस्थामें भी अपने ध्येयसे तनिक भी चलायमान नहीं हुई, वैराग्यपर कायम रही.

उस समय तिलोकचंद्रजीकी अवस्था ९ नव वर्ष आठ माहकी थी. परंच प्रतिष्ठित
समृद्धिसंपन्न गृहमें जन्म लेनेसे सैलानेवाले चुन्नीबाईकी कन्या गुलाबकंवरके साथ सगाई हो
चुकी थी. उपदेश श्रवण करनेसे तथा माता और अग्रजा भगिनी दशाको देखकर उनका
भी आत्मा मोहनिद्रासे जागृत हुवा. उन्हें वैराग्य स्फुरित हुआ. संसारकी अनित्यताका
प्रत्यक्ष होने लगा. शाश्वत सुखके तरफ मन दौडा और अपनी माता तथा बहनसे पहलेही
संयम लेनेके लिये उत्सुक हो गये. और उनके साथ साथ मध्यम भ्राता **कुअरमलजी** भी
उनके सहगामी बननेको कटिबद्ध होगये.

वसिष्ठजीने रामचंद्रजीसे कहा है–

ते महान्तो महाप्राज्ञाः निमित्तेन विनैव हि ।
वैराग्यं जायते येषां तेषां त्वममलमानसाम् ॥१॥

अर्थात्- वे महाबुद्धिमान महात्मागण वास्तविक धन्य है कि जिनके निर्मल मनमें
विनाकारण वैराग्य उत्पन्न होता है। यथार्थ इस बातको तिलोकचन्दजीने सिद्धकर दिखादिया.
पूर्वका संस्कार उदय हुआ. अपूर्ण १० दश वर्षकीही अवस्थामें ऐसा कठिन क्षुरधारासम
संयम व्रतपर स्वतः वैराग्यपूर्वक चढनेको तैयार हो गये। पुण्यात्मा पुरुषको उच्चपदपर
जानेके लिये अतिकठिन भी मार्ग अत्यन्त सुगम हो जाता है. आपके वैराग्यको माताजी
अपने प्रेमभावसें कुछ अन्तराय उपस्थित कर सकती, परंच पुत्रसें प्रथम वैराग्यारूढ होनेसे
पुत्रको समझानेके लिये किंचित्मात्र साधन उनके पास न रहा.

॥ अध्याय ॥३॥

संवत १९१४ माघ कृष्ण प्रतिपद् गुरुवारको दीक्षा काल.

शहरमें चारोंतर्फ इस बातकी सनसनी फैल गई, दीक्षाकाल नियत होगया, पंडितवर्य
श्री अयवंता ऋषिजी महाराज वहां विराजमानही थे. आसपासके औरभी साधु तथा
आर्याजीका शुभागमन हुआ. संवत १९१४ माघ कृष्ण प्रतिपद् गुरुवारको चतुर्विध संघ
के समक्ष बडे समारोहके साथ दीक्षा महोत्सव हुआ, उस समय रतलाममें एकत्रित भया हुवा

जैनसंघ दर्शनार्थ था ऐसा परम्परागत बातें सुननेमे आता है कुअरमलजी व तिलोकचन्दजी विद्वदशिरोमणी श्री अयवता ऋषिजी महाराज के शिष्य हुए। और नानूबाई तथा हीराबाई सतीशिरोमणी दयाजी सिरदाराजी की शिष्या हुई इसप्रकार एकहा रोज एक घरकी चार दीक्षाएँ हुई अब केवल धनराजजी अपने पैतृक सम्पत्तिपर रह गये, श्री कुअर ऋषिजी महाराज आजीवन एकान्तर उपवास करते रहे और १ चोलपटा तथा १ चादर के ऊपर अपना निर्वाह करते थे, उन्हा महात्माने भोपालमे जाकर अनेक मन्दिर मार्गियोंको अपने प्रामाणिक सदुपदेशमें साधुमार्गी बनाये उन्हा के सदुपदेशमें शास्त्रोद्धारक पण्डितरत्न पूज्य श्री अमोलख ऋषिजी महाराज तथा उनके पिताजी श्री केवल ऋषिजी महाराज मन्दिर मार्गको छोडकर साधुव्रतको धारण किये। आश्चर्यमें महाराज श्रीतिलोक ऋषिजी की उम्र ९ वर्ष १० मासकी थी इसमे पाठकवृन्द अनुभव कर सकते हैं कि मनुष्यका क्या कर्तव्य है ? उसके जीवनका क्या उद्देश है ?

साराश यहकि—मनुष्ययोनिमें जन्म पाना यह साधारण बात नही है इस योनिमें जन्म लेनेके लिये देवतालोग भी लालायित रहते है, इसी योनिमें सारासार धर्माधर्मादिक तत्वोंका विचार करके समस्त बधनोंसे निर्मुक्त होकर शाश्वत शांतिको प्राप्त कर सकता है। इसलिये ऐसा अनुपम अमूल्य मनुष्य जीवनरूपी चिंतामणि रत्नको पाकर इसका दुरुपयोग नहीं करना चाहिये, ऐसाभी कभी दिलमें न लाना चाहिये कि मेरे लिये अभी समय बहुत है, क्योंकि कालरूपी शत्रु अपना वेग पकडकर बैठा है न मालुम किस समय खींच लेवे। परच यह ससार मोहरूपी जालमें चौतर्फ घिरा हुआ है, अज्ञानरूपी अन्धकारसे ढका हुआ है, अतएव ऐसेहा पथप्रदर्शक पुण्यात्माओंका चरित्र अवलम्बनकर चलना, अपार ससारसे पार होनेका सर्वोच्च साधन है

॥ अध्याय ॥४॥

शास्त्राभ्यास

श्री तिलोक ऋषिजी महाराजने गुरुजीके सेवा शुश्रूषाके साथ शास्त्राभ्यास प्रारभ किया जिस शास्त्रको आप हाथमे लेते थे मानों वह उनके हृदयकमलपर पहलेहीसे निवास कर चुका था। ठीकही है—"बहुना जन्मनामन्ते विवेकी जायते पुमान्" अनेक जन्मोंके अभ्याससे पुरुष विद्वान् होता है। स्वल्पकालमेंही आपने "श्री दशवैकालिक सूत्र, उत्तराध्ययनसूत्र, सूयगडागजी, अनुत्तरोपपातिक, निरियावलिकादी पच सूत्र, अतगड सूत्र वगैरह १७ शास्त्र कठस्थ कर लिये थे, शास्त्रस्वाध्यायमें अविरल प्रेम था बहुतसे सत तथा श्रावकोंने आपके द्वारा शास्त्रीय ज्ञान प्राप्त किया था, सतारावाले सुश्रावक बालमुकुन्दजी मुथा को शास्त्रका प्रारम्भिक शिक्षा आपहीके द्वारा हुई थी, वे कालांतरमें अच्छे शास्त्रज्ञ बने थे मुथाजी जीवनपर्यन्त हमेशा पूज्यपाद महाराजश्रीका गुणानुवाद करतेथे। महाराजश्री रात्रिमें प्रतिदिवस एक प्रहर ध्यानमें निमग्न होकर उत्तराध्ययनजी वगैरह शास्त्रोंका स्वाध्याय करते थे उस समय आपके कनिष्ट गुरुभ्राता श्री विजयऋषिजी महाराज

आपको मशक आदि जीवोंके परीषहसे बचानेके लिये प्रमार्जन करतेथे यह बात वृद्ध परम्परासे सुनी जाती है।

॥ अध्याय ॥५॥
कवित्वशक्ति.

महाराजश्री क्षणमात्र समयका दुरुपयोग नहीं करतेथे, आलस्यका लेशमात्र भी आपके पास नहीं था. आलस्यको परम शत्रु समझते थे. अतः उसका फल स्वरूप आपने थोडेही कालमें कवित्वशक्ति द्वारा गागरमें सागर भर दिया है. किसीने ठीक कहा है.

आलस्यं यदि न भवेज्जगत्यनर्थः,
को न स्याद्बहु धनको बहुश्रुतश्च ।
आलस्यादियमवनिः ससागरान्ता,
संपूर्णा नरपशुभिश्च निर्धनैश्च ॥१॥

अर्थात्- अनर्थकारी आलस्य यदि इस संसारमें नहीं होता तो अति धनाढ्य और प्रखर विद्वान् कौन नहीं होता ? परंच आलस्यके वजहसे समुद्रपर्यन्त यह पृथ्वी पशुतुल्य मनुष्योंसे और निर्धनोंसे भर गइ है. संवत १९२१ का चातुर्मास भी परम उपकारी **श्री अयवंता ऋषिजी** महाराजका सुजालपूरमें हुआ था. चातुर्मासके बाद क्रमशः विहार करके संवत १९२२ के आषाढमें मेसरोज पहुंचे वहींपर आषाढ शुद्ध ९ नवमी रविवारको सुगृहीतनामधेय **श्री अयवंताऋषिजी** महाराज अपना आयुष्य पूर्ण कर देवलोकारूढ हुए ! उस समय **श्री तिलोकऋषिजी** महाराजकी अवस्था १७ वर्ष ३ माहकी थी. गुरुवियोगसे आपके हृदयकमलपर अति कठिन आघात पहुंचा. परंच अपने आत्मज्ञान द्वारा संसरणशील संसारकी प्रगतिपर ध्यान देकर **"काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमतां"** इस तर्फ अपने चित्तवृत्तिको लगाये. नित्य नैमित्तिक कर्मोंसे कुछभी समय यदि आपको मिल जाताथा तो उसको काव्य रचनासे सफलतामें लातेथे !

महाराज श्रीके बनाये हुए काव्योंका ऋषि संप्रदाय तथा अन्य संप्रदायके बहुतसे साधु तथा आर्याजीके पास पता चलता है, परंच वे सब ग्रन्थ मुझको उपलब्ध नहीं हुए अतः उनकी नामावली नहीं दी है। सिर्फ आपके प्रशिष्य **श्री आनन्द ऋषिजी** के पास अप्रकाशित जितने ग्रन्थ हैं उनके नाम अंकित करते हैं १ श्री श्रेणिक चरित्र ढाल ८४ गाथा गणना ३२५०, २ श्री चंद्रकेवली चरित्र, ३ श्री समरादित्यकेवली चरित्र, ४ श्री सीता चरित्र, ५ धर्मबुद्धिपापबुद्धि चरित्र, ६ हंसकेशव चरित्र, ७ अर्जुनमाली चरित्र, ८ धन्नाशालिभद्र चरित्र, ९ भृगुपुरोहित चरित्र, १० हरिवंशकाव्य, ११ पंचवादी काव्य, १२ तिलोकबावनी प्रथम, १३ तिलोकबावनी द्वितीय, १४ तिलोकबावनी तृतीय अपूर्ण, १५ गजसुकुमारचरित्र १६, अमरकुमार चरित्र,१७नन्दमणिहार,चरित्र,१८वीररसप्रधान महावीर स्वामीचरित्र. ये सब ग्रंथ इस प्रकारके हैं की जिनको श्रवण करते हुए श्रोतागण आनन्द समुद्रमें मग्न हो जाते हैं. जिस व्यक्तिने कभी एकवारभी इन चरित्रोंको पढा या सुना है

यहा इसका अनुभव कर सकता है. ये ग्रन्थ प्राय शास्त्रोकेही आधारसे रचे गये हैं, ऐसा मेरा अनुमान है परन्तु इन ग्रन्थोंकी अनुपम अपूर्व रचना शैलीपर किमामा समाजका सहृदय मनुष्य मुक्तकंठसे प्रशंसा किये विना रह नही सकता है माघ काव्यमें लिखा है कि --

वर्णैं कतिपयैरेव ग्रथितस्य स्वरैरिव।
अनन्ता वाङ्मयस्याहो गेयस्यैव विचित्रता ॥ १ ॥

अर्थात्– वर्ण क ख ग घ वगैरह उतनेही रहते हैं षडज ऋषभ गान्धार आदिक स्वर सातही रहते है, परंच गानेवालोंके गानेमे फरक पड जाताहै यह गानेवालोंकी विचित्रता है. इन ग्रन्थोंके ग्रा १ प्रतिक्रमण सत्यबोध २ ज्ञानप्रदीपिक छपा हुवा है जो दक्षिण, खानदेश, बरार, निजामस्टेट वगैरह देशोंमें बहुतसे श्रावकोंके पास उपलब्ध हैं जिसकी द्वितीयावृत्ति फिर नागपूर सी०पी० में महाराज श्री तिलोक ऋषिजी के पाटवी शिष्य श्री रत्नऋषिजी महाराज के स्मारक स्वरूप 'श्री जैनधर्म प्रसारक" संस्थासे प्रकाशित हो रही है. इस प्रथमेभी महाराज श्री ने बनाये हुए जो अनेक रत्न है वे भी दर्शनीय है कुलग्रन्थ आपका बनाया हुआ प्रकाशित या अप्रकाशित आज करीब गाथा संख्या ७५ पचहत्तर हजारके उपलब्ध है, सोभी ये ग्रन्थ विक्रम संवत १९२७ के बाद जो रचे गये हैं वेही हैं, उसके पूर्वका पत्ता नही चलता है आप विहार करते हुए जिस वर्ष तथा जिस स्थानपर जो ग्रन्थ या कविता निर्माण किये है, वे सब सूक्ष्मरूपसे अध्याय ९ वेंमे दर्शाये जायगे

॥ अध्याय ॥६॥

लेखनकला

महाराजश्रीका लेखनकार्यमेंभी उत्कृष्ट प्रेमथा इसकार्यमेंभी आप उच्च शिखरपर आरूढ थे यह कहनेमे तनिकभी अत्युक्ति न होगा पूज्यपाद महाराजश्रीके हातका लिखा हुवा एक पत्र आपके प्रशिष्य अर्थात् स्वर्गीय श्री रत्न ऋषिजी महाराजके सुशिष्य श्री आनन्द ऋषिजी के पास मौजूद है जो९इच लम्बा ४इच चौडाइके विस्तारमें है उसके तीन अंशमें श्री दशवैकालिक सूत्र सम्पूर्ण लिखा हुवा है चौथे अंशमे पुच्छीसुणं मूल अर्थात श्री सुयगडांगसूत्र के प्रथम श्रुतस्कंधका छठवा अध्ययन जिसमे श्री महावीर स्वामी की स्तुति की है वह और २५६ चालाका घोकडा लिखा हुवा है यह दृश्य जिन्होंनेने प्रत्यक्ष नहीं लिया होगा, उनको लेखककी असाधता प्रतीत होनेकी सम्भावना है परंच ऐसे ५ ६ पत्र महाराजश्रीके हातके लिखे हुए अभी २ मुनिराजोंके पास सुरक्षित हैं संवत १९८१ मे कच्छ (कमागा) से श्री नागचंद्रजी स्वामी ने श्री रत्न ऋषिजी महाराज के पाससे मगाकर उनका फोटो लेकर फोटोका कई प्रतियोंके साथ उसको वापस कर दिये पूज्यपाद महाराज श्री दोनों हाथ तथा दोनों पैरसे लिख सकते थे और एक समयमें आठ अवधान आप कर सकते थे ये सब बातोंके प्रमाण भूत अबभी दाक्षिण अहमदनगर तथा पूना जिल्हेमे दो चार वृद्ध विद्यमान है

॥ अध्याय ॥ ७ ॥

चित्रकला.

पूज्यपाद महाराज श्री चित्रकलामें भी अत्यन्त प्रवीण थे. उन्होंने भगवतीजी शास्त्रानुसार कवितामय तथा गद्यमय **ज्ञानकुंजर** तैयार किये हैं. जिसमें अम्बारी सवारसहित एक वृहत् हाथीका आकार है. सूंढसे प्रारम्भकर पढते जाइये क्रमशः हाथीका सब अवयव तैयार होता जायगा और वृहत् हस्तीके आकृतिके अन्दर एक चवन्नीभर जगहमें सब अवयव सहित ६५ हाथीके आकार है, इसकाभी फोटो **श्री नागचन्द्रजी** स्वामीके पास मौजूद है. एवं चित्रमय **शीलरथ** तथा १॥ इंचके दीर्घ विस्तारमें सम्पूर्ण आनुपूर्वी इत्यादिक आपके चित्रकलाविषयक दर्शनीय अपूर्व चीजें **श्री आनन्द ऋषिजी** के पास मौजूद हैं, विशेष उल्लेखनीय आपका बनाया हुआ एक **विचित्रालंकार** नामका काव्य है, जिसमें २४ चोवीस तीर्थंकरोंकी स्तुति दोहाछंदमें की गई है. उसहीके अन्दर छत्रबन्ध, दुर्गबन्ध, नमस्कार मंत्र वगैरह अनेक चीजें निकलती हैं, जिसको देखकर बडे २ कविलोग और विद्वानलोग भी आश्चर्य चकित हो जाते हैं। उस चित्रालंकारकाव्यका परिचय निम्न लिखित प्रकारसे है।

इसीके चारों तरफसे गोमूत्रिकाबंधमे तीन तरहके **नमोकार** मंत्रके अक्षर आए हुए हैं (१) णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं, एसोपंच नमोक्कारो सव्वपावप्पणासणो॥ मंगलाणंच सव्वेसिं, पढमं हवइमंगलम्॥ यह प्रसिद्ध नमोकार मंत्र है. (२) **श्रीचंद्रप्रज्ञप्तिसूत्र** के अन्दर दी हुई गाथामेंभी नमोकार है, वह इस प्रकारहै "नमोऊण असुरसुरगुरुलभुयंगपरिवंदिए गयकिलेसे। अरिहे सिद्धायरिये उवज्झाए सव्वसाहूए" इसमेंभी पांच पद आए हैं (३) " सिद्धाणं नमो किच्चा-संजयाणंच भावओ.। इसमेंभी नमोकार मंत्र संक्षिप्तरूपमें आया है. अर्थात् सिद्ध और साधु ऐसे दो पदोंको **श्री उत्तराध्यनसूत्रके** बीसवे अध्ययनमे यह प्रथम गाथाके पूर्वार्द्धसे लिया हैं.। सारांश-- अरिहंत और सिद्ध इन दो पदोंका सिद्ध इस पदमें समावेश होता है, और आचार्य, उपाध्याय और साधु ऐसे तीन पदोंका साधु शद्बमें समावेश होता है, क्योंकि साधु बननेके बादही आचार्य, उपाध्याय पदविया योग्यता होनेपर प्राप्त होती हैं.। और इस चित्रालंकार काव्यमेंही दो चौकडिया है (१) एकमें **दान, शील, तप, भाव** यह अक्षर आए है और (२) में **नाण, दंसण, चारित्र** ऐसे अक्षर आए है.इस काव्यमें श्रीमान-**तुंगाचार्य** प्रणीत **श्री भक्तामर स्तोत्र** का २६ वां श्लोक है, वह यह "तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ " वगैरह पूर्ण श्लोक है। और उसके आगे श्री दशवैकालिक सूत्रके प्रथम पहली गाथा है वह इस प्रकार है "धम्मो मंगलमुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो॥ देवाऽवि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो ॥ इति॥ इसके आगे काव्यालंकारके बीचमें ॐ नमः सिद्धेभ्यः ऐसे अक्षर निकलते है और चित्रालंकारके नीचे दोनो बाजूसे दो छत्रबन्ध है, इनमें महाराजश्रीनें संवत मिति देते हुए अपना नामभी उन अक्षरोंमें सम्मिलित किया

यहां इसका अनुभव कर सकता है। ये ग्रन्थ प्रायः शास्त्रोंके आधारसे रचे गये हैं, ऐसा मेरा अनुभव है परन्तु इन ग्रन्थोंकी अनुपम अपूर्व रचना शैलीपर किसीभी समाजका सहृदय मनुष्य मुक्तकंठसे प्रशंसा किये बिना रह नहीं सकता है। माघ काव्यमें लिखा है कि —

वर्णैः कतिपयैरेव ग्रथितस्य स्वरैरिव ।
अनन्ता वाङ्मयस्याहो गेयस्येव विचित्रता ॥ १ ॥

अर्थात् — गण स्वर गैरह इनेगिने रहते है षड्ज ऋषभ गान्धार आदिक स्वर सातही रहते हैं, परन्तु गानेवालोंके गानेमें फरक पड जाता है यह गानेवालोंकी विचित्रता है इन ग्रन्थोंमें श्री प्रतिक्रमण सत्यबोध ज्ञानग्रन्थ छपा हुवा है जो दक्षिण, खानदेश, बरार, निजामस्टेट वगैरह गांवोंमें बहुतसे श्रावकोंके पास उपलब्ध है जिसकी द्वितीयावृत्ति फिर नागपूर सी० पी० में महाराज श्री तिलोक ऋषिजी के पाटवी शिष्य श्री रत्नऋषिजी महाराज के स्मारक स्वरूप श्री जैनधर्म प्रभाकर' के नामसे प्रकाशित हो रहा है इस ग्रन्थमेंभी महाराज श्री के बनाये हुए जो अनेक रत्न हैं वे भी दर्शनीय है कुलग्रन्थ आपका बनाया हुआ प्रकाशित या अप्रकाशित आज करीब गाथा संख्या ७५ पचहत्तर हजारके उपलब्ध है, सोभी ये ग्रन्थ विक्रम संवत १९२७ के बाद जो रचे गये हैं वेही है, उसके पूर्वका पत्ता नहीं चलता है आप विहार करते हुए जिस वर्ष तथा जिस स्थानपर जो ग्रन्थ या कविता निर्माण किये है, वे सब संक्षेपरूपमें अध्याय ९ वेमें दर्शाये जायगें

॥ अध्याय ॥६॥
लेखनकला

महाराजश्रीका लेखनकलाभी उत्कृष्ट थी इस कलामेंभी आप उच्च शिखरपर आरूढ थे यह कहनेमें तनिकभी अत्युक्ति न होगा पूज्यपाद महाराजश्रीके हातका लिखा हुआ एक पत्र आपके प्रशिष्य अर्थात् स्वर्गीय श्री रत्न ऋषिजी महाराजके सुशिष्य श्री आनन्द ऋषिजी के पास मौजूद है जो९इंच लम्बा५इंच चौडाइके विस्तारमें है उसके तीन अंशमें श्री दशवैकालिक सूत्र सम्पूर्ण लिखा हुवा है चौथे अंशमें पुच्छीसुणं मूल अर्थात श्री सुयगडांगसूत्र के प्रथम श्रुतस्कन्धका छठवा अध्ययन जिसमें श्री महावीर स्वामी की स्तुति की है वह और २५६ कुगलाका कोष्टक लिखा हुआ है यह दृश्य जिनलोगोंने प्रत्यक्ष नहीं किया होगा, उनको लेखककी असत्यता प्रतीत होनेकी सम्भावना है परन्तु ऐसे ५-६ पत्र महाराजश्रीके हातके लिखे हुए अभी २ मुनिराजोंके पास सुरक्षित हैं संवत १९८१ मे कच्छ (कपाया) से श्री नागचंद्रजी स्वामी ने श्री रत्न ऋषिजी महाराज के पाससे मंगाकर उसका फोटो लेकर फोटोंकी कई प्रतियोंके साथ उसको वापस कर दिये पूज्यपाद महाराज श्री दोनों हाथ तथा दोनों पैरसे लिख सकते थे और एक समयमें आठ अवधान आप कर सकते थे ये सब बातोंके प्रमाण भूत अभी दक्षिण अहमदनगर तथा पूना जिलेमें दो चार वृद्ध विद्यमान है

॥ अध्याय ॥ ७ ॥

चित्रकला.

पूज्यपाद महाराज श्री चित्रकलामें भी अत्यन्त प्रवीण थे. उन्होंने भगवतीजी शास्त्रानुसार कवितामय तथा गद्यमय **ज्ञानकुंजर** तैयार किये है. जिसमे अम्बारी सवारसहित एक बृहत् हाथीका आकार है. सूंढसे प्रारम्भकर पढते जाइये क्रमशः हाथीका सब अवयव तैयार होता जायगा और बृहत् हस्तीके आकृतिके अन्दर एक चवन्नीभर जगहमें सब अवयव सहित ६५ हाथीके आकार है, इसकाभी फोटो **श्री नागचन्द्रजी** स्वामीके पास मौजूद है. एवं चित्रमय **शीलरथ** तथा १॥ इंचके दीर्घ विस्तारमें सम्पूर्ण आनुपूर्वी इत्यादिक आपके चित्रकलाविषयक दर्शनीय अपूर्व चीजें **श्री आनन्द ऋषिजी** के पास मौजूद हैं, विशेष उल्लेखनीय आपका बनाया हुआ एक **विचित्रालंकार** नामका काव्य है, जिसमें २४ चोवीस तीर्थंकरोंकी स्तुति दोहाछंदमें की गई है. उसहीके अन्दर छत्रबन्ध, दुर्गबन्ध, नमस्कार मंत्र वगैरह अनेक चीजें निकलती हैं, जिसको देखकर बडे २ कविलोग और विद्वानलोग भी आश्चर्य चकित हो जाते हैं। उस चित्रालंकारकाव्यका परिचय निम्न लिखित प्रकारसे है।

इसीके चारों तरफसे गोमूत्रिकाबंधमें तीन तरहके **नमोकार** मंत्रके अक्षर आए हुए हैं (१) णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं, एसोपंच नमोकारो सव्वपावप्पणासणो॥ मंगलाणंच सव्वेसिं, पढमं हवइमंगलम्॥ यह प्रसिद्ध नमोकार मंत्र है. (२) **श्रीचंद्रप्रज्ञप्तिसूत्र** के अन्दर दी हुई गाथामेंभी नमोकार है, वह इस प्रकारहै "नमंऊण असुरसुरगुरुलभुयंगपरिवंदिए गयकिलेसे। अरिहे सिद्धायरिये उवज्झाए सव्वसाहूए" इसमेंभी पांच पद आए है (३) " सिद्धाणं नमो किच्चासंजयाणंच भावओ.। इसमेंभी नमोकार मंत्र संक्षिप्तरूपमें आया है. अर्थात् सिद्ध और साधु ऐसे दो पदोंको **श्री उत्तराध्यनसूत्रके** वीसवे अध्ययनमें यह प्रथम गाथाके पूर्वार्द्धमें लिया हैं.। सारांश– अरिहंत और सिद्ध इन दो पदोंका सिद्ध इस पदमें समावेश होता है, और आचार्य, उपाध्याय और साधु ऐसे तीन पदोंका साधु शब्दमें समावेश होता है, क्योंकि साधु बननेके बादही आचार्य, उपाध्याय पदवियां योग्यता होनेपर प्राप्त होती हैं.। और इस चित्रालंकार काव्यमेंही दो चौकडिया है (१) एकमें **दान, शील, तप, भाव** यह अक्षर आए है और (२) में **नाण, दंसण, चारित्र** ऐसे अक्षर आए है.इस काव्यमें श्रीमानतुंगाचार्य प्रणीत **श्री भक्तामर स्तोत्र** का २६ वां श्लोक है, वह यह "तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ" वगैरह पूर्ण श्लोक है। और उसके आगे श्री दशवैकालिक सूत्रके प्रथम अध्ययनकी पहली गाथा है वह इस प्रकार है "धम्मो मंगलमुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो॥ देवावि तं णमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो ॥ इति॥ इसके आगे काव्यालंकारके वीचमें ॐ नमः सिद्धं ॥ ऐसे अक्षर निकलते है और चित्रालंकारके नीचे दोनो बाजूसे दो छत्रबन्ध है, इनमें पूज्यपाद महाराजश्रीने संवत मिति देते हुए अपना नामभी उन अक्षरोंमें सम्मिलित किया

है, वह ऐसा "भरत उगनासे अठावीस जाण, निश्चल केवली वेण प्रमाण ॥ ऋषिपचमी विचितरि अल्यार, तिलोकरिख कहे गुरु उपकार ॥ यह चौपाई छद है इन सब चीजोंका फोटो लेकर जीवन चरित्रमें सम्मिलित करने के लिये मैंने श्री आनन्दऋषिजी महाराजसे अनुरोध किया था, परन्तु चित्रोंके फोटो टाईप करानेमें विशेष व्यय है, इस वजहसे सब चित्र प्रकाशित न हुए परन्तु जहापर आपका पदार्पण हो, वहांके व्यक्तियोंने इन सब चीजोंका अवलोकन अवश्य करना चाहिये इनके देखनेसे प्रत्यक्ष मालूम होता है कि जैन समाजमें कैसे कैसे विद्वान् महात्मा गुणीपुरुष उत्पन्न हो गये है अपनाभी क्या कर्तव्य है-गृहस्थ अथवा सयमदशामें रहकर किस तरह अमूल्य मनुष्यजीवनका सदुपयोग करना चाहिये

॥ अध्याय ॥ ८ ॥

सत समागम तथा गुणग्राहकता

पूज्यपाद महाराज श्रीके समकालीन जो अच्छे अच्छे प्रसिद्ध विद्वान् थे, उनसे वे मिलाप करते थे उन महात्माओंके पास जो कुछ ग्रहण करने योग्य विषय होता था, उसको उत्कंठापूर्वक ग्रहण करते थे, इस विषयमें आप सतोष नहीं रखते थे

वशिष्ठजीनें रामचंद्रजीसे कहा है- हे रामचद्र !

येषा गुणेष्वसतोषो, येषा राग श्रुत प्रति,

सत्यव्यसनिनो ये च, ते नरा पशवोऽपरे ॥ १ ॥

अर्थात्—जो गुण ग्रहणके विषयमें असतोष रखते हैं और शास्त्रके विषयमें प्रेम रखते है, सत्य बोलना यही व्यसन जिनके पास है वेही मनुष्य हैं, और सब पशु हैं वास्तविक ये तीनों बातें महाराजश्रीमें मौजूद थीं आप पूज्य श्री रेखराजजी महाराज तथा पूज्य श्री धर्मदासजी महाराजके सम्प्रदायके ज्ञानचन्द्रजी तथा मोघजी स्वामी और कोटा सम्प्रदायके सुप्रसिद्ध विद्वान छगनलालजी महाराज, पडितवर्य श्री फकीरचन्दजी महाराज, पूज्य श्री उदयसागरजी महाराज वगैरह मुनिराजोंसे मिलाप करके उन लोगोंके प्रेमपात्र बने थे, और भी प्रसिद्ध मुनिराजोंका मिलाप हुआ था परन्तु कब किस स्थानपर मिलाप हुआ इस विषयमें महाराज श्री का हस्त लिखित कोई प्रमाण नहीं मिलनेसे देनेमें नहीं आया

॥ अध्याय ॥ ९ ॥

चातुर्मास

अध्याय ५ में हम लिख आये हैं कि अपूर्ण १८ वर्षकी अवस्थामें श्री तिलोकऋषिजी महाराज श्री के गुरुमहाराजका वियोग हुआ उसी समयमें आप गुरुजीका सब तरहका भार सभालने लगे सुजालपुरमें पूज्यपाद श्री अयवंताऋषिजी महाराज विक्रम सवत्

१९२१ का चातुर्मास कर चुकेथे. पवित्र पुरुष अपने पद पंकज द्वारा जिस स्थानको पावन करते हैं, वही तीर्थस्थान है, अतः पूज्य श्रीने संवत् १९२२ में प्रथम चातुर्मास सुजालपुरमें किया. इस प्राथमिक चातुर्मासमें बडाही उत्साह हुआ. अनेक श्रावक तथा श्राविकाओंने द्वादश व्रतका प्रत्याख्यान वगैरह लिया. दूर दूर से बहुत लोग दर्शनार्थ आए थे. व्याख्यान श्रवण कर संतुष्ट हुए. वहींसे आपकी कीर्तिरूपी भेरीका नाद दिशाओंमें प्रतिध्वनि करने लगा. चारोंतर्फ ज्ञानरूपी पद्म परिमलका सुगंध प्रसृत हुआ, व्याख्यानमें अंतगडजी सूत्रका उपदेश होता रहा. महाराज श्रीका गुरुवियोगके बाद यह प्रथमही चातुर्मास है। चातुर्मासके बाद विहारकर **उज्जैन, खाचरोद, रतलाम** वगैरह १५ क्षेत्रोंको पावनकर **संवत् १९२३ का चातुर्मास आपने मंदसोर** में किया. व्याख्यानमें **पन्नवणा और समवायाङ्ग,ज्ञाताजी** तथा **उत्तराध्ययन**का अध्ययन हुवा. अनेक प्रकारके व्रत प्रत्याख्यानादिक भी हुए. मंदसोरमें अच्छे अच्छे शास्त्रज्ञ श्रावक थे. आपका व्याख्यान श्रवण कर उनके दिलमें संतोष पैदा हुआ कि आपके द्वारा समाजका कुछ उद्धार अवश्य होगा परंच महाराजश्रीके अपूर्व उपदेशरूपी अमृतके पान करने की इच्छा अभी शांत नहीं हुई अतः चातुर्मासके विहारके बाद फिरभी मंदसोरमेंही चातुर्मास करनेके लिये श्रावक समुदायने अत्यन्त आग्रह किया अतः **संवत् १९२४ का चातुर्मासभी आपने ठाणा ३ से मंदसोर जीवागंज** में किया।

मंदसोरसे विहारकर अनुक्रमसे रतलाम, सलाने, चितौड, अजमेर वगैरह २१ क्षेत्रोंको पावन कर केकडी पधारे। कई स्थानोंकी चातुर्मासकी प्रार्थना चल रही थी आखिर बहुमतसे कोटाकी प्रार्थना स्वीकृत हुई. **संवत् १९२५ का चातुर्मास कोटा रामपुरा** में मनोहरदासजीके नोहरेमें हुआ. व्याख्यानमें **आचाराङ्गजी का** वाचन हुवा। आपके वक्तृत्व शक्तिपर मोहित होकर श्रोतागण कमलपर भ्रमरके समान लीन रहते थे. बडेही उत्साहके साथ वहांका चातुर्मास संपन्न हुआ.

कोटासे विहार कर क्रमशः झालरापाटन, अमरकोट, सारंगपुर होते हुए फाल्गुनमें सुजालपुर पधारे. उस समय वहांके विज्ञ श्रावकोंकी हर्षकी सीमा न रही. हाथमें आये हुए चिंतामणिको हाथसे बाहर नहीं जाने देना चाहिये. ऐसा विचार कर चातुर्मासकी प्रार्थना श्रावकोंने शुरू कर दिया. यहांके श्रावकोंका धर्मानुराग प्रेम भाव पहलेहि से था, फिरभी अत्यन्त उत्कृष्ट प्रेम देखकर प्रार्थना स्वीकृत हुई **संवत् १९२६ का चातुर्मास सुजालपुरमें** बडे उत्साहके साथ हुआ धर्मोन्नतीभी अधिक हुई। व्याख्यानमें **श्री अनुत्तरोववाई, श्री सुयगडांगजी** फर्माये गये। सुजालपुरसे विहारकर क्रमशः ३७ क्षेत्रोंको पावनकर जन्म स्थान **रतलाममें** पहुंचे वहाके संघका विशेषतः आग्रह हुआ कि यह क्षेत्र अपने नामसे तथा चौतर्फ का मुख्य केन्द्र होनेसे हरदम मुनिराजोंके आवागमनसे बहुत कुछ प्रतिष्ठा प्राप्त कर लिया है और आप ऐसे नररत्नको पैदा कर अपना नामभी यथार्थ स्पष्टीकरण कर चुका है परंच उस रत्नसे लाभ उठाने का यथेष्ट अवसर यहाके निवासियोंको न मिला, अतः हम लोगोंकी प्रार्थना है कि इस वर्षके चातुर्मास की प्रार्थना स्वीकारकर श्रीसंघको अनुगृहित कीजिये

१९२१ को चातुर्मास कर चुकेथे. पवित्र पुरुष अपने पद पंकज द्वारा जिस स्थानको पावन करते हैं, वही तीर्थस्थान है, अतः पूज्य श्रीने संवत् १९२२ में प्रथम चातुर्मास सुजालपुरमें किया. इस प्राथमिक चातुर्मासमें बडाही उत्साह हुआ. अनेक श्रावक तथा श्राविकाओंने द्वादश व्रतका प्रत्याख्यान वगैरह लिया. दूर दूर से बहुत लोग दर्शनार्थ आए थे. व्याख्यान श्रवण कर संतुष्ट हुए. वहाँसे आपकी कीर्तिरूपी भेरीका नाद दिशाओंमें प्रतिध्वनि करने लगा. चारोंतर्फ ज्ञानरूपी पद्म परिमलका सुगंध प्रसृत हुआ, व्याख्यानमें अंतगडजी सूत्रका उपदेश होता रहा. महाराज श्रीका गुरुवियोगके बाद यह प्रथमही चातुर्मास है। चातुर्मासके बाद विहारकर **उज्जैन, खाचरोद, रतलाम** वगैरह १५ क्षेत्रोंको पावनकर **संवत् १९२३ का चातुर्मास आपने मंदसोर** में किया. व्याख्यानमें **पन्नवणा** और **समवायाङ्ग,ज्ञाताजी** तथा **उत्तराध्ययन**६अध्ययन हुवा. अनेक प्रकारके व्रत प्रत्याख्यानादिक भी हुए. मंदसोरमें अच्छे अच्छे शास्त्रज्ञ श्रावक थे. आपका व्याख्यान श्रवण कर उनके दिलमें संतोष पैदा हुआ कि आपके द्वारा समाजका कुछ उद्धार अवश्य होगा परंच महाराजश्रीके अपूर्व उपदेशरूपी अमृतके पान करने की इच्छा अभी शात नहीं हुई अतः चातुर्मासके विहारके बाद फिरसे मंदसोरमेंही चातुर्मास करनेके लिये श्रावक समुदायने अत्यन्त आग्रह किया अतः **संवत् १९२४ का चातुर्मासभी आपने ठाणा ३ से मंदसोर जीवागंज** में किया।

मंदसोरसे विहारकर अनुक्रमसे रतलाम, सलाने, चितौड, अजमेर वगैरह २१ क्षेत्रोंको पावन कर कोटाकी पधारे। कई स्थानोंकी चातुर्मासकी प्राथना चल रही थी आखिर बहुमतसे कोटाकी प्रार्थना स्वीकृत हुई. संवत् १९२५ का **चातुर्मास कोटा रामपुरा** में मनोहरदासजीके मंदिरमें हुआ. व्याख्यानमें **आचाराङ्गजी** का वाचन हुवा। आपके वक्तृत्व शक्तिपर मोहित होकर श्रोतागण कमलपर भ्रमरके समान लीन रहते थे. बडेही उत्साहके साथ वहांका चातुर्मास संपन्न हुआ.

महाराजश्रीने प्रार्थनास्वीकार कर लिया **संवत १९२७ का चातुर्मास बडे समारोहके साथ रतलाम** माणिकचौकमें ठाणा पांचके साथ समाप्त हुआ, व्याख्यानमें **श्री भगवतीजी** तथा **श्री अतगढजीका** वाचन हुआ।

रतलामसे विहार कर अनुक्रमसे छोटा सादडी, बडी सादडी, वगैरह २७ क्षेत्रोंको पावनकर माघ शुद्ध ९नवमी रविवारको उदेपुर प्राप्त हुए, वहांपर आपके पधारनेसे बडाही उत्साह और धर्मका प्रकाश हुआ यहांपर २०वीश रात्र निवासकर विहार करते हुए निमच, नारायणगढ, अमरावद वगैरह ३५क्षेत्रोंको पवित्र कर विक्रम संवत् १९२८ के वैशाखमें रतलाम पधारे, उसी जगह **" इन्द्र विजय छन्दोबद्ध तिलोक बावनी "** वैशाख शुक्ल नवमी शनिवारको पूर्ण किये। रतलामसे विहार कर १०दश क्षेत्रोंको पवित्रकर साजापुरमें पहुचे **संवत १९२८का चातुर्मास ठाणा ३ से साजापुर** अच्छे उत्साह पूर्वक समाप्त हुआ, उसी जगह भाद्रपद शुक्ल ५ पचमाको **चित्रालंकारकी** रचना समाप्त हुई है चित्रालंकारका पूर्ण परिचय अध्याय ७ में हम लिख चुके हैं चातुर्मासके व्याख्यानमें **श्री भगवतीजी** तथा **श्री उववाईका** उपदेश होता रहा साजापुरसे विहार-कर क्रमश देवास, इन्दौर, धार वगैरह ३८ क्षेत्रोंको पावनकर **संवत् १९२९ का चातुर्मास धरियावदमें** ठाणा ४से किया। व्याख्यानमें **स्थानाङ्ग उपासकदशाङ्ग** का उपदेश होता रहा। इस वर्षका रचा हुआ **सुदर्शन सेठका चौढालिया** श्रावणकृष्ण तृतीयाके रोज समाप्त किया हुवा **मुनि श्री माणक ऋषिजी महाराज के** पास उपलब्ध है। तथा **"अर्जुन माली मुनिका"** चौढालिया मुनि **श्री आनन्द ऋषिजी के** पास उपलब्ध है परन्तु कब और कहांपर इनको बनाया यह उल्लेख नहीं मिलता है; अनुमानत चातुर्मासमें बना होगा ऐसा कल्पना कर सकते हैं

धरियावदसे विहारकर अनुक्रमसे १७ क्षेत्रों को पावनकर वि० संवत् १९३० के वैशाख कृष्ण प्रतिपदको मदसौर पधारे, वहाके निष्ठ श्रावक वर्ग पूज्यपाद महाराजश्रीके समागममे पहले दो वर्षोंमें लाभ उठा चुके थे इस लिये फिर चातुर्मासकी प्रार्थना की प्रार्थना स्वीकृत होनेके बाद महाराजश्री अन्यत्र विहार न करने पाये। अत **सं० १९३० का चातुर्मास मदसोर में** हुआ मदसौरमें वैशाख कृष्ण १० दशमी सोमवारको **" पचवादी-काव्य"** बनाये, जिसकी रचना विद्वानोंके देखने योग्य है ज्येष्ठ कृष्ण ६ षष्ठी रविवारको **"साधुस्तोत्र"** की रचना किये आषाढ शुक्ल तृतीया शुक्रवार के रोज मदसौरमें रचा हुवा **धर्मजयकुमारकी चौपाई** महासतीजी **श्री रतनकुंवरजी** के पास उपलब्ध है. आषाढ शुक्ल तेरस सोमवारको **"रिखभदेवजिनस्तवन"** का पूर्ति किये इसके बाद संवत १९३० के रचे हुए (१) **"अरिहंतजिन स्तवन छंद"** (२) **"अतीत अनागत वर्तमान चौविश जिन स्तवन"** ये दो स्तोत्र प्रकाशित उपलब्ध है परन्तु इनके रचनेका स्थान और कालका उल्लेख नहीं है, साहचर्यसे येभी मदसौरमें रचे गये होंगे ऐसा हो सकता है।

संवत १९३१ तथा १९३२ का चातुमास साजापुरमें हुवा ऐसा महाराज-

श्रीके लेखसे प्रमाण मिलता है परंच इन दो वर्षोंमें कितने क्षेत्रोंमें आपने विहार किया और किस किस शास्त्रोंका उपदेश हुआ इसका कुछ उल्लेख नहीं मिलता है नतो संवत् १९३१ के रचित ग्रन्थोंका पता है. सिर्फ संवत १९३२ के ज्येष्ट कृष्ण द्वितीया शनिवार सिद्धियोगमें **"भय भंजन अरिहंत स्तवन"** साजापुरमें रचित उपलब्ध है। भाद्रपद शुक्ल तेरस सोमवार के रोज **नेमिचरित्रकी** रचना समाप्त किए. तथा (२) **"भ्रमभंजनकुमति चपेटिका" (उपनाम प्रश्नोत्तरयुक्त चर्चामाला)** यह ग्रंथभी प्रकाशित है परंच स्थान समयका उल्लेख नहीं है.

संवत १९३२ के चातुर्मासके बाद साजापुरसे विहार कर इन्दौर, उज्जैन वगैरह ८ क्षेत्रोंमें भ्रमणकर संवत १९३३ का चातुर्मास सुजालपुरमें किये, उस वर्षमें भी कोई विशेष उल्लेख नहीं मिलता है. सिर्फ श्रावण शुक्ल १४ शुक्रवार श्रवण नक्षत्र प्रीतियोग वबकरण मकरचंद्रमें स्थान मालवा सुजालपुरमें **'सीता चरित्र'** को किया. यह ग्रंथ अप्रकाशित उपलब्ध है.

चातुर्मासके अनन्तर सुजालपुरसे विहारकर देवास इन्दौर होते हुए मार्गशीर्षमें रतलाम पधारे वहां मार्गशीर्ष वदि १० दशमीको **श्री भवानीऋषिजीकी** दीक्षा हुई ७ वें रोज बडी दीक्षा हुई. वहांसें विहारकर फाल्गुनी पूर्णिमा जावरामें किये. तत्पश्चात् १० दश क्षेत्रोंको पवित्रकर **संवत १९३४ का चातुर्मास रतलाममें** किये. व्याख्यानमें **जम्बूद्वीप पनन्ती, श्रीअंतगढ,निरियावलीका** उपदेश होता रहा.इस वर्षका रचित **'आचार्य स्तोत्र'** उपलब्ध है, जो वैशाख शुक्ल पूर्णिमा सोमवार को बनाया उसमे स्थानका उल्लेख नहीं है.

रतलामसे विहारकर ३१ क्षेत्रोंको पावन कर फाल्गुन कृष्ण २ को प्रतापगढ पधारे १० दश रात्र निवासकर तदनंतर मम्मटखेडामे पधारे, वहां चैत्र शुक्ल १२ रविवार को **श्री प्याराऋषिजी की** दीक्षा हुई, वहींसे जावरावाले श्रावकोंकी चातुर्मासकी प्रार्थना शुरू हुई व प्रार्थना स्वीकृत हुई. वहांसे विहार कर २२ क्षेत्रोंको पावन किए और ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया रविवार के दिन **" कृष्णजी को ब्यावलो "** नामक ग्रंथ की रचना किए, बाद चातुर्मासके लिए जावरे पधारे.

संवत १९३५ का चातुर्मास बडे **उत्साहपूर्वक जावरेमें** समाप्त हुआ. उसी समय देश दक्षिण ग्राम घोडनदी जिल्हा पूनासे सुश्रावक गंभीरमलजी लोढा मालवामें मुनिराजोंके दर्शनार्थ पधारेथे, उस समय दक्षिण देशमें मुनिराजोंका संचार बहुतही कम था. अर्थात् प्रायः मुनिराजोंसे एकान्त शून्य था. अंतः गंभीरमलजी लोढाने कोटा सम्प्रदायके सुप्रसिद्ध विद्वान् **श्री छगनलालजी महाराजसे** दक्षिण देशमे विहार करनेकी प्रार्थना की परंच आपने स्वीकार नहीं किया. फिर वहांसे जावरा **पुज्यपाद श्री तिलोकऋषिजी महाराज** के चरणोंमें अपनी अर्ज सुनाए. विशेष उपकार समझकर **महाराजश्रीने** प्रार्थनास्वीकार कर लिया. चातुर्मास खतम होतेही आपने **श्री प्यारा ऋषिजी** तथा **श्री-कंचन ऋषिजी** ठाणे ३से दक्षिणके तर्फ पदार्पण किया. मार्गशीर्ष १५ को धारमें पधारे. वहां ८दिवस निवासकर विहार करते हुए इन्दोर, खंडवा, होते हुए बऱ्हानपूर पधारे. वहा

आसपासके ग्रामोंमें दिगम्बर सम्प्रदाय का एक तारण तारण स्वामीका एक मत चलता है उसको माननेवाले एक वाणिक वणिक है ये केवल शास्त्रोंको मानते हैं और पूजते हैं उपदेश श्रवण करनेसे बहुत लोगों को साधुमार्गी बनाये वहांसे आगे चलकर फैजपुर पधारे वहा आपने श्रीभूराजीको दिक्षा दी, इनको सती शिरोमणी श्रीहीराजीके निश्रायमें देकर बहाम मुसारक, जन्माष्ट हाते हुए सवत् १०३५ चैत्र वदि नवमी को घोडनदीको अपने चरण रजोंसे पवित्र किया

संवत् १०३६ की दिनचर्या

दक्षिण देशमें उस समय धर्मका नामा न रहा उस समयके ४ ५ चार पाच वर्षोंसे मेरी मुलाखात हुई है उनके मुखसे उस समयका उत्साह सुननेका योग है बहुत दूर दूरके श्रावक घोडनदीमे महाराज श्रीके दर्शनार्थ आए, और सब लोग अपने तर्फ विहार करानेके कोशीसमें लगे, परन्तु अहमदनगरके श्रावकोंने अपने कार्यमें सफलता दिखाई १८ अठारह रात्र घोडनदीमें रहकर बाद अहमदनगरके तर्फ विहार किया अहमदनगरमें उस समय समाज विख्यात दृढधर्मी रंभाबाई विराजमान था श्री तिलोक ऋषिजी महाराज नगरमें पधार गये, यह शब्द जिस व्यक्तिने प्रथम सुनाया उसको बाईने सुवर्णका कंकण बाईजीने प्रदान किया, यह बात वहांके वृद्धोंद्वारा सुनी गई है अहमदनगरमें बहोहो उत्साह मनाया गया २१ एकविश रात्र महाराज वहां विराजमान थे चातुर्मासकी प्रार्थना शुरु हुई परन्तु घोडनदी वाले सुश्रावक गंभीरमलजी लालचंदजीने सुनारकर अग्रिम वर्षके लिये कुछ छाया देकर विहार कर गये नगरसे विहार करनेके बाद ३६ क्षेत्रोंको पावनकर आषाढ वदि १४ को घोडनदीमें पधारे

उसके पश्चात संसार पक्षकी महाराज श्री का जेठा बहिन सती शिरोमणी श्री हीराजी ने मालवासे विहार करते हुए ठाणा ३ से घोडनदीमें पधारे, उस समय आप लोगोंके उपदेशसे दक्षिण देशका पुनरुद्धार हुआ, ऐसा सुना जाता है बहुतसे पुण्यात्मा व्यक्तिओंने अपने मनुष्य जीवनकी सफलता प्राप्त कर ली आषाढ शुक्ल ९ नवमी शनिवारको एक समयमें चार दीक्षा हुई, पिता और पुत्र श्रीस्वरूपऋषिजी तथा श्रीरत्नऋषिजी महाराज ये दोनों व्यक्ति श्री तिलोकऋषिजी महाराजके शिष्य हुए इन लोगोंके वैराग्य का कारण तथा कर्तव्य श्री रत्न ऋषिजी महाराजके जीवन चरित्रमें वर्णित है एवं माता पुत्री श्री चंपाजी तथा श्री रामकुंवरजी सती शिरोमणी आर्याजी श्री हीराजीकी शिष्या हुई इस तरह ठाणा ७ का चातुर्मास संवत १९३६ का बडे आनन्द पूर्वक घोडनदी में समाप्त हुआ वहींपर चातुर्मासमें " ११ ग्यारह गणधरकी प्रथम स्वाध्याय " नामकी कविताकी रचना की व्याख्यानमें समवायाङ्गजीका उपदेश होता रहा चातुर्मासके बाद मार्गशीर्ष कृष्ण १३ गुरुवारको आर्याजी श्रीरंभाजीकी दीक्षा हुई मार्गशीर्ष शुक्ल ५ पंचमी शुक्रवारको विहारकर स्थान परिवर्तन किये फिर पौष शुक्ल ६ षष्ठी शनिवारको श्रीगोकुलजीकी दीक्षा हुई, पौष शुक्ल १२ द्वादशीको विहार किये विहार करते हुए आंबोरी पधारे, वहां

माघ वदि १ प्रतिपद बुधवारको **श्रीछोटाजीकी** दीक्षा हुई. वहांसे विहार करके सोनई पधारे वहां " **एषणासमिति** " नामक ग्रन्थकी समाप्ति किये–यद्यपि उस ग्रंथमें तिथिका उल्लेख नहीं है तथापि विहारक्रमसे पता चलता है कि माघ कृष्ण ५ पंचमी शनिवारको समाप्ति की गई है. वहासे विहारकर फाल्गुन कृष्ण में सांईखेडा पधारे वहीं फाल्गुन कृष्ण १० दशमी शनिवारमें " **भोलपछत्तिशी** " नामक ग्रन्थ बनाया. वहांसे विहारकर १५ क्षेत्रोंको पावनकर नाशिक, गंगानदी त्र्यम्बकदरवाजा सरावगींके उपासरेमें ३ तीन रात्र रहकर वसंत–पिंपलगांव पधारे, वहां फाल्गुन शुक्ल चतुर्थीको " **अमरकुमार चरित्र** नामका काव्य समाप्त किया. वहांसे विहारकर संवत् १९३६ के चैत्र वदि ३ को फिर सांइखेडा पधारे. संवत् १९३६ का रचा हुआ ग्रंथ " **गजसुकुमारकी लावनी** नामका उपलब्ध है, परंच उसके रचनामें तिथी और स्थानका उल्लेख नहीं है.

संवत १९३७ की दिन चर्या और चातुर्मास.

चैत्रवदि ३ तृतियाको सांइखेडा पधारे, चैत्रवदि १३ बुधवारको आर्याजी **श्री नन्दूजीकी** दीक्षा हुई. वैशाख वदि १ प्रतिपदको वहांसे विहारकर २१ क्षेत्रोंको पावनकर खानके हिंवडा पधारे, वहां ६ छे रात्र विराजमान थे, वहांपर वैशाख कृष्ण १३ तेरसको **'विनय आराधनाका चौढालिया'** तयार किया और वैशाख शुक्ल ३ तृतियाको **"उपदेशी लावनी"** की रचना की, वहांसे विहार कर वैशाख शुक्ल ८ मी को अहमदनगर पधारे, वहांके सुश्रावक वर्ग महाराज श्रीके दक्षिण देशमें आगमन कालसेही चातुर्मासके लिये लालायित थे. संवत १९३७ का चातुर्मास बडे समारोहके साथ अहमदनगरमें समाप्त हुआ. बहुत दूर २ से श्रावक वर्ग महाराज श्रीके व्याख्यान तथा दर्शनका लाभ लेने आएथे व्याख्यान में **श्री आचारंगजी, सुयगडांगजी** का उपदेश होता रहा, चातुर्मासमें आपने भाद्रपद कृष्ण १४ चतुर्दशी शुक्रवार शिवयोगमें **"वर्द्धमान दर्शाटन"** नामक काव्य बनाया है. आश्विन कृष्ण चतुर्थी बुधवार भरणी नक्षत्र हर्षण योग नवी पेठ धर्म स्थानकमें **'श्रीचन्द्रकेवली चरित्र'** की रचना समाप्त की है, ढाल ६७गाथा संख्या ४५०० में यह ग्रंथ है. और आश्विन कृष्ण १४ चतुर्दशी बुधवारको **"द्वितीय चौविश जिन स्तवन"** की रचना समाप्त हुई है. आश्विन शुक्ल द्वितीया बुधवारको " **वीश विहरमानोंकेस्तवन** ' अलग अलग बनाये हैं, आश्विन शुक्ल १० विजय दशमीके रोज **"पंच परमेष्ठी स्तवन"** को तथा **"वीररस प्रधान श्री महावीर स्वामीका पंचढालिया"** की रचना हुई है, कार्तिक कृष्ण ३० दीपमालिकाके रोज **"वर्द्धमान स्वामीका चौढालिया."** की रचना हुई है, तदनंतर मार्गशीर्ष कृष्ण२ गुरुवारको विहारकर अहमदनगर धर्मशालामें रात्रभर विराजमानथे, वहांसे विहारकर पारनेर अलकुटी वगैरेह २३ क्षेत्रोंको पावनकर घोडनदी पधारे वहां मार्गशीर्ष शुक्ल११ को **"ज्ञान-कुंजर** तैयार किये जिसका वर्णन अध्याय ७ में वार आये हैं, वहांसे विहारकर पौष शुक्लमें श्रीगोंदा जिल्हा अहमदनगरमें पदार्पण किये, वहां पौष शुक्ल अष्टमी शुक्रवारको " **जीव**

रक्षा उपदेश लावणी " तथा "श्रावक उपर लावणी" ये दोनों पद्योंको बनाया, वहासे विहारकर चिचोंडा पधारे, वहां माघ वदि अष्टमी को "मुनि गुण मगल माला" की रचना किये और वहा १४ रात्र विराजमानथे, वहासे विहारकर माघ शुक्लमें करमाळा पधारे वहा माघ शुक्ल सप्तमी भौमवारको "श्रावक छत्तिशी" की रचना की और माघ शुक्ल तेरसको "नरक दु ख वर्णन" की रचना किये, वहा ६ठे रात्र निवासकरके मिरजगांव पधारे वहा फाल्गुन कृष्ण २द्वितीया बुधवारको "अध्यात्मफाग स्वाध्याय" तैयार किये वहासे विहारकर कडा पधारे, वहापर फाल्गुण कृष्ण एकादशीको "सोलह स्वप्नकी लावणी की रचना किये। वहासे विहारकर फाल्गुण शुक्ल ७मी को नगरमें पधारे, फाल्गुना पूर्णिमा को ४७ वा लोच अहमदनगरमें हुआ संवत १९३७ के सालमे बने हुए "पुण्य आश्चर्य लावणी" तथा "धन आश्चर्य पद" भी उपलब्ध हैं, परन्तु स्थान और तिथी का पता नहीं है

सवत १९३८ की दिनचर्या और चातुर्मास

अहमदनगरमे विराजते हुए चैत्र कृष्ण ७ सप्तमी को 'शील सप्तमी स्वाध्याय' की रचना किये, तदनंतर चैत्र शुक्ल पचमी रविवारको नगर स्थानकसे विहारकर सिद्धेश्वर (सिद्धि) बागमे रात्रनिवास किये उसी रोज ' अध्यात्मबाग स्वाध्याय" का रचना किये वहांसे विहारकर आंबोरी पधारे वहां दश रात्र निवास किये चैत्र शुक्ल ११ सोमवारको "कालकी लावणी" की रचना की चैत्र शुद्ध पूर्णिमाको 'सातवार अध्यात्म स्वाध्याय' [२] पन्द्रहतिथी अध्यात्म स्वाध्याय" [३] बारहमास अध्यात्म स्वाध्याय" [४] " अध्यात्म गिनगौर " इतने काव्य आंबोरीमें रचाये हैं आंबोरीसे विहारकर मिरी पधारे वहा वैशाख शुक्ल तृतीयाको" अक्षयतृतीया अध्यात्म स्वाध्याय" का रचना किये वैशाख शुक्ल ६को "करमपचीशी" का लावणी रचे और वैशाख शुक्ल १२ बुधवारको " ककां बत्तीशी लावणी " का रचना किये वहासे विहारकर देवटाकली पधारे वहां ज्येष्ठ कृष्ण तृतीया सोमवारको (१) " पंच आराकी लावणी " (२) " कालकी लावनी " ये दो काव्योंका रचना किये वहासे विहारकर क्रमश क्षेत्रोंको पावन करते हुए रस्तापूर पधारे वहा " उपदेश आश्चर्य पदकी " रचना ज्येष्ठ शुक्ल ६ षष्ठी को हुई है वहांसे खरडा पधारे वहा जेष्ठ शुक्ल ७ सप्तमी को "उपदेश छत्तीशीकी पूर्ति किये इस तरह विहार क्रमसे ६९ ग्रामोंको पवित्रकर ज्येष्ठ शुक्ल ११ को अहमदनगरमें पदार्पण किये वहा आषाढ कृष्ण १प्रतिपदाको श्री लक्ष्मीजी [लछमाजी] का दीक्षा हुई ७ वें रोज बडी दीक्षा हुई आषाढ शुक्ल नवमाको विहारकर ठाणा ५ से आंबोरी चातुर्मासके लिये पधारे ठाणा १० दशासे श्री आर्याजी श्री हीराजीका आगमन हुआ इसतरह ठाणा १५ पंचदशका चातुर्मास सवत १९३८ का आंबोरीमें सपन्न हुआ वहा पर्युषण पर्वमें "पर्युषणपर्व अध्यात्म स्वाध्याय" का रचना किये और भाद्रपद शुक्ल ११ को शीलारथ " का रचना किये, जिसका वर्णन अध्याय ७ में दिया है चात-

मासमें आश्विन शुक्ल १० विजय दशमी के रोज [१] "**चौविश जिनस्तवन**"[२] **अध्यात्म दशहरापर्व स्वाध्याय**" ऐसे ऐसे काव्योंकी रचना समाप्त किये, कार्तिक कृष्ण तेरस को '१ **धन तेरस अध्यात्म स्वाध्याय**' १४ चतुर्दशीको २'**रूपचतुर्दशी अध्यात्म स्वाध्याय**"अमावस्याको ३ "**दीपमालिका अध्यात्म स्वाध्याय**" की रचना हुई. आंबोरीमें रचा हुआ चार प्रकारका "**११ गणधरका स्वाध्याय**" मिलता है, परंच तिथिका उल्लेख नही है. अनुमानतः चातुर्मासमें बने होंगे. चातुर्मासके बाद मार्गशीर्ष वदि २ द्वितीयाको विहार कर बीचमें डुंगरगण, पिपलगांवमें दो रात्र बिताकर अहमदनगर पधारे. वहां १५ पन्द्रह रात्र विराजमान थे. वहांसे विहारकर मार्गशीर्ष शुक्ल ४ चतुर्थी शुक्रवारको केडगांव पधारे. मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमीको **श्री 'गौतम स्वामीके रास'** को बनाया. विहारक्रमसे कामलगांव मे बना होगा. तदनन्तर अनुक्रमशः विहारकर आवलकुटीमें पधारे, वहां पौष शुक्ल १२ द्वादशीको **श्री झमकूजी आर्याजीकी** दीक्षा हुई. ७ वें रोज बडी दीक्षा हुई. वहां १६ रात्र विराजमान थे. उन दिनोंमें माघ कृष्ण ३ तृतीया शनिवारको "२८ प्रकारके **चौविश जिन स्तवन**" की रचना की, ४ चतुर्थी रविवारको "**तीन प्रकारका उपदेशी फटका**"" **आठ प्रकारका चौविश जिन स्तवन** " की समाप्ति किये. माघवदि ५ को आंवलकुटी से विहार करते हुए अहमदनगर पधारे. २० वीस रात्र विराजमान थे वहां माघ शुक्ल पंचमींको "**वसंत पञ्चमी अध्यात्म स्वाध्याय**" की रचना किये. फाल्गुन कृष्ण ७ सप्तमीको नगर से विहारकर प्रवरासंगम, जालना, औरङ्गाबाद वगैरह ३२ क्षेत्रोंको पावनकर संवत १९३८ चैत्र शुक्ल १० को आंबोरी पधारे. एकादशी सोमवारको आंबोरीमें "**धन्नाजीकी लावणी**" की रचना किये. वहांसे विहारकर चैत्र शुक्ल १२ द्वादशी शुक्रवारको फिर अहमदनगर पधारे.

संवत १९३९ की दिनचर्या और मास.

नगरमें ४४ चौवालिस दिन विराजमान थे, वहां वैशाख शुक्ल १४ चतुर्दशी मंगलवारको '**हंस केशव**' चरित्रकी रचना किये. और ज्येष्ट कृष्ण चतुर्थी रविवारको '**धर्मबुद्धि पापबुद्धि**' चरित्र की रचना समाप्त किये. तत्पश्चात् जेष्ट वदी ९ नवमी गुरुवारको '**हरियाजी और अमृताजी**' की दीक्षा हुई. ज्येष्ठ वदी १२ रविवारको नगरसे विहार कर गये. कई क्षेत्रोंको पवित्रकर घोडनदी पधारे. जेष्ट शुक्ल २ द्वितीयाको '**खंदकमुनिका चौढालिया**' समाप्त किये. वहांसे विहारकर कई क्षेत्रोंको पावनकर पूना पधारे. वहां ७ रोज विराजमान थे. वहींपर नानापेठमें आषाढ कृष्ण १ प्रतिपद को '**मेतारजमुनिका चौढालिया**, तैयार किये. और आषाढ कृष्ण ४ चतुर्थीको '**तेरहकाठियाकी स्वाध्याय**' की रचना किये, पुनासे विहारकर १७ग्रामोंमें विचरकर आषाढ शुक्ल ११ एकादशी को घोडनदीमें पधारे. शिष्याओंके साथ सती शिरोमणी **श्री हीराजी** का भी शुभागमन हुआ, ठाणा १८ से संवत १९३९ का चातुर्मास घोडनदीमें बडेही उत्साहपूर्वक समाप्त हुआ. व्याख्यानमें **श्रीसुयगडांग सूत्र,श्रीचंद्रकेवलीका रास** का उपदेश होता रहा,भाद्रपद शुक्ल १० को आर्याजी **श्रीलछमाजी** का संथारा ४॥पहरका हुआ, और वहीं आश्विन शुक्ल प्रतिपद शुक्रवार

अमृत वेला तुला लग्नमें 'श्री श्रेणिक चरित्र" का समाप्ति किये मार्गशीर्ष वदि ५ पञ्चमी बुधवार को रंगुजीकी दीक्षा हुई पष्ठीको घोटनदीसे विहारकर रात्रमर मन्दिरमें निवास किया, वहासे विहारकर कइएक क्षेत्रोंको पावनकर सतारा शहरमे पदार्पण किये, वहा भवानी पठमें १३ रात्र निवास किये, जहाँपर मार्गशीर्ष शुक्ल ८ अष्टमी सोमवारको २ प्रकारका "उपदेश स्तवन पद" और मार्गशीर्ष शुक्ल ११ एकादशीको "उपदेश फटका" का रचना किये तथा पौष कृष्ण तृतीया बुधवारको "आनन्द श्रावक का चौढालिया" और चतुर्थी गुरुवारको "कामदेव श्रावकका चौढालिया" का रचना समाप्त किये और पौष शुक्ल ५ पञ्चमी शनिवारको "मृगुपुरोहितका पचढालिया" तैयार किये वहासे विहारकर ७ क्षेत्रोंको पवित्रकर पूना पधारे, वहा पौष शुक्ल पञ्चमीको "द्वीप मालिका द्वितीय अध्यात्म स्वाध्याय" की रचना किये दश रात्र पूनामें विराजमान होकर सेल पिपलगाव पधारे, वहा पौष शुद्ध अष्टमीको 'श्री सुधर्मा स्वामीकी स्वाध्याय' का रचना किये, १३ रात्र वहा विराजमान थे वहा श्री कंचन ऋषिजी का दीक्षा माघ शुक्ल पञ्चमीको हुई वहासे विहारकर क्रमश क्षेत्रोंको पावन करते हुए मचरमें पधारे वहा माघ शुक्ल १३ तेरसको 'कर्म विपाक मालाकी रचना किये मचरसे विहारकर फाल्गुन शुक्ल ६ को अहमदनगरमें पधारे उसी रोज 'चौदह नियम स्वाध्याय की रचना किये

संवत् १९४० की दिन चर्या और चातुर्मास

अहमदनगरमें विराजते हुए चैत्र शुक्ल २ द्वितीया सोमवारमें श्री दशवैकालिक सूत्रके दश अध्ययन का कवितामय भाषांतर तथा तृतीयाको 'शालिभद्र चरित्र की रचना सम्पूर्ण किये । अप्रकाशित 'समरादित्य केवली चरित्र' बड़ा ग्रन्थ है, यह चैत्र शुक्ल १ प्रतिपदमें प्रारम्भकर आषाढ शुक्ल पञ्चमी चन्द्रवार पू फाल्गुना नक्षत्र वरिदान योग अमृत-वेलामे आम्बोरामें समाप्त हुआ मिलता है परञ्च संवत् का ठीक पता नहीं है सं १९४० में इस समयपर पूज्यपादका विराजना उनके दिनचर्यासे साबित होता है, अत मालुम पड़ता है कि उनका अन्तिम काव्य यही है बस इतने ही दिनका दिनचर्या तथा निर्माण किये हुए ग्रंथ मिलते हैं बादका कुछ पता नहीं है स्वर्गीय गुरुवर्य श्री रत्नऋषिजी महाराज के मुखारविंदसे ऐसा श्रवण गोचर हुवा है कि संवत् १९४० का चातुर्मास अहमदनगरमें करनेके लिए आम्बोरासे विहार करनेका निश्चय कर रात्रिमें शयन कर गये, रात्रिके चतुर्थयाममें आपने स्वप्न देखा कि मैं पहाडके उपरी भागसे नीचे गिर पडा हू महाराजश्रीकी नींद टूट गई उठकर ध्यान स्वाध्याय, प्रतिक्रमण पूर्ण किये विहार करनेके लिये कमर बांध स्थानकसे बाहर हुए, उस समय कोयलेकी टोपला दिखपडी आगे चलनेपर सन्मुख महिष आ रहा है. ये सब अप-शकुनको देखकर महाराजश्रीने नजदीक ही एक बगीचेमें रात्रभर निवास किया पञ्चमीको ठाणा पांचसे डोंगरगण पधारे, षष्ठीको पिंपलगाव पधारे, वहा एक वृक्षके नीचे ध्यान

अब इस अश्रुपातसे होनाही क्या है ? उस पवित्रात्मा की मूर्ति अदृश्य हो गई, इस संसार में उनका पाञ्चभौतिक शरीर आज न रहा, संसारकी घटना अद्भुत है. सुख, दुःख, हर्ष,

शोक क्षण २ पर बदलते रहते हैं, दाक्षिण देशके श्रावकोंका दिव्य नेत्रपटल खुलगया, वे लोग शाश्वत यश शरीरके दर्शनार्थ उठ खडे हुये, सब लोग यह निर्णय किये कि जब पूज्यपाद बिराजमान थे, उस समय अपने २ पुण्य के अनुसार हम लोग लाभ ले चुके, अब उनका यश शरीर विद्यमान है, अति बल पूर्वक उसका रक्षा करना समाजका कर्तव्य है। ऐसा विचारकर पूज्यपादके रचे हुए कविताओं का संग्रह करने लगे जहांतक उन लोगों को उपलब्ध हुआ उसको प्रकाशित किये और उसके प्रस्तावना में जाहिर किये कि अभी बहुत से भाइयोंके पास महाराज श्री के रचेहुए विषयोंका पता चलता है, वे भाई कृपाकर उन विषयोंको हमारे पास भेजदेवें ताकी सर्व साधारण उसका लाभ ले सके, परन्तु कौन सुनता है. जो जिसके पास रहा वह वहीं गुप्त रहगया **श्रेणिक चरित्र वगैरह १९ ग्रंथ तो मुनि श्री आनंद ऋषिजी** के पास है, जिनको प्रकाशित करने के लिये आजतक विमर्श दोलारूढ है। पूज्यपादके विषयमें यह खास जानने योग्य बात है कि, दाक्षिण देशमें आपने फिरसे **स्थानकवासी जैन सम्प्रदाय** की स्थापना की यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा, कि यदि महाराज श्री का पदार्पण न हुआ होता तो कितनेक जगह श्रावकोंको आज **मुखवस्त्रिका** बांधना भूल गया होता।

उपसंहार

प्रियसज्जन पाठकवृन्द! प्रात स्मरणीय पूज्यपाद **श्री तिलोक ऋषिजी महाराज** की अलौकिक उपरोक्त गुण सम्पत्ति यथामति यथाशक्ति तथा जितने प्रमाण उपलब्ध हुए तदनुसार लिखा गया है. नहीं तो समाज विख्यात ऐसे प्रधान पुरुषके गुणोंका वर्णन कवीश्वरों द्वारा जितना कियाजाय उतना थोडाही है। अब उपसंहार रूपमें महाराज श्री के गुणसमुद्रसे सार खींचकर आपलोगों के सामने उपस्थित करता हू।

सद्गुणगणालंकृत **श्री तिलोक ऋषिजी महाराज** ३६ वर्ष २९ दिनके अवस्थामें इस पाञ्चभौतिक शरीरको त्याग किये, जिसमें २५ वर्ष ६माह १दिनका संयम पालन कर इस अल्प कालमेंही चन्द्रवत् मिथ्यात्वरूपी अंधकार का नाशकर जैन दर्शनाभिलाषी भव्य पुरुषों को कुमुदवत विकास करने के लिये शास्त्रानुसार साठ सत्तर हजार गाथाका संख्यामें बडे बडे ग्रंथों को रचकर जैन समाजके ऊपर उपकारोंका कतार बोझ दिया है।

स्वभाव

महाराज साहब का स्वभाव चन्द्रमा समान शीतल, समुद्र समान गम्भीरथा, आबालब्रह्मचर्य, मितमित भाषण, अपूर्व कवित्वशक्ति, वाक्यचातुर्य समयसूचक था जैन शास्त्र तथा पर शास्त्र गामित्व वगैरह अनेकगुण आपमें अधिक प्रशंसनीय थे।

चारित्रशुद्धि.

महाराज श्री का चारित्र इतना शुद्ध था कि उसका वर्णन उस तत्व के वेत्ताही पुरुष कर सक्ते हैं. परपक्षीय लोगभी आजतक मुक्त कंठसे उनकी प्रशंसा करते हैं, यह उनके चारित्र शुद्धिका ही सबूत है, क्योंकि चारित्रहीन पुरुषका गुण समूह धूलिमें मिल जाता है, प्राणीमात्र में विशेषत: साधु पुरुषोंका चारित्र ही एक अमूल्य रत्न है उसीके रक्षासे वह विश्वपर अपनी सत्ता जमा सकता है।

वाग्मिता.

पूज्यपादकी वाणी जो निकलती थी, वह अक्षरश: सनातन जैन धर्मके अनुकूलही निकलती थी, आपके प्राय: हर एक वाक्यमें हित शिक्षा का भाव पूर्ण भरा हुआ निकलता था, यहांतककी दक्षिण देशके कुछ गावोंका नाम एक सवैयामें आपने लिखाहै उसमें व्यवहारिक तथा अध्यात्मिक उपदेश इतना उच्च कोटिका भरा हुआ है कि शायद कहीं दुसरे कवियोंके मुखसे ये भाव निकले हों, और जिन्होंने ऐसे उत्कृष्ट कवियों के काव्योंका परिशीलन किया होगा वेही इसके अन्तरङ्ग भावको पा सकते हैं. देखिये पूज्यपाद महाराज विरचित सत्यबोध नामक बडी पुस्तक के पृष्ठ २२३ में अमदानगर पाइ इत्यादि।

निर्ममत्व.

महाराज श्री इतने बड़े प्रधान पुरुष होकर भी ऐसे विनम्र भावसे रहते थे कि जिसकी हद है, अहंकार उनके पास स्थानही नहीं पाया, ऐसे उच्च आदर्श कवि होते हुए भी अपने काव्योंमें **"मिच्छामि दुकडं"** शब्द देते गये हैं।

ज्ञानबल तथा शा ज्ञान.

पूज्यपादका ज्ञानबल भी बहुत प्रबलथा वृद्ध लोग कहते हैं कि यदि महाराज श्री के सामने कोई किसी प्रकारका प्रश्न करताथा तो उनका उत्तर अनेक शास्त्रोंके प्रमाण द्वारा प्रश्नकर्ताके हृदयको आल्हादित कर देते थे। बहुतसे व्यक्तियो में यह देखा जाता है कि पृच्छक के प्रश्नों को सुनकर आवेश में आजाते हैं परन्त्र पूज्यपाद के सामने जिज्ञासु या भुतश्रोत वा परीक्षक तथा अन्य किसी प्रकार से जो प्रश्न करते थे, उन सब लोगोंको प्रेम भावसे उत्तर देते थे, प्राणी मात्रमें यह गुण अनुकरणीय है। बस पूज्यपाद के चरित्र विषयिणी लेखनी को यहीं विश्राम देताहूं, कारण कि पूज्यपाद के काव्यों द्वारा तथा तत्कालीन वृद्धों द्वारा उनके जीवनमें पद पद पर रहस्य प्रगट होता है उन सब बातोंको लिखनेके लिये मेरी शक्ति नहीं है, दुसरा यह कि जो विशेषज्ञ हैं, उनसे कोई बात छिपी नहीं है और जो उनसे अपरिचित हैं वे लेखक के साथ साथ पूज्यपाद के विषयमें भी सन्देह करेंगे, अत: प्रेम भावसे प्रार्थना है कि गुण ग्राही सज्जन आदर पूर्वक इसको पठन तथा पूज्यपाद के गुणोंका अनुकरण कर इस परिश्रमका सदुपयोग करेंगे।

ॐ शांति: ! शाति: !! शाति: !!!

अथ श्री तिलोकाष्टकम्

सवित्री नानू माँ जननवसती रत्ननगरी,
दुलाचन्दस्तात प्रवरगुणवान्यस्य विदित ॥
कलेनर्थीयुक्तो व्रतनियमनिर्वोमितमलो,
गुणै शुभ्रैर्धन्यो जयतु स तिलोको मुनिवर ॥१॥

भावार्थ–रत्नलाम नगरी मे माता नानू बाई प्रसिद्ध गुणवान् पिता दुलीचन्दजी सुराणा के यहां उत्पन्न होकर श्रेष्ठ कगावोमे युक्त तथा व्रत नियमोंसे मलों को हटानेवाले उज्वल गुणों से युक्त प्रवित्रात्मा श्री तिलोक ऋषिजी महाराज अपने यश शरीरसे सर्वोत्कृष्ट विराजित होवें ॥ १ ॥

महद्दिव्य ज्ञान समधिगतमेतेनतपसा,
कथ स्वल्पे काले तदिह विदुषा मोहजननम् ॥
पर यद् ग्रन्थौघ विरचयति तान्मोहविगतान्,
गुणै शुभ्रैर्धन्यो जयतु स तिलोको मुनिवर ॥ २ ॥

भावार्थ– तपोबल से थोडेहा काल में जो आपने दिव्यज्ञान उपार्जन कर लिया क्या यह विद्वानों को भी आश्चर्यकारी नहीं है ? उससे भी अधिक आश्चर्यकारी मोहको हटानेवाले आपसे रचे गये ग्रंथ समूह हैं उज्वल गुणोंसे युक्त ऐसे पवित्रात्मा श्री तिलोक-ऋषिजी महाराज अपने यश शरीर से सर्वोत्कृष्ट विराजित होवें ॥ २ ॥

यश पुञ्ज यस्य चरितसमरादित्यप्रभृतौ,
सुपद्यैर्विस्तीर्णैरयुतरससख्ये सुविमलम् ॥
जनान्मार्गभ्रष्टान्प्रतिदिशति नि श्रेयसपदम्,
गुणै शुभ्रैर्धन्यो जयतु स तिलोको मुनिवर ॥ ३ ॥

भावार्थ– साठ हजार गाथा सख्यासे रचे गये हुए समरादित्यकेवली चरित्रादिको में जिनका निर्मल यश पुञ्ज विस्तीर्णता को प्राप्त होकर मार्गसे बिछुडे हुए प्राणियोंको कल्याणमार्गका उपदेश कर रहा है उज्वल गुणों से युक्त प्रवित्रात्मा श्री तिलोक-ऋषिजी महाराज अपने यश शरीर से सर्वोत्कृष्ट विराजित होवें ॥ ३ ॥

बृहच्छास्त्र पुच्छीसुणमिह लिखित्वैकदलके,
परांकाष्टा नीतां विशदप्रसरां लेखनकलाम् ॥
विजेतु स्पर्द्धन्ती जगति रसते चित्रणकला,
गुणै शुभ्रैर्धन्यो जयतु स तिलोको मुनिवर ॥ ४ ॥

भावार्थ– एक पन्ने के उपर दशवैकालिक सूत्र सपूर्ण तथा पुच्छीसुण लिखकर अति निर्मल उच्चकोटी की जो लेखनकला प्राप्त किये उसको भी जीतने के लिये जिनकी चित्रकला स्पर्द्धा (इच्छा) कर रही है ऐसे उज्वल गुणों से युक्त पवित्रात्मा श्री तिलोक-ऋषिजी महाराज अपने यश,शरीर से सर्वोत्कृष्ट विराजित होवें ॥ ४ ॥

महाराष्ट्रे देशे यदपि बहुला जैनजनता,
न गम्यः किंत्वासीदतिगहनमार्गो हि मुनिना ॥
सहन्नानाकष्टं तदपि विधियोगादुपगतो,
गुणैः शुभ्रैर्धन्यो जयतु स तिलोको मुनिवरः ॥ ५ ॥

भावार्थ- यद्यपि दक्षिण देशमें जैन जन समूह अधिक है, तथापि अति कठिन मार्ग होनेसे मुनिराजों का संचार कम था. परन्च आप अनेक कष्टों को सहन करते हुए कर्तव्यवलेसे वहां आकर प्राप्त हो गये, ऐसे उज्वल गुणों से युक्त पवित्रात्मा **श्री तिलोक-ऋषिजी महाराज** अपने यशःशरीर से सर्वोत्कृष्ट विराजित होवे ॥ ५ ॥

प्रमुर्यैः श्रीरत्न प्रभृति निजशिष्यैः परिवृतः,
चतुर्थे विश्रामेऽहमदनगरे पूज्यचरणः ॥
गतः कायोत्सर्गं सुरपुरमगात्कीर्तिविशदो,
गुणैः शुभ्रैर्धन्यो जयतु स तिलोको मुनिवरः ॥ ६ ॥

भावार्थ- दक्षिण देशमें चौथे चातुर्मास के लिये महाराज **श्री रत्न ऋषिजी** वगैरह शिष्यों के साथ अहमदनगर में पधारे. वहां इस नश्वर शरीर को छोडकर विमल कीर्ति के साथ सुरपुर सिधारे, ऐसे उज्वल गुणों से युक्त पवित्रात्मा **श्री तिलोक ऋषिजी महाराज** अपने यशः शरीर से सर्वोत्कृष्ट विराजित होवे ॥

समुद्योगाद्यस्य धनदवसतिर्वै यमदिशा,
शरण्यं शान्ताढ्यं शरणमुपयाता जिनमतम् ॥
मुनीनां जैनानां निवसतिरियं सौख्यजननी,
गुणैः शुभ्रैर्धन्यो जयतु स तिलोको मुनिवरः ॥ ७ ॥

भावार्थ- [जिस महात्माके समुचित उद्योगसे यमदिशा= दक्षिणदिशा धनदवसतिः= कुबेर के नगर समान हो गई -] अर्थात् जिस दक्षिण देशमें मुनि लोग आने में संकोच रखते थे, उस देश को आपने मालवा मारवाड सदृश मुनिराजों का सुखकर निवासस्थान बना दिया-और शरणको चाहनेवाला जिनमत शांति स्थल पा गया. ऐसे उज्वल गुणों से युक्त पवित्रात्मा **श्री तिलोक ऋषिजी महाराज** अपने यशःशरीर से सर्वोत्कृष्ट विराजित होवें ॥ ७ ॥

प्रसादाद्यस्येमं हरितभरितं धर्मविटपं,
मुनीशः श्रीरत्नः प्रखरविदुपानन्दमुनिना ॥
सुशिष्येणोपेतो वचनपयसा सिञ्चतितराम् ,
गुणैः शुभ्रैर्धन्यो जयतु स तिलोको मुनिवरः ॥ ८ ॥

भावार्थ- जिस महात्मा के प्रसाद से यह जैन धर्मरूपी हरा भरा वृक्ष दिख रहा है, और उस वृक्ष को आपके पाटवी शिष्य **श्री रत्न ऋषिजी माहाराज** ने अपने सुशिष्य प्रखर विद्वान् **श्री आनन्द** ऋषिजी के साथ वचनरूपी जलसे सिञ्चन किया,

ऐसे उज्वल गुणो मे युक्त पवित्रात्मा श्री तिलोक ऋषिजी महाराज अपने यश शरीर से सर्वोत्कृष्ट विराजित होवे ॥ ८ ॥

शास्त्रविशारद पंडितवर्य श्री अमीऋषिजी महाराज प्रणीत

॥ श्री तिलोकाष्टक ॥

॥ १ ॥ सवैया ॥

उत्तम व्रत धारे, दूर पातिक हरनहारे,
विपति विदारे आप अमृतके क्यारे थे ।
ज्ञान सयम मतवारे, दान करुणा सनवारे,
चित उज्वल हितवारे, पक्ष दूषणते न्यारे थे ।
तत्त्व मारग उचारे, किए कुमतिसे किनारे,
होन शिवके दुलारे सुमतिके प्राण प्यारे थे ।
वचन अमृत उचारे अमर धामको पधारे,
वे तिलोकरिख स्वामी जगजीव रखवारे थे ॥

॥ २ ॥

मात नानूके नाने नहिं रहे जग छाने
विश्वमाहि प्रगटाने जास महिमा वखाने हैं ।
सुधा वचन सुन काने घने जीव हरखाने
दया भाव उर आने जैन तत्त्वको पिछाने हैं ।
क्रिया दान देत दाने मोक्ष मारग वताने
जिनराज गुण गाने नहिं नेक अरसाने हैं ।
आज अमृत गुण जाने वे तिलोकरिख दाने
हाय! छिनमें बिलाने मेघ इद्र ज्यों छिपाने हैं ॥

॥ ३ ॥

मनमें वैराग्य धार त्यागके ससार शिव–
मार्ग चित्त लाग सब पातकतें न्यारे थे ।
उदे बडभागे जैनागम अनुरागे सागे

आपके प्रताप आगे मिथ्यामति हारे थे ।
बडे बडे पंडितके खंडित किए हैं मान
अमृत वखाने धर्म–दीपक, उजारे थे ।
महा गुणवार ज्ञान क्रि-ा धनवारे
थे तिलोकरिख स्वामी जग जीव रखवारे थे ॥
॥ ४ ॥
सकल संसार सुख जानके अनित्यं चित्त
त्याग भाव धारी हितकारी शुभ संत है ।
आश्रव प्रमाद टार, रागद्वेषादि विदार
विषय, कषाय लाय, ठारि उवसंत है ।
धारे जिनवेन मोक्षपंथ सुख देन ऐन
देखत दीदार भव्य हिय हुलसंत हैं ।
अमीरिख कहे पाल संजम विशुध्द चित्त
स्वामीजी तिलोक सुरधाममें वसंत है ॥
॥ ५ ॥
व्हे गयो जगत जाल पातकतें दूर शूर,
धर्म दया मूल भेद रसनातें के गयो ।
के गयो अनेक मत आगमके भेद भार
अमृत जिनवेन चंद आननतें चे गयो ।
चे गयो अमर धाम आतम आराम काम
घने भव्य जीवनको ज्ञान दान दे गयो ।
दे गयो सुनत चित अमृत अखंड सो
तिलोकरिख स्वामी गुण नामी एक व्हे गयो ॥
॥ ६ ॥ गीता छंद ॥
कुमति तिमिर दल दलन स्वामी
धर्म दीपक सम हुए ।

शुद्ध जैन आगम भेद अमृत
सार रसनातें चये ।
भवि जीवको दरसाय शिवमग
जैन मत धारी किये ।
उपकारि धन्य तिलोकरिख गुरु
आप सुरवासी भये ॥

॥ ७ ॥

दयाके निधान भव्यजीवनके प्राण औ
सुजान ज्ञान ध्यानमें विमग्न गुणधामी थे ।
बालब्रह्मचारी महा दुक्कर आचारी सार–
काव्य कलाधारी हितकारी विसरामी थे ।
सुधा सम वाणी मृदु सबनके ज्ञाता दानी
देय उपदेश जीव तारवेके कामी थे ।
अमृत रटत नाम लेतही कटत पाप
ऐसेही प्रतापी श्री तिलोकरिख स्वामी थे ॥

॥ ८ ॥ सवैया २३ सा ॥

तिलोकके नाथकी आन गहे उर
संजम ले चित्त होय विशोक ।
विशोक हिये तप चारित पालत
टालत पाप अनरथ विलोक ।
विलोक लिये जिनवेण भलीविध
वदत भव्य सदा देइ धोक ।
धोक पियूप दिए तिहु काल कृपाल
कृपा कर स्वामि तिलोक ॥

॥ श्री सूर्यमुनि महाराजसे प्राप्त ॥

परिशिष्ट भाग.

पूज्य पाद महाराजश्री का शुभागमन दक्षिण देशमें हो जाने से जैन धर्म का कितना विकास हुआ यह तो वाचक वृन्द स्वयं अनुभव कर सकते हैं, परन्तु सारांश रूपमें यहभी प्रकाशित कर देना चाहता हूं कि महाराजश्री के सदुपदेशसे ४ वर्षके अन्दर दक्षिण देशमें कितने व्यक्ति त्यागी संयमी बने और पूज्यपादके यशःशरीर को पालन करते हुए किस तरह समाजको दिपा रहे हैं।

परिच्छेद चातुर्मास में हम लिख आये हैं कि घोडनदी के सुश्रावक **गम्भीरमलजी लोढा** के प्रार्थना से महाराजश्री का दक्षिण देशमें पधारना हुआ और प्रथम घोडनदी में पिता पुत्र महाराज **श्रीस्वरूप ऋषिजी** तथा महाराज **श्री रत्नऋषिजी** की दीक्षा हुई, एवं माता पुत्री सतीजी **श्री चम्पाजी** तथा **श्रीरामकुंअरजी महाराज** की दीक्षा हुई, तदनन्तर **महासती श्रीरंगूजी, लछमाजी, हरियाजी, अमृताजी, सोनाजी** वगैरह सती शिरोमणी आर्याजी **श्री हीराजी** के निश्रायमें बहुतसी शिष्यायें हुई। शिष्योंमें पाटवी शिष्य **श्री रत्न ऋषिजी महाराज** हुए, आपके दीक्षा काल से चौथे वर्षमें गुरु वियोग हुआ, उस समय आपकी बाल्यावस्था थी. शास्त्रकी शिक्षा गुरु मुखसे आपको विशेष न हो सकी, अतः आपने उसी अवस्थामें अनेक परीषहो को सहन करते हुए सतीजी **श्री हीराजी महाराज** की सहायतासे मालवा पधारे, वहां अच्छे मुनिराजों के द्वारा शास्त्रका परमोच्च ज्ञान सम्पादन कर मालवा मेवाड़ गुजरात वगैरह प्रदेशों में अपनी प्रखर वक्तृता के प्रभावसे स्वर्गस्थ पूज्यपाद महात्मा **श्री तिलोक ऋषिजी** के नाम को चिरस्थायी कर तेरह वर्ष के बाद महाराज **श्री अमोलक ऋषिजी** को साथ लेकर दक्षिणदेश में पधारे, मालवा में भी आपके प्रथम शिष्य **श्री वृद्धिऋषिजी** महाराज हुए, उनके शिष्य **श्री वेलजी ऋषिजी** महाराज हुए जो कि निरंतर चौदह वर्षतक एकधार गृहीत तक्र के आधार पर अपना निर्वाह किये थे. और दक्षिण देशमें आपके प्रथम शिष्य**श्री दगडू ऋषिजी** हुए दुसरे **श्री सुलतान ऋषिजी महाराज** हुए परन्तु अपनी स्वच्छंदतासे थोडेही समय में वे आपसे पृथक हो गये, बाद संवत १९७० मार्गशीर्ष शुक्ल ९ नवमी रविवार के दिन मिरी में **श्री आनंद ऋषिजी** की दीक्षा हुई, उस वख्त में आपकी उम्र तो सिर्फ १३ वर्ष की थी, परन्तु "**होन हार बिरवानके होत चीकने पात**" इस कहावतके अनुसार आपने शास्त्र मर्यादा के अनुकूल इतनी विनीतता के साथ अपनी शिष्यवृत्ति दर्शाई कि **श्री आनन्द ऋषिजी** से १ क्षणभर भी पृथक रहना वे असह्य समझते थे, अति कठिण परिश्रम द्वारा जैनागमका स्वयं अभ्यास कराकर तथा दूर २ से संस्कृतके विद्वानो को बुलाकर व्याकरण तर्क काव्य अलंकार चम्पू वगैरह ग्रंथोंका अध्ययन कराया और सं. १९७९ के ज्येष्ट शुक्ल २ रविवार को नांदुर में **श्री उत्तम ऋषिजी** को दिक्षित कर १ पूर्ण सहायक स्थापित कर गये. जिनको साथमें लेकर मुनि

श्री आनन्द ऋषिजी दक्षिण, खानदेश वरार, सी पी नागपूर वगैरह प्रांतोंमें विहार करके पुज्यश्री १००८ श्री कहानजी ऋषिजी महाराज के सम्प्रदाय के चन्द्र श्री तिलोक ऋषिजी महाराज तथा गुरुवर्य श्री रत्न ऋषिजी महाराज के यश दुदुभी का आवाज चौतर्फ जैन जैनेतर के श्रवण रंध्र में भर रहे हैं।

सती शिरोमणी श्री हीराजी महाराज के निश्राय में जितना शिष्यायें हुइ उनमें विदुषा सतीजी श्री रामकुअरजी महाराजने पुज्यपाद श्री तिलोक ऋषिजी महाराज तथा सतीजी से शास्त्र का उच्च ज्ञान प्राप्त कर लिये, और उस ज्ञानको वन्ही जाज्वल्यवत् कालांतर में उच्चतर कोटि में प्राप्त कर लिया, उनके पाण्डित्य मधुरवाग्मिता सौम्यमूर्ति का अद्वितीयताका अनुभव जिन व्यक्तियोंने उनके दर्शनका लाभ लिया है वेही कर सकते हैं इस महासतीजी के द्वारा दक्षिण देशमें बहुतहा जैनधर्म का प्रकाश हुआ, अनेकों दीक्षायें हुइ आपके शिष्याओं में अग्रशिष्या स्वर्गीया श्री सुन्दरजी महाराज थे उनको प्रधानजी तथा नानी महाराज के नाम से लोग आव्हान करते थे, उनके प्राभाविक मूर्ति तथा गुणों की प्रशसा आजतक जनता मुक्त कण्ठसे करता है, सम्प्रति महासतीजी का अग्र शिष्या विदुषा सतीजी श्री शांति कुंअरजी वगैरह ठाणा १२ से विराजमान है।

फैजपुरमें महासतीजी श्री भूराजी महाराज की दीक्षा हुई थी उनकी शिष्या सतीजी श्री प्रेम कुअरजी तथा विदुषी सतीजी श्री राज कुअरजी ठाणा ९ से सम्प्रति विराजमान है।

महासतीजी श्री नन्दूजी महाराज की दीक्षा सांडेखेडा में हुई थी, आपने सती शिरोमणी श्री हीराजी के साथ ८ वर्ष मालवा मे विचर कर शास्त्र ज्ञान सम्पादन कर दक्षिण में पधारे,आपके द्वारा पुज्यपाद के जीवन चरित्र के विषयमें बहुतसी बातों का पता चला है. आपकी अग्र शिष्या सतीजी श्री कुवरजी आदि ठाणा ६ विराजमान है

ॐ शुभ भूयात्

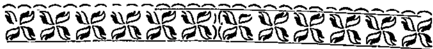






श्री सत्यबोध





॥ श्री महावीराय नमः ॥

कविकुलभूषण, शास्त्रविशारद, स्वामीजी श्री श्री १००८ श्री तिलोक ऋषिजी महाराज विरचित सत्य बोध प्रारम्यते.

छंद संग्रह.

॥ चोवीस जिनछंद ॥

॥ छंद त्रिभंगी ॥

श्री आदि जिनंदं, ससरस कंदं, अजित दिनंदं, भज प्राणी॥ संभव जगत्राता, शिवसगराता, द्यो सुखशाता, हित आणी ॥ अभिनंदन देवा, सुमति सुसेवा, करो नित मेवा, रिपुघाता ॥ चोविस जिनराया, मन वच काया, प्रणमुं पाया, द्यो साता ॥ १ ॥ टेक ॥ श्रीपद्म सुपासं, सांसगुणरासं, सुविधि सुवासं, हितकारी ॥ श्री शीतल स्वामी, अंतरजामी, शिवगत गामी, उपकारी ॥ श्रेयांस दयाला, परम कृपाला, भवजनवाला, जगदाता ॥ चो० ॥ २ ॥ वासुपूज्य सुकंतं, विमल अनंतं, धर्म श्रीसंतं, संतकारी ॥ कुंथु अरनाथं, तज जग साथं, मल्लि सुआथं, संग धारी ॥ मुनिसुव्रत सुनमि, आत्माने दमी, दुर्मतिने वमी, तपराता ॥ चो० ॥ ३ ॥ रिष्टनेमि बढाइ, नार न व्याही, तोरण जाइ छटकाई ॥ नाग नागण ताइ, दिया बचाइ, पारस साइ, सुखदाई ॥ जय जय वर्द्ध-मानं, गुणनिधि खानं, त्रिजग भानं, शुद्ध आता ॥ चो० ॥ ४ ॥ संसारका फंदा, दूर निकंदा, धर्मका छंदा, जिन लीना ॥ प्रभु केवल पाया, धर्म सुनाया, भव समजाया, मुनि कीना ॥ कहे रिख तिलोकं, सदा तस धोकं, द्यो सुख थोकं, चित चाता ॥ चो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्री पंच परमेष्ठी छंद ॥

॥ नाराच छंद ॥

तिलोक संत श्रेष्ठिकं, नमामि पारमेष्ठिकं ॥ भजे भजे उंद गलं, भवामि सदा मंगलं ॥ १ ॥ सर्वांग अंग सुंदरं, मारंत मार

दुर्धर ॥ सहस्र अष्ट लछन, समस्त शुद्ध स्वच्छन ॥ २ ॥ तितिक्ष जे चतुष्टक, हणत कर्म दुष्टक ॥ तपश्चर्या सपुष्टक, धरत ध्यान सुष्टुक ॥ ३ ॥ सुज्ञान पूर्ण धारक, अज्ञान भर्म वारक ॥ सुअष्ट प्रातिहारक, सुभव्य जीव तारक ॥ ४ ॥ प्रमाद वाद खडित, अनत गुण मडित ॥ अशुभ योग दडित, नमामि परम पडित ॥५॥ सुभानु कोटि भास्कर, भवाब्धि तारक पर ॥ विकारदृष्टि मोचन, नमामि शातिलोचन ॥ ६ ॥ सर्वल पाप खडन, सुजैनधर्म मडन ॥ अनत सुखदायक, नमामि सघनायक ॥ ७ ॥ विशिष्ट गुण अष्टक, समस्त शत्रु नष्टक ॥ अरूप रूप रासक, सदैव स्थीर वासक ॥ ८ ॥ अनत सुख सुस्थित, रहत सद्म निर्मित ॥ सबोध सर्व वारक, नमामि निर्विकारक ॥ ९ ॥ छत्रीश गुण शोभित, कषाय चउ अक्षोभित ॥ सुसपदाष्ट भाचक, नमामि नित्य वाचक ॥ १० ॥ प्रमाण नय सश्रुत, पचीश गुण सयुत ॥ सुज्ञान अन्य दायण, नमामि उपाध्यायण ॥ ११ ॥ तजत जगत जालक, परप्राण रक्षपालक ॥ वर्जंत पापकारण, गर्जंत धर्मधारण ॥ १२ ॥ तर्जंत काम क्रोधक, लर्जंत सो विरोधक ॥ वितराग आण शोधक, नमामि सत जोधक ॥ ३ ॥ अज्ञानता प्रहारण, अखील सुख कारण ॥ हणत मोह फेणत, नमामि जिनवैणत ॥ १४ ॥ मिथ्याधकार भजन, ददाति ज्ञान अजन ॥ प्रमाद दुख चूरण, नमामि सत्य गुरुण ॥ १५ ॥ तिलोकरिख सस्तवे, शरणु सदा भवोभवे ॥ कृपार्णव मया करी, सदैव द्यो हिरी सिरि ॥ १६ ॥ कलश ॥ दोहा ॥ जय जय श्रीपरमेष्ठिने, जय जय श्री जिनवेण ॥ जय जय श्री गुरुकी रहो, दियो सुमारग जैन ॥ १ ॥ इति

॥ परमेष्ठी परमानंद छंद ॥

॥ दोहा ॥

ओं नमो अरिहंताणं, इम पांचु पद माय ॥
ओं ऱ्हाँ ऱ्हीं श्रीं ऱ्हौं स्वाहा, जपता ऱ्हीं श्रीं थाय ॥ १०८ ॥ १ ॥

अ० सि० आ० उ० सा० ।

॥ छंद त्रिभंगी ॥

प्रणमुं सरसती, होय वरसती, चित्त हुलसे अति, गुण थुणवा ॥ शुद्ध भावे ध्यावे, सो सुख पावे, एक चित्त चावे, यश सुणवा ॥ जय जय परमेष्ठी, जगमें श्रेष्ठी, दे पद ज्येष्ठी, जगधारं ॥ त्रिजगमझारं, नाम उदारं, जय सुखकारं, नवकारं ॥ १ ॥ टेक ॥ बारे गुणवंता, श्री अरिहंता, लोग महंता, गुण गहेरा ॥ घन घातिक कर्मं, मिथ्या भर्मं, त्याग अधर्मं, विष लहेरा ॥ शुक्ल मन ध्याया, केवल पाया, इंदर आया, तिणवारं ॥ त्रि० ॥ २ ॥ वर परिषद् बारे, हर्ष अपारे, सुणि अवधारे, जिनवाणी ॥ अमृतसुं प्यारी, जग हितकारी, सुर नरनारी, पहेचाणी ॥ केइ संजम धारे, केइ व्रत बारे, कर्म विदारे, शिव त्यारं ॥ त्रि० ॥ ३ ॥ द्वितीय पद ध्यावो, सिद्ध गुण गावो, फिर नहीं आवो, जिहां जाइ. ॥ जे अलख निरंजन, भविमन रंजन, कर्मके भंजन, शिव सांइ ॥ पुदगलदा फंदा, दूर निकंदा परमानंदा, अविकारं ॥ त्रि० ॥ ४ ॥ अठ गुणके धारे, जगत निहारे, काल न मारे, उन तांइ ॥ जिहां सुख अनंता, केवलवंता, गुण उच्चरंता, छे नाहीं ॥ निज वास वताइ, द्यो मुझ तांइ, तुमसा नाहीं दातारं ॥ त्रि० ॥ ५ ॥ गणिवर पद त्रीजे, नित्य नमीजे, सेवा कीजे, हर्ष धरी ॥ पंच महाव्रत पाले, दूषण टाले, गज जिम माले, शूर हरी ॥ पांचु वश करते, पंच उच्चरते, पांचुही हरते, दुःखकारं ॥ त्रि० ॥ ६ ॥ शीतल जिम चंदा, अचल गिरिंदा, गणपति इंदा, शिरदारं ॥ सागर जिम गहेरा, ज्ञान लहेरा, मिथ्या

अधेरा, परिहार ॥ सपद वग्र पावे, न्याय वढावे, पाले पलावे, आ चारं ॥ त्रि० ॥ ७ ॥ गुरु सवा साधी, विनय आराधी, चित्त समाधी, ज्ञान भणे ॥ वारे अग वाणी पेटीसमाणी, पूरव नाणी, सशे हणे ॥ निरवद्य सत्य भाखे शास्त्र साखे, गुण अभिलाखे, निज सार ॥ त्रि ॥ ८ ॥ उवज्झाया स्वामी, अतरजामी, शिवगति गामी, हितकारी ॥ शीखणने आवे, जाग शिखावे, न्याय वतावे, उपकारी ॥ दुर्गतिमा पडता, कादव गडतो, चित्त करे चडतो, तिण वार ॥ त्रि० ॥ ९ ॥ कचुक अहि त्यागे, दूरे भागे, तिम वैरागे, पाप हरे ॥ छूटा परछदा, मोहनो फदा, प्रभुका वदा, जोग धरे ॥ सव माल खजीना, त्यागन कीना, महाव्रत लीना, अणगार ॥ त्रि० ॥ १० ॥ पाले शुद्ध करणी, भवजल तरणी, आपद् हरणी, दृष्टि रखे ॥ बोले सत्य वाणी, गुप्ति ठाणी, जगका प्राणी, सम लखे ॥ शिव मारग ध्यावे, पाप हटावे, धर्म वढावे, सत्य सार ॥ त्रि० ॥ ११ ॥ ए प्रणमे भावे, विघ्न हटावे, अरि हारि जावे, दूर सही ॥ जे तप तेजारी, दुःख विमारी, सोग सवारी, आत नहीं ॥ ग्रह पीडा भागे, दृष्टि न लागे, शत्रु न जागे, लीगार ॥ त्रि० ॥ १२ ॥ ए मतर नीको, तारक जीको, त्रिजग टीको, सुखदाता ॥ ए मत्र करारी, महिमा भारी, लहे नर नारी, सुखसाता ॥ सरजीवन वेली, दे धन ठेली, भव भव केली, यह सार ॥ त्रि० ॥ १३ ॥ पद्मासन वाली, रग निहाली, आरत टाली, ध्यान धरे ॥ तिलोक पयपे, भावसु जपे, ऋद्ध सिद्ध सपे, जेह धरे ॥ एह छद त्रिभगी, गावे उमगी, भव भव सगी, जयकार ॥ त्रि० १४ ॥ इति ॥

॥ श्री महावीर जिनस्तवन छद ॥

॥ त्रिभगी छद ॥

जिन शासन स्वामी, अतर जामी, शिवगति गामी, सुखकारी ॥ जगमे जसरता, श्री भगवता, सुगुण अनता, उपकारी

सिध्दार्थकुल आया, जगत सुहाया, शुभ पल जाया, गुण धारी॥ धन त्रिसलानंदन, कुलध्वज स्यंदन, जिन चरणनकी, बलिहारी ॥ १ ॥ आसन कंपाया, सुरपति आया, शीस नवाया, शुभ भावे ॥ वैक्रियरुपा पासे, मेलि हुलासे, ले जिन तासे, गिरि आवे ॥ तीहां प्रभुजीनो, महोत्सव कीनो, फिर सुक दीनो, ज्यां महतारी ॥ धन० ॥ २ ॥ युग वंदना करके, निद्रा हरके, स्तवन उच्चरके, घर जावे ॥ भइ रवि उगाइ, सूधव ताइ, दासी बधाइ, दरसावे ॥ नृप महोत्सव कीयो, दान जु दीयो, हर्षित हीयो, निहारी ॥ धन० ॥ ३ ॥ यौवन वय माही, नारी व्याही, अवसर पाइ, जोग ग्रहे ॥ तपस्या तन तावे, शम दम भावे, ध्यान सुध्यावे, कष्ट सहे ॥ प्रभु क्षमा सागर, ज्ञान उजागर, गुण रत्नाकर, अघवारी ॥ धन० ॥ ४ ॥ शुध्द संयम पाले, दूषण टाले, शिवमग चाले, जगत्राता ॥ क्रोध मानने माया, लोभ हटाया, मोह भगाया, अरिघाता ॥ शूकल मन ध्याया, कर्म खपाया, केवल पाया, जिणवारी ॥ धन० ॥ ५ ॥ सुणि नाथ बडाई मन अकडाइ, आया चलाइ, प्रभु पासे ॥ विस्मय अति पाया, चित्त लजाया, गर्व गमाया, वीमासे ॥ प्रभु भर्म मिटाया, जिनमग आया, संजम ठाया, तिण सारी ॥ धन० ॥ ६ ॥ परथम इंद्रभूति, पूर्वधर श्रुति, त्रिपदी संयुति, फरमाया ॥ गणधरपद लीना, परम प्रवीना, शम दम भीना, तन ताया ॥ चुमालीसे लारा, गणधर ग्यारा, भए अनगारा, व्रत धारी ॥ धन० ॥ ७ ॥ चार तीरथ थाप्या, पाप उथाप्या, सुव्रत आप्या, नरनारी ॥ केइ स्वर्ग सिधाया, केइ शिव पाया, श्रीजिनराया हितकारी ॥ शैलेशी भावे, प्रभु शिव पावे जगमें नावे अविकारी ॥ धन० ॥ ८ ॥ प्रभु अलख निरंजन, भव-दुःख भंजन, भविजन रंजन, कृपाला ॥ जे शुद्ध मन ध्यावे, दुःख पलावे, सुख उपावे, प्रतिपाला ॥ कहे रीख तिलोकं, निरंतर धोकं,

दीजो शिव थोकै, भवपारी ॥ धन० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ श्री अरिहंत छंद ॥

॥ मोतीदाम छंद ॥

सदा जगनायक स्हायक हस, सुकायक वायक लायक वस ॥ सुश्रेष्ठ विशेष्ट सुज्येष्ठ कहत, अहो अरिहंत करो सुख सत ॥ १ ॥ सुतात सुमात सुभ्रात सुजात, सुगात सुवात सुपात सुआत ॥ सुलछन अष्ट सहस्त्र कहत ॥ अहो ॥ २ ॥ विशाल सुभाल सुवाल अवाल, दयाल मयाल अजाल कृपाल ॥ सुमाल सुलाल भवीक इच्छत ॥ अहो ॥ ३ ॥ अखड अडड अचड अतड, अगड अवड, असड सुसड ॥ अफडण छड भये गुणवत ॥ अहो ॥ ४ ॥ महा वीर गभीर ध्यान सुस्थीर अचीर विचीर अगीर सुगीर ॥ अपीर सुपीर सुबोध कहत ॥ अहो ॥ ५ ॥ अरीश निरीश शत्रुदल पीस, जगीश मगीश गुणीश वरीश ॥ अखेह अछेह अभेह रहत ॥ अहो ॥ ६ ॥ उत्थापक पाप तीर्थंकर आप, जपत जिनद वधत प्रताप ॥ अनत गुणातम श्रीभगवत ॥ अहो ॥ ७ ॥ अनेह विनेह अगेह सुगेह, अमेह विमेह अदेह विदेह ॥ अलेप सुलेप सदा दरसत ॥ अहो ॥ ८ ॥ न कर्म न भर्म न गर्म उछाह, अक्रोध अमान अमाय अदाह ॥ अरोग असोग अभोग तरत ॥ अहो ॥ ९ ॥ सुज्ञान अराध समाधि प्रणाम, विहार करत भवी हित काम ॥ भजत सुरासुर स्वामि महत ॥ अहो ॥ १० ॥ कहत सदा उपदेश रसाल हठत मिथ्यातम बधन जाल ॥ आराधक होय तिरत अनत ॥ अहो ॥ ११ ॥ रटत कटत दुरीत समस्त, लहत सुखामृत वाछित वस्त ॥ उद्धारक वृद्ध सहित हितवत ॥ अहो ॥ १२ ॥ त्रिजोग निवार वसे शिवलोक, चरणावुज धोक, ते रिख तिलोक ॥ विलोक सुदेव जपो जग कत ॥ अहो ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ श्री सिद्धाष्टक छंद ॥

॥ नाराच छंद ॥

प्रसिद्ध सिद्ध शिव कंत, संत श्रेष्ठ देव हो॥ झटक दी सकल पाप, खेव नीरलेव हो॥ कलंक वंक डंक अंक, रंच त्वं न डंबरं ॥ कृपा करो दयानिधी, ऋद्धि वृद्धी सिद्धी करं ॥ १ ॥ टेक॥ अरूप रूप स्व-अनूप, भूपधू अखंड हो॥ अपंड भंड डंड गंड, छंडके प्रचंड हो॥ अनंत ज्ञानरूप लाय, पाप मेल संहरं॥ कृपा. ॥ २ ॥ प्रमाद क्रोध मान माय, लोभ लेश सा नहीं ॥ अनंत काल स्थीत है, अनंत सुख रासही॥ अष्ट महा गुण मूल, त्वं सदा सुसंवरं॥ कृपा. ॥ ३ ॥ विकार खार दूर टाल, राग द्वेष संहऱ्या॥ अगाध जो भवोधि सो, धर्मपोतथी तऱ्या॥ प्रत्येक एकमेक आप, व्याप हो गुणागरं॥ कृपा. ॥ ४ ॥ अलेख रेख रूप नाहीं, पापफंद बंध सो॥ आहार भार हास्य त्रा , नाश काम धंधसो ॥ अभंग ज्ञान संग चंग, गुप्त ना उजागरं ॥ कृपा. ॥ ५ ॥ अलोक लोक द्रव्य क्षेत्र, काल भाव जाण हो॥ त्रिलोकनाथ त्रात भ्रात, मंद्र चंद्र भाण हो॥ विनाश किया रोग सोग, भोग भाव भंगुरं ॥ कृपा. ॥ ६ ॥ जपंत जाप आग नाग, सिंह चोर सो हटे॥ कटंत बंध द्रव्य भाव, रोग दुःख जे मिटे॥ विषय कषाय लाय जाय, आय सुख सागरं ॥ कृपा. ॥ ७॥ तिलोकरिख हस्त जोड, करत नित्य वंदना॥ निरोग बोध लाभ चहाय, कर्मकी निकंदना॥ नहीं जगत-माही ओर, आपसो विश्वंभरं॥ कृपा. ॥ ८ ॥ नित्य ए सिद्धाष्टकं, पठंति जे मनोहरं ॥ विज्ञान मुक्ति सुख द्रव्य, भाव होत नागरं ॥ नान्यत्र देवलोक माही, सिद्धस्थान उपरं॥ कृपा. ॥ ९ ॥ दोहा ॥ अ-जर अमर अविकार हो, सिद्ध निरंजन देव ॥ किंकर पर करुणा करो दीजो अविचल सेव ॥ १ ॥ इति॥

॥ श्री आचार्य छंद ॥

॥ मरहट्टा छंद ॥

जे ज्ञान महंता, समकितवंता, चारितर तप धार ॥ उत्कृष्टी करणी, भवजल तरणी, पंचम वीर्य आचार ॥ स्वयं पाले पलावे, पाप हटावे, उपदेशे नर नार ॥ गणिवर पद त्रीजे, नित्य नमीजे, कीजे सफल जमार ॥ १ ॥ टेक ॥ सब हिंसा टाले, दया सो पाले, निरवद्य बोले विचार ॥ दत्त व्रत ब्रह्मधारी, परिग्रह टारी, पंच जाम शुद्ध धार ॥ सुरत चक्खु नासा, रसना फासा, इंद्रिय जीतनहार ॥ गणि ॥ २ ॥ पशु पंडग नारी, थानक टारी, नारिकथा परिहार ॥ अंग निरखवा वारे, आसन टारे, सुण न शब्द विकार ॥ क्रीडा न संभारे, सरस रस टारे, करे न अधिको आहार ॥ गणि ॥ ३ ॥ अंग शोभा टाले, वाड ए पाले, क्रोध न करे लगार ॥ अभिमान तजंता, कपट तजंता, ममता दी सब मार ॥ कषाय एह चारी, महा दुखकारी, भरमावे संसार ॥ गणि ॥ ४ ॥ कर्मनका फंदा, दूर, निकंदा, चाले ईर्या विहार ॥ निरवद्य मुख वाणी, ले शुद्ध अन्न पाणी, दोष बयालिस टार ॥ जयणा करि लेवे, विधिसु परठेवे, समिति ए सुखकार ॥ गणि ॥ ५ ॥ मन वचन काया, गुप्ति त्रिहु डाया, गुण छत्तीस उदार ॥ शुद्ध किरियाधारी, ज्ञान भंडारी, करता पर उपकार ॥ उपदेश सुनावे, भर्म उडावे, तारे भवि नर नार ॥ गणि ॥ ६ ॥ वर रूप दीपता, महाबलवंता, वाणी अमृत धार ॥ अक्षर शुद्ध बोले, सात नय खोले, डोले नहीं लगार ॥ विद्या निधाना, युगप्रधाना, गुणगण रत्नाकार ॥ गणि ॥ ७ ॥ कुपक्ष नहीं ताणे, सब मत जाणे, अन्यमतको परिहार ॥ शीतल शशि जीपे, रवि जिम दीपे, साथे बहु अनगार ॥ पाखंड हटावे, जैन दिपावे, पाले संजम भार ॥ गणि ८ ॥ आचारज नाणी, गुणनिधि खाणी, आचारज सुखकार, ॥ समरण सुखकारी, महिमा भारी, अरि करी भय परिहार ॥ दुःख जावे दूरे, संकट चूरे, पूरण रहे भंडार ॥

गणि. ॥ ९ ॥ आचारज स्वामी, अंतरजामी, सिद्ध पदके दातार ॥ गुणिवर गुण गावे, पार न पावे, रसना रचे हजार ॥ अलप गुण गाया, मन समझाया, तिलोक करे नमस्कार ॥ गणि. ॥ १० ॥ संवत उगणीसे, वर्ष चोतीसे, वैशाख पूनम शशिवार ॥ जो जपशे भावे, सोही सुख पावे, छंद मरहठा धार ॥ प्रातें उठ वंदे, दुरित निकंदे, रिद्ध सिद्ध जय जयकार ॥ गणि. ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ श्री उपाध्याय छंद ॥

॥ हाटकी छंद ॥

संसार सागर, दुःख आगर, जाणे नागर, धीर ए ॥ ततकाल त्यागे, दूर भागे, शूर सागे वीर ए ॥ मुनिराज पासे, ग्रहे दीक्षा, ज्ञान शिक्षा, आप ए ॥ चउथे पद उवज्झाय सुखकर, कीजे नित्य प्रति जाप ए ॥ १ ॥ टेक ॥ आचारंग चंग, अंग सुयगड, ठाणायंग सुखकार ए ॥ चउथो समवायांग नीको, भगवइ ज्ञाता सार ए ॥ उपासक अंतगड, अंग अष्टम, अनुत्तरोववाइ थाप ए ॥ चउथे. ॥ २ ॥ प्रश्न व्याकरण, भण्या पूरण, अंग विपाक, रसाल ए ॥ गुरुदेव पासे, अर्थ धार्‍या, चउदे दूषण टाल ए ॥ ग्यारा अंग, संगो–पांग, शीख्या अति, चित्त चाल ए ॥ चउ. ॥ ३ ॥ उत्पात अग्री, वीर्य तृतीय, अस्ति ज्ञान सत्त जाणीए ॥ आतम प्रवाद, अरु कर्म पूरव, प्रत्याख्यान वखाणीए ॥ विद्या अबंध, प्रवाद पूरव, धारंत तोहि न धाप ए ॥ चउ. ॥४॥ प्राण क्रिया, विशालपूरव लोकाबिंदु, सार ए ॥ चतुर्दश पूरव, अंग ग्यारा, पाठ अर्थ, सुधार ए ॥ अभिमान तज कहे, वेण चारु, नाहिं करत कूडी थाप ए ॥ चउ. ॥ ५ ॥ भविकजन जो, प्रश्न पूछे, नव पदारथ, भाव ए ॥ सूक्ष्म बादर, द्रव्य ग्वटनो, पूछे कोई, प्रस्ताव ए ॥ तब देत उत्तर, शोध सुत्तर, दे जिनागम, छाप ए ॥ चउ.॥ ६ ॥ ज्ञानदाता, धर्म-

॥ श्री आचार्य छद ॥

॥ भरद्दा छद ॥

जे ज्ञान महता, समकितवता, चारितर तप धार ॥ उत्कृष्टी करणी, भवजल तरणी, पचम वीर्य आचार ॥ स्वय पाले पलावे, पाप हटावे, उपदेशे नर नार ॥ गणिवर पद त्रीजे, नित्य नमीजे, कीजे सफल जमार ॥ १ ॥ टेक ॥ सव हिंसा टाले, दया सो पाले, निरवद्य बोले विचार ॥ दत्त व्रत ब्रह्मधारी, परिग्रह टारी, पच जाम शुद्ध धार ॥ सुरत चक्खु नासा, रसना फासा, इंद्रिय जीतनहार ॥ गणि ॥ २ ॥ पशु पडग नारी, थानक टारी, नारिकथा परिहार ॥ अग निरखवा वारे, आसन टारे, सुणे न शब्द विकार ॥ क्रीडा न सभारे, सरस रस टारे, करे न अधिको आहार ॥ गणि ॥ ३ ॥ अग शोभा टाले, वाड ए पाले, क्रोध न करे लगार ॥ अभिमान तजता, कपट तजता, ममता दी सव मार ॥ कषाय एह चारी, महा दु खकारी, भरमावे ससार ॥ गणि ॥ ४ ॥ कर्मनका फदा, दूर, निकदा, चाले ईर्या विहार ॥ निरवद्य मुख वाणी, ले शुद्ध अन्न पाणी, दोष वयालिस टार ॥ अथणा करि लेवे, विधिसु परठेवे, समिति ए सुखकार ॥ गणि ॥ ५ ॥ मन वचन काया, गुप्ति त्रिहु डाया, गुण छत्तीस उदार ॥ शुद्ध किरियाधारी, ज्ञान भडारी, करता पर उपकार ॥ उपदेश सुनावे, भर्म उडावे, तारे भवि नर नार ॥ गणि ॥ ६ ॥ वर रूप दीपता, सहावलवता, वाणी अमृत धार ॥ अक्षर शुद्ध बोले, सातू नय खोले, डोले नहीं लगार ॥ विद्या निधाना, युगप्रधाना, गुणगण रत्नाकार ॥ गणि ॥ ७ ॥ कुपक्ष नहीं ताणे, सब मत जाणे, अन्यमतको परिहार ॥ शीतल शशि जीपे, रवि जिम दीपे, साथे बहु अनगार ॥ पाखड हटावे, जैन दिपावे, पाले सजम भार ॥ गणि ८ ॥ आचारज नाणी, गुणनिधि खाणी, आचारज सुखकार, ॥ समरण सुखकारी, महिमा भारी, अरि करी भय परिहार ॥ दु:ख जावे दूरे, सकट चूरे, पूरण रहे भडार ॥

गणि. ॥ ९ ॥ आचारज स्वामी, अंतरजामी, सिद्ध पदके दातार ॥ गुणिवर गुण गावे, पार न पावे, रसना रचे हजार ॥ अलप गुण गाया, मन समझाया, तिलोक करे नमस्कार ॥ गणि. ॥ १० ॥ संवत उगणीसे, वर्ष चोतीसे, वैशाख पूनम शशिवार ॥ जो जपशे भाव, सोही सुख पावे, छंद मरहटा धार ॥ प्रातें उठ वंद, दुरित निकंद, रिद्ध सिद्ध जय जयकार ॥ गणि. ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ श्री उपाध्याय छंद ॥

॥ हाटकी छंद ॥

संसार सागर, दुःख आगर, जाण नागर, धीर ए ॥ ततकाल त्यागे, दूर भागे, शूर सागे वीर ए ॥ मुनिराज पासे, ग्रहे दीक्षा, ज्ञान शिक्षा, आप ए ॥ चउथे पद उवज्झाय सुखकर, कीजे नित्य प्रति जाप ए ॥ १ ॥ टेक ॥ आचारंग चंग, अंग सुयगड, ठाणायंग सुखकार ए ॥ चउथो समवायांग नीको, भगवइ ज्ञाता सार ए ॥ उपासक अंतगड, अंग अष्टम, अनुत्तरोववाइ थाप ए ॥ चउथे. ॥ २ ॥ प्रश्न व्याकरण, भण्या पूरण, अंग विपाक, रसाल ए ॥ गुरुदेव पासे, अर्थ धार्‍या, चउदे दूषण टाल ए ॥ ग्यारा अंग, संगो–पांग, शीख्या अति, चित्त चाल ए ॥ चउ. ॥ ३ ॥ उत्पात अग्री, वीर्य तृतीय, अस्ति ज्ञान सत्त जाणीए ॥ आत्म प्रवाद, अरु कर्म पूरव, प्रत्याख्यान वखाणीए ॥ विद्या अबंध, प्रवाद पूरव, धारंत तोहि न धाप ए ॥ चउ. ॥४॥ प्राण क्रिया, विशालपूरव लोकबिंदु, सार ए ॥ चतुर्दश पूरव, अंग ग्यारा, पाठ अर्थ, सुधार ए ॥ अभिमान तज कहे, वेण चारु, नाहिं करत कूडी थाप ए ॥ चउ. ॥ ५ ॥ भविकजन जो, प्रश्न पूछे, नव पदारथ, भाव ए ॥ सूक्ष्म बादर, द्रव्य खटनो, पूछे कोई, प्रस्ताव ए ॥ तब देत उत्तर, शोध सुत्तर, दे जिनागम, छाप ए ॥ चउ.॥ ६ ॥ ज्ञानदाता, धर्म-

राता, बोले निरवद्य, वेण ए ॥ मिथ्यात खडण, जैन मडण, पाले जिनवर, केण ए ॥ गणिपद्ने, जोग सोहे, नामकर्म, आताप ए ॥ चउ ॥ ७ ॥ महाव्रत पाले, दोष टाले, चाले इरजा, शोध ए ॥ कर्मरूपी शत्रुघातक, परम शूरा, जोध ए ॥ मन वचन काया, करण तीनु, करत नहीं, सो पाप ए ॥ चउ ॥ ८ ॥ उपाध्याय भक्ति, करत जुक्ति, ज्ञानगर, जीवत ए ॥ मिथ्यात जावे, बोध आवे, थावे शिवपुर, कत ए ॥ जैनमारग, तरण तारण, अवर सव कलाप ए ॥ चउ ॥ ९ ॥ जिन नहीं, जिनराज सरखा, वेण सत, सुखकार ए ॥ देश जिनपद, माहि विचरे, करता पर, उपकार ए ॥ मिथ्यात्व अधा, कर्म फदा, ज्ञान असि कर, काप ए ॥ चउ ॥१०॥ भवप्राणी तारे, सशे टारे, बहु सूत्र विस्तार ए ॥ उत्तराध्ययन, इगियारमानें, कह्यो वर्णव, जहार ए ॥ तिलोक रिख, कर जोडि वदे, सदा पुण्य प्रताप ए ॥ चउ० ॥११॥ इति ॥

—(❀)—

॥ श्री साधु छद ॥

॥ कामनी मोहनानी देशी ॥

साधु निर्ग्रंथने वदना कीजिए, मानवको भव सफल करीजीए ॥ धन्य जे सत गुणवत सोभागिया, भोग किंपाकसा जाणके त्यागीया ॥१॥ पच महाव्रत समकित पालता, चार कषाय दावानल टालता ॥ भाव सच्चे मुनि वदू में नित्त ए, कर्ण सच्चे जोग सच्चे सुकित्तए ॥२॥ धन्य जे क्षमा वैरागमें राचिया, द्रव्य छ नव पदारथ जाचिया ॥ मन वचन काया सम धारता, ज्ञान दर्शन चरण शुद्ध सारता ॥३॥ समभावे करी वेदनी खमता, मरण आया थकी जे करे समता ॥ गुण सत्तावीस सजम जे धरे, राग अने द्वेष जे किंचित नहिं करे ॥४॥ तीन ही शल्य सो मूल निकदिया, मोहनी कर्मसू ते नहीं फदिया ॥ नहीं करे विकथा धर्म सुध्यावता, शुक्लध्यान

धर कर्म खपावता ॥५॥ दया छकायकी पालता जे मुनि, क्रिया भेद मद नहीं करे महागुणी ॥ नव वाड मुनिधर्म पाले अखंड ए, सकल मिथ्यातको छंड्यो अफंड ए ॥६॥ बावीस परिसह जीतिया ते सही, बावन प्राणरक्षक विचरे मही ॥ बावन अनाचीरण टालता, चोराशी उपमायुक्त वे चालता ॥७॥ एक एक चउथादि षष्टमासी करे, एकावली रत्नावली आदरे ॥ गुण रतन संवच्छर धारता, प्रतिमादिक संलेखना जहारता ॥८॥ तप ऊणोदरी छे अति मोटको, भिक्षाचरी रसत्याग नहीं छोटको ॥ काय किलेसने पडिसंलीनता, षष्ठ तप धारके तन करे क्षीणता ॥९॥ प्रायश्चित्त विनय वैयावच्च जे करे, सज्झाय ध्यान काउसग्ग आदरे॥ प्रच्छन्न खट तप साधे अणगार ए, टाले सही जिके कर्मको खार ए ॥१०॥ चंद्र ज्यूं सोमदृष्टें करी दीपता, तपतेजें रविकिरणने जीपता॥सागर जेम गंभीर कहीजीए, कुंजर जेम धीरजता लीजीए॥११॥ लब्धि पाया भली प्रगट तपस्या फली, खेलोसही जलोसही प्रसिद्ध प्रगटी भली॥ वप्पोसही केइ आमोसही पत्तिया, सव्वोसही कोठबुद्धि केइ मत्तिया ॥१२॥ बीजबुद्धी वली पदानुसारिया, एकेक मुनिवर वैक्रिय धारिया ॥ चारणा विज्जहरा मुनिराजिया, ऋजु विपुलमति संशय भांजिया ॥१३॥ एकेक मति श्रुति अवधि धणी, मनःपर्यव केवल शोभा घणी ॥ केवली दोय क्रोडी सुखकार ए, नवकोडी उत्कृष्ट विचार ए ॥१४॥जघन्य दोय सहस्र कोडी जती, सहस्र प्रत्येक उत्कृष्ट पदें संजती॥ आज्ञा जिनंदकी पालता जे सदा, धन्य जे जगतमें सकल छोडे अदा ॥१५॥ दुरित टले मुनि . भावसूं जंपता, तम दलित होवे जिम रवि तपता ॥ कर्म शत्रु जीके करत निकंदना, रिख तिलोकजी करे तस वंदना ॥१६॥ संवत उगणीशे तीस मझारए, ज्येष्ट आदि छट सूरज वारए॥ कामनी मोहना छंदमें जाणीए, सु . वेली जले पुष्कर मानीए ॥१७॥ कलश॥ इम ऋद्धि वृद्धि समृध्दि कारण, जपो मुनिवर भावसुं ॥ धर्मदेव महन्त प्रणसुं, शूण्या सुगुरु पसावसुं ॥ एम जाणी सेवो प्राणी,

सुसाधु मन खत ए ॥ ते लहे शिवपद रूप निश्चे, निर्भय शिवसुख सत ए ॥ १ ॥ इति ॥

—(❀)—

॥ अथ चतुर्विंशति जिन नाम नमोत्थुण युक्त छंद ॥

जय जय आदीश्वरजी अजित भणी, संभव अभिनंदन मोक्ष धणी ॥ सुमति पद्म सुपास मणी, चंद्रप्रभुकी जग महिमा घणी ॥१॥ पुष्पदंत शीतल हण्या कर्म अरी, श्रेयांस वासुपूज्य आर्ति हरी ॥ श्रीविमल अनंत धर्म जीत करी, शांतिनाथ प्रभु हर्यो रोग मरी ॥२॥ कुंथु अर मल्लि जिन सुखदाता, मुनिसुव्रत नमीश्वर जग ताता ॥ रिष्टनेमि करुणारस माता, पारस पारस सम विख्याता ॥ ॥३॥ वर्द्धमान जिनंद शासनराया, अति क्षमा करी केवल पाया ॥ चोवीश जिनेश्वर मन भाया, प्रणमु वंदू मन वच काया ॥४॥ अरिहंत धर्म आदि तीर्थंकर, स्वयमेव बोध शुध्द ध्यान धरे ॥ पुरुषोत्तम हरि जिम नाहीं डरे पुरुषोत्तम पुंडरीक पंक सिरे ॥५॥ पुरुषोत्तम प्रभु गंधहस्ति भले, जिन विचरे जहा पाखंडी गले ॥ लोकोत्तम नाथ हितकार फले, दीपक ज्यों मिथ्या तम सर्व दले ॥६॥ उद्योत करे भविलोक हिये, अभयज्ञान रूपी प्रभु नेत्र दिये ॥ शुद्ध मारग भूले जग जे प्राणी, मोक्ष पंथ बतावे सुखदाणी ॥७॥ कर्म शत्रुसु त्रास्या भवि आवे, तिनकु जिन शरणागत थावे ॥ संयम जीतव दायक स्वामी, बोध बीज दाता नमु शिर नामी ॥८॥ धर्मदायक देशक नायगाण, धम्म सारही जिन चक्रवर्ती जाण ॥ अरिहंत अपडिहय वरनाण, दंसणधरा वियट्ट छउमाण ॥ ९ ॥ रागद्वेष जिन्नाण जावयाण, भव ओघ तिन्नाण तारयाण ॥ धन जिन बुद्धाण बोधकाण, अष्टकर्म मुत्ताण मोयगाण ॥१०॥ सव नाण दंसण शिव अचल थया, आरोग अणंत अखय अबाध रह्या ॥ आवे नहीं फिर

इण जगमांई, सिद्धगति नामधेयं कहाई ॥११॥ जिण थानक प्रभु संप्राप्त थया, निज गुण संपूरण आठ कया ॥ असुर सुर गरुड भुयंग देवा, इंद्र चंद्र करे प्रभुकी सेवा ॥१२॥ कल्पवृक्ष चिंतामणिथी भारी, जिनवर महिमा अपरंपारी ॥ नरक निगोद गतिका ताला, जिन नाम थकी मंगलमाला ॥१३॥ करि केसरि सावज दुष्ट जिके, वली उदक अगनि भय दुःख तिके ॥ दुर्जन छल वल नहीं चालि सके, जो प्रभु समरण कर भाव पके ॥१४॥ वध बंधन परवश दुःख कटे, वली चोर चरड भय दूर हटे ॥ गड गुंवड ज्वरादिक रोग मिटे, जो एक चित्त जिन नाम रटे ॥१५॥ ऋद्धि सिद्धि परिवार भंडार अति, तस आदर दे सुरराज पति ॥ जिन समरण थी प्रशस्त मति, दिन दिन बधे महिमा पुण्यरती ॥१६॥ आभ कागद लेखिणी मेरु तणा, उदधि जल जानि मसी आणी ॥ सुरगुरु गुण गावे प्रेम भणी, अनंत गुणानम त्रिजग धणी ॥१७॥ तिलोक रिख कहे शिर नामी, मुझ दरसण द्यो अंतरजामी ॥ भव भव शरणुं आप तणुं, जब लग नहिं द्यो मुझ सिद्ध पणुं ॥१८॥ संवत् उगणीसे वर्ष त्रिशे, जिनस्तवन किया चित्त जगीश ॥ पढ सुणे जो नरनारी, तस घर वरते मंगल चारी ॥१९॥ इति ॥

॥ आनंदमंदिर नाम मंगल छंद. ॥

सफल संसार अवतार ए हुं गणुं ॥ ए देशी. ॥

ॐ ह्रीं श्रीं नमो श्री अरिहंत ए, टालो संकट सहु शत्रु दुर्दंत ए ॥ घन घातिक चउ कर्म किया अंत ए, ध्याइओ शुकल ध्यान महसंत ए ॥ १ ॥ पाया प्रभु विमल ज्ञान केवल सही, द्वादश पर्षदा वंदवा आवही ॥ करुणाके सिंधु उपदेश फरमावही, सुणत भवि प्राणी मन तन हुलसावही ॥२॥ अथिर जग जाणके संजम आदरे, केइ वारा व्रत निर्मल उच्चरे ॥ केइ विशुद्ध समकीत समाचरे, तिण दिने चतुर्विध संघ

स्थापन करे ॥३॥ विचरे भूमडले भविकजन तारवा, जन्म जरा मरणना सकट वारवा ॥ प्रथम मगल इम नित प्रते वदिये, भव भव दुष्कृत दूर निकदिये ॥४॥ ओं न्हीं श्रीं नमो सिद्ध उर्ध्व राजके, सिद्ध करो सव मनो वछित काजके ॥ अजर अमर अविनाशी अविकार ए, सुख अनत अनत गुण धार ए ॥५॥ राग रगित नही कर्म सगत नही, निर्भय स्थान अवगाहन अटल लही ॥ अखड अडड प्रभु जगत शिरोमणि, अडग धर्म झुडमे वदु त्रिजग धणी ॥६॥ ओं न्हीं श्रीं सव साधु उमायके, तारे भव प्राणी उपदेश वतायके ॥ भोग किंपाकसा जाणके त्यागिया, धन्य जे सत गुणवत सोभागिया ॥७॥ ओं नमो जिन अवधि परमावधि, ओं नमो केवली उग्र तपस्या निधि ॥ ओं नमो कोठ नमो वीजबुद्धिया भणी, पदानुसारी सभिन्नसोया मुनि ॥८॥ वदु रिज्जुमति विपुलमतिके, पूर्वदश चतुर्दश अष्ट नैमित्तिके ॥ वैक्रिय लब्धि धरा जघा विद्याचरा, प्रश्न श्रमण वली गगन गामी धरा ॥९॥ उग्र तप घोर तप दीप्त-तपस्या धरा, घोर पराक्रमी शीलवता खरा ॥ रीश आणे नहीं करत कोइ निंदना, हरख आणे नहीं जो करे वदना ॥१०॥ अनशन तप कोइ करत ऊणोदरी, वृत्तिसक्षेप रसत्याग भिक्षाचरी ॥ काय किलेश सलीनता आदरे, प्रायश्चित विनय वेयावच मनशु करे ॥११॥ सज्झाय ध्यान काउसग्ग ठावही, कचन ककर एकसम भावही ॥ जघन्य पृथकत्व शय सहस्र कोडी जती, उत्कृष्ट पर्दे रिख वदू मैं शुभमति ॥१२॥ ओं नमो धर्म श्री जैन जिन भाखियो, दुर्गति पडत भव भव थिर राखियो ॥ दया भगवती सव शास्त्रमें वर्णवी, हिरदे अनुकपा सो दाख्यो जिनजी भवी ॥१३॥ निज आतम सम जाण सब प्राणीने, पालो दया अनुकपा चित्त आणीने ॥ जीव अनत तर्या ईण प्रभावथी, जेम उदधितणो पार लहे नावथी ॥१४॥ हिंसामय धर्म सो दूर निवारजो, चोथु मगल एह धरमनु धारजो ॥ तन धन जोवन अ-

थिर करि जाणजो, चारूंही मंगल उत्तम मानजो ॥१५॥ चारनुं शरण नित्य लीजो थे पलपले, एह परभावथी सर्व संकट टले ॥ दुशमन चोर धूरत कोइ नहि छले, सिंह सर्पादिक देखि दूरा टले ॥१६॥ गड गुंबड रोग महाकष्ट असाध्य सो, एह सरणाथकी लहे समाध सो ॥ ताव तेजारी त्रूटे इण ध्यावता, विघ्न व्यापे नहीं पंथमें जावता ॥१७॥ भूत झोटिंग अरु डंकणी शंकणी, विघन करे नहीं देवी विहंकणी ॥ नरेंद्र सुरेंद्र फणींद्रादिक देवता, सकल वश थाये चउ शरण शुद्ध लेवता ॥१८॥ अहि जिम गरुडना शद्बथी थरहरे, तेम चउ शरणथी पाप आघो डरे ॥ ईणमांही शंका रति मत आणजो सद्गुरु कहेण प्रमाण पीछाणजो ॥१९॥ रिख तिलोक दे धोक चउ शरणने, आरोग्य समकित अरु भवजल तरणने ॥ भणशे गुणशे एह स्तवन भावे करी, सोही भविजीव लहेशे अविचल सिरी ॥२०॥ कलश ॥ अरिहंत सिद्ध महाराज साधु, धरम केवलि जाणिये ॥ ए चारु मंगल चारु उत्तम चारु शरणा मानिये ॥ इहलोक संपत्ति सुख बहुला, आगे सुख श्रीकार है ॥ तिलोकरिख कहे सुणे सरधे, होय सदा जयकार है ॥२१॥ इति ॥



॥ मंगल छंद ॥

॥ मंगलकी देशी ॥

ढाल ॥ जय जय अरिहंत जिनंदा, मुख पूनम पूरण चंदा ॥ सेवे सुर असुर नरिंदा, प्रभु भविजनके सुखकंदा ॥१॥ त्रूटक ॥ हरिगीत छंद ॥ सुखकंद साहेब भए सबके, तप महा दुष्कर किया ॥ घन घातिके सब कर्म हणकर, ज्ञान केवल पाइया ॥ चोतीस अतिशय प्रगट दीसे, अमृत वाणी उच्चरे ॥ प्रातिहार अष्ट विशेष जिनके, संघ चउ स्थापन करे ॥२॥ ढाल ॥ जगगुरु जगनायक स्वामी, जगतारक अंतरजामी ॥ प्रभु मुक्ति जावणके कामी, नित नित प्रणमुं

शिर नामी ॥३॥ त्रूटक ॥ शिर नामि प्रणमु करुणासिंधु, जघन वीस जिनेश्वरु॥ उत्कृष्ट एक शत सित्तर जान, होय तस वदन करु॥ उपकारी इण सम नहीं जगमें, मन वचन तन ध्याइये॥ होय सपत्ति विपत नासे, प्रथम मगल गाइये ॥ नित्य० ॥४॥ ढाल॥ जय जय सिध्द् सदा सुखकारी, अष्ट कर्म किया सब छारी ॥ प्रभु तीनुही जोग निवारी, पाये शिवपुरके सुख भारी ॥५॥ त्रूटक॥ सुख भारी जिनके हैं अनूपम, आतमिक अविचल सदा॥ निरजन निराकार जिनके, दु ख नही व्यापे कदा॥ अजर अमर अविकार ईश्वर, अटल अवगाहन धणी॥ अविकार करुणावत वदू, सकल लोक शिरोमणि ॥६॥ ॥ ढाल ॥ त्रस नालीके उपर जाणो, जहा मुक्तिशिला सुवखाणो॥ चेतु छत्र शशिने सठाणो, पेतालिस लक्ष योजन परमाणो ॥७॥ त्रूटक॥ परमाण दलमे अष्ट योजन, अधिक पतली अत सो॥ तिण उपरे पचदश भेदे, सीधा सिध्द् अनत सो ॥ सकल कारज सिध्द् जिनके, भाव भक्ति सराइये॥ पाइये सिध्द् पद जिणसु, सिध्द मगल गाइये ॥ नित्य० ॥८॥ ढाल॥ जय जय सब साधु सोभागी, आरभ परिग्रहके त्यागी ॥ तप जप किरिया अनुरागी, उनकी सुरता मुगतिसु लागी ॥९॥ त्रूटक॥ लागि सुरता शिवबधूशु, असजम सेवे नहीं॥ महाव्रत पाले इद्री जीते, कषाय चारु हठावही॥ वैराग भावे अधिक क्षमा, जोग तीनु सम करे॥ ज्ञान दरसण चरण पूरण, रोग मरणसु नही डरे ॥ मुनि० ॥१०॥ ढाल ॥ केइ चउदे पूर्वके धारी, केइ द्वादश अग भडारी॥ केइ अवधि मन पर्यव ज्ञानी, तेजोलेश्या लब्धि करी छानी ॥११॥ त्रूटक॥ करि छानि लब्धि वैक्रिय आहारक, ध्यान शुक्ल ध्याइया ॥ घनघातिक केइ कर्म काटी, ज्ञान केवल पाइया ॥ पृथक् कोडी सहस्र मुनिवर, उत्कृष्ठ जघन्य मनाइये ॥ वादिये शुद्ध भाव भविका, साधु मगल गाइये ॥ १२॥ ढाल ॥ जय जय जैन धर्म जयकारी, केवलि प्ररूपित हितकारी ॥ इणमें

जीवदया अगवानी, या तो सर्व सिद्धांते बखानी ॥१३॥ ॥ बखाणी सर्व सिद्धांत मांही, शंका नहीं इणमें रति ॥ निज सम सब प्राणी जाणो, सोचो इम निर्मल मति ॥ शाश्वतो त्रिहुं काल मांही, सकल जिन दाख्यो सही ॥ ए शुद्ध सरधा धारिया विण, करणी लेखामें नहीं ॥१४॥ ढाल ॥ जाके जीवदया रुचि जागी, सो जाणो हलुकर्मी सोभागी ॥ निरवद्य शुद्ध करणी धारी, इणसु तरिया अनंत संसारी ॥१५॥ त्रूटक ॥ संसारी रिया अ इणसु, आदरो इम जाणिने ॥ लही अविचल सुख संपत, दुः द्यो मत - णिने ॥ ज्ञान दर्शन चरण मांही, धर्म हिरदे लाइये ॥ सर्व गम सार चउथो, धर्म मंगल गाइये ॥ नित्य ध० ॥१६॥ ढाल ॥ अरिहंत सिध्द साधु धर्म ए चारी, लोकोत्तम एह विचारी ॥ शरणागत ए चउ मानो, इणमें शंका मत आणो ॥१७॥ त्रूटक ॥ मत आणो शंका शरण लेता, दुःख नहीं व्यापे कदा ॥ चोर दुष्मन रोग नासे, लहो अविचल संपदा ॥ कहे रिख तिलोक मुझने, शरण होजो - वेही ॥ सुणे सरधे तेहि जनने, होशे सुख साता सही ॥ सदा हो० ॥१८॥ इति ॥



॥ भयभंजन अरिहंतजीको द. ॥

चोपाइ छंद

जय जय विश्वनाथ जसवंत, प्रणमुं श्री अरिहंत महंत ॥ कुशल वेलि जल पुष्कर धार, दुरित तिमिर भानु संसार ॥१॥ चित्रवल चिंतामणि पास, कल्पवृक्ष जिम पुरण आस ॥ आरत हरण करण सुख संत, चरण सरण धारा मन खंत ॥२॥ क्रोध मान छल लोभ निवार, भए केवल पद तुम संसार ॥ इंद्र नरिंद सुरासुर देव, मन वच काय करे तुम सेव ॥३॥ लिपटे सर्प चंदन तरु भाल, गरुडशद्ब सुणि नासत व्याल ॥ जंतु वृक्ष कर्म अहि जाण, तुम समरणते होत प्रयाण ॥४॥

कोटि घृद् नारी जणे पुत, तुमसो अवर न प्रसवे सुत ॥ उगे नक्षत्र चउ दिशि माय, दिनकर पूरब दिशि प्रगटाय ॥५॥ तुम निर्मल गुण आगर देव, क्षमासागर आप अछेव ॥ धर्म धुरधर सारथवाह, धर्मचक्री प्रभु त्रिजग नाह ॥६॥ अविनाशी अविकारी अरूप, निर्भय करण परम सुख भूप ॥ जगगुरु जगवधव जगईश, त्रिकरण शुद्ध नमावु शीश ॥७॥ जनम जरा मरण दुःख सोग, एह अनादि लग्यो भवरोग ॥ तुम समरण ओषध जो लेत, भव भव व्याधि रच न रत ॥८॥ तुम जगवच्छल करुणावत शातिकारक श्रीभगवत ॥ में मतिहीण अलप मोय बोध, तुम गुण कैसे वरणवु शोध ॥९॥ केइक हरिहर जपत महेश, केइक सरस्वति गौरी गणेश ॥ केइक रवि शशि नवग्रह देव, केइक जल थल अगनी सेव ॥१०॥ केइक ईसा पैगवर पीर, केइक देवी भैरव वीर ॥ में मन निश्चै कियो निरधार, तुम सम और न को ससार ॥११॥ किहा सरशव किहा मेरु उत्तग, किहा केशरी बलवत कुरग ॥ राधामणि वैडूर्य फेर, जैसे अमृत अतर जहेर ॥१२॥ जैसे वस्तर कबल हीर, निशि दिन अतर कायर वीर ॥ आकदूध किहा धेनु खीर, खीरसागर किहा खारू नीर ॥ १३॥ पुण्य पाप फल रक ने राय, परगट द्रव्य सुपनकी माय ॥ सत्य झूठ तस्कर साहुकार, आगिया तेज रवि झलकार ॥१४॥ जैसे कर्म घाति कर्मवत, प्रत्यक्ष अतर भासे अनत ॥ विश्वविख्यात सदा सुखकार, ज्यु उदधिमें द्वीप आधार ॥१५॥ भूख्या भोजन प्यासा नीर, रोगी ओषधथी मन धीर ॥ पखी नभ नट वश विचार, तिम तुम नाम तनो आधार ॥१६॥ बालक जननी गउ वच्छ हेत, हस सरोवर आसरे रेत ॥ ज्यों हस्ती कज्जलवन प्रीत, अव कोयल चकवी आदीत ॥१७॥ सति भरतार पपैया मेह, मधुकर मालती अधिक सनेह ॥ लोभी मनमें धनको जाप, तैसे हु समरु प्रभु आप ॥१८॥ हिंसा झूठ चोरी उन्माद, सेऽयो परिग्रह क्रोध अनाद ॥ मान माया त्रसना अति कीध, राग द्वेष ने क्लेश प्रसिद्ध ॥१९॥ आल दिया करि चाडी कूड, पर अपवाद किया

भरपूर ॥ विषय कषाय रतारत आण, बांध्या निकाचित कर्म अजाण ॥ २०॥ कपट सहित कही मृषावाद, मिथ्यासन करणी आल्हाद ॥ करण करावण करी में मोद, पाप अढारा धर्मविरोध ॥२१॥ इण विधि करिया करम करूर, पहुंतो नरक सह्या दुःख पूर ॥ परमाधामी दीनी त्रास, नही मानी किंचित अरदास ॥२२॥ तिरियंच वेदन सागर रूप, जंगम थावर पडियो कूप ॥ छेदन भेदन कष्ट महंत, जनम मरण दुःख सह्या अनंत ॥२३॥ नरभव नीच जाति कुल कीन, दुःखी दरिद्री भयो अति दीन ॥ जन जन आगे जोड्या हात, पूरण नहि मिलियो जल भात॥ २४ ॥ पाप उदय नाटकियो देव, भयो में करी सुरनी सेव ॥ पाड्या नाटक तोडी तान, करम उदे में भयो हेरान ॥२५॥ चउगति भ्रमण महा दुःख लीन, तुम शरणा विन भव भव दीन ॥ कीधा में अपराध अपार, भरियो हुं अवगुण भंडार ॥२६॥ खोय दियो में निरर्थक काल, मोहनी कर्म भर्म जंजाल ॥ सर्प अंधारे जेवडी जेम, छीप खंड रूपुं ग्रहे तेम ॥२७॥ मृग मरीचिका जाणत तोय, प्यास बुझावण हिरणा सोय ॥ धावत धावत छाडे प्राण, तेसे में भमियो अज्ञाण ॥२८॥ जैसे ज्वर तन प्रबलता होय, अन्नरुचि नहीं व्यापे सोय ॥ तैसे कुकर्म उदयगत जीव, धर्मरुचि नहि आवत ईव ॥२९॥ जब तन ज्वरको मिटत विकार, तब सोइ वांछा करत आहार ॥ अशुभ कर्म जब होत प्रयाण, तब तुम शरण ग्रहे भवियाण ॥३०॥ जाणी में आगम अनुसार, किंचित तुम मारगकी कार ॥ ज्ञान दर्शन पूरण चारित्र, पले नहीं मुझ शुद्ध पवित्र ॥३१॥ पण एक चरण शरणकी आस, धारी में अब हिये विमास ॥ आश निराश करण नहीं रीत, तुमसुं लागी पूरण प्रीत ॥३२॥ तुम सम ओर न कोइ कृपाल, अधम उद्धारण दीन दयाल ॥ तुम विन कोन मो होत सहाय, तुम विन कोन भविक सुखदाय ॥३३॥ गज मदवंत महा विकराल, सन्मुख आवे न नरकूं भाल ॥ मारण आवे भरतो

फाल, तुम जपता हरि होवे शियाल ॥३४॥ कलपत काल समीर अदंड, जले दावानल धूम्र प्रचंड ॥ ऐसे कष्ट भजे जन कोय, तुम कीरत जल शीतल सोय ॥३५॥ श्याम रंग दृग लाल कराल, क्रोध उद्धत ध्यावे विकराल ॥ नागदमन तुम नाम विशाल, रटता विघन करे नही व्याल ॥३६॥ भपन्न भूप करे संग्राम, रक्त खाल वहे तिण ठाम ॥ ऐसे संकट ध्यावे आप, लहे रण विजय टले संताप ॥३७॥ अथाग जल वहे वाय कुवाय, उठे किल्लोल वाहन कपाय ॥ ऐसी विपत ध्यान करनार, सो सहि पावे सागर पार ॥ ३८ ॥ सास खास ज्वर गुंथड दाह, कुष्ट भगदर रोग अगाह ॥ जो तुम प्रणमें भाव नि शंक, ततक्षण प्रलय होत आतंक ॥३९॥ पावन बेडी हथकडी हात, रोके भाखसी रुधे भाल ॥ ऐसी आपदा समरे आप, बंधण छूट टले संताप ॥४०॥ तुम रणमोचन गरिबनिवाज, बंधन छोडे श्रीजिनराज ॥ तुम त्रिहु लोकमें तिलक समान, तुम नामे दिन दिन कल्यान ॥४१॥ ओं ह्रीं श्रीं नमो नमो अरिहंत, ऋद्धि सिद्धि वृद्धि सुख संत ॥ देजो दीन दयानिधी मोय, भव भव सरणो वाछुं तोय ॥४२॥ हय गय रथ दल प्रबलता पूर, वेरी दुश्मन नासे दूर ॥ पूत सपूत कलत्र गुणवंत, मिले संजोग रहे सुख जंत ॥४३॥ दुश्मन बल नहिं लागे दाव, वेर मिटी होय सजन भाव ॥ जहां जावे तिहां आदर होय, मोहनी मंत्र नाम तुम जोय ॥४४॥ जड मूरख नर जे मतिहीन, पण तुम समरणमें रहे लीन ॥ बुद्धि प्रबल सो पंडित थाय, जगमें पूजा होत सवाय ॥ ४५॥ आभको कागद मशी सब नीर, लेखणी लेवे सुदर्शन गीर ॥ जो लिखे सरस्वति गुण विस्तार, सागर कोडी लहे नहिं पार ॥४६॥ अल्पमति हु प्रमादी जीव, केंस तुम गुण कहुं अतिव ॥ तुम वालेश्वर जीवन प्राण, राज राजेश्वर गुणनिधी खाण ॥४७॥ तिलोकरिख करे अरदास, अंतरजामी तुम गुण रास ॥ आपके पास न

मांगु लेश, मोय बतावो निज प्रदेश ॥४८॥ एतिक अरजी लीजो मान, कबहुं न भूलूं तुम एसान ॥ नीठ नीठ जाण्या तुम देव, भव भव दीजो थाहरी सेव ॥४९॥ संवत उगणीसे बत्तिस मान, ज्येष्ठ कृष्ण तिथी दूज प्रमान ॥ वार शनी सिद्धि जोग विचार, भय भंजन स्तव कियो उच्चार ॥५०॥ शहर शाहजापुर मालव देश, सुखशाता चउ तीर्थ हमेश ॥ भणे गणे सुणे जे नर नार, तस घर वर्ते मंगल चार ॥५१॥ इति ॥

॥ अतीत अनागत वर्तमान चतुर्विंशति जिन छंद. ॥

॥ चोपाइ छंद ॥

प्रणमुं परमेष्ठी गौतमस्वाम, जिनवाणी सरस्वती सुखधाम ॥ गुरु चरणांबुज प्रणमुं भाव, कहुं त्रिहुं काल चोवीशी नाव ॥ १ ॥ अतीत चोवीशी भई ह अनंत, त वंदूं में शिवपुरकंत ॥ पण एक वर्तेनथी अतीत, नाम कहुं तस मन धारि प्रीत ॥ २ ॥ प्रथम केवलज्ञानी जिनराज, निर्वाणी सागर तारणी जाज ॥ महाजस विमल जिनंद सुखकार, सर्वानुभूति श्रीधर उध्दार ॥ ३ ॥ दत्त दामोदर, जपु जिनदेव, सुतेजस्वामी हारि कर्मखेव ॥ मुनिसुव्रत सुमति जिन ईश, शिवगति स्वामी नमु निश दीस ॥ ४ ॥ अस्तंगजी नमीश्वर जाण, अनल नम्या होवे जन्म प्रमाण ॥ जसोधर कृतारथ दोइ जिनराज, जनेश्वरजी छो गरिब निवाज ॥ ५ ॥ शुध्दमतिजी शिवकर नमुं, भव भव संचित पातक गमुं ॥ स्यंदन चंदन जेम सुभाव, ... तिजी प्रणमुं चित्त चाव ॥ ६ ॥ अतीत चोवीशी नाम ए जान, प्रातें नित जपजा भवियाण ॥ अब कहुं वर्तमान जिन नाम, इनाहिज भरतक्षेत्र भये स्वाम ॥ ७ ॥ ऋषभ अजित संभव अभिनंद, सुमति कुमति करि दूर निकंद ॥ पद्म सुपारस जिन सुखकंद, चंद्रप्रभु पर-

तिख जिम चद ॥ ८ ॥ सुविधि शीतल श्रेयास सुधीर, वासुपूज्य विमल जगपीर ॥ अनत धरम शाति कुथु दयाल, अर मल्लि मुनि सुव्रत कृपाल ॥ ९ ॥ एकविशमा नमिनाथ उदार, तजि राजुल नार ॥ पार्श्वप्रभु वदू वर्द्धमान, ग वर्तमान चोविशी जाण ॥१०॥ कर्म हणी केवल पद पाय, चोविश जिन पहुता शिव माय ॥ मेहर करो मुझपर अरिहत, रवि शशि सागर उपमावत ॥ ११ ॥ तुम दरशणकी मुझ चित्त चाय, पल पल वदू शीश नमाय॥ अनागत चोविशी भरत मझार, तेहना नाम सुणो नरनार ॥ १२ ॥ पद्मनाभ सुरदेव सुपास, स्वयप्रभु शिव करशे वास ॥ सर्वानुभूति देवश्रुत जिनेश, उदय करम नहीं राखशे रेस ॥ १३ ॥ पेढाल पोटिल सत्यकीरति जाण, सुव्रत अमम होशे जग भाण ॥ तेरमा नि कषाय खुलास, चउदमा जिनवर तो निष्पुलाक ॥ १४ ॥ निर्मम चित्रगुप्त समाध, तरशे भवजल जेह अगाध ॥ सवर जिनेश अढारम जोय, यशोधर विजय मल्लि जिन होय ॥ १५ ॥ देव जिन अनतवीर्य सुचग, भद्रकृत द्रव्य भाव उत्तग ॥ अनागत होशे दीनदयाल, दया धरम उपदेश रसाल ॥ १६ ॥ ते पण थापशे तीरथ चार, तरशेकेई भवियण नरनार ॥ अतीत अनागत ने वर्तमान, बहोतेर तीर्थंकर प्रमाण ॥ १७ ॥ आगम ग्रथ तणे अनुसार, सवत् उगणीसे तीस मझार ॥ भणता गुणता सुख सुविशाल, तिलोकरिख कहे मगल माल ॥ १८ ॥ इति ॥

—(❀)—

॥ अरिहत जिन छद ॥

प्रणमु जे मुनींद्र जिनेंद्र भणी, जस सेवे नरेंद्र सुरेंद्र फणी॥ कीर्ति अनत सत स्वामी तणी, त्रिहु लोकमें साहेब आप धणी ॥१॥ गृहवास तजी प्रभु सुमति करी, तपरूप हुताशनि कर्म धरी ॥ सुद्ध

भाव धमन करि मेल हरी, प्रभु केवल कमला वेग वरी ॥२॥ जेह दीपे अतिशय चोतीस करी, नैरोग्य महा दिव्य देह धरी ॥ संघेन संठाण प्रथम पावे, जल मेल कलंक जो नहिं थावे ॥ ३ ॥ निर्लेप निर्दोष शरीर रहे, तनु कांति उद्योत प्रकाश पहे ॥ शिर अगर कुंट आकार दिसे, निध कज्जल कुंचिय केश शिशे ॥४॥ दाडिम फूल तवणिज केशभूमी, संचित पुण्य पूरण नाही कूमी ॥ निलाड दीपे अधचंद्र टीको, उडुपति पूरण सो मुख नीको ॥ ५ ॥ परमाणुपेत श्रवण सोहे, भमुह तणु निर्छे मन मोहे ॥ नयनांबुज विकस्वर श्वेत भला, उत्तंग दीरघ नासा सरला ॥ ६ ॥ अधरारुण विद्रुम रंग दीपे, दंत श्रेणी धवल शशि तेज जीपे॥ रसनारत अमृत जल वरसे, दाडी मुछ सुंदर केश दरसे ॥ ७ ॥ गिरुवा ंध भुज ज पुष्ट वली, फणी जिम प्रभु बाहा दीसे भली ॥ अछिद्र सकोमल शुभ पाणी, पुष्टांगलि ताम्र रंग नख जाणी ॥ ८ ॥ रवि शशिदिक रेखा करमांही, सब एक सहस्र अष्ट दरसाई ॥ उतरता पासां उस उदरी, गंगावृत विकस्वर नाभि खरी ॥ ९ ॥ सिंह टि वृत्ता र सही, शुंडादंड उरुपिंडी शोभ रही ॥ कूरम सम पृष्ठ चरण दोई, अंगु नखमें कुछ खोड नहीं ॥ १० ॥ पगथलीमें पद्म कमल सोहे, प्रभु निर सुर नर मन मोहे ॥ प्रभु आगे तेज मंद दिनकरका, मर्यादित केश नख जिनवरका ॥ ११ ॥ लोहि मांस उजल गउ खीर करी, केतकी जिम स्वासा सुगंध भरी ॥ आहार निहार अदृष्ट सदा, नही देख सके चर्मदृष्टि कदा ॥ १२ ॥ धर्मचक्र त्रिहुं छत्र आकाश चले, दिव्यशक्ति खग श्वेत चमर ढले ॥ पादपीठिका सिंहासन नभमांही, सो रतन फिटक वर छबि छाइ ॥ १३ ॥ सहस्र ध्वजा परिवार करी, सो इंद्रध्वजा लहकंत री ॥ छय ऋतु अशोक तरु सम वरते, अंधकार भामंडल नीवरते ॥ १४ ॥ सम भूम हुवे प्रभु जिहां विचरे, कंटककी अणिया उलट करे ॥ जोजन लगे छ ऋतु खकारी,

अचेत वायु रज परिहारी ॥ १५ ॥ वरसे जल मडल रज जमे, वरसे फुलका पुज अनेक गमे ॥ दुर्गंध टले शुभ वास रमे, अर्ध मागधी भाषा लोक गमे ॥ १६ ॥ बार परिषद् मध्य धर्म कहे, निज निज भाषा सब अर्थ गहे ॥ वैर भाव न जागत सिंह अजा, वादीजन वाद करत भजा ॥ १७ ॥ ईति होवे नहीं सो कोश लगे, मरि मारी सो सब दूर भगे ॥ स्वपरचक्री दुःख देत नहीं, सो कोश दुष्काल न आवे कहीं ॥ १८ ॥ अधिक अणगमतो नहीं वरसे, थोडापण नहीं ज्यु जन तरसे ॥ आतक जिरण सब टल जावे, नूतन वेदन नहीं सतावे ॥ १९ ॥ प्रभु चोतिश अतिशय करी छाजे, वाणी पेतिस जिम घन गाजे ॥ चोसट इद्रो जिनभक्ति करे, सुर नर सेवा मन हर्ष धरे ॥ २० ॥ पाखड मत खडण मान भणी, त्रिगडो रचे करवा महिमा घणी ॥ प्रथम प्राकार सो रूपा तणो, कचनको सीसा पीत भणो ॥ २१ ॥ तोरण मणि रत्नमें चग कह्यो, पावडी दश सहस्र प्रमाण लह्यो ॥ दुजो गड सोवनके माहि, रतन कोशीसा छवि छाही ॥ २२ ॥ रत्नगड त्रीजो प्रवर घणो, कोशीसा माणिके माही भणो ॥ पावडिया चारुहि पोल तणी, पाच पाच हजार रसाल बणी ॥ २३ ॥ भितिया तीनुही कोटि गणी, अर्द्ध सहस्र धनुष उत्तग भणी ॥ धनुष तेत्रीस बत्तीस अगुली, उपर वली ग्रथाकार खुली ॥ २४ ॥ पावडिया उचा चोडापणे, एक रयणीके परमाण बने ॥ लबा तो धनुष पचाशी सही, पीठिका मध्य भागे शोभ रही ॥ २५ ॥ आयाम निष्कभ छविश तणी, दोयशे वली धनुष उचाइ भणी ॥ कोट कोटको अतर सो तेरे, जोजन मडल प्रकाश करे ॥ २६ ॥ पीठिकापर स्फटिक रतन केरो, सिंहासन सोहे अधकेरो ॥ जिणवर विराजी धर्म कहे, बारे परिषदकी बैठक कहे ॥ २७ ॥ श्रावक श्राविका देश विरति धणी, कल्प वासिक देव इशान अणी ॥ विमाणिक सुरि साधु समणी, ए तीनुही अगनि कूण भणी ॥ २८ ॥ व्यतर ज्योतिषी अरु भवणपति,

नैऋत कूण बेठत देव अति ॥ देवी वली तीनुंही देवतणी, वायव्य कूण बेठत सेव भणी ॥ २९ ॥ इणविधि बेठी उपदेश सुणे, शुद्ध भाव थकी अघ मेल धुणे॥ एक जोजन लगे अमृतधारा, वैरागपणे ग्रहे व्रत सारा ॥ ३० ॥ ग्रहे गण उगे नित दिश चारी, ॥ एक दिश प्रगटे रवि हद धारी ॥ प्रसवे नंदन केइ जगनारी, धन धन जिन धन महेतारी ॥ ३१ ॥ जे रवि शशि मेरु उपमा सिंधु, गुण कहि न शकुं मुझ मति बिंदु ॥ जिनगुण महिमा पार न पाव, सुरगुरु सरस्वति स्वयं गुण गाव ॥ ३२ ॥ प्रभु समरण जो करे भाव पके, अरि करि हरि जोर न लाग सके ॥ जल जलन जलोदर रोग हटे, वध बंधन परवश दुःख कटे ॥ ३३ ॥ रिद्धि सिद्धि भरपूर भंडार घणो, परताप ते प्रभुजी नामतणो ॥ प्रथम पद मंगल अति भारी, तिलोक कहे सेवा द्यो चरणांरी ॥ ३४ ॥ संवत उगणीसे संवत्सर तीसे, ए छंद स्तवना करी जगीशे ॥ शुद्ध भाव भगे गुणे नरनारी, ते पावे भवजलनिधि पारी ॥ ३५ ॥ कलश ॥ इम देव अरिहंत सेव कीरति, करिये एक चित्त चावसुं ॥ तरिये भवजल दुःखसागर, बैठ कर जिम नावसुं ॥ तुम नाम मंगल टले उदंगल, करुणा मुझपर कीजिये ॥ चरण सरणकी सेव साहेब, अचल पदवी दीजिये ॥ प्रभु अबतो महेर करीजिये ॥ १ ॥ इति ॥

—:(❀):—

॥ जिनवाणी छंद. ॥

॥ त्रिभंगी छंद ॥

जय जय जिनराया, सूत्र सुणाया, धर्म बताया, हितकारी ॥ गणधरजी झेली, संधि सुमेली, नयरस केली, विस्तारी ॥ रचे द्वादश अंगं, भंग तरंगं, ध्रुव अभंगं, अति भारी ॥ धन धन जिनवाणी, सब सुख दानी, भवजन प्राणी, उर धारी ॥१॥ टे ॥ य

नहिं तीर्थंकर, केवल गणधर, अवधि मुनिवर, मनज्ञानी ॥ जघा विद्याचारी, पूरवधारी, आहारक सारी, महाध्यानी ॥ नहिं गगनगमणी, पद अनुसरणी, वैक्रिय करणी, परिहारी ॥ धन ॥२॥ देवर्द्धि खमासमण, तारण भावियण, उद्यम लेखण, जिण कीनो ॥ इणहिज आधारे, पचम आरे, धर्मज धारे, जिनजीनो ॥ आलवन मोटो, सूत्रको ओटो, रच न खोटो, हितकारी ॥ धन ॥३॥ शुद्ध सम्यक तरुवर, अति दृढ परवर, वाणी सुधाकर, जलधारा ॥ या दया वधारण, हिंसा वारण, शिवसुख कारण भव पारा ॥ ए बुद्धि वढावे, भर्म कढावे, पाप बुडावे, शुभ चारी ॥ धन ॥४॥ जे चिंता उचाटण, मोहनी दाटण, त्रिशल्य काटण, कातरणी ॥ अरिकद कुदाली, बधन पाली, सुरतरु डाली, सुत जरणी ॥ भवोदधिके माइ, जहाज कहाइ, बेठो जाइ, नरनारी ॥ धन ॥५॥ सशय विपर्यय, अने अध्यवसाय, तिहुअण माय, होय नहिं ॥ त्रिदोषरहित, त्रिगुणसहित, त्रिपदी रीत, भेद सही ॥ शुद्ध न्याय आराधी, शिवबधु साधी, कर्म उपाधि, जिण वारी ॥ धन ॥६॥ या विराधन करके, यहासे मरके, उपज्या नरके, दुःख पाया ॥ वली छेदन भेदन, ताडन तर्जन, बहु विध बधन, घबराया ॥ वलि गर्भमे लटक्या, चौगती भटक्या, जक्तमें अटक्या, भय भारी ॥ धन ॥७॥ जिण हितकर जाणी, श्री जिनवाणी, सो भवि प्राणी सुख पाया ॥ समकित शुद्ध करणे, मिथ्या हरणे, भवजल तरणे, शिव पाया ॥ तिलोकरिख जाची, शारदा साची, मन तन राची, जयकारी ॥ धन ॥८॥ कलश ॥ दोहा ॥ जिनवाणी जयकार है, अनुभव रसको सार ॥ नय प्रमाण विचारजो, पक्षपात परिहार ॥१॥ शम दम उपशम भावशु जे साधे नरनार ॥ तिलोकरिख तिणने सदा, प्रणमें वारवार ॥२॥ इति ॥

॥ अथ चोवीश तीर्थंकरका लेखाकी चोवीशी प्रारंभः ॥

॥ तेमां प्रथम एकसो पच्चीश बोल संख्याकी गाथा ॥ श्री वीर जिणंद सासण धणो, जिन त्रिभुवन स्वामी ॥ ए देशी ॥ प्रणमुं निरंतर नित्य, जिन चोविशी वर्तमाना ॥ नाम १ बोध भव संख्या, २ द्वीप ३ क्षेत्र ४ दिशा ५ पहिचानो ॥ विजय ६ पूर्वभवनाम ७, पदवी ८ तिहां ज्ञान ९ जणाउं ॥ सठया स्थानक संख्या १०, स्वर्ग गति ११ तिथि बताउं ॥ च्यवन तिथि १२ नक्षत्र १३ समे ए १४, सुपन १५ संख्या १६ विचार १७ ॥ जनमतिथि १८ वेला भली १९, ओगणीश बोल विचार ॥१॥ विशमामें जन्म देश, २० नगर २१ माता २२ पिता २३ गति २४॥२५ ॥ दिशा कुमारी २६ इंद्र संख्या २७, गोत्र २८ वंशकी रीती २९. ॥ नाम स्थापन ३० प्रभु चिन्ह ३१, देहका लच्छन ३२ दाखुं ॥ वर्ण ३३ बल ३४ अवगाहना ३५, उच्छेद आत्मांगुल ३६ भाखूं ॥ प्रथम आहार ३७ विवाहनो ३८ ए, लोकांतिक ३९ दान सुधार ४० ॥ कुमार पद स्थिति ४१ राजनी ४२, शिबिका नाम विचार ४३ ॥२॥ दीक्षातिथि ४४ वय ४५ तप ४६, दीक्षा परिवार ४७ पुर जाणो ४८ ॥ वन ४९ तरु ५० दीक्षा समय, ५१ लोच मुष्टि परमाणो ५२॥ संजम ज्ञान ५३ दुष्यमोल ५४, थिति ५५ वलि प्रथम आहारो ५६ ॥ पारणा काल ५७ पुर नाम, ५८ वली परथम दा रो ५९ ॥ दातार गति ६० वृष्टि दिव्यक ६१ हुय, वसुधारा संख्या ६२ जाण ॥ विहार भूमि ६३ तपस्या ६४ परम, पंसठमो अभिग्रह परिमाण ६५ ॥३॥ उपसर्ग ६६ प्रमादको काल ६७, छद्मस्थको काल ६८ जे आणुं॥ गुणासित्तरमे केवल तिथि ६९ केवल पुर ७० वन वखाणुं ७१ ॥ केवल तप७२ वृक्ष नाम ७३ मान ७४ वेला ७५ तीरथ७६तीर्थविच्छेदो ७७॥ वर्जित दोष ७८ अतिशय ७९ वाणी ८० प्रातिहार्य ८१ सुरसेव ८२ उमेदो ॥ प्रथम गणधर ८३ वली साधवी ८४ ए, भक्तिवंत नृप नाम

८५ ॥ शासणाधिष्ठ जक्ष ८६ जक्षणी, ८७ गणधर ८८ सख्याभिराम ॥४॥ साधु ८९ साधवी ९० श्रावक, ९१ श्राविका, ९२ केवल ज्ञानी ९३ ॥ मन परजव ९४ अवधि धार, ९५ पूर्व धारक ९६ पहिचानी ॥ वैक्रियवत ९७ वादी ९८ प्रत्येक बुध, ९९ प्रकीर्ण सख्या १०० परि माणा ॥ महाव्रत १०१ सजम १०२ आवसग्ग, १०३ सर्व आयु १०४ तिथि निर्वाणो १०५ ॥ मोक्ष नक्षत्र १०६ स्थानक १०७ वली ए, मोक्ष आ सण १०८ तप धार १०९ ॥ मोक्षेत्र १ ११० परिवार तस, १११ युगा तकृत भूमि ११२ विचार ॥५॥ पर्यायातकृत भूमि, ११३ मुनि प्रकृति ११४ वस्त्र वर्णो ११५ ॥ जन्म ११६ दीक्षा ११७ केवल, नक्षत्र ११८ श्रावक व्रत ठाणो ११९ ॥ आचार १२० आरो उत्पत्ति, १२१ धर्म भेद १२२ सजम गुण १२३ अणगारो १२४ ॥ सासण थिति १२५ इम बोल, एकसो पच्चीश सारो ॥ केइक चोथा अगथी ए, केइक ग्रथ विचार ॥ श्रोता ते अवधारजो, जिम टले कर्म विकार ॥ वरते मगल चार ॥६॥

॥ हवे एकशो पच्चीश बोलमाथी प्रथम बोलें

चोवीशे जिनना नाम कहे छे ॥

॥ जय जय आदि जिणद, अजित सभव सुखकारी ॥ श्री अ भिनदन सुमति, पद्म सुपास विचारी ॥ चदप्रभ श्रीसुविधि, शीतल श्रेयास दयाला ॥ वासुपूज्य धन विमल, अनत जिन धर्म कृपाला ॥ शाति कुथु अर मल्ली नमु ए, मुनिसुव्रत नमि नेम ॥ पार्श्वनाथ वर्द्ध मानजी, प्रणमु मन धरि प्रेम ॥ ७ ॥ १ ॥

॥ हव समकित प्राप्त थया पछी चोवीशे जिननी भवसख्या कहे छे ॥

॥ रिखभ जिणद भव तेरा, चद प्रभु सात लहीजें ॥ दुवादश शा न्ति जिणद, मुनिसुव्रत नव लीजें ॥ रिष्टनेमि नव, पार्श्व नाथ दश भव अभिकारा ॥ सत्तावीस वर्द्धमान, महोटा भवतणा विस्तारो ॥ शेष

जिन त्रिहुं त्रिहुं भणो ए, ग्रंथमांहे अधिकार ॥ समकित पाया तिहांथकी, भव संख्या सुविचार ॥ ८ ॥ २ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनां पूर्वभव द्वीपनां नाम कहे छे॥

प्रथम चार वली सोलमासुं, चरम जिनवर लग जाणो ॥ जंबुद्विपके मांय, तीर्थंकर गोत्र बधाणो ॥ नवमासुं बारमा जाण, अर्ध पुष्करके मांही ॥ शेष सात जिनराज, धातकी खंड लहाई ॥ तृतीय बोल इम द्विपनो ए, आगममें अधिकार ॥ सुगुणा जन हिय धारजो, अनुभव दृष्टि विचार ॥ ९ ॥ ३ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनां जन्मक्षेत्रनां नाम कहे छे ॥

॥ पहेलासुं बारमा सुधी, पूर्व विदेह क्षेत्र कहीजें ॥ विमल धर्मजिन भरत, धातकी खंड ग्रहीजें ॥ जंबु पूर्व विदेह क्षेत्र, शांति कुंथु अर जाणुं ॥ जंबु पश्चिम विदेह, मल्लि जिनराज बखाणुं ॥ अनंत ऐरवय धातकी ए, जंबु भरत मझार ॥ विशमासुं छेला लगें, सर्दहो क्षेत्र सुमार ॥ १० ॥ ४ ॥

॥ पूर्वोक्त क्षेत्रमां चोवीश तीर्थंकरनी जन्म दिशा कहे छे ॥

॥ रिखभ सुमति सुविधि, शांति कुंथु जिनराया ॥ ए सितासुं उत्तर मल्लि, सितोदा दाक्षिण पाया ॥ विमल धर्म विशमाथी, छेला मेरु दक्षिण मांई ॥ मेरुथी उत्तर दिशा, अनंताजिन ऋद्धि उपाई ॥ शेष दिशी जगदीशजी ए, सीताथी दाक्षिण मांय ॥ वर करणी पर भावथी, गोत्र तीर्थंकर पाय ॥ ११ ॥ ५ ॥

॥ ते पूर्वोक्त दिशामां पण चोवीश तीर्थंकरना जन्म संबंधि विजयनां नाम कहे छे ॥

॥ पुखलावती वच्छा रमणिजा, मंगलावती बिचारो ॥ पंचमासुं आठमा सुधि, चार एहि नाम उचारो ॥ वली चारे एही रीत, नवमासुं-बारमा धारो ॥ माहपुरी रिट्ठा भद्दिल, पुंडारिक णि खगपुरी

सारो ॥ सुसमा वीतसोगा चपापुरि ए, कोसवी राजगृही जाण ॥
अयोध्या अहिच्छत्ता चर्म जिन, विजयपुरी नाम प्रमाण ॥ १२ ॥ ६

॥ हवे चोवीश तीर्थकरोना पूर्व भवना नाम कहे छे ॥

॥ वज्रनाभ १ विमलवाहन, २ विपुलवल ३ माहाबल ४ नामें॥ आतिवल ५ अपराजित, ६ नदि ७ पदम ८ गुणधामो ॥ महाप द्म ९ पउम, १० नलिणो गुल्म ११ पद्मोत्तर १२ ॥ पद्मसेन १३ पद्मरथ, १४ दृढरथ १५ मेघरथ १६ नरवर ॥ सिंहावह १७ धन पति १८ वैश्रमणजी १९ ए, श्रीवर्म २० सिद्धारथ २१ सुप्रतिष्ठ २२ ॥ आनद २३ नदन २४ नामथी, करणी कोनो विशिष्ट ॥ १३ ॥ ७ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थकरनी पूर्वभव पदवी तथा पूर्वभव ज्ञान तथा विशस्थानकमें कितरा सेवन कीना? ते कहे छे ॥

॥ पूरव भव जिनरिखभ, एकछत्र पदवी पाया ॥ भणीया चउदा पूर्व, करणी कारि मन वच काया ॥ शेष तेवीश मडलीक, भण्या सहु अगइग्यारा ॥ पेला छेला प्रभु वीश, बोल सेवन किया सारा ॥ बावीश जिन एक दोय त्रिहु ए, सेव्या स्थानक सार ॥ गोत्र तीर्थंकर बाधियु, धन धन कृपावतार ॥ १४ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥

हवे ते चोवीश तीर्थंकरनी स्वर्गगति कहे छे

सर्वार्थ सिद्ध १ विजय २ ग्रैवेयक, ३ जयत ४ आभिनदन ५ सु मति ॥ नमो छठ्ठा ६ ग्रैवेयक, ७ विजय ८ आण ९ अच्युत १० उत्पत्ती॥ ॥ अच्चु ११ प्राण १२ सहसार १३, प्राणत १४ वलि विजय १५ वि- माणो ॥ शाति १६ कुथु १७ अर सर्वार्थ १८ सिद्ध १९ मल्ली जयत प्रमाणो ॥ अपराजित २० प्राणत वली २१ ए, अपराजित २२ रिठ नेम ॥ पार्श्व २३ वीर प्राणतसुर, २४ उत्कृष्टस्थिति सुख खेम ॥ १५ ॥ ११

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी च्यवन कल्याण तिथि कहे छे ॥

॥ आषाढमास वाद चोथ १, वैशाख शुद्ध तेरस जाणो २ ॥ फा ग्गुण आठम शुक्ल, ३ वैशाख शुद्ध चोथ प्रमाणो ४ ॥ श्रावण उजली

बीज, ५ माघ वदि छट्ठ कहीजें ६ ॥ अष्टमी भाद्रव कृष्ण, ७ कृष्णचैत्र पंचमी लीजें ८ ॥ वदि फागुण नोमी तिथि ९ ए, वदि छट वैशाख १० तिम ज्येष्ठ ११ ॥ वासुपूज्य च्यवन कल्याणसों, ज्येष्ठ शुदि नवमी विशिष्ट ॥ १२ ॥ १६ उजली बारस वैशाख, १३ श्रावण वदि सातम १४ आई ॥ वैशाख शुदि १५ भाद्रवकृष्ण, १६ दोईमें तिथि सातम ठाई ॥ नोमी श्रावण कृष्ण, १७ फागुण शुदि बीज उजाली १८ ॥ फागण श्रावण १९ शुदि, चोथ २० पूनम सुविशाली ॥ चउदश उज्जल आसोजनी २१ ए, कात्तिक वदि बारस २२ जाण ॥ चौथ चैत्र वदि २३ अषाढशुदि छठ तिथि २४ च्यवन कल्याण ॥ १७ ॥ १२ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरना च्यवन नक्षत्रनां नाम कहे छे. ॥

॥ उत्तराषाढा १ रोहिणी नक्षत्र २, मृगशीर ३ पुनर्वसु ४ आयो ॥ मघा ५ चित्रा ६ विशाखा. ७ अनुराधा ८ मूल ९ बतायो ॥ पूर्वाषाढा १० श्रवण ११, शतभिषा १२ भाद्रपद उत्तरा १३ ॥ अनंत रेवती १४ पुष्य, १५ भरणी १६ शांति जिने कहि सुतरा ॥ कृत्तिका १७ रेवती १८ अश्विनी १९ ए, श्रवण २० अश्विनी २१ धार ॥ चित्रा २२ विशाखा २३ हस्तोत्तरा, २४ च्यवन जिन नक्षत्र विचार ॥ १८ ॥ १३

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना च्यवन समय तथा स्वप्न तथा स्वप्न संख्या तथा स्वप्न संबंधि विचार केने पूछ्यो ? ते कहे छे. ॥

॥ सहु जिनवरनुं चयवन, थयुं आर्धानिशि विरियां ॥ सहु दिनां चउदे स्वप्न, उत्तम उत्कृष्ट उच्चरियां ॥ निजपतिसूं कह्या स्वपन, नाभि कह्यो इंद्रनी आग ॥ स्वपन पाठकसूं तेवीस; भूप परसन विधि थाग ॥ दान मान देई भाजिया ए, आनंद अंग अपार ॥ पुण्य दशा परभावथी, सुखें रह्या गर्भमझार ॥ १९ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६॥ १७॥

॥ चोवीश तीर्थंकरनी जन्म तिथि तथा ज मवेला कहे छे.॥

॥ चैत्र वदि १ महा शुद्ध, २ दोईमें अष्टमी सारा॥ महा शुद्ध, चउ

दश ३ दूज ४ मास पक्ष सहि विचारो ॥ अष्टमी शुक्ल वैशाख, ५ कार्तिक वदि ६ वारस धारो ॥ बारस उजली ज्येष्ट ७ पोष वदि बारस जहारो ८॥ मगशिर ९माझ वदि १० पचमी वारस ए, बारस फागुण वदि ११ जाण ॥ चउदश फागण वदि १२ शुद्ध त्रीज माहा, १३ वैशाख वदि तेरश १४ प्रमाण ॥ २० ॥ त्रीज महा शुध्द १५ ज्येष्ठ, वदि तेरश १६ दरसाई ॥ वदि चउदश वैशाख, १७ मृगशिर शुध्द दशमी १८ ठाई ॥ मृगशिर शुध्द इग्यारस १९, ज्येष्ठ वदि अष्टमी ठाणो २० ॥ अष्टमी श्रावण वदि २१, श्रावण शुद्ध पचमी २२ जाणो ॥ पोष वदि तिथि दशमी २३ ए, चैत्रशुद्ध तेरश माय २४ ॥ अर्धरात ढलीया सहु, जन्म्या श्री जिनराय ॥ २१ ॥ १८ ॥ १९ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना जन्मदेशना नाम कहे छे ॥

॥ पहेलासु पचमा लगें, देश कोशल । १ । २ । ३ । ४ । ५ ।। वछ ६ काशी ७ ॥ पूर्व देश ८ प्रसिद्ध ९, मलय १० वली अप्रसिद्ध ११ विमासी ॥ अगदेश १२ पाचाल, १ , कोशल १४ धर्मजिन अप्रासिद्धो १५ ॥ शाति १६ कुथु १७, अरनाथ, जन्म कुरु १८ देशमें लीधो ॥ विदेह १९ मगध २० विदेहमें २१ ए, कुशावर्त्त २२ काशी २३ विशाल ॥ पूर्वदेश २४ आरज विषे, जन्म्या दीनदयाल २०॥२०॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनी नगरी कहेछे ॥

॥ इक्खागभूमि १ अयोध्या २ जाण, सावत्थि ३ अयोध्या ४ कहीयें ॥ कचनपुर ५ कोसबी, ६ वणारसी ७ चदपुरी ८ लहीयें ॥ काकडी ९ भद्दिलपुर १०, सिंहपुर ११ चपा १२ जाणो ॥ कपिलपुर १३ अयोध्या १४, रत्नपुर १५ नाम वखाणो ॥ हथिणापुर १६ गज १७ नाग ए, १८ मिथिला १९ राजग्रहि २० ठाम ॥ मथुरा २१ सोरीपुर २२ वणारसी, २३ कुडलपुर २४ जन्म धाम ॥ चोवीश जिन जन्मधाम ॥ २३ ॥ २१ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनी मातानां नाम कहे छे ॥

॥ मरुदेवी १ विजया २ सेना, ३ सिद्धार्था ४ नामें देवी ॥ मंगला ५ सुसीमा ६ पृथिवी, ७ लखमणा ८ रामा ९ केवी ॥ नंदा १० विष्णु ११ जया १२ श्यामा १३ सुजसा १४ जाणी ॥ सुव्रता १५ अचिरा १६ श्रीनाम १७ देवी माता १८ गुणखाणी ॥ प्रभावती १९ पद्मावती २० ए, वप्रा २१ शिवा २२ सुखकार ॥ वामा २३ त्रिशला २४ जाणीयें, प्रभु जननी सुविचार ॥ २४ ॥ २२ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरना पितानां नाम कहे छे. ॥

॥ नाभि १ जितशत्रु २ जितारि, ३ संवर ४ मेघ ५ श्रीधर ६ राया ॥ प्रतिष्ठ ७ महासेन ८ सुग्रीव ९, दृढरथ १० विष्णु ११ - हाया ॥ सुपूज्य १२ कृतवर्म, १३ सिंहसेन १४ भानु कहीयें ॥ १५ ॥ विश्वसेन १६ सुरराय १७ सुदर्शन १८ कुंभसुं लहीयें १९ ॥ सुमित्र २० विजय नरपति २१ कह्या ए, समुद्रविजय २२ सुविख्यात ॥ अश्वसेन २३ सिद्धारथजी, २४ ए चोविश जिन तात ॥२५॥२३॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनां पितानी गति कहे छे ॥

रिखभ जिनेश्वर तात, नागकुमारनी मांई ॥ ईशान कल्पनी ंय, दुजासूं आठमा तांई ॥ नवमासुं सोलमा जाण, गया सनत्कुमारो॥ तरमासुं तेवीसमा तणा, गया महेंद्र मझारो ॥ सिद्धारथ स्वर्ग बारमा ए, रिखभदत्त शिववास ॥ अजर अमर सु पाइया, प्रणमुं नित्य उह्लास ॥२६॥ २४॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनी मातानी गति कहे छे ॥

॥ प्रथमसुं अष्टमा लगें, वरजिन नंदा माई ॥ पहोती मुक्ति झार, नवमासुं से मा तांई ॥ पहोती सनत्कुमार, त्रिशला चु स्वर्गमझारो ॥ सत्तरमाथी त्रेवीश, जिनंदजननी सुविचारो ॥ महेंद्र कल्पें गइ महासती ए, पाइ सु श्रेयकार ॥ केइ हवे जाशे शिवपुरी, केइ गइ मुक्ति मझार ॥ २७ ॥ २५ ॥

हवे चोवीश तीर्थंकरना जन्म कल्याणकमां दिक्कुमारिका तथा इंद्रो आव्या ते तथा चोवीश तीर्थंकरना गोत्र, अनवश कहे छे ॥

॥ जाणो प्रभुना जन्म, छप्पन्न कुमारी आई ॥ सहुना चासठ इंद्र, मोच्छव मेरुगीरि ऊपरे जाई ॥ मुनिसुव्रत रिष्ठनाने, गात्रवर गौतम पाया ॥ हरिवंश अवतस, जगमें प्रसिद्ध कहाया ॥ काश्यप गोत्री शेष जिन सहु ए, इक्ष्वाकु वंश तस जाण ॥ वसुधर कुल जातमें, जन्म लियो जगभाण २८॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥

॥ हव चोवीश जिनना यथागुण विशेषनाम कहे छे ॥

॥ प्रथम वृषभनु स्वपन, देखि जननी हरखाणी ॥ तिणथी रिखभ कुमार, नाम स्थापनविधि जाणी ॥ गर्भमाय जिनराय, पासा रमता राय राणी ॥ राणी जीत विचार, अजित जिन नाम पहिछानी॥ प्रभुजी गर्भमें आविया ए, दुष्काल टल्यो तिण वार ॥ धान्य सभव थयो ते भणी, सभव नाम उदार ॥ २९ ॥ गर्भमाय जिणवार इद्र जयकार उच्चार्यो ॥ उपनो आनद ताम, नाम अभिनदन धार्यो॥ सुमति उपनी मात, शोक्यपुत्र न्याय सु कीनो ॥ जाणी गर्भ प्रभाव, सुमति सुत नामज दीनो ॥ पद्म कमल शय्यापर ए, सुवर्णनो दोहलो थाय ॥ नाम पद्मप्रभुजी तणु, थयु प्रसिद्ध जगमाय॥३०॥ पासा खरधरा मात, सुदर थया गर्भ प्रभावें ॥ दियो सुपारस नाम, मात चद्र पिवण उमावे ॥ चद्रलच्छन चद्रवर्ण, चद्रप्रभ नाम कहावे॥ सुविधि थपाणो सहेर, सुविधि जिन नाम विख्याता ॥ भूप दाहज्वर जाण, राणी कर फरसथी शाता॥ तिणथी शीतल कुमरसु ए, नाम दियो हित धार ॥ द्रव्य भाव शतिल प्रभु, नामथकी निस्तार ॥ ३१ ॥ क्रूरदेव मणिपीठ, जननि दोहलो तिही खेलण ॥ जावता श्रेय थयो देव, श्रेयास सुत नाम सुमेलण ॥ विकट देवघर वास, वसण दोहलो थया माई ॥ वसता पूज्या सो सुरें, वासुपूज्य नाम थपाई ॥ तन मति विमल थई मातनी ए, दियो विमल सुत नाम ॥ मात देखी अनतमणिमालथी,

अनंत अनंत गुणधाम ॥ ३२ ॥ धर्म इच्छा गर्भपरभाव, धर्म जिन नाम सिद्धो ॥ शांति करी पुर मांय, शांति प्रभु नामज दीधो ॥ अरि थया कंथुआ जेम, कुंथु प्रभु नाम थपाणो ॥ रत्नमय आरो दिख्यो, अरह जिन नाम कहाणो ॥ फूलसेजें सोवण दोहलो ए, मल्ली सुनाम उदार ॥ मुनि जिम माता भावथी, मुनिसुव्रत सुविचार ॥ ३३ ॥ शत्रू नमाड्या सर्व, नमी जगमांही कहाया ॥ अरिष्ट रत्न देख्यो चक्र, अरिष्टनेमिनाथ सुहाया ॥ कृष्ण सर्प विंटी सेज, माता निज हाथे हठाया ॥ पार्श्वनाथ पुरिसादाणी, प्रसिद्ध खट मतमें गाया ॥ वृद्धि थई ऋद्धि संपदा ए, तिण कारण वर्धमान ॥ इंद्र दियो महावीर, जय जय जय जगभान ॥ ३४ ॥ ३० ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनां चिन्ह तथा लक्षण कहे छे. ॥

॥ वृषभ १ गज २ हय ३ कपी४, भारंडपंखी ५ चिन्ह सोहे ॥ ६ साथीयो ७ चंद्र ८, मकर ९ श्रीवच्छ १० मन हे ॥ गेंडे ११ महिष १२ वाराह १३ सिंचाणो १४ वज्र १५ कहीजें ॥ हारिण १६ बकरो १७ नंदावर्त १८ कलश १९ काछवो २० सुग्रहीजें ॥ नीलोत्पल २१ शख २२ सर्प २३ ए, सिंह २४ चिन्हथी ओलखाण ॥ एक सहस्र अष्ट लक्षण भलां, सहु जिननुं परिमाण ॥ ३५ ॥

॥ हवे चोवीश जिनना वर्ण तथा बल कहे छे ॥

॥ चंद्रप्रभजी ने सुविधि, दोय जिन शुक्ल सुहावे ॥ पद्मप्रभ वासुपूज्य, देहद्युति रक्त कहावे ॥ मल्लिनाथ श्रीपार्श्व, नीलवर्ण दमके काया ॥ मुनिसुव्रत रिष्ट श्याम. रंग अधिक सुहाया ॥ शेष शोल जिनवर सहु ए, कंचन वर्ण शरीर ॥ अनंतबल सहु जिन तणुं, धन धन साहस धीर ॥ ३६ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी अवगाहना उच्छेदांगुल तथा आत्मांगुले कहे छे ॥

॥ धनुष पांचसें १ उच्छेदांगुल, साडी चारसो २ जाणो ॥ चार ३

साडीतिनर्से, ४ तीनर्से ५ अढिर्से ६ बखानो ॥ दोयर्से ७ देढर्से ८ सोय ९, नेउ एशी कह्या ईसो ॥ सित्तेर साठ पचास, पेंतालीस चालीस पेंतीसो ॥ तीस पचीस वीस पनरा दश ए, हस्त नव सात विचार ॥ एकसो वीश आरमागुलें, जाणो जग किरतार ॥ ३७ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरने आहार, तथा विवाह, तथा लोकांतिकें देवोनी स्तुति तथा दान दीधु, ते कहे छ ॥

॥ प्रथम कल्पतरु आहार, शेष त्रिशिष्टज लीनो ॥ मल्ली रिष्ट नेमि वर्जि, शेष सहु व्याहज कीनो ॥ सहुने लोकातिक देव, कह्यु प्रभु भविजन तारो ॥ जाण्यो सजम समय, प्रभु दियो दान उ दारो ॥ सोनईयो सोल मासानो ए, तीनर्से अठ्याशी कोड ॥ एशी लाख उपर वली, एक सवच्छर जोड ॥३८॥३७॥३८॥३९॥४०॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी कुमारस्थिति कहे छे ॥

॥ पूरव विश लख १ अढार २, पनरा ३ साडीबारा ४ दशो ५॥ साडिसात ६ पच ७ अढी ८ पूरव सहस्त्र पचासो ९ पूर्वसहस्त्र पचीश १०, वर्ष एकविश ११ लक्ष जाणो ॥ अठारे १२ पनरा १३ साडी सात १४, अढीलक्ष १५ धर्म वखाणो ॥ सहस पचीश १६ तेवीस १७ एकवीस १८ ए, सो १९ साडि सात २० हजार ॥ अढाई सहस्त्र २१ तीनर्शो २२ त्रीश २३ त्रीश २४, बरस रहिया स्वामि कुमार॥३९॥४१॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी राजस्थिति कहे छे ॥

॥ पूरव त्रेसठ लाख १ त्रेपन २, चुमालीश ३ साडी छत्रीशो ४ ॥ गुणातिस ५ साडी एकवीश ६ चउदे ७, खट ८ एक ९ एक १० जगीशो ॥ पूरव पचास हजार ११ बरस, वयालीस लाखो १२ ॥ वासुपूज्य वर्जित त्रिश १३, वीश १४ पन्ना १५ पच १६ दाखो ॥ पचास सहस्त्र १७ साडिसहेंतालीस १८ वइयालीस ए १९, मुनि-सुव्रत पन्ना हजार २० ॥ नमी पच २१ शेप तिहु मेली २२ २३ २४, राजपदनो परिहार ॥ ४० ॥ ४२ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी शिबिकानां नाम कहे छे ॥

॥ सुदंसणा १ सुप्रभा, २ सिद्धार्था ३ अर्थ सिद्धा ४ कहीयें ॥ अभयंकरा ५ निवृत्तिकरा ६, मनोहरा ७ मनोरमा लहियें ८ ॥ सुरप्रभा ९ शुक्रप्रभा १०, विमल प्रभा ११ नाम बखानी ॥ पृथिविनाथा १२ देवादि १३, सागरदत्ता १४ नागदत्ता १५ जाणी ॥ सर्वार्था १६ विजया १७ विजयंतीका ए १८, जयंती १९ अपराजिता २० धार ॥ देवकुरा २१ धारावती २२, विशाला २३ सुचंद्रप्रभा २४ शिबिका सार ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी दीक्षातिथिनां नाम कहे छे ॥

चैत्र वदि आठम १ नोम महा २ पूनम मार्गशिरकी ३ ॥ महा शुद्ध द्वादशी ४ शुद्ध वैशाख नौमी ५ जिनवरकी ॥ कार्ति वदि ६ जेष्ट शुद्धि ७ पोष वदि ८, त्रिहूं तेरश तिथि जाणो ॥ मार्गशिर बदि तिथि छठ, माघ ९ वदि बारस १० ठाणो ॥ फागण दि तेरश तिथि ए, ११, फागण अमावस १२ जाण ॥ घ शुक्र तिथि चतुर्थी १३, विम जिन दीक्षा कल्याण ॥४२॥ वैशा कृष्ण चउदश १४, माघ शुद्ध तेरस धारो १५ ॥ ज्येष्ठ वदि चउदश १६, वैशाख शुद्ध पंचमी १७ सारो ॥ इग्यारस १८ शुद्ध माघ, १९ मल्लिजिन एह तिथि आई ॥ फागण शुद्ध द्वादशी, १० आषाढ दि नौमी २१ कहाई ॥ श्रावणशुद्ध छठ २२ नेमजी ए, पोष वदि दशमी २३ जाण ॥ मार्गशिर वदि दशमी २४ इम, जिन दीक्षा कल्याण ॥४३॥४४॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनां वय तथा दीक्षा तप कहे छे ॥

॥ वासुपूज्य मल्लि नमी, नेमी पारस वर्धमानो ॥ प्रथमवयली दीक्षा, शेष जिन अंत वय मानो ॥ वासुपूज्य तप चोथ, अठम तप ल्लि जिन पासो ॥ सुमति जिन कर आहार, दीक्षा लिनी सुउल्हासो ॥ शेष वीश जिनेश्वरू ए, छठ तप संजम धार ॥ दीक्षा ली जगदीश जी, धन धन प्रभु अवतार ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनो परिवार कहे छे ॥

॥ चार सहस्र नर साथ, रिखभ प्रभु दीक्षा धारी ॥ छशें श्री वासुपूज्य, मल्लि तीनशें परिवारी ॥ तीनशे पारस नाथ, चरम जिन एकलविहारी ॥ शेष ओगणीश जिनराज, एक एक सहस्र उच्चारी ॥ इणविध चोवीश जगदीशने ए, दीक्षासमय परिवार ॥ तप जप करी जिण शिव वरी, प्रणमु वार वार ॥ ४५ ॥ ४७ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना दीक्षापुर दीक्षावन कहे छे ॥

॥ रिखभ अयोध्या नेम द्वारका, शेष जन्म पूरमें धारी ॥ आदि जिनद सिद्धार्थ, वनमें भये अणगारी ॥ दूजाथी ग्यारमा लगें, सहस्राम्र वन विचारी ॥ विहार गृह दोय सहस्राम्रवप्र, शातिथी मल्लि उच्चारी ॥ ए चिहू सहसावन कह्या ए, नील गुहान सह सावन जाण ॥ आश्रमपद ज्ञात खडमें, दीक्षावन पहिचान ॥ ४६ ॥

॥ हवे चोवीश जिनना दीक्षातरु, तथा दीक्षा वेला, दीक्षा लेती कया वखत तीर्थंकरें केटली मुष्टिनो लोच कर्यो ते, तथा तेमनु संयमज्ञान, दुष्यमोल, दुष्यस्थिति कहे छे ॥

॥ सर्व अशोक तरुतलें, संयम समें ज्ञानज चारो ॥ रिखभ जिनद चउमुष्टि, शेष पंच मुष्टि उच्चारो ॥ सुमति श्रेयास नेमी पार्श्व, पूर्वान्हें दीक्षा कालो ॥ शेष पार्श्वमान्ह समे, दीक्षा लीनी उजमालो ॥ प्रथमम् त्रेविशमा लगें ए देव दुष्य सदा जाण ॥ वर्ष जरा जेरा वरिले, लखमें परिमाण ॥ ४७ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरमां कया तीर्थंकरें शनो दिय आहार कर्यो तथा कया तीर्थंकरना कटना परणाकल ? ते कहे ॥

॥ रिखभ जिनदें आहार, प्रथम इखुरसनो कायो ॥ शेष जिनदें खीर तणो, भोजनतर लीयो ॥ रिखभ जिनदना पारणो, आया वार मासी ॥ शेष जिनदनो पारणो, आया दुजे दिन विमासी ॥ धन धन

दीन दयालजी ए, जगतपति जगदीश ॥ शम दम उपश सागरू, वंदू मे निश दीश ॥ ज०॥ सं०॥ ४८॥ ५६॥ ५७॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना पारणानां नगर कहे छे ॥

॥ गजपुर १ अयोध्या २ सावत्थि ३, अयोध्या ४ विजय ५ पुर चीनो ॥ ब्रह्मस्थलें ६ पाडली ७, पद्म खंड ८ श्वेतपुर ९ कीनो ॥ रिष्ट १० सिधत्थ ११ महापुर, १२ धनक १३ वर्धमान पुरमांइ १४ ॥ सोमणस १५ ग्राममंदीर १६, चक्रराज १७ पुरठाई १८ ॥ मिथिला १९ राजगृहि २० वीरपुर २१ ए, द्वारिका २२ कोप कटग्राम २३ ॥ कोलाग सन्निवेश २४ माहावीर इम, पारणा तणां पुर धाम ॥४९॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना प्रथम दातार कहे छे ॥

॥ सिज्जंस १ ब्रह्मदत्त २ नाम, सुरिंददत्त ३ इंद्रदत्त ४ वखाणो ॥ पद्म ५ सोम देवनाम, ६ महिंद ७ सोमदत्त ८ सो जाणो ॥ पुष्प ९ पुनर्वसु १० नंद ११, सुनंद १२ जय १३ जसधारी ॥ विजय १४ धर्म सिंह १५ सुमित्र १६, व्याघ्र सिंहनाम १७ विचारी ॥ अपराजित १८ विश्वसेनजी १९ ए, ब्रह्मदत्त २० दिन्न २१ उदार ॥ वरादिन्न २२ धन २३ बहुल २४ कह्या, प्रथम दान दातार ॥५०॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरने प्रथम दान देनारनी गति तथा पंचदिव्य तथा वसुधारा, तथा क्षेत्र विहार कहे छे ॥

॥ पहेलासुं आठमा तणा दातार, तिणभव शिव पाई ॥ नवमासुं छेला लगें, मुक्ति त्रीजा भव मांइ ॥ पंच दिव्य सहुने जाणा, साडी बारा कोडी वसुधारा ॥ रिखभ छेला जिन तीन, आर्ज अनार्ज विहारा ॥ शेष वीश जिनराजजी ए, आरज देश मझार ॥ विचऱ्या दीनदयाळ जी, करवा पर उपगार ॥ ५१ ॥ ६० थी ६३ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनां उत्कृष्ट तप, तथा अभिग्रह, उपसर्ग अने प्रमाद काल कहे छे ॥

॥ रिखभ जिनंद शासन उत्कृष्ट, तप बारे मासी ॥ बिजासुं त्रेविश

मा लगें, तप अठ्ठमासी विमासी ॥ वर्धमान खटमासी सर्व, अभिग्रह द्रव्यादिक चारो ॥ उपसर्ग पारस वीर, शेष सहुने परिहारो ॥ प्रमाद काल श्रीरिखभने ए, एक अहोरात्र उच्चार ॥ अतर मुहूर्त्त श्रीवीरने, शेष सहुने परिहार ॥ ५२ ॥ ६४ थी ६७ ॥

॥ हवे चोवीस तीर्थंकरनों छद्मस्थकाल कहे छे ॥

॥ सहस्त्र वर्ष १ बारा २ चउदा, ३ अठारा ४वीश विवेको ५ ॥मास ६ छँ ७ नव ८ चार ९ तीन, १० दोईने ११ एक १२ एको १३ ॥ तिन १४ दोय १५ एक १६ एक १७ नव, १८ मल्ली जिनने एक १९ पहेरो ॥ इग्यारा मास २० नव, जाण, २१ चोपन दिन नेमजी हेरो २२ ॥ रात्रि त्र्याशी पारस प्रभु २३ ए, साडीबारा वरस विचार ॥ उपर पदरा दिन चरम २४, छद्मस्थकाल सुमार ॥ ५३ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी केवलज्ञाननी तिथि कहे छे ॥

॥ फागण वदि १ पाप शुद्ध, तिथि इग्यारस २ आइ ॥ पचमी कार्त्तिक कृष्ण ३, पोष शुदि चौदश ४ ठाई ॥ चैत्र शुद्ध इग्यारस, ५ चैत्रकी पुनम ६ कहीयें ॥ फागण वदि छठ सातम ७।८, कार्त्तीक शुद्ध तीज सुगहियें ९ ॥ पौष वदी चउदश १० माघ अमावस ११ ए, बिज माघ शुकल बखाण १२ ॥ शुद्ध पौष छठ्ठ १३ श्रीविमलजिन, जाणो सुकेवल कल्याण ॥ ५४ ॥ वैशाख वदि चउदशी १४, पौष शुद्ध पूनम १५ सारो ॥ पोष १६ चैत्र शुद्ध नौमी १७, तेज अनुकमें विचारो १८,॥ कार्त्तिक शुद्ध द्वादशी १९, माघ शुद्ध ग्यारस धारो २० ॥ फागण द्वादशी कृष्ण २१, माघ शुद्ध इग्यारस जहारो ॥ अमावस आसोजनी ए २२, चैत्र चोथ वदि २३ ठाण ॥ वीर वैशाख शुद्ध दशमी २४, जाणो केवल कल्याण ॥ ५५ ॥६९ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना केवलज्ञानना नगर कहे छे ॥

॥ पुरिमताल १ अयोध्या २ सावत्थी ३, दोय वलि अयोध्या

स्थानो ४१५ ॥ कोसंबी ६ वाणारसी, ७ चंद्रपुरी ८ कांतिपुर ९ मानो ॥ भद्दिल १० सिंहपुर ११ चंपा, १२, कंपिलपुर १३ अयोध्या ठाणो १४ ॥ रतनपुर १५ शांति १६ कुंथु १७, अरह १८ गजपुर पहिचानो ॥ मिथिला १९ राजगृहि २० मिथिला ए २१, रेवतकाचल २२ जाण ॥ वाणारसी २३ जंभिक ग्राममें २४, पाया केवल नाण ॥ ५६ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनां केवलज्ञान पामवानां स्थान तथा केटले तपें केवलज्ञान उत्पन्न थयुं ? ते कहे छे ॥

॥ आदि जिनंद शकट सुख, दुजासुं इग्यारमा तांई ॥ सहस्रा विहारगृह जाण, विमलजीसें, पार्श्व लहाइ ॥ आश्रम पद कह्यं स्थान, सलीला रजु वालुका आइ ॥ केवल वन विचार, रिखभ तप अष्टम मांइ ॥ वासुपूज्य मल्ली नेमजी ए, पार्श्व चोथ तप मांय ॥ शेष ओगणीश छठ्ठ तपविषे, ज्ञान केवल प्रगटाय ॥ ५७ ॥ ७१॥ ७२॥

॥हवे चोवीश तीर्थंकरोने जे वृक्षोनी नीचें केवलज्ञान उपनुं ते वृक्षनां नाम, तथा अशोक वृक्षोनी उंचाइ कहे छे ॥

॥ वड १ ससवण २ शाली ३ राजादनी ४ प्रियंगु सुहावे ५॥ छत्ताहना ६ सरस ७ नाग ८, मल्लिका ९ बिल्व १० तिंदुक ११ कहावे ॥ पाडल १२ जंबू १३ अश्वत्थ १४, दहीवन १५ नंदि १६ मिलक्की छाया १७ ॥ आम्र १८ अशोक १९ चंपक २०, बकुल २१ वेडस तलें आया २२ ॥ घातकी २३ शाली २४ उंच पणे ए, देहथी बार गुणा जाण ॥ शासनपति श्रीवीरने एकविश धनुष्य प्रमाण ॥ ५८ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी केवल ज्ञाननी वेळा, तथा प्रथम समवसरणमें तीर्थ स्थापन तथा जिनांतरें तीर्थ विच्छेद कहे छे.॥

॥ रिखभ जिनंदसें पार्श्व लगें, केवल पूर्वान्हें ॥ महावीर गुण धीर केवलवेला पश्चिमान्हें ॥ प्रथम समोसरण मांय, तीरथ थाप्यां

तेवीशो ॥ ऊला दूजा माय, तीर्थ थाप्या जगदीशो ॥ नवमासु सोलमा विचें ए, सात अतरा माय ॥ तीर्थविच्छेद थयो तिहा, भाख्यो श्री जिनराय ॥ ५९ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरने दोप वर्जितपणु तथा अतिशय तथा वाणी तथा प्रातिहार्य तथा देवसेवा कहे हे ॥

॥ अठरा दोप वर्जित, सकल जिनवर सुखदाता ॥ चोत्रीश अतिशयधार, पेंतिस वाणी सुविख्याता ॥ सहुने प्रातिहार्य आठ, ठाठ माहापुण्यसें पाया ॥ एक कोटी सहुने देव, सेव करे तनमन उल साया ॥ धन धन दीन दयानिधि ए, अनत गुणातम देव ॥ मन वच काय करी सदा, थो प्रभु अविचल सेव ॥ ६० ॥ ७८ थी ८२ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना प्रथम गणधर कहे छे ॥

॥ पुडरीक १ सिंहसेन २, चारु ३ वज्रनाभ ४ कहीजें ॥ वरम ५ प्रद्योतन ६ विदर्भ ७, दीन ८ वराहक ९ गहिजें ॥ नद १० कच्छप ११ सुभूम १२, मदर १३ जस १४ अरिष्ट १५ गुणवता ॥ चक्रायुध १६ साव १७ कुभ १८, अभिक्षक १९ मल्लि २० महता ॥ शुभ २१ वरदत्त २२ आर्यदिन्न २३ ए, इद्रभूति २४ गणधार ॥ ए चोवीश जिनना प्रथम, प्रणमु नित अणगार ॥ ६१ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनी प्रथम साधवी कहे छे ॥

॥ ब्राह्मी १ फल्गुणी २ श्यामा ३, अजिता ४ काश्यपी ५ जाणो ॥ रति ६ सोमा ७ सुमना ८, वारुणी ९ सुजसा १० बखाणो ॥ धारणी ११ धरणी १२ धरा १३, पद्मा १४ आर्यशिवा १५ सती ॥ सूचि १६ दामिनी १७ रक्षिता १८ बहु वधुमती १९ पुष्पवती २० ॥ अनिला २१ जक्षदिन्ना २२ पुष्फचुला २३ ए, चदनबाला २४ नाम ॥ ए चोविश वडि समणीने नित नित होजो प्रणाम ॥ ६२ ॥ ८४ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरना भक्तिवत राजा कहे छे ॥

॥ भरत १ सगर २ अमितसेन ३, मित्रवीर्य नृप ४ सारो ॥ शतवीर्य

५ अजितसेन, ६, दानवीर्य ७ मघवा ८ धारो ॥ बुद्धिवीर्य ९ सिमंधर १० त्रिपृष्ठ ११ द्विपृष्ट १२ नृप जाणो ॥ स्वयंभु १३ पुरुषोत्तम नाम १४, पुरुषसिंह १५ कोणाल १६ बखाणो ॥ कुबेर १७ सूभूमजी १८ जित १९ विजय २० ए, हरिषेण २१ कृष्ण २२ उदार ॥ प्रसेनजित २३ श्रेणिक २४ चरम, भक्तिवंता नृप धार ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना शासनना यक्ष कहे छे ॥

॥ गोमुख १ महायक्ष २, त्रिमुख ३ नायकमुख ४ कहियें ॥ तुंबुरु ५ कुसुम ६ मातंग ७, विजय ८ जित ९ ब्रह्मा १० लहियें ॥ जक्षट ११ कुमार १२ षण्मुख १३, पाताल १४ किंनर १५ गरुड १६ धारो ॥ गंधर्व १७ यक्षट १८ कुबेर १९, वरुण यक्ष २० भृकुटि २१ विचारो ॥ गोमेद २२ पार्श्व २३ मातंग २४ नामें ए, सासणाधिष्ट यक्ष जाण ॥ प्रभु समरण करे भावशुं, हरे संकट हित आण ॥६४॥८६॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी अधिष्ठायिका यक्षणी कहे छे. ॥

॥ चक्केसरी १ अजितबला २, दुरितारि ३ कालिका देवी ४ ॥ महाकाली ५ श्यामा ६ शांति, ७ भृकुटी ८ सुतारिका ९ लेवी ॥ अशोका १० मानवी ११ चंडा १२, विदिता १३ अंकुशा १४ जक्षणी ॥ कंदर्पा १५ निर्वाणी १६ बला १७, धणा १८ धरणी प्रिया १९ प्रभु यक्षणी ॥ नरदत्ता २० गंधारी २१ अंबिका ए २२, पद्मावती २३ सिद्धायिका २४ नाम ॥ सासणाधिष्ट ए जक्षणी, सारे वंछित काम ॥६५॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना गणधरनी संख्या कहे छे. ॥

॥ चोरासी १ पंचाणू २ जाण, एकसो दोय ३ सुज्ञानी ॥ एकसो ईग्यारा ४ सोय, ५ एकसो सात ६ पिछानी ॥ पचाणु ७ त्राणु ८ गिणत, अठ्याशी ९ बैयासी १० सामी ॥ सत्तोतेर ११ गुणसित्तेर १२ सत्तावन १३, पचास १४ सो ते नमुं शिर नामी ॥ पेंतालीस १५ छत्रीस १६ पेंतीस १७ वली ए, तेंतिस १८ अठ्ठाविश १९ अढार

२० ॥ सतरे २१ इग्यारे २२ दश २३ इग्यारे २४ ते, प्रणमु प्रभु गुणधार ॥ ६६ ॥ ८८ ॥

॥ हवे चोवीस तीर्थंकरना साधुनी सख्या कहे छे ॥

॥ सहस्र चोराशी १ एकलक्ष २, दोय ३ तीनलक्ष ४ विचारो ॥ तीनलख पर सहस्र वीश ५, तीन लक्ष तीस हजारो ६ ॥ लक्ष तीन ७ अढी ८ दोय ९ एक १० चौरासी सहस्र ११ अणगारो ॥ बहोत्तर १२ अडसठ १३ छासठ १४, चोसठ १५ बासठ १६ रिख धारो ॥ साठ १७ पचास १८ चालीस १९ वली ए, त्रीश २० वीश २१ अढार २२ ॥ सोला २३ चवदा २४ सहस्र सब, वदू प्रभु अणगार ॥६७॥८९॥

॥ हवे चोवीस तीर्थंकरनी साधवीनी सख्या कहे छे ॥

॥ तीन १ लक्ष तीन २ तीन ३ खट ४ पाच ५, चउ ६ चउ ७ तीन ८ एक ९ एक १० एको ११ ॥ दुजासु ग्यारमा लगें, सहस्र अनुक्रमें विवेको ॥ त्रीश २ छत्रीश ३ त्रीश ४ त्रीश ५, वीश ६ त्रीश ७ अशी ८ वीशो ९ खट १० तीन ११ सहस्र एक लाख १२, एकलख १३ आठसें श्रमणीसो ॥ बासठ १४ बासठ सहस्रपरचारसें ए १५, इगसठ १६ सठ १७ छछसें धार ॥ साठ १८ पचावन १९ पचास, २० इगतालीस २१ चालीस २२ कही, अडतीस २३ छत्तीस २४ धार ॥ प्रभु श्रमणी परिवार ॥ ६८ ॥ ९० ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना श्रावकोनी सख्या कहे छे ॥

॥ आदिनाथ तीन लाख, दुजासु पदरमा ताई ॥ श्रावक दोय दोय लाख, (१६ मासु २४ मा लगें एक लाख छे) उपर एक एक लाख कहाई ॥ सहस पचाश अठाणु, त्राणु अठ्याशी इक्याशी ॥ छिहतर सतावन पचास, गुनतिस नेव्याशी उगण्यासी ॥ पन्नर आठ छ चार नेउ ए, नेव्याशी चोरासी धार ॥ त्र्यासी बहोत्तर सित्तर गुणसितरा, चोसठ गुणसठ सार ॥ समजो उपर हजार ॥६९॥९१॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनी श्राविकानो परिवार कहे छे ॥

॥ लक्ष पंच पंच छ पंच, पंच पंच उपरंत चारो ॥ (सोल मासूं ०४ मा तांई त्रण लाख उपरांत हजार छे) सोलमासूं तीन तीन लक्ष, उपरंत संख्या चोपन हजारो ॥ पेंतालीस छत्ती सत्ता-वीस, सोला पंच त्राणु नेव्याशी ॥ एकोतेर अठावन अडता-लीश, छत्तीस चोबीस चउदे विमासी ॥ तेरे त्राणुं इक्यासी बहोत्तेर ए, सित्तेर पचास अडतालीश ॥ छत्रीस गुणचालीश अठारा, सहस्र, श्राविका कहि जगदीश ॥ ७० ॥ ९२ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरने केवलीनो परिवार कहे छे. ॥

॥ सहस्र वीस १ बावीस, २ पंद्रा ३ चउदा ४ तेरा ५ ॥ बारे ६ इग्यारे ७ दश, ८ सहस्र सार्ड त ९ भलेरा ॥ सात १० साडी छ ११ खट १२, साडीपंच १३ पंच १४ डीचारो १५ ॥ त्रेंता-लीशें १६ बत्तिशें १७, अठाविशशें १८ बावीससें १९ धारो ॥ अठारासें २० सोलासें २१ पंद्रासें ए २२, पारस एक हजार २३ ॥ तसें २४ केवली वीरने, प्रणमूं ते सुखकार ॥ ७१ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरना मनःपर्यव ज्ञानीनी संख्या कहे छे. ॥

॥ पुनि तेरा १ हजार बार २ सहस, पर पांचशें पच ` ॥ बारा ३ सहस्र पर डेढसो, इग्यारा ४ सहस्र साडी छशे विमासो ॥ दश ५ सहस्र साडी चारशें, सहस्र दश ६ तीनशें उपर ॥ एकाणुसें ७ पचास, एंसीसें ८ शत पंचोत्तर ९ ॥ पिचंतर १० साठ ११ पेंसठ १२ वली ए, पंचावनशें १३ जाण ॥ पचास १४ पेंतालीस १५ सेंकडा, मुनि मनःपरजव नाण ॥ ७२ ॥ शांति जिनंद सहस्र चार, १६ तेत्रीशसें चालीस १७ उपर ॥ पचीसशें एकावन, १८ डीसत्तरशें १९ मुनिवर ॥ पंद्रासें २०, साडीबारासें २१, नेमि प्रभु एक हजारो २२ ॥ पार्श्वप्रभुके जाण, साडी सातशें अणगारो

२३ ॥ वर्धमानजीके पाचशें २४ ए, अढाई द्वीप मझार ॥ जाणे सहु मन वारता, प्रणमू ते अणगार ॥ ७३ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना अवधिज्ञानी साधु कहें छे ॥

॥ सेंकडा नेउ १ चोराणु २, छन्नु ३ अट्ठाणु ४ जाणी ॥ सहस्र इग्यारा ५ दश ६ नव ७, आठ ८ अवधि नाणी ॥ सेंकडा चोराशी ९ बोहोंतेर, १० साठ ११ चोपन १२ अडतालीसो १३ ॥ त्रेंतालीश १४ छत्तीस १५ तसि १६, वली पचीश १७ छवीशो १८ । बावीश १९ अठारा २० षोडश ए २१, पन्नरा २२ दश २३ सत सात २४ ॥ अवधि नाणी जिनवर तणा, वंदू उठि परभात ॥ ७४ ॥ ९५ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना पूर्वधरोनी सख्या कहे छे ॥

॥ छेंतालीसशें पचास १, सेंतिससें वीश २ विचारो ॥ इक विशशें पचास ३, पन्नरेसें ४ चोविशशें ५ धारो ॥ तेविशशें ६ विशशें परत्रीश ७ चदा प्रभु दोय हजारो ८ ॥ सेंकडा पन्नरा ९ चउदा १०, तेरा ११ बारा १२ इग्यारो १३ ॥ दश १४ नव १५ आठ १६ छशें सित्तर १७ ए, छशें दश १८ छशें अडसठ १९ ॥ पाचशें २० साडीचार २१ चारशें, २२ साडी तिनशें २३ तिनशें विशिष्ट २४ ॥ पूरव धारक श्रेष्ठ ॥ ७५ ॥ ९६ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना वैक्रिय लब्धिवंत मुनि कहे छे ॥

॥ छशें वीश सहस्र, चारशें वीश हजारो ॥ उगणीश सहस्र शत आठ, ओगणीश सहस्र वैक्रिय धारो ॥ अठारा सहस्र सत चार, सोला सहस्र एक शत आठो ॥ पन्नरा सहस्र शत तीन, सहस्र चउदा तेरे पाठो ॥ बारा इग्यारा दश सहस्र ए, नव आठ सात जाण ॥ खट सहस्र एकावनशें, वैक्रियधारी प्रमाण ॥ ७६ ॥ ब्होत्तरशे गुणतिससें, सहस्र दो पच विचारो ॥ पन्नरशें इग्यारासें जाण, सातशें वीर प्रभु धारो ॥ महा तपस्या परभाव, वैक्रिय लब्धि जिण पाइ ॥ गोपवी

राखी तेह, लोकने खबर न कांइ ॥ इम मुनि चोवीश जिन तणा ए सत्ताविश गुण धार ॥ प्रणमुं मन तन कायसूं, नित्यप्रत्यें वारं वार ॥ ७७ ॥ ९७ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना वादी मुनिनी संख्या कहे छे. ॥

॥ बारा सहस्र साडीछसें, चार सत बारा हजारो ॥ बारा इग्यारा सहस्र दश, उपर शत चारो ॥ छन्नुं शत चोराशी, छहोंत्तर साठ अट्ठावन ॥ पचास सेंतालीस छत्तीश, बतिश अठाविश चोवीश भन ॥ विश सोला चउदा बारे दश ए, आठसें छसें सत चार ॥ शेंकडा संख्या समजीयें, जिनवादी अणगार ॥ ७८ ॥ ९८ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरने प्रत्येक बुधमुनि, तथा प्रकीर्ण, तथा महाव्रत, तथा चारित्र, तथा पडिकमण कहे छे. ॥

॥ साधुसंख्या प्रत्येक बुध, तेता प्रकीर्ण बिचारो ॥ आदि अंत पंच जाम, शेष महाव्रत कहे चारो ॥ प्रथम चरम के पंच, चारित्र करे अंगीकारो॥ दूजो त्रीजो चारीत्रसो, मध्याजिनने परिहारो ॥ प्रथम चरम जिनसासणें ए, पडिकमणुं उभयकाल॥ शेष बावीश प्रायश्चित समे, करे आवश्यक उजमाल ॥ ७९॥ ९९ थी १०३

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनुं सर्वायु कहे छे. ॥

॥ पूर्वचोराशी १ लाख, बहोत्तर २ साठ ३ पचासो ४ ॥ चालिश ५ तीश ६ वीश ७ दश, ८ दोय ९एक १० पूर्व विमासो ॥ वर्ष चोराशी ११ लाख, बहोंत्तर १२ साठ १३ वलि त्रीशो १४ ॥ दश १५ एक १६ लक्ष कुंथु, पचाणुं १७ सहस्र गहीसो ॥ चौराशी १८ पचावन १९ तिश २० वलि ए, दश २१ नेमी एक हजार २२ ॥ सो २३ वली बहोत्तर २४ वर्षनुं प्रभु आउखुं सुविचार ॥ ८० ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी निर्वाण तिथि कहे छे. ॥

॥ माघ वदि तेरश १ चैत्र, उभे शुद्ध २ पंचमी ३ आई ॥ शुद्ध अष्टमी वैशाख ४, शुक्र चैत्र नौमी ५ कहाई ॥ ईग्यारस मार्ग शिर्षवदि,

६ फागण वदि सातम ७ ठाई ॥ भाद्रवा वदि सातम, ८ नोम भाद्रवा शुद्ध ९ माई ॥ वैशाख वदि १० तिथि दूजसु ए, तिज श्रावण वदि ११ जाण ॥ आषाढ शुद्ध चउदश १२ बारमा, दाखी तिथि निर्वाण ॥८१॥ सातम आषाढ वदि १३, चैत्र १४ जेष्ठ शुद्ध पचमी १५ जाणी ॥ ज्येष्ठ वदी तेरश तिथि,१६ वैशाख वदी पडिवा १७ ठानी ॥ मार्गसिर फागुण शुद्ध, दशमी १८ बारस १९ कहीयें ॥ ज्येष्ठ वैशाखवदि नोम, २० दशमी तिथि २१ सुगहीयें ॥ आषाढ श्रावण शुद्ध अष्टमी ए,नेमी पार्श्व २२।२३ जिनजान ॥ कार्तिक अमावस वीरजिन २४,पाया पद निर्वाण ॥ ८२ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरना निर्वाण नक्षत्र कहे छे ॥

॥ अभिजित १ मृगशिर २ आर्द्रा ३, पुष्य ४, पुनर्वसु ५ आयो ॥ चित्रा ६ अनुराधा ७ ज्येष्ठा, ८ मूल ९ पूर्वाषाढा १० गायो ॥ धनिष्टा ११ उत्तराभाद्र, १२ दोयके रेवती १३ जाणो ॥ १४ पुष्य १५ भरणी १६ कृत्तिका १७, रेवती १८ भरणी १९ बखाणो ॥ श्रवण २० अश्विनी २१ चित्रा २२ वली ए, विशाखा २३ स्वाति २४ विचार ॥ इन नक्षत्र निर्वाणपद, पाया शिव सुखसार ॥ प्रणमु वार वार ॥८३॥१०६॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनु मोक्षस्थान तथा अणसण तप कहे छे ॥

॥ रिखभ अष्टापद शिखर, वासुपूज्य चपा जाणो ॥ नेमि नाथ गिरनार, पावापुरी वीर वखाणो ॥ शेष समेत शिखर, गीरि पर अणसण लीना ॥ छ दिन रिखभ जिणद, वीर छठम तप चीना॥ शेष जिनद एकमासनोए, ठायो अणसण सार॥ होय अजोगी मुक्तिगया प्रणमू वारवार ॥ जय जय परम दातार ॥ ८४ ॥ १०७ १०८ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनु मोक्ष आसन तथा मोक्ष वेला कहे छे ॥

॥ रिखभ जिणद रिष्ट नेमि, चोविशमा वीर जिनदा ॥ पल्यक आसण सथारो, शेप ˜ करदा ॥ त्रीजा छठा नवमा बारमा,

अपरान्हें धारो ॥ तिण विचला जे अठ, जिन पूर्वान्हें विचारो ॥ धर्म कुंथु नमि वीर प्रभु ए, अपर रात्रि निर्वाण ॥ शेष आठ पूर्व रात्रिमें, मुक्ति गया जगभाण ॥ ८५ ॥ १०९ ॥ ११० ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरने मोक्ष समय अणसणधारक कहे छे ॥

॥ आदिजिनंद दश सहस्र, पद्म प्रभु तिनशें आठो ॥ पांचशें सुपारस संग, वासुपूज्य छशें पाठो ॥ विमलसंगें खट सहस्र, अनंत जिकें सात हजारो ॥ धर्म एकसो आठ, नवशें शांति विचारो ॥ पाचशें छत्रिश मल्लि नेमी ए, तेत्रीश पार्श्वप्रभु लार ॥ माहावीर एका एकी, शेप सहस्र परिवार ॥ प्रभु साथें अणसणधार ॥ प्रणमुं ते वारं वार ॥ ८६ ॥ १११ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी युगांतकृत भूमि तथा पर्यायांतकृत भूमि कहे छे ॥

॥ रिखभ जिनंद असंख्यात, पाट मुनि मुक्ति सिधाया ॥ नेमी आठ चउ पार्श्व, चरम जिन तीन बताया ॥ शेप जिनंद संख्यात, युगांतर भूमि कहीयें ॥ पर्यायांतक श्री आदि, अंतरमुहूरत लगें लहीयें ॥ नेमि वर्ष दोय पारस त्रिहूं ए, वर्द्धमान वर्ष चार ॥ शेष एक दिनांतरें, मुक्ति गया अणगार प्रणमुं ते वारं वार॥८७॥११२॥११३॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरना मुनियोनी केवी प्रकृति, तथा वस्त्र रंग, तेमज जन्म नक्षत्र, दीक्षानक्षत्र, केवल ज्ञान नक्षत्र, तथा केटलाश्रावक व्रत, पंचाचार, ते सर्व कहे छे. ॥

॥ आदिजिणंद मुनिराज, प्रकृति ऋजु जड जाणो ॥ चरम प्रभुका वक्रजड, शेप ऋजु सरल वखाणो ॥ आदि अंत श्वेतवस्त्र, शेप पंचरंगा ठाणो ॥ च्यवन नक्षत्र जेह, तेहि जन्मदीक्षा नाणो ॥ सहुने श्रावक व्रत दुवादश ए, सहुने पंच आचार ॥ जे पाली शिवपुर गया, प्रणमुं ते वारं वार ॥ ८८ ॥ ११४ ॥ थी १२० ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरजी उत्पत्तिना आरानो समय, धर्म भेद तथा सयमभेद अने मुनिओना गुण कहे छे ॥

॥ त्रीजा आरानी अतें, रिखभ जिनवर प्रगटाया ॥ चोथा आरा मध्य अजित, शेष अतें दरसाया ॥ श्रुत अरु चारित्रधर्म, सकल दो भेद् बताया ॥ सजम सतरा प्रकार, पाले सहु जिन मुनिराया ॥ गुण सत्त.वीश धारणा ए, तारण तरण मुनिद ॥ ते प्रणमु मनवच करी, आणी अधिक आनद् ॥ ८९ ॥ १२१ थी १२४ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनु कट ो काल शासन रह्यु ? ते कहे छे ॥

सागर पचास लक्ष कोड १, आदिजिन सासण कहीयें ॥ इम त्रिश २ दश ३ नव ४ लाख, कोडी सागर सर्दहियें ॥ हजार नेउ ५ नव ६ जाण, नवशें कोडी सुपासो ७ ॥ नेवु ८ नव कोड ९ सागर, शीतल एक १० कोडि विमासो ॥ तिणमें सो सागर ग्रहो ए, वर्ष छासठ लक्ष जाण ॥ सहस्र छवीश कमती कह्यो, दशमा सासण प्रमाण ॥ ९० ॥ सागर चोपन ११ त्रीश, १२ नव १३ चउ १४ धरम तिहु सागर १५ ॥ तिणमें पूणो पल घाट, शाति अर्ध पल १६ उज्जागर ॥ कुथु जिन पाव पल, १७ कमति वर्षकोडि हजारो ॥ अरह कोडि हजार १८, चोपन लक्ष १९ मल्लि विचारो ॥ षट २० पच २१ लक्ष पोणी २२ चोरासी सहस्त्रज ए, अढाईशें २३ एकविश हजार २४ ॥ समण समणी शासन प्रभु, प्रणमु ते वार वार ॥ ललि ललि वारवार ॥ ९१ ॥ १२५ ॥

॥ अथ स्तवन आरति प्रारभ ॥

॥ जयजय श्री जगदीश, रोष अरु तोष मिटाई ॥ जय जय श्री जगदीश, कर्म कण पीसे साई ॥ जय जय श्री जगदीश, ध्यायो प्रभु शुकल ध्यानो ॥ जय जय श्री जगदीश, पाया सव केवल ज्ञानो ॥ जय जय श्री जगदीशजी ए, करता पर उपगार ॥ दीधि

सहा धर्म देशना, तान्या बहु नर नार ॥९०॥ जय जय श्री जगदीश, केइ समदृष्टि करिया ॥ जय जय श्री जगदीश, केइ श्रावक उद्धरिया ॥ जय जय श्री जगदीश, केइ कीना अणगारो ॥ जय जय श्री जगदीश, केइ कीना केवल धारो ॥ जय जय श्री जगदीशजी ए, आप तन्या परतार ॥ शिव सुख अविचल संपदा, पाया पद अविकार ॥९३॥ जो समरे एक चित्त, वित्त नित वंछित आवे ॥ जो समरे एक मन, जल तन रोग मिटावे ॥ जो समरे चित्त चाव, भाव तस निर्मल थावे ॥ जो समरे एक ध्यान, ज्ञान केवल प्रगटावे ॥ इन कारण भवियन सहु ए, नाम ठाम शुभ काम ॥ गुणग्राम लेखा विधि, राचि रुचि शुचि हितधाम ॥ ९४ ॥ अल्पश्रुति प्रमादी, आलसी में अति भारी ॥ श्रीगुरुने परसाद, भक्ति वश शक्ति सुधारी ॥ घाल रूप जिस ग्रंथ, निजमति लायक वणायो ॥ हीण अधिक विपरीत, जोडमें शब्द जो आयो ॥ मिच्छामि दुक्कडं सव साखसुं ए, श्रीजिनवाणी लेत ॥ अशुद्ध जो देखो बुधजना, शुद्ध कर लीजो सुहेत ॥ ९५ ॥ संवत ओगणीशशें चालीस, मास मधु नाम विचारो ॥ शुद्ध पक्ष पंचमी तिथि, वार गुरु जोग उदारो ॥ देश दक्षिण प्रसिद्ध, अहमद नगर मझारो ॥ किना यह अहारनवन, सवाशें बोल विस्तारो ॥ अनुक्रमें समकित दृढ भर्णा ए, बोल तोल अमोल ॥ धारो भविजन भावशुं गाथा संधिशुं खोल ॥ ९६ ॥

॥ हवे पट्टावली लिख्यते ॥

॥ पूज्यश्री कानजी रिखि, बीज शशि जेम परतापी ॥ दिपायो दयाधर्म, कुमतिमति दूर उत्थापी ॥ तस पाटोधर पूज्य, तारा रिखजी जस धारक ॥ काला रिखजी तप शिष्य, बक रिखजी सुविचारक ॥ तस शिष्य पूज्यगुण आगला ए, धनजी रिखजी महाराय ॥ तस शिष्य श्रीगुरु मम तणा, श्रीयवनाजी रिखराय ॥ नाम तणोजी सुपसाय॥९७॥ शिशु सम थो हूं अज्ञानी, गुरु उपगारज कीनो ॥ दीनो धर्मको बोध.

शोध हिरदे लय लीनो ॥ जाणी किंचित रीत, प्रीत हित निज पर कारण ॥ तिलोकरिख कहे जैन, येन भवजलनिधि तारण ॥ जो समरे जगगुरु भणी ए, यथा जोग विधि धार ॥ जगगुरु पद पावे सही, वरते मगल चार ॥ ९८ ॥ कलश ॥ जय जय जिनद, सुखकद साहेव, जक्त पति जग, रजण ॥ अजर अमर, अविकार निर्भय, करम रिपुदल, गजण ॥ तिलोकरिख कहे, पर्म पाते तुम, विघन सव, दूरें हरो ॥ हित सुख खेम, कल्य ण शिवपद, तास जुक्ति दो जय करो ॥ प्रभु भव भव सरणो आपरा ॥ ९९ ॥ इति चोविश जिनराज, गरीवनिवाज तरण तारण जहाजको, एकशो पच्चीश वोल नामादिक लेखागर्भित महास्तवन समाप्त ॥

॥ अथ मुनिगुण मगलमाला प्रारभः ॥

॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ अथवा धन धन सप्रति साचो राजा ॥ ए देशी ॥ समरू श्रीअरिहत सिद्ध साधु, धर्मजिण आणा मझार जी ॥ चारुहि मगल उत्तम सरणो, होजो सदा सुखकारजी ॥ प्रणमू ते गुणवत त्रिकालें, त्रिकरण मन वचकाय जी ॥ १ ॥ ऋद्धि सिद्धि सुखसपत्ति शाता, नित नित देवे सवाय जी ॥ प्र० ॥ २ ॥ आतित अनत चोवीशी वदू, केवली अनत अपार जी ॥ वर्त्तमान चोविशी साहेव, नाम कहु सुविचार जी ॥ प्र० ॥ ३ ॥ ऋषभ अजित सभव अभिनदन, सुमति पद्म सुपासजी ॥ चद्रा प्रभुजी ने सुविधि जिनश्वर, शीतल द्या शिववास जी ॥ प्र० ॥४॥ श्रीश्रेयास वासुपूज्य वदू, विमल अनत धर्मदेव जी ॥ शाति कुथु अर मल्लि मुनिसुव्रत, नमि नेमी करू सेव जी ॥ प्र० ॥५॥ पारस अने वर्धमान जिनेश्वर, ए चोविश जिनराय जी ॥ कर्म खपाई केवल पाया, मुक्ति विराज्या जाय जी ॥ प्र० ॥ ६ ॥ जयवता सीमधर स्वामी, जुगमधर सुखकार जी ॥ वाहु सुवाहु ए चउ विचरे, जबुद्वीप मझार जी ॥ प्र० ॥ ७ ॥ सुजात स्वयप्रभ ने ऋष-

भानन, अनंतवीरज जगभाण जी ॥ सूरप्रभु विश वज्रंधर, चंद्रानन गुणखाण जी ॥ प्र० ॥ ८ ॥ पूरव पश्चिम चार चार जिन, धातकीखंड मझार जी ॥ विचरे गाम नगर पुर प , करता पर उपगार जी ॥ प्र० ॥ ९ ॥ चंद्रबाहु भुजंग ईश्वर जी, नेमीश्वर शिवकंत जी ॥ वीरसेनने श्रीमहाभद्र जी, देवजसजी जसवंत जी ॥ प्र० ॥ १० ॥ विशमा अजितवीरज जगनायक, चार चार जिन राय जी ॥ पुष्करार्धमें विचरे साहिब, नामें नवनिधि थाय जी प्र० ॥ ११ ॥ उत्कृष्टे पदें एकसो सित्तेर, जघन्य केवली कोडी दोय जी ॥ उत्कृष्ट पदें पृथकत्व कोडी तिनमें, वर्तमान जे होय जी ॥ प्र० ॥ १२ ॥ अष्ट गुणातम पंदरा भेदें, सिद्ध सदा सुखकार जी ॥ अलख निरंजन भवदुःख भंजण, समरतां सुखकार जी ॥ प्र० ॥१३॥ आचारज अष्ट संपदा धारक, वारक मिथ्या भ जी ॥ गुण छत्रीश ईश चउ तीरथ, दीपावे जैनधर्म जी ॥ प्र० ॥ १४ ॥ इंद्रभूति अग्निभूति वंदूं, वायुभूति गुणवंत जी ॥ चोथा व्यक्त सुध -स्वामी, मंडितजी जसवंत जी ॥ प्र० ॥ १५ ॥ मौर्य अकंपित अचल जी, मेतारज गुणधार जी ॥ इग्यारमा परभासजी वंदूं, चुम्मालिशशें परिवारजी ॥ प्र० ॥१६॥ चोविश जिनना गणधर वंदूं; चउदशें बावन जाण जी ॥ चउदा पूरव धारक रा, पहूंता सहु निर्वाण जी ॥ प्र० ॥ १७ ॥ ऋषभ सेनादिक सहस्र चोराशी, मुनिवर गुण भंडार जी ॥ धीर वीर गंभीर गुणानम, नमता जयजयकार जी ॥ प्र० ॥ १८ ॥ अरिसाभवनमें श्रीभरतेश्वर, पाया केवल ज्ञान जी ॥ अनुक्रमें आठ पट्टोधर इणविध, पाया पद निर्वाण जी ॥ प्र० ॥ १९ ॥ बाहुबल मुनिवर महा बलीया, बार मासी तप ध्यान जी ॥ मान मोलेने पग उठायो, पाया केवल ज्ञान जी ॥ प्र०॥२० ॥ जूझ करतां पुत्र अठ्ठाणुं, श्रीआदिश्वर स्वा जी ॥ समजाई दियो संजम तेहने, पहोता ते शिवधाम जी ॥ प्र०

॥ २१ ॥ सागर मघवा खट खड त्यागी, चक्री सनत्कुमार जी ॥ रूप देखवा सुर छल कीधो, लीधो सजम भार जी ॥ प्र० ॥२२॥ पद्म हरी खेण जयनामें रिख, चक्री दश ऋद्धि छोड जी ॥ शम दम उपशम धीर गुणागर, कर्मबधण दिया तोड जी ॥ प्र० ॥ २३ ॥ अचल विजय भद्ररिख वद्दू, सुभद्रमुनि रिखि राय जी ॥ सुदर्शन आनदन नदन, र म गया शिवमाय जी ॥ प्र० ॥ २४ ॥ हलधर बलिभद्र जी पहोता, पचम स्वर्ग मझार जी ॥ उत्तम पुरुष ए पुण्य प्रतापी, त्रली कहु अगलुसार जी ॥ प्र० ॥ २५ ॥ आर्द्रकुमार मा हाबुद्धिवता, जीत्या महा पचवाद जी ॥ सयम पाली शिवपद पाया, जिन आणा मरजाद जी ॥ प्र० ॥ २६ ॥ उदय पेढालपुत्रे करी चर्चा, गौतमस्वामीसु जाय जी ॥ कुमारपुतिया नाम लेइनें, सूत्र सुयगडागनीमाय जी ॥ प्र० ॥ २७ ॥ दश दशाग त्रीजे अग चाल्या, कह्या तिहां मुनिवर नाम जी ॥ ते सहु शिवगामी गुणधामी, कीना उत्तम काम जी ॥ प्र० ॥ २८ ॥ सूत्रसमवायाग माही प्रकाश्या, नाम केई प्रसिद्ध जी ॥ गणधर मुनिवर चउद पूर्वधर, नाम लिया ऋद्धिसिद्ध जी ॥ प्र० ॥ २९ ॥ पिंगल नाम नियठे पूछ्या, प्रश्न पच रसाल जी ॥ खधक सन्यासी सुणने तत क्षण, वीर पासें गया चाल जी ॥ प्र० ॥ ३० ॥ सशय निवरत्या सजम लीनो, कीनो तप श्रीकार जी ॥ अणसणधारी स्वर्ग बार मे, थया एका अवतार जी ॥ प्र० ॥ ३१ ॥ वीर जिनेश्वर ताल वखाणु, रिखभदत्त गुणधार जी ॥ शेठ सुदर्शन राज ऋषीश्वर, धन गागियो अणगार जी ॥ प्र० ॥ ३२ ॥ ए चारे ऋषि मुगतें पहोता, धन धन भगवत मात जी ॥ देवानदा धन सति जयवतो, पूछ्या प्रश्न विख्यात जी ॥ प्र० ॥ ३३ ॥ वीर प्रभुजीनी नदिनी वद्दू, सती सुदर्शना जाण जी ॥ दीक्षाधारी कर्म निवारी, पाइ पद निर्वाण जी ॥ प्र० ॥ ३४ ॥ पचमी पडिमा कार्तिक शेठें, धारी तिण सो वार

जी ॥ तापस खीर जम्यो गोरा पर, जाण्यो अथिर संसार जी ॥ प्र० ॥ ३५ ॥ सहस्र अष्टोत्तर गुमास्ता साथें, आदर्यो संजमभार जी ॥ शेठ थया शक्रेंद्र सोधर्मे, जाशे मोक्ष मझार जी ॥ प्र० ॥ ३६ ॥ सोला देश तजि संजम लीधो, दियो भाणेजने राज जी ॥ करी क्षमा धनराय उदाई, सार्यां आतम काज जी॥ प्र० ॥ ३७ ॥ गंगदत्त आणंद कोसल रिखराहा, सुनक्षत्र नाम अणगार जी ॥ श्रवणभूति आराधक थईने, पहोता स्वर्ग मझार जी ॥ प्र० ॥ ३८ ॥ तिहांथी चवीने मुक्ति सिधाशे, इत्यादिक अणगार जी ॥ नाम ठाम तप जपको वर्णव, विवाहपन्नत्ति मझार जी ॥ प्र० ॥ ३९ ॥ धारणीसुत श्रेणिक नृपनंदन, धन धन मेघ कुमार जी ॥ आठ अंतेउर छिनमें छोडी, त्याग दियो संसार जी ॥ प्र० ॥ ४० ॥ गुणरतन भिक्खु पडिमा तप, अंतें अणसण कीध जी ॥ विजयविमानमें जाय बिराज्या, होशे विदेहमें सिद्ध जी ॥ प्र० ॥ ४१ ॥ बत्रीश नार तजी रंभासी, धन थावच्चा कुमार जी ॥ नेम प्रभुपें संजम लीधो, सहस्र पुरुष परिवार जी ॥ प्र० ॥ ४२ ॥ थावच्चा मुनिसूं चर्चा कीनी, शुकदेव संन्यासी जाण जी ॥ एक सहस्र शिष्य साथें संजम, लीधो गुणनिधि खाण जी ॥ प्र० ॥ ४३ ॥ पंथकादिक परधान पांचशें, सेलक राय नी लार जी ॥ अढाइ सहस्र पुंडरीकागिरी सिद्धा ॥ धन जिणरा अवतार जी ॥ प्र० ॥ ४४ ॥ रेणा देवीकी केण न कीधी, रत्नद्वीपसूं आय जी ॥ संजम लीनो चंपा नगरी, जिनपाल मुनिराय जी ॥ प्र० ॥ ४५ ॥ तीन धन्नायें धार्यो संजम, सुगुरु थिविरनी पास जी ॥ तीनुं परथम स्वर्गे सिधाया, महाविदेह शिववास जी ॥ प्र० ॥ ४६ ॥ छए मित्र मल्लि जिनवरना, महाबलादिक गुणवंत जी ॥ गणधर पद ग्रही मुक्ति बिराज्या, थया सिद्ध भगवंत जी ॥ प्र० ॥ ४७ ॥ सुबुद्धि प्रधानजीयें भलि विधें, पाणी परचो बताय जी ॥ जितशत्रु नृपको भर्म मिटायो, दोइ गया शिवमांय जी ॥ प्र० ॥ ४८ ॥

तेतली मुनिवर गुणना दरिया, पोट्टिला दियो प्रतिबोध जी॥ केवल पामी मुक्ति विराज्या, तजियो सकल विरोध जी ॥ प्र० ॥ ४९ ॥ युधिष्टिर अर्जुन अने भीमजी, सहदेव नकुल अणगार जी ॥ मास मास तप अभिग्रह कीनो, नेम वदण सुविचार जी ॥ प्र० ॥ ५० ॥ हस्तिकल्पपुर गोचरी करता नेम तणु निर्वाण जी ॥ सुणिने पाडव पाच शत्रूजे, सथारो लियो जाण जी ॥ प्र० ॥ ५१ ॥ दोय मास सलेखणा सिद्धा, श्रमणी द्रौपदी सोय जी॥ सजम पाली स्वर्ग पचमें, एकावतारी होय जी ॥ प्र० ॥ ५२ ॥ धर्मघोष शिष्य धर्मरुचि जी, किड्या पर करुणा आण जी॥ कडवा तुबानो आहारज कीधो, खीर खाड सम जाण जी ॥ प्र० ॥ ५३ ॥ क्षण अतरमें वेदना प्रगटी, रिख समता मन धार जी ॥ सर्वार्थसिद्धमें जाय बिराज्या, च्यवि गया मुक्ति मझार जी॥ प्र० ॥ ५४ ॥ कुडरिक भाईने डगियो जाणी पुडरिक सजम धार जी ॥ सर्वार्थसिद्ध लियो तीन दिवसमें, धन जिणरो अवतार जी ॥ प्र० ॥ ५५ ॥ सुव्रतादिक श्रमणी महासतिया, पाली प्रभु नी आण जी ॥ ते वर्णन भिन्न भिन्न करि देखो, ज्ञाता अग प्रमाण जी ॥ प्र० ॥ ५६ ॥ गौतम समुद्र सागर अने गभीर, थिमितने अचल कुमार जी ॥ कपिल अक्षोभ प्रश्नसेन ने विष्णु, अक्षोभ सागर जसधार जी ॥ प्र० ॥ ५७ ॥ सागर समुद्र हेमवत नामें, अचलधरण गुणवत जी ॥ पूरण अभिचद्र एह अठारा, भ्राता जाणो सहु सत जी ॥ प्र० ॥ ५८ ॥ अधक विष्णुसुत धारणी अगज, आठ अतेउर मेल जी ॥ नेम समीपें लीनो सजम, करि सुगतिमें सहेल जी ॥ प्र० ॥ ५९ ॥ वसुदेवसुत देवकी जाया, अणियसेण अनतसेण जी ॥ अजितसेण अणिहय रिपुनामें, देवसेण शत्रुसेण जी ॥ प्र० ॥ ६० ॥ सुलसाघर वधिया छे वधव, बत्रीश बत्रीश नारि जी॥ तजिने नेम प्रभुपें सजम, लेइने छठ छठ धार जी ॥प्र०॥६१॥ पूरवधारी कर्म निवारी, पहोता मोक्ष मझार जी ॥

वसुदेवसुत धारणी अंगज, सारण थया अविकार जी ॥ प्र० ॥ ६२ ॥ गजतालव्र जिम कोमल काया, धन धन गजसुकुमाल जी ॥ वसुदेवसुत देवकी अंगज, छोड्यो जग जंजाल जी ॥ प्र० ॥ ६३ ॥ एकाकी समशानमें जाइ, उभा ध्यान लगाय जी ॥ ससरो देखी रीषें भराणो, माटीकी पाल बणाय जी ॥ प्र० ॥ ६४ ॥ धग धगता खेराना खीरा, मेल्या रिखने शीश जी ॥ महावेदना सहि स परिणामें, मुक्ति गया तजि रीश जी ॥ प्र० ॥ ६५ ॥ सुमुख दुर्मुख वली उवय कुंवर, दारुण, अनाधिष्ठ जाण जी ॥ जाली मयाली उवयाली ऋषि, पुरुषसेन वखाण जी ॥ प्र० ॥ ६६ ॥ वारिषेण प्रद्युम्न ऋषि संब, अनिरुद्ध वैदर्भिनंदजी ॥ सत्यनेमी दृढनेमी ए सब, पाम्या शिवसुखकंद जी ॥ प्र० ॥ ६७ ॥ पद्मावती गौरी गांधारी, लखमणा सुसमा नार जी ॥ जांबुवती सत्यभामा रुक्मिणी, ष्णरामा सुविचार जी ॥ प्र० ॥ ६८ ॥ मूलसिरी मूलदत्ता श्रमणी, सांबकुमरनी नार जी ॥ ए दशे संजम केवल लेई, पहोती क्ति मझार जी ॥ प्र० ॥ ६९ ॥ मकाई किंकम रिख महोटा, धन अर्जुन अणगार जी ॥ संजम लेइ क्षमा हदधारी, छठ छठ तप लिधुं धार जी ॥ प्र० ॥ ७० ॥ छ मासमें कर्म खपाई, मुक्ति गया गुणवंत जी ॥ कासव क्षेम धितिधर हितकर, कैलास हरिचंद संत जी ॥ प्र० ॥ ७१ ॥ वारत सुदंसण पूरणभद्दर, सुमनभद्र सुप्रतिष्ठ जी ॥ मेघ ऐमंता अलख ए शोला, पाया पदवी श्रेष्ठ जी ॥ प्र० ॥ ७२ ॥ नंदादिक तेरे पट्टराणी, वीर जिनंद उपदेश जी ॥ केवल पाई मुक्ति सिधाइ, पाई अविचल यश जी ॥ प्र० ॥ ७३ ॥ कालीयादिक दश श्रेणिक राणी, सुणियो पुत्र विजोग जी ॥ माहातपधारी कर्म निवारी, मेट दिया सब रोग जी ॥ प्र० ॥ ७४ ॥ ए नेउं सहु अंतगड सिद्धा, अंतसमे केवल पाय जी ॥ अंतगडसूत्रसें वर्णव जाणो, जपतां सुख सवाय जी ॥ प्र० ॥ ७५ ॥ श्रेणिकसुत धन जाली मयाली, उवयाली पुरुष

सेन जी ॥ वारीसेण दीर्घसेण लठदत जी, गूढदत सब जगसेन जी ॥ प्र० ॥ ७६ ॥ विहल कुमर अभयादिक त्रेविश, श्रेणिकसुत गुणधाम जी ॥ अनुत्तर विमान गया सहुरिखजी, चवि जासे शिवठाम जी ॥ प्र० ॥ ७७ ॥ बत्रीश रंभा तजि धन कोडी, धन धन्नो अणगार जी ॥ छठ छठ तप निरंतर करणी, आयंबिल उच्छित आहार जी ॥ प्र० ॥ ७८ ॥ चौद सहस्र मुनीश्वरमांही, श्रेणिक आगें स्वाम जी ॥ कहे दुक्कर दुक्कर तप धारी, शम दम उपशम धाम जी ॥ प्र० ॥ ७९ ॥ सुनक्षत्र इसीदासजी पेढग, रामपुत चंदिमा नाम जी ॥ मूढमाई पेढाल पुतर रिख, पोटिल विहल अभिराम जी ॥ प्र० ॥ ८० ॥ धन्नानी रीतें ए नवही, करि करणी श्रीकार जी ॥ अनुत्तरोववाई सूत्रके माही, दाख्यो छे विस्तार जी ॥ प्र० ॥ ८१ ॥ धन सुबाहु भद्र नदी रिख, सुजात सुवासव धीर जी ॥ जिनदास धनपति माहाबल जी, भद्रनदी गंभीर जी ॥ प्र० ॥ ८२ ॥ महचंद वरदत्त ए दश मुनिवर, पूरव दान प्रभाव जी ॥ ऋद्धि संपत्ति पाया अति सुंदर, संजम लियो चित्त चाव जी ॥ प्र० ॥ ८३ ॥ केइक तिण भव मुगति सिधाया, केइ पन्ना भव धार जी ॥ मुगतिसिरी वरशे वडभागी, सुखविपाक अधिकार जी ॥प्र०॥८४॥ पउमादिक दश श्रेणिक पौत्रा, वीर जिनेश्वर पास जी ॥ दीक्षा लेई स्वर्ग सिधाया, पामशे अविचल वास जी ॥ प्र० ॥ ८५ ॥ निखढादिक वलभद्रजीका नंदन, बाराही गुणवंत जी ॥ पचास पचास त्यागि अंतेउर, सर्वार्थसिद्ध पोहत जी ॥ प्र० ॥८६॥ सूत्र निरावलियानीमाही, भाख्या भाव जिनंद जी ॥ एकावतारी छे रिख सारा, टालशें भवदुःख फंद जी ॥ प्र० ॥ ८७ ॥ दो मासा सुवर्णकी इच्छा, आई तृष्णा अपार जी ॥ समतार्थी केवल पद पाया, धन कपिल अणगारजी ॥ प्र० ॥ ८८ ॥ धन वलि नेमी राजऋषीश्वर, त्यागी रमणी हजार जी ॥ इंद्रसू प्रति उत्तर कीना,

पाया भवजल पार जी ॥ प्र० ॥ ८९ ॥ हरिकेशी चित्तमुनि गुणसागर, संजयति ऋषिराय जी ॥ गर्दभाली क्षत्री राजऋषि धन, दशारण भद्र कहाय जी ॥ प्र० ॥ ९० ॥ करकंडू दुमुह नमी राजा, निग्गाई एह चार जी ॥ एक समय चउ संयम धार्यो, एक समे भवपार जी ॥प्र०॥९१॥ माहाबल मृगापुत्र मुनीश्वर, मुनि अनाथी जाण जी ॥ समुद्रपाल प्रतिपाल दयानिधि, रहे नेमी उजमाल जी ॥ प्र० ॥ ९२ ॥ केशी गौतम चर्चा कीनी, जय विजय घोष रसाल जी ॥ गर्गाचार्य उत्तराध्ययनें, मेल्यो शिष्य जंजाल जी ॥ प्र० ॥ ९३ ॥ धन्ना शालिभद्र रिख जोडी, तडके तोड्यो नेह जी ॥ मास मास तप धारण कीनो, त्यागी ममता देह जी ॥ प्र० ॥ ९४ ॥ आठ अंतेउर रातें परण्या, सोनैया निन्याणुं कोड जी ॥ दिन उगा लियो संजम भावें, पांचशें सत्तावीश जोड जी ॥ प्र० ॥ ९५ ॥ ढंढणऋषि लियो अभिग्रह दुःकर, चूर्यां कर्म करूर जी ॥ खंधक ऋषिनी खाल उतारी, क्षमा करी भरपूर जी ॥ प्र० ॥ ९६ ॥ खंधक ऋषिना शिष्य पांचशें, पील्या घाणी मांय जी ॥ क्षमा करि केवल पद पाया, सुगति गया मुनिराय जी ॥ प्र० ॥ ९७ ॥ थूलिभद्र अरणिक सिज्झंभव, श्रीजिन आज्ञा मांय जी ॥ वरत्या वरते ते सहु मुनिवर, थूणतां पातक जाय जी ॥ प्र० ॥ ९८ ॥ मरुदेवी गज होदे पाम्या, निर्मल केवल ज्ञान जी ॥ ब्राह्मी सुंदरी चंदनबाला, ध्यायुं शुकल ध्यान जी ॥ प्र० ॥ ९९ ॥ राजिमती द्रौपदी सुभद्रा, सीता कौशल्या जाण जी ॥ मृगावती अंजना मृगलेखा, मलया शीलनी खाण जी ॥ प्र० ॥ १०० ॥ चेलणा सुज्येष्ठा शिवा कुंती, मयणरेहादिक जेह जी ॥ संकट पडिया शीलज राख्युं, आण्यो संजम नेह जी ॥ प्र० ॥ १०१ ॥ इण चोवीशी मांही जिनना, मुनिवरनो परिवार जी ॥ लाख अट्ठाविश उपर जाणो, अडतालीस हजार जी ॥ प्र० ॥ १०२ ॥ श्रीजिनवर ना

शासनमांही, केवली थया अपार जी ॥ साधु साधवी थया असख्या, नामथकी जयकार जी ॥ प्र० ॥ १०३ ॥ जघन्यपदें दोय सहस्र कोडी, उत्कृष्ट पृथक् सहस्र कोड जी ॥ वर्तमान जे वर्त्ते मुनिवर, जग माया सब छोड जी ॥ प्र० ॥ १०४ ॥ पच भरत पच एरवय जाणो, पच महाविदेह मझार जी ॥ अढाई द्वीपके माही वरते, सत्ताविश गुण धार जी ॥ प्र० ॥ १०५ ॥ तप जप साधे धर्म आराधे, बालक वलि वृद्ध सत जी ॥ ममता टाले समता झाले, पाले सजम खत जी ॥ प्र० ॥ १०६ ॥ एहवा मुनिना जे गुण गावे, मुख जयणा सुविचार जी ॥ पाप पलावे सपत आवे, कटे कर्मको खार जी ॥ प्र० ॥ १०७ ॥ इम जाणी भवियण नित भणजो, थावे शुद्ध परिणाम जी ॥ ओगणीशें सेंतीस माहावदि आठम, तिलोकरिख कीया गुणग्राम जी ॥ प्र० ॥ १०८ ॥ अधिको ओछो जो जोडाणो, मिच्छामि दुक्कड मोय जी ॥ पच परमेष्ठी सरणो मुझने, मनवछित फल जोय जी ॥ प्र० ॥ १०९ ॥ कलश ॥ अरिहत सिद्ध आचार्य त्रीजा, उपाध्याय अणगार ए ॥ मति श्रुत रिख अवधि ज्ञानी, मनपर्यव सुखकार ए ॥ केवलज्ञानी लब्धि धारक, चारित्र पच प्रकार ए ॥ तिलोकरिख कहे वर्त्या वर्त्ते, वदू वार वार ए ॥ सदा देजो शिवसुख सार ए ॥ इति श्रीतिलोकरिखजी महाराज कृत मुनि गुण मगलमाला सपूर्णा ॥

॥ अथ श्रीगौतमस्वामि इद्रभूतिजीको रास प्रारभ. ॥

॥ सिद्धचक्रजीने पूजो रे भविका, ॥ ए देशी ॥ प्रणमू श्रीवर्धमान सुहकर, सतगुर शीश नमाउ ॥ ज्येष्ठ शिष्य श्रीगौतम स्वामि, शुधभावें गुण गाउ रे ॥ भविका, गोयम गणधर वदो, भव भव दुःख निकदो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥१॥ गोवर गाम आराम मनोहर, वसुभूति विप्र जाणो ॥ तस घर प्रथ्वी नारि सुलक्षण, शीलगुणें मृदु वाणो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥२॥ एकदिन सुखसिज्जामांहे

सूती, इंद्रभवन झलकंतो ॥ दीठां स्वप्न हरष अति पामी, कंतसुं कह्यो विरतंतो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ ३ ॥ सवा नवमास पूरण थया जनस्या, दान मान बहु कीनो ॥ इंद्रभुवन देख्यो तिण कारण, इंद्रभूति नाम दीनो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥४॥ रूप अनुपम कनकसी काया, झलक झलक तन दमके ॥ पंच धावें करि वध्या दिन दिन सो, दुशमन देखीने चमके रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ ५ ॥ चार वेद छ शास्त्र सो भणीया, अरथ तरक विधि सारी ॥ चउद विद्या निधान सो पंडित, विस्तरी महिमा से भारी रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ ६ ॥ मध्य पापापुर सोमल ब्राह्मण, यज्ञ करण सो बुलाया ॥ अग्निभूति वायुभूति संगें, अति आडंबरें आया रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ ७ ॥ विद्या पात्र छात्र नर संगें, एक एकने लारें ॥ पांच पांचशें आया विचक्षण, यज्ञ मांड्यो तिणवारें रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ ८ ॥ श्री महावीर अति धीर गुणातम, तप कियो दुःकर कारी ॥ ऋजुवालुकानदि तीर छठ तपस्या, गोदुज आसण करारी रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ ९ ॥ वैशाख शुद्ध दशमी दिन जाणो, ध्यान शुकल मन ध्यायो ॥ परम नरम पण करम भरमकूं, टालि केवल पद पायो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ १० ॥ मध्य पापापुरि बाहिर पधार्या, केवल महोत्सव काजें ॥ इंद्र चोसठ मिल आया उमंगसूं, त्रिगडा तणी विधि साजे रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ ११ ॥ तिण अवसर चार जातिना आवे, देव देवी केइ कोडी ॥ अमर विमाणसूं अंबर छायो, सेवा करे कर जोडी रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ १२ ॥ यज्ञ उपर थई देवता जावे, इंद्रभूति तव बोले ॥ यज्ञ लगें आई किहां जावे, किणे पाड्या र भोले रे ॥ भ० ॥ गो० ॥१३॥ एटले कोई कहे पुर बारे, आया छे दीनदयाला ॥ त्रिसलानंद जिनंद दिवाकर, खटकाया प्रतिपाला रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ १४ ॥ तेहणा दरिसण काजें असुर सुर, आया छे इहां चलाई ॥ इंद्रभूति इम सुणि जन वाणी, आणे मान अकडाई रे ॥

भ० ॥ गो० ॥ १५ ॥ मुझसू कवण अधिक जगमाई, विद्यागुण वलधारी ॥ इद्रजालसू सुर वश कीधा, आडवर रच्यो भारी रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ १६ ॥ मुझ आगल सो कदि नही ठेरे, इम सोची तिण वारें ॥ बेठा पालखी मान धरीने, पाचशें छात्र परिवारे रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ १७ ॥ समोसरण तणी देखी रचना, मनमाही ताम विचारे ॥ एसीकलाई नहि मुझमाहि, वश किम आवशे ह्मारे रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ १८ ॥ पाछो फिरू तो निंदना थावे, पगपग शोच घणेरो ॥ देख्या श्री जिनराज नयणसू, विस्मय थया बहुतेरो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ १९ ॥ हरि हर ब्रह्मा नहिं रवि इद्र, दिखे प्रताप सवायो ॥ इणसू विवाद करी नहि जीतू नाहक में चल आयो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ २० ॥ साह्यामा उभा अणवोला रह्या तव, श्री जगदीश उच्चारे ॥ इद्रभूति सुखें आया चलाई, तब मनमें सो विचारे रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ २१ ॥ दिनकरनें सब जाणे जगतमें, तिम मुझ नाम ए जाणे ॥ पण मुझ मन शका जो निवारे, तो सवि भाव पिछाणे रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ २२ ॥ परमेश्वर कहे तुझ चित्त शका, वेदमें तीन दकारो ॥ दया दान दमणो इद्रिय मन, तत्त्व शुभ एह विचारो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ २३ ॥ जीव छे निश्चें ए त्रिहु पदसें, वेद साक्षी इण न्यावे ॥ इम सुणी पचसया परिवारें, सजमको पद ठावे रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ २४ ॥ अग्निभूति वायुभूति पण आया, सजम लियो त्रिहु भाई॥ त्रिपदि ज्ञान लब्धि थइ परगट, गणधर पदवी पाई रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ २५ ॥ छठ छठ तप निरतर करणी, वरणवी सूत्र मझारो ॥ चार ज्ञान चउदे पूरवधर, उकडु आसण धारो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ २६ ॥ रात दीवस प्रभु सेवना कीधी, पूछ्या प्रश्न अपारो ॥ चर्चा वाद विषे अति करडा, कीनो अती उपगारो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ २७ ॥ एक दिवस श्री गोयम शोचे, प्रथम में दिक्षा धारी

॥ मुझने केवल ज्ञान न उपनो, थया चिंतातुर भारी रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ २८ ॥ वीर प्रभु कहे गोयमसेंती, आगें आपण रह्या भे । ॥ लहुड वडाईकी रीतज होती, इहां पण थया तुमें चेला रे॥भ०॥गो० ॥ २९ ॥ अब इण भवके आंतरे आपण, थास्यां बरोबरी दोई ॥ मोहनी किल्लो जित लेवो थें, कमी रहे नहि कोइ रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ ३० ॥ एम सुणी हिये हर्ष घणेरो, इंद्रभूति मन आयो ॥ धन धन अंतरजामी दयानिधि, मुझ पर प्रेम सवायो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ ३१ ॥ लब्धिनिधि श्री गौतमस्वामी, गृहवासें रह्या पचासो ॥ त्रीस वरस छद्मस्थपणामें, प्रभु सेव्या उल्लासो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ ३२ ॥ कार्तिक वदि अमावसनी रात्रें, श्री जिन मुक्ति सीधाया ॥ गौतमस्वामीनें, केवल उपनो, इंद्र महोत्सव भणी आया रे ॥भ० ॥गो० ॥ ३३ ॥ बारा वरष केवल पदमांही, श्री जिनधर्म दीपायो ॥ होइ अजोगी मुक्ति सिधाया, परम मंगल पद पायो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ ३४ ॥ बाणुं वर्षको सर्व आउखो, जगमें कीर्त्ति सवाई ॥ गोतम नामथी रोग न व्यापे, सोग न आवे कदाइ रे ॥ भ० ॥गो०॥ ३५ ॥ वधबंधन उच्चाटण कामण, जंत्र मंत्र नही चाले ॥ अरि करि हारि भय भागे नामथी, दुशमनको गर्व गाले रे ॥भ० ॥ गो० ॥ ३६ ॥ गौतम नामसूं विघन विनासे, चोर चरड नहि गंजे ॥ गौतमनामसुं ताव तेजारी, दुःख बिमारी सो भंजे रे ॥ भ० ॥ गो० ॥३७॥ गौतम नामसुं हिरि सिरि संपति, रिद्ध सिध्द बहु आवे ॥ पुत्र परिवार सज्जन सुख शाता, जो समरे शुध्द भावें रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ ३८ ॥ गग्गा गो कामधेनु सुखदायी, तत्ता सुरतरु जाणो ॥ मम्मा मणि चिंतामणिसेंती, गोतम नाम बखाणो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ ३९ ॥ ओगणीशें अडतिश मृगशीर शुद्धकी, पंचमी तिथि रविवारो ॥ तिलोक रिखजी कहे गोयम प्रभुने, होजो सदा नमस्कारो रे ॥ भ० ॥ ४० । इति गौतम स्वामीको रास संपूर्ण ॥

॥ अथ चोविश जिनवरका स्तवन प्रारभ ॥

॥ राग प्रभाती ॥ प्रात उठी चोविश जिनवरको, समरण कीजें भाव धरी ॥ प्रा० ॥ रिखभ आजित सभव अभिनदन, सुमति कुमति सव दूर हरी ॥ पद्म सुपास चदा प्रभु ध्यावो, पुष्पदत हण्या कर्म अरि ॥ प्रा० ॥ १ ॥ शीतल जिन श्रेयास वासुपूज्य, विमल विमल बुद्धि देत खरी ॥ अनत धर्म श्री शाति जिनेश्वर, हरियो रोग असाध्य मरी ॥ प्रा० ॥२॥ कुथु अर मल्लि मुनि सुव्रतजी, नमी नेमि शिव रमणी वरी ॥ पारसनाथ वर्द्धमान जिनेश्वर, केवल लह्यो भव ओघ तरी ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ तुम सम नहिं कोइ तारक दूजो, इम निर्श्चे मनमाहे धरी ॥ तिलोकरिख कहे जिम तिम करिने, मुक्तिश्री दो प्रभु मेहेर करी ॥ प्रा० ॥ ४ ॥

॥ अथ द्वितीय पद ॥ राग प्रभाती ॥

॥ समर ले श्री आदिनाथ, अजितनाथ भारी ॥ सभव नाथ जगत तात, चरण वलिहारि ॥ उठि प्रभात समरु नाथ, वदणा नित ह्मारि ॥ वोधवीज आथ साथ, सेवा दिजो थारी ॥ उ० ॥ स० ॥ १ ॥ अभिनदन दु ख निकदन, सुमति सुमति धारी ॥ पदम सुपास चदा प्रभु, आशा पूरो सारी ॥ उ० ॥ स० ॥ २ ॥ सुविधि शीतल श्रेयास नाथ, वासुपूज्य जहारी ॥ विमल अनत धर्म शाति, मेटो सव विमारी ॥ उ० ॥ स० ॥ ३ ॥ कुथु अरह मल्लिनाथ, कर्म किया छारी ॥ मुनिसुव्रत विशमा प्रभु, करुणाके भडारी ॥ उ० ॥ स० ॥ ४ ॥ एकविशमा नमिनाथ वदू, सदा सुखकारी ॥ रिष्टनेमी दया काज, तजी राजुल नारी ॥ उ० ॥ स० ॥ ५ ॥ वचाया नाग नागिणी प्रभु, परमेष्टी उचारी ॥ परचा पूरण पारसनाथ, परऊपगारी ॥उ०॥स०॥६॥ महावीर धीर धार, कर्मकू विदारी ॥ केवल ज्ञान भाव भया, थाप्या तीर्थ चारी ॥उ०॥स०॥ ७ ॥ तारि भव्यजीव गया, मुक्तिके मझारी ॥ तिलोकरिख वीनवे प्रभु, वीनती ल्यो धारी ॥ उ० ॥स०॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ तृतीय पद प्रारंभः ॥

॥ गौतम समुद्र, सागर सुगंभीर ॥ ए देशी ॥ श्री आदिआदीश्वरू, परम परमेश्वरू, नमत सुरेश्वरू, हित धरी ए ॥ अजित रिपुजित ए, जगत आदित ए, प्रसिद्ध जसकीर्त्ति, शिववधु वरी ए ॥ १ ॥ श्री संभव स ए, सकलगुणधाम ए, प्रणमुं शिर नाम, सेवा करूं ए॥ अभिनंदन ईश ए, जय जगदीश ए, रिपुदल पीस, केवलवरू ए ॥ २ ॥ सुमति कुमति हरो, कोशसुकृत भरो, तुम तणो आशरो, मुझ भणी ए ॥ पद्म प्रभु पद्म ए, सुमन सुपद्म ए, द्यो शिव सद्म, प्रभु शिवधणी ए ॥ ३ ॥ वंदूं सुपास ए, अनंतगुणरास ए, पूरो प्रभु आश, सेवक तणी ए ॥ चंदप्रभु बंदियें, दुष्कृत निकंदियें, काटि-मोह फंदी, शिरोमणी ए ॥४॥ सुविधि सुबुद्धि धणी, कीर्त्ति जगमें घणी, सेवना तेह तणी, वर सदा ए ॥ दशमा शीतलशिरें, नामथी निस्तरे, हरे संकट, करे संपदा ए ॥५॥ श्रेयांस दयाल ए, परम-कृपाल ए, भक्तप्रतिपाल, करुणा करो ए ॥ वासुपूज्य जगतारणा, मंगलकारणा, भविक उद्धारणा, दुःख हरो ए ॥ ६ ॥ विमल विमल मति, करो सुखसंपति, परम पती जती, गुण घणा ए, ॥ अनंत-जिनंद ए, अनंतगुण कंद ए, टाले भव फंद, सेवकतणा ए ॥ ७ ॥ धर्म धुरंधरा, राजराजेश्वरा, रोटो मरण जरा, जगपति ए ॥ शांति शांति करो, रोग दुरित हरो; नाथ द्यो आशरो, सिद्धगति ए ॥८॥ कुंथु कुंथु करी, कर्म कुरंग हरी, जिम थइ शिव वरी, जगगुरु ए॥ अरह गुणसागरू, परम उजागरू, धन करुणागरू, नागरू ए ॥९॥ मल्ली मल्लमारणा, जगतजन तारणा, भक्तसुख कारणा, स्वामिजी ए ॥ मुनिसुव्रत सार ए, करुणाभंडार ए, अमर अविकार, गुण-धामजी ए ॥ १० ॥ नमी हित कारणा, अधम उद्धारणा, विघन-विदारणा, कर दया ए ॥ रिष्टनेमी पुरा जती, परमकरुणा मती, त्यागी राजुल सती, शिवगया ए ॥ ११ ॥ पारस खारस क्षय, ना

वारस वारसभय, पचमीगतिगय, जस घणो ए ॥ महावीर गुणधीर ए, जगतजनपीर ए, करो भवतीर, द्यो निजपणो ए ॥ १२ ॥ हु प्रभुदास ए, करु अरदास ए, द्यो सिद्धवास, मया करी ए ॥ कहे रिखतिलोक ए, सुदृष्टिविलोक ए, अविचल थोक, द्यो हिरि सिरी ए ॥ १३ ॥ इति सपूर्ण ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ पद प्रारभः ॥

॥ राग ठुमरी ॥ समर समर जिननाथ समरि ले, भविजन जनम सुधारक हे ॥ वारी भ० ॥ १ ॥ रिखभ अजित सभव अभिनदन, कर्मरिपुके विदारक हे ॥ वारि स० ॥ २ ॥ सुमति पद्म सुपास चदा प्रभु, भवदु खताप निवारक हे ॥ वारी स० ॥ ३ ॥ सुविधि शीतल श्रेयास वासुपूज्य, छ कायके जीव उगारक हे ॥ वारी स० ॥ ४ ॥ विमल अनत धर्म शाति नाथजी, सुखसपति हितकारक हे ॥ वारी स० ॥ ५ ॥ कुथु अर मल्लि मुनिसुव्रतजी, धर्मको मार्ग उच्चारक हे ॥ वारी स० ॥ ६ ॥ नमी नेमी पारस महावीरजी, हृद्द क्षमा प्रभु धारक हे ॥ वारी स० ॥ ७ ॥ केवल लेइ प्रभु मुक्ति विराज्या, अजर अमर अविकारक हे ॥ वारी स० ॥ ८ ॥ तिलोकरिख कहे तार जगतारक, तुम विना नहिं कोई उवारक हे ॥ वारी स० ॥ ९ ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ पचम पद प्रारभः ॥

॥ देशी फागनी ॥ प्रणमो नित नित चोविशजिन सुखदाता ॥ ॥ ए टेक ॥ रिखभ अजित सभव अभिनदन, तोडदिया मोहनीका ताता ॥ प्र० ॥ १ ॥ सुमति पद्म सुपास चदा प्रभु, विघन टले ज्यारा गुण गाता ॥ प्र० ॥ २ ॥ सुविधि शीतल श्रेयास वासुपूज्य, छोड दिया कुटुवका नाता ॥ प्र० ॥ ३ ॥ विमल अनत धर्म शांति नाथ जी, मरिकी मेट दिनी सुखशाता ॥ प्र० ॥ ४ ॥ कुथु अर मल्लि मुनिसुव्रतजी, जनम मरणका मिटाया खाता ॥ प्र० ॥ ५ ॥

नमी नेमी पारस हावीरजी, शासननायक जगभ्राता ॥ प्र० ॥६॥ ए चोविश जगदीश दयाला, शिवपुर सुखमें सदाय माता ॥ प्र० ॥ ७ ॥ तिलोकरिख कहे तारो मोय वेगसुं, अचल भक्ति दिजो एहि चाहता ॥ प्र० ॥ ८ ॥ उगणीशें उगणचालीश पोसशुदि चउदश, दियावडीमें गुण किया उलसाता ॥ प्र० ॥ ९ ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठ पद प्रारंभः ॥

॥ मानव जनम मानव जनम रतन तेनें पायो रे, सतगुरु समझायो ॥ मा० ॥ ए देशी ॥ नित बंदुं नित वंदुं चोवीश जिन देवा रे, चाहुं चरणकी सेवा ॥ नि० ॥ ए टेक ॥ रिखभ अजित संभव सुखकारी, अभिनंदनजी जसधारी रे ॥ प्रभु परम दयाला, ढ्या कर्मका जाला, दिया चउगति ताला ॥ नि० ॥ १ ॥ सुमति पदम सुपारस जसवंता, चंद्रवर्ण चंदाप्रभु सोहंता रे ॥ भवताप निवारी, सब शत्रुविदारी, केवलपदधारी ॥ नि० ॥ २ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस जिनंदा, वासुपूज्य मेट्या भवफंदा रे ॥ जगजीवन सामी, प्रभु अंतरजामी, शिवलक्ष्मी पामी ॥ नि० ॥ ३ ॥ विमल अनंत धर्म रिद्धि पाई, शांतिनाथजी शांति वरताई रे ॥ भया परम सोभागी, चक्रीपद ऋद्धि त्यागी, शिववधू अनुरागी ॥ नि० ॥ ४ ॥ कुंथु अर मल्ली मल घाया, मुनिसुव्रतजी व्रत ठाया रे ॥ भविजन समझाया, त्रिजक्तका राया, अविचलपद पाया ॥ नि० ॥ ५ ॥ नमी नेमी पारस पुरिसादानी, महावीर सासण पति ठानी रे ॥ हद क्षमा प्रभुधारी, घातिककर्म निवारी, थाप्यां तीरथ चारी ॥ नि० ॥ ६ ॥ ए चोविशजगदीश महंता, सुण लीजो अरजि कृपावंता रे ॥ तुम सरण न आयो, तिणथी दुःख पायो, भयो में अति कायो ॥ नि० ॥ ७ ॥ निरर्थक काल अनंत गमायो, अब हुं तुम शरणें आयो रे ॥ सुधन्याए पिछाणी, जगतारक जाणी, दृढता मन आणी ॥ नि० ॥ ८ ॥ तिलोकरिखजी कहे तिलोकरक्षपद दिजो,

सेवकपर महेर करीजो रे ॥ निजविरुदविचारो, सुनजर निहालो, भवपार उतारो ॥ नित० ॥ ९ ॥ इति संपूर्ण ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तम पद प्रारभः ॥

॥ ठाकुर भलें बिराज्या जी ॥ ए देशी ॥ आरतिमा छे ॥ साहिब भलें विराज्या जी, चोवीशे महाराज, मुक्तिमें भलें विराज्या जी ॥ ए टेक ॥ रिखभ अजित सभव अभिनदन, सुमति पदम सुपास ॥ चदा प्रभुजी ने सुविधि जिनेश्वर, शीतल द्यो शिववास ॥ सा० ॥१॥ श्रीश्रेयास वासुपूज्य समरो, विमल विमल मतिवत ॥ अनतनाथ प्रभुधर्म जिनेश्वर, शाति करो श्रीसत ॥ सा० ॥ २ ॥ कुथुनाथ प्रभु करुणा सागर, अरहनाथ जगदीश ॥ मल्लिनाथ श्रीमुनिसुव्रतजी, नित्य नमाउ शीश ॥ सा० ॥ ३ ॥ एकविशमा नमिनाथ निरुपम, रिष्टनेमि जगधार ॥ तोरणसें पाछा फिरथा प्रभु, शिवरमणी भरतार ॥ सा० ॥ ४ ॥ पारस पारस सरिखा प्रभु, निरवारसका नाथ ॥ वर्धमान सासणका सामी, प्रणमू जोडी हाथ ॥ सा० ॥ ५ ॥ तुम बिन पायो दु ख अनता, जनम मरण जजाल ॥ तिलोक रिख कहे जिम तिम करिने तारो दीनदयाल ॥ सा० ॥ ६ ॥ इति संपूर्ण ॥ ७ ॥

॥ अथ अष्टम पद प्रारभ. ॥

॥ राग वसत ॥ शाति चरणारी जाउ वलिहारी ॥ शा० ॥ ए देशी ॥ झेलो बदणा नाथ हमारी, तुमारे चरणकी वलिहारी ॥ ए टेक ॥ रिखभ अजित सभव अभिनदन, ॥ सुमतिपदमसुखकारी ॥ श्रीसुपार्श्व चदाप्रभु समरो, जगनायक जसधारी, प्रभुजी पूरण उपगारी ॥ झे० ॥ १ ॥ सुविधि शीतल श्रेयास वासुपुज्य, विमल अनत धर्म धारी ॥ शातिजिनद सुख कद जगतमें, मेट दीनी सव मारी, हरो मेरी विपत्त विमारी ॥ झे० ॥ २ ॥ कुथू अर मल्लि मुनि सुव्रतजी, नमी नेमी सुविचारी ॥ तोरणसें पाछा फिर आया, छोडिकें राज दुलारी, नाथ तुम करुणाभडारी ॥ झे० ॥ ३ ॥ घेवारस

के बारस पारस, पंचपरमेष्ठी उच्चारी ॥ नागनागिणी जलत बचाया, कीना सुर अवतारी, महिमा जगमें अति थारी ॥ झें० ॥ ४ ॥ शासन नायक वीर जिनेश्वर, हदक्षमाप्रभुधारी ॥ केवल ले प्रभु धर्म बतायो, सूत्र चारितर सारी, तीरथ थाप्यां प्रभु चारी ॥ झें० ॥ ५ ॥ अणसण लेई प्रभुजोग त्याग कर, पहूंता हे मुक्तिमझारी ॥ अनंत सुखमांही जाय विराज्यातो, नीरंजननीराकारी, रह्या लोकालोक निहारी ॥ झें० ॥ ६ ॥ मोहमायामांहि उलज रह्यो में, पायो हुं दुःख अपारी ॥ तुम शरणाबिन चउगति भटक्यो, धर्मकी बुद्धि विसारी, शीख सतगुरुकी न धारी ॥ झें० ॥ ७ ॥ अशुभकर्म कलु दूर भयासूं, वाणी लगी प्रभु प्यारी ॥ अधम उद्धारण बिरुद सुणिने, सरणो लियो सुविचारी, सार करजो प्रभु ह्मारी ॥ झें० ॥ ८ ॥ मुझ सरिखो नहिं दीन जगतमें, तुम सरखो दातारी ॥ जिम तिम करि भवपार उतारो, या मांगु रिझवारी, अरज लीजो अवधारी ॥ झें० ॥ ९ ॥ ओगणीशें अडतिश माघकृष्ण पक्ष, त्रीज तिथी शनिवारी ॥ देश दक्षिण आवलकोटि पेठमें, जोड करी हितकारी, तिलोक रिख कहे सुविचारी ॥ झें० ॥ १० ॥ इति ॥ ९ ॥

॥ अथ चोवीश तीर्थंकर स्तवन प्रारंभः ॥

॥ तत्र प्रथम श्री रिखभजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ इण सरवरियारी पाल, उभी दोय नागरी ॥ मारा लाल ॥ उभी दोयनागरी ॥ ए देशी ॥ श्री सतगुरु सुपसाय, जाण्या शिवपुर धणी माराराज ॥ जाण्या० ॥ श्री मरुदेवीना नंद, नाभि कुल गुणमणी ॥ मा० ॥ ना० ॥ त्रिभुवन नायक देव, पायकनी वीनती ॥ मा० ॥ पा० ॥ मोह रिपु भय आण, सरण ग्रह्यो शुभमति ॥ मा० ॥ स० ॥ १ ॥ तार तार मुझ तात, वात कहुं मनतणी ॥ मा० ॥ वा० ॥ जनम मरण जंजाल, आवे घबरावणी ॥ मा० ॥ आ० ॥ तार्या जीव अनंत, संत सुगुणा घणा ॥ मा० ॥ सं० ॥

उद्धरिया अपराधि, महा अवगुण तणा ॥ मा० ॥ मा० ॥ २ ॥ तुम वृद्ध दीन दयाल, हु बाल दयामणो ॥ मा० ॥ हु० ॥ क्यों न करो मुझ सार, विसार्यो किम घणो ॥ मा० ॥ नि० ॥ जो तारो गुणवत, अचरिज छे नही ॥ मा० ॥ अ० ॥ जो मुझ सरिखो दीन, उद्धार्या जस सही ॥ मा० ॥ उ० ॥ ३ ॥ आपद पडियो आज, आयो शरणें वही ॥ मा० ॥ आ० ॥ ओर न तारणहार, ते माटें में कही ॥ मा० ॥ ते० ॥ मुझ सरिखो कोइ दीन, प्रभु तुझ सारिखो ॥ मा० ॥ प्र० ॥ लाधें नहिं जगमाय , कियो में पारखो ॥ मा० ॥ कि० ॥ ४ ॥ तुहिज तारशे नेट, पहिला पछें सही ॥ मा० ॥ प० ॥ सेवक करे पोकार, बाहिर शोभा नहीं ॥ मा० ॥ बा० ॥ समर्थ छो तुमें स्वामि, जगत तारण भणी ॥ मा० ॥ ज० ॥ हवे मुझ वेला केम, आना कानी घणी ॥ मा० ॥ आ० ॥ ५ ॥ भावे तार म तार, महारु शु जावशे ॥ मा० ॥ म० ॥ पण तुम तारक विरुद, किणी विध आवशें ॥ मा० ॥ कि० ॥ कहेशो ए छे अजाण, आवे नहिं वीनती ॥ मा० ॥ आ० ॥ मावित्र विना कहो कोण, शिखावे ते रीती ॥ मा० ॥ शि० ॥ ६ ॥ शिखावो मुझ सोय, कृपा करि नाथ जी ॥ मा० ॥ कृ० ॥ विण मनाया नही छोडु, तुमारो साथ जी ॥ मा० ॥ तु० ॥ करुणा करी मुझ काढयो, नरक निगोदशु ॥ मा० ॥ न० ॥ आव्यो आप हजूर, तारो हवे मोदशु ॥ मा० ॥ ता० ॥ ७ ॥ गजहोदे निज मात, मुगति मेली खरी ॥ मा० ॥ मु० ॥ भरतने अरिसा भवनें, दीनी केवल सिरी ॥ मा० ॥ दि० ॥ अठाणु निज पुत्र, जूझता वारिया ॥ मा० ॥ जू० ॥ बाहुबल गजमान, थकी ते ऊतारीया ॥ मा० ॥ थ० ॥ ८ ॥ वीतराग समभाव, छो समतासागरु ॥ मा० ॥ छो० ॥ माहरो थारो नही आप तो, तारो उजागरु ॥ मा० ॥ ता० ॥ मातपिताथी जेम,

वा क आडो करे ॥ मा० ॥ बा० ॥ रिखभ जिनंदसुं तेम, तिलोकरि उ रे ॥ ० ॥ तिलो० ॥ ९ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय अजित जिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ मेरी मेरी करतां जन्म गयो रे ॥ ए देशी ॥ श्री श्री अजित अरज सुणो मेरी, टालो दुःखदाय अष्ट वेरी ॥ श्री० ॥ ए आंकणी ॥ जिहां जाउं तिहां संगज आवे, निज गुण संपति दूर भगावे ॥ श्री० ॥ ज्ञान ग्रहूं तव अ स आवे, भणीयो सो छिनमें विसरावे ॥ श्री० ॥ १ ॥ नींद आवे धर्म कारजमांही, सुख दुःख वेदनासुं डर पाइ ॥ श्री० ॥ देव गुरु शुद्ध दाय न आवे, मिथ्यामोहनी अधिक भमावे ॥ श्री० ॥ २ ॥ आयुष्य बंधण न छिन छीजे, अटल अवगाहन केम लहीजें ॥ श्री० ॥ किहांइक उच्च नामपद आपे, किहांइक नीच नाम करि थापे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ किहांइक शुभ सोभाग बढावे, किहांइक अपजस म फेलावे ॥ श्री० ॥ अमूर्तिक पदकी करे हाणी, विपत्ति इम मुझने अधि काणी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ किहांइक उच्चगोत्रमांही मेले, किहांइक च गोत्रविषे ठेले ॥ श्री० ॥ अगरु अलघु रूप करे दूरो, कायर मोय कियो भरपूरो ॥ श्री० ॥ ५ ॥ दान लाभ अंतराय दे भारी, भोगोपभोग वीरज परिहारी ॥ श्री० ॥ शक्ति अनंत दीनी लुकाइ, दुःख देवे मुझ चउगति मांई ॥ श्री० ॥ ६ ॥ जितशत्रुसुत विजया दके नंदा, तुम शरणे आयो गुणच्छंदा ॥ श्री० ॥ शत्रु सकल सो करियो निकंदा, तिलोकरिख भव भव तुम बंदा ॥ श्री० ॥ ७ ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय संभवजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ श्री सीमंधर पाय नमुं हो प्रभु जी ॥ ए देशी ॥ संभव जिन सुणो वीनती हो प्रभुजी, उपगारी जगधार ॥ कियो उपगार थें लोकमें हो ॥ प्र० ॥ सुखी कियां नर नारि ॥ साहिब मानजो हो, प्रभुजी सेवकनी अरदास ॥ १ ॥ ए टेक ॥ ज्ञान ध्यान तप

जप क्रिया हो ॥ प्र० ॥ सजम मारग वुद्ध ॥ असभव कर्म काळ शु हो ॥ प्र० ॥ सो करो सभव शुद्ध ॥ सा० ॥ २ ॥ तुम विन सभव कुण करे हो ॥ प्र० ॥ कुण उतारे पार ॥ दीनदयाल दया करो हो ॥ प्र० ॥ तुम छो जगदाधार ॥ सा० ॥ ३ ॥ शरणें आयो आपके हो ॥ प्र० ॥ पतितँ उद्धारण आप ॥ जाणो घट घट वालडी हो ॥ प्र० ॥ दिजो कर्मवध काप ॥ सा० ॥ ४ ॥ तु अतर धन माहरो हो ॥ प्र० ॥ भव जल तारण जहाज ॥ मुझ अवगुण मत झाखजो हो ॥ प्र० ॥ वाहे ग्रह्याकी लाज ॥ सा० ॥ ५ ॥ एक गामनो अधिपति हो ॥ प्र० ॥ करे प्रजानी सार ॥ तुम त्रीजगना ईश्वरू हो ॥ प्र० ॥ क्यों न करो भवपार ॥ सा० ॥ ६ ॥ नृप जितारथ कुलतिलो हो ॥ प्र० ॥ सेना देवीना नद ॥ तिलोकरिख करे विनती हो ॥ प्र० ॥ देजो शिव सुख कद ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति ॥३॥

॥ अथ चतुर्थ अभिनदनजिन स्तवन प्रारभ. ॥

॥ कुविसन मारग माथे धिक धिक ॥ ए देशी ॥ अभिनदन वदन नित करियें, धरियें आतम ध्यान हो ॥ डरियें मिथ्या देव सकळथी, जे वश पडिया तोफान हो ॥ अ० ॥ १ ॥ शख चक्र धनुष कर धारी, माता विषय कषाय हो ॥ नित्य रहे राता रामा रमणमें, तस शरणें शु थाय हो ॥ अ० ॥ २ ॥ कोइक दड कमडल धारी, निज धी सुइ घरवास हो ॥ मृगछाला माला मोजीयुत, ते किम दे शिववास हो ॥ अ० ॥ ३ ॥ हस्त कपाल व्याल भूषण युत, रुढमाल गलमाय हो ॥ गिरिजा भोग मगन निशिवासर, ते किम आवे दाय हो ॥ अ० ॥ ४ ॥ कोइक महिष अजा भख मागे, कोइक मादिरा पान हो ॥ राग द्वेष मद मोहमें लीना, ते किम दे निर्वाण हो ॥ अ० ॥ ५ ॥ आप तरे नहिं भवसागरथी, ते नहिं तारणहार हो ॥ पाहण नाव तरे किण विध करि, सोचो हिरदे विचार हो ॥ अ० ॥ ६ ॥ सवरराय सिद्धारथ नदन, परम अदोषी

देव हो ॥ तिलोकरिख अलि गुणरस लीनो, प्रभु चरणांबुज सेव हो ॥ अ० ॥ ७ ॥ इ ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम सुमतिजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ कुंथु जिनराज तुं एसो ॥ ए देशी ॥ रे ॥ मति जिंनराज हे प्यारा, लकमां सुर मोहनगारा ॥ ए दिन भर्ममें भूला, चतुर्गति हिंडोलमें झूला ॥ सु० ॥ १ ॥ बावल बोया अ जानी, काचटुक लिया रत्न नी ॥ जहेर के पिया अमृत जेसा, रत्नकुं देखा कंकर तेसा ॥ सु० ॥ २ ॥ एसी भर्म बुद्धि रहि मेरी, प्रतित नहिं रखी दिल तेरी ॥ किया मेने कर्म खुब ोटा, सह्या में नर्क बिच सोटा ॥ स० ॥ ३ ॥ चढी मोहे बागीकी स्ती, उस्सें मेरि रही अकल खस्ती ॥ पस्ती विन पाया में तस्ती, जहान मेरी लही पूर कस्ती ॥ सु० ॥ ४ ॥ मेरा दिल बहोत घबराया, तुमारे आसरे आया ॥ तकसिरी माफ कर दे मेरी, देख तुं लायकी तेरी ॥ सु० ॥ ५ ॥ अर्जकी मर्ज तुम जाणो, प्रभु अब कायकूं ताणो ॥ अब तो महेरबानगी करणां, मिटा दो जन्म और मरणां ॥ सु० ॥ ६ ॥ मेघरथ भूप फरजंदा, मंगला मातके नंदा ॥ तिलोकरि सेव चित्त चहाता, अचल मोय देनां सुखशाता ॥ सु०॥७॥इति॥५॥

॥ अथ षष्ठ पद्मप्रभजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ श्री जिन मुझने पार उतारो ॥ ए देशी ॥ पद्म प्रभु भव-जल पार उतारो, में सरणो लियो चरणांरो ॥ ए टेक ॥ पद्म लक्षन प्रभु पगमांहि झलके, उपमा पद्म उच्चारो ॥ उत्पन्न होवे पंकथकी पंकज, जलसुं लहे विस्तारो ॥ प० ॥ १ ॥ कामभोग सो कादव सरिखा, फरमाया सूत्र मझारो ॥ कर्मजलें वृद्धि पाया प्रभुजी, गोत्रतीर्थंकर सारो ॥ प० ॥ २ ॥ दोनुइ छोड तोड बंधन, वरी शिववधू सुखकारो ॥ तिम तुम किंकर पर करो करुणा, जुगमें ए दोइ निवारो ॥ प० ॥ ३ ॥ तुमविन कोइ दूसरो जगमें, दिसे

नहि तारणहारो ॥ भक्तवत्सल भगवत दयानिधि, अविनाशी अवि कारो ॥ प० ॥ ४ ॥ भूख्याने भोजन जल तरस्याने, रोगी औषध उपचारो ॥ तिम मुझ मनमा निश्चे निरतर, आप तणो आधारो ॥ प० ॥ ५ ॥ आशानिराश करे नहिं दाता, मगण जो आवे द्वारे ॥ वछित दायक भक्तसहायक, तुम छो परम दातारो ॥ प० ॥ ६ ॥ श्रीधर नराधिप सुसमा तनय प्रभु, जीवन प्राण आधारो ॥ तिलोक-रिख कहे जिम तिम मुझने, द्यो निज पद गुण थारो ॥प०॥७॥इति॥६॥

॥ अथ सप्तम सुपार्श्वजिन स्तवन प्रारभः ॥

॥ बधव बोल मानो हो ॥ ए देशी ॥ आशा पुरो सुपासजी, नित भावना भाउ हो ॥ चरण कमल सेवा सदा, दरिसण चित्त चाउ हो ॥ सुपारस आश पूरो हो ॥ १ ॥ तुम गुण जो श्रवणे सुणु, तो पण हरखाउ हो ॥ तुम भय भजन साहेबा, शरणागतमें बोलाउ हो ॥ सु० ॥ २ ॥ पुष्करावर्त घन धार जू, सुखवेलि बढाउ हो ॥ मोहणी अधकार अनादिके, रवि तेम नसाउ हो ॥ सु० ॥३॥ शिवपथ बतावन तु प्रभु, जिम नेत्र अगाउ हो ॥ कर्म सघन वन काटवा, फरशी जिम घाउ हो ॥ सु० ॥ ४ ॥ सकट शिला भजन भणी, जिम वज्र सराउ हो ॥ आशा पूरण सुरतरु, चिंतामणि जिम भाउ हो ॥ सु० ॥ ५ ॥ भवजल तारण तु प्रभु, निर्यामक नाऊ हो ॥ आधि व्याधिने निवारवा, धनतर तिम गाउ हो ॥ सु० ॥ ६ ॥ विष्णुपिता नदा मायना, अगजने मनाऊ हो ॥ तिलोकरिख कहे इच्छा पूरजो, नित्य शिश नमाउ हो ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ अथाष्टम चद्रप्रभ स्तवन प्रारभ. ॥

॥ कडखानी देशीमा ॥ वदु जिनद श्री चद प्रभ भावशु, चरण अरविंद सुख कद सेवा ॥ गुण मकरद मन अलि रली गहगहे, लखमणा नद देवाधिदेवा ॥ व० ॥ १ ॥ छ्ड जगरद क्रुधध निकदके, तोड मोह फद सो केवल पाया ॥ इद्र नरेंद्र सुरेंद्र फणींद्रादिक,

नंदधर सेव करिते उमाया ॥ वं० ॥ २ ॥ चंद्रपुरी जन्म चंद्रलक्षन चरणमें, वरण पण चंद्र द्रव्य भाव चंदा ॥ पूरण चंद सो वदन झगमग रे, वाणी शीतल मु अमृत झरंदा ॥ वं० ॥ ३ ॥ विषय कषायको ताप महा प्रबलता, उपशमे जो शु भाव ध्यावे ॥ ऊ देश अविशेष पक्ष शोधतां, संपूर्ण उपमा केम आवे ॥ वं० ॥ ४ ॥ चंद्र सकलंक तस राहु प्रति शत्रुसंग, दिवसें पलाश दल जेम दीसे ॥ तुम निकलंक कर्म राहु दूरें किया, सदा संक्रांति गुण विश्वावीशे ॥ वं० ॥ ५ ॥ भक्तके सहायक घायक कर्मके, त्रिभुवन यक दुःख हरता ॥ करुण सागरु गुण रतना गरु, जगत ऊजागरु सुख करता ॥ वं० ॥ ६ ॥ माहासेन राजिंदके नंदसूं वंदना, तिलोकरि कहे कर जोडि दोई ॥ एक मे त्र मुझ मया करी दर्श द्यो, अपर नहिं वांछना रंच कोई ॥ वं० ॥ ७ ॥

॥ अथ नवम सुविधिजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ सिद्धचक्रजीने पूजो रे भविका ॥ ए देशी ॥ सुविधि जिनंद ने ध्यावो रे भविका, अजर अमर पद प ो ॥ ए आंकणी ॥ करम हणी केवल पद पाया, थाप्या तीरथ चउ खंती ॥ सयमेव ेध ते पुरुषमें उत्तम, सिंह पुंडरिक गंध दंती रे ॥ भ० ॥ १ ॥ ॥ सु० ॥ लोक उत्तम नाथ सो हितकारक, दीपक रवि जिम जाणो ॥ अभय चक्खु मारग शरण दाता, जितवबोध वखाणुं रे ॥ ॥ भ० ॥ २ ॥ सु० ॥ धर्म अने धर्मदेशना दायक, नाय रथी सोइ ॥ धरम प्रधान धर्म चक्री , भवोदधि दीप ज्युं जोइ रे ॥ भ० ॥ ३ ॥ सु० ॥ शरणागतने राखण समरथ, ज्ञान दरिसण थिर सेरी ॥ नीवरत्या छद्मस्थपणाथी, जीते जीतावे वैरी रे ॥ भ० ॥ ४ ॥ सु० ॥ तरे तरावे समझे समझावे, पापने डे छोडावे ॥ पूरण ज्ञान दरिसण शिव अचल, रोगरहित सो कहावे ॥ भ० ॥ ५ ॥ सु० ॥ अनंत अक्षय पद बाधा नहिं जिनके, वलि संसारमें

नावे ॥ सिद्धगति नाम शाश्वत स्थानकें, पहूता जिहा मन चावे रे ॥ भ० ॥ ६ ॥ सु० ॥ सुग्रीव तात रभा देवी जाया, धन धन ॥ तिलोकरिख पायक तुमें नायक, वदू नित शिर नामी रे ॥ भ० ॥ ७ ॥ सु० ॥ इति ॥ ९ ॥

॥ अथ दशम शीतलजिन स्तवन प्रारभः ॥

॥ दयापर दोलत झुक रही ॥ तिजकी ए देशी ॥ शीतलजिन जी शीतल करो, तेरे तन गीयाकी लाय स्वामी ॥ जनम रूपी रूइ विषेजी काइ, मरणकी आग द्यो बुझाय स्वामी ॥ शी० ॥ १ ॥ हे विजोगनी जी काइ, सपदामें विपत्ति कहाय ॥ स्वा० ॥ सुखशातामें अशाताकी जी काइ, अग्नि दियोने मिटाय ॥ स्वा० ॥ शी० ॥ २ ॥ हरख ठिकाणे शोककी जी काइ, ज्ञानके माही अज्ञान ॥ स्वा० ॥ सुबुद्धिके कुबुद्धितणी जी काइ, शीलमें कुशील दु ख दान ॥ स्वा० ॥ शी० ॥ ३ ॥ सजम सतरा प्रकारको जी काइ, जिणमें असजम आग ॥ स्वा० ॥ क्षमा धरम रूइ विषे जी काइ, मेटो क्रोध तणो दाग ॥ स्वा० ॥ शी० ॥ ४ ॥ विनय कह्यो सुख कारणो जी काइ, सर्व धर्मको सार ॥ स्वा० ॥ अविनय हुताशनी लोकमें जी कांइ, दीजो एह निवार ॥ स्वा० ॥ शी० ॥ ५ ॥ सतोष विषे तृष्णा तणी जी काइ, दीजो हुताशन टाल ॥ स्वा० ॥ दीसे नहि त्रिहु लोकमें जी काइ, तुम सम शीतल हेमाल ॥ स्वा० ॥ शी० ॥ ६ ॥ दृढसेन भूप नदा मायना जी काइ, अगज सुणो अरदास ॥ स्वा० ॥ तिलोक कहे मुझ भणी जी काइ, दीजो शिवशीतलवास ॥ स्वा० ॥ शी० ॥ ७ ॥ इति ॥ १० ॥

॥ अथ एकादश श्रेयासजिन स्तवन प्रारभ. ॥

॥ श्रीमहावीर जिनेश्वर, आप विराज्या अमर सहेरमें ॥ ए देशी ॥ श्रेयास जिनेश्वर, अरज सुनोजी मोरी साहेबा ॥ ए आकणी ॥ जिम तुम श्रेयपद अश शुद्ध कर, श्रेय पद नाम प्रसिद्ध ॥ ते

तुम कृपा भावशुंजी कांइ, आपो एहज रिद्ध हो ॥ श्रे० ॥ १ ॥ तुम करुणारस सागर नागर, गुण रतनागर ईश ॥ शुं तुमने स्वामी पडे सो कांई, क्यों न करो बकसीस हो ॥श्रे०॥२॥ चाकर चूक पडे कोइ विरियां, गिरुवा ठाकुर जेह ॥ तेह निवाजे पलकमें जी कांइ, गिरुवा एम सनेह हो ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ मात पिताशुं मूरख बालक, करे कोइक अपराध ॥ निज जाणीने तेह निवाजे, तुम गुण अगम अगाध हो ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ हुं निगुणो पापी निर्बुद्धि, कूड कपट भंडार ॥ जिम तिम करिने पावन करकें, उतारो भवपार हो ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ तुम विना कोई तारणहारो, जगमें दीसे नांहिं ॥ विण तारया तुमने नहि छोडुं, ए निश्चें मनमांहि हो ॥ श्रे० ॥ ६ ॥ विष्णु पिता विन्हु महतारी, धन धन नंदन जेह ॥ तिलोकरिख कहे मुझ शिर टीको, लागो नवल सनेह हो ॥ श्रे० ॥ ७ ॥११॥

॥ अथ द्वादश वासुपूज्यजिन स्तवन प्रारंभः ॥

राग ठुमरी ॥ प्रभु वासुपूज्य जगनाथ निरंजन, रोम रोम मेरे मन वसिया, वारी रोम रोम मेरे दिल वसिया ॥ प्र० ॥ ए टेक ॥ चंद्र चकोर ओर मोर मेघ मन, मधुकर ज्यों मालति रसिया रे ॥ म० ॥ प्र० ॥ १ ॥ सति भरतार बालक चित्त जननी, कुंजर कजली वन धसीया ॥ कुं० ॥ प्र० ॥ अंब कोयल चकवी रवि चाहत, हंस सागर जल उल्लासियावारी ॥ हं० ॥ प्र० ॥ २ ॥ तिम तुमसुं मुझ प्रीति घणेरी, करम भरममांही में फसिया ॥ क० ॥ प्र० ॥ विषय कषाय माहा मदमातो, राग द्वेष विषधर डसीया ॥ रा० ॥ प्र० ॥ ३ ॥ तुम जप गरुड शब्द जिम जाणुं, मन शुद्ध लेतां नसिया ॥ म० ॥ प्र० ॥ परम गारुडी तुम हो कृपानिधि, सकल जहर दुरा जे चसिया ॥ स० ॥ प्र० ॥ ४ ॥ देवाधिदेव अलेव अगोचर, मिथ्या भर्म सो दुरा खसिया ॥ मि० ॥ प्र० ॥ करमको खार हरयो तप सोगसुं, भाव अगनि करी उज्जासिया ॥ भा० ॥ प्र० ॥ ५ ॥

भवि मन रजन अलख निरजन, सिद्धिमें सिद्ध जाय ठसिया ॥ सि० ॥ प्र० ॥ सहज स्वभाव तुवाको तिरण पण, करम वजन छुटा उकसिया ॥ क० ॥ प्र० ॥ ६ ॥ मेरेसें दूर नहिं प्रभु कछुही, जैसें अग्नि अरणीके घसीया ॥ जै० ॥ प्र० ॥ वासुपूज्य जयादेवी नदनका, तिलोकरिखजी दरसण त्रासिया ॥ ति० ॥ प्र० ॥ ७ ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ अथ त्रयोदश विमलजिन स्तवन प्रारभः ॥

॥ विमल जिनेसर वदो रे भविका, भव भव सरण सहाई ॥ ए टेक ॥ ज्ञान अनत पण अलोकको छेडो, कह्यो न आगम माई ॥ दरिसन केवल स्वपन नहिं देखे, ए देखो अधिकाई ॥ वि० ॥ १ ॥ शाता अशाता वेदे नहिं कछु, निराबाध सुखमाइ ॥ त्याग नही पण आश्रव छूटो, अटल अवगहणा अकायी ॥ वि० ॥ २ ॥ आयुष्यविन थिर थित तुम स्वामी, नाम गोत्र क्षय साई ॥ समरे एक भाव शुद्ध करकें, सुख होवत उनताई ॥ वि० ॥ ३ ॥ अत राय क्षय करीयो साहिब, नूतन लाभ न काइ ॥ वीतराग दशा पावत प्रभु में, तारक बिरुद् कहाइ ॥ वि० ॥४॥ हय गय रथ पायक नहिं ममता, जगतके नाथ कहाइ ॥ नारी नही शिवरमणीके रसिया, प्रसिद्ध कहे जगमाइ ॥ वि० ॥ ५ ॥ क्रोध नहिं अरु करुणासिंधु, शत्रूसों दिया भगाइ ॥ कृतवर्म भूप श्यामा देवी नदा, जगमें शोभा सवाइ ॥ वि० ॥ ६ ॥ तिलोकरिख कहे मुझ तारणमें, कायकू जेज लगाइ ॥ तुम जगतारक विरुद विचारी, शिवगढ देओ जिताई ॥ वि० ॥ ७ ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ अथ चतुर्दश अनतनाथजिन स्तवन प्रारभ. ॥

॥ नमु नमु में वे सुगुरुकु, वे जिन मुद्रा धारी हे ॥ ए देशी ॥

प्रभु नित्य उठि वदू, अनतज्ञान गुणधारी हे ॥ ए टेक ॥

अनत चारित्र अनत शक्तिधर, अनत जीवके हितकारी हे ॥ सचित्त अचित्त अनत पदारथ, देखे ज्यो दर्पण मझारी हे ॥ अ० ॥ १ ॥

अनंत जीवाके प्रतिपालक ाहिब, अनंत वर्गणा निवारी हे ॥ द्रव्य गु पर्याय कलमें, भिन भिन करकें उ ारी हे ॥ अ० ॥ २ ॥ तीन भवन जस उज्जल तेरो, महिमा अप पारी हे ॥ वंदनीय पूजनीय सकलकों, चरण शरण बलिहारी हे ॥ अ० ॥ ३ ॥ जगगुरु जगबंधव जग यक, गतार सु कारी हे ॥ सब विध य त सहा-यक, यक सकल पियारी हे ॥ अ० ॥ ४ ॥ साधी गो आराधी, उपाधि सकल परिहारी हे ॥ अल निरंजन शत्रुके गंजन, अजर अमर अविकारी हे ॥ अ० ॥ ५ ॥ अवर देव मुझ दाय न आवे, तुमसूं प्रीत करारी हे ॥ कल्पवृक्ष वंछित दाय , अवि-चल भक्ति तुमारी हे ॥ अ० ॥ ६ ॥ सिंहसेन कुल दीप प्रगट्या, सुजसा प्रभु महतारी हे ॥ तिलोकारि हे रुणा सागर, करजो भव जल पारी हे ॥ अ० ॥ ७ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ पंचदश धर्मनाथजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ धन ब्रा ी ने धन सुंदरी जी कांइ, पाल्युं शियल अखंड ॥ ए देशी ॥ धर्मजिनंद सेव्या विनाजी इ, इम रूले संसार ॥ ए टेक ॥ धरम धरम करतो फिरयो जी कांइ, धरम न ज भेद ॥ रुलियो चउगति जीवडो कांइ, पायो पूरण खेद जी ॥ ध० ॥ १ ॥ वार अनंती उपनो जी कांइ, भोगव्यां दुः अनंत ॥ के तो जाणे आतमा जी कांइ, के जाणे भगवंत जी ॥ ध० ॥ २ ॥ एक हूर्तमें भव करया जी कांइ, साडी पेंसठ हजार ॥ छत्तिस अधिक निगोदमें जी कांइ, काल अनंत विचार जी ॥ ध० ॥ ३ ॥ त्रसथावर तिर्यंचमें जी कांइ, छेदन भेदन त्रास ॥ सही तिहां परवश पणे जी कांइ, संची रमनी राश जी ॥ ध० ॥ ४ ॥ जो कदि नरभव पामियो जी कांइ, संपदा पायो हीन ॥ पापकर्म संचय करयांजी कांइ, मिथ्यामतमें लीन जी ॥ ध० ॥ ५ ॥ सुर भयो तो चाकर पणेजी कांइ,

राच्यो ख्याल विनोद ॥ मरणसमे झूरघो घणोजी काइ, भूल्यो सघली मोद जी ॥ ध० ॥ ६ ॥ पुद्गल नाता सहुग्रह्या जी काइ, भानु सुत सुव्रताना जात ॥ तिलोकरिखनी ए विनती जी काइ, आपो धर्म निज वातजी ॥ ध० ॥ ७ ॥ १५ ॥

॥ अथ षोडश शांतिजिन स्तवन प्रारभ. ॥

॥ समर ले समर ले राधिका श्री हरि ॥ ए देशी ॥ राग प्रभातीमें ॥ ध्यान धर ध्यान धर शांति जिनराजको, दिन दिन संपत्ति अधिक आवे ॥ सकल सकट हरे ऋद्धि वृद्धि करे, कर्मको भर्म दूरें हठावे ॥ ध्या० ॥ १ ॥ नृप विश्वसेन कुल चंद रवि किरणसा, अचिरा देवी मायने कूखें आवे ॥ मारी निवारी प्रभु देशकी गर्भमें, शांतिकुमार प्रभु नाम ठावे ॥ ध्या० ॥ २ ॥ शांतिजीको नाम सत तत करी जाणीयें, अरि करी हरि सो दूरा भगावे ॥ ताव तेजा तरो चउधारो वेलातरो, आधि व्याधि दुःख उपशमावे ॥ ध्या० ॥ ३ ॥ दुर्जन दुष्ट माहा वेरी जे वाकडो, समरता शांति सो लागे पावे ॥ सजन सजोग विजोग दुशमन तणो, अवनिपति मान अधिको बढावे ॥ ध्या० ॥ ४ ॥ डकणी शकणी भूत झोटिंग सो, समरता सकल दूरा पलावे ॥ उतरे जहेर भुजग विंछु तणा, अनल जिननामजलें उपशमावे ॥ ध्या० ॥ ५ ॥ वध बधन सहु छुटे प्रभु नामशु, चोर छुटेरा ठग भागि जावे ॥ उँ ह्रीं श्रीं श्री शांति शाती करे, दुष्ट दमण स्वाहा हिरदे ध्यावे ॥ ध्या० ॥ ६ ॥ इह भवें सुख परभवें शिव सपदा, देत जगदीश जो समरे भावें ॥ तिलोकरिख करे अरदास कर जोडिने, द्यो निज नाम गुण प्रेम भावें ॥ ध्या० ॥ ७ ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ सप्तदश कुंथुनाथजिन स्तवन प्रारभ ॥

॥ पवन सुत कोन दिशासें आयो ॥ ए देशी ॥ राग श्याम कल्याण ॥ मेरे प्रभु कुंथु नाथ मन भाया ॥ मे० ॥ ए टेक ॥

संजम करणी भवजल तरणी, धारकें कर्म हठाया ॥ ध्यायो शुक्ल ध्यान अनुपम, ज्ञान केवल प्रगटाया ॥ मे० ॥ १ ॥ अशरण शरण अबंधव बंधव, अनाथके नाथ कहाया ॥ जगजीवन जग वत्सल तारक, हित उपदेश सुनाया ॥ मे० ॥ २ ॥ कोइक राग तानसें मगन हे, कोइ फुलेल लगाया ॥ कोइक रूप रंग अंग राचे, खट रसभोजन भाया ॥ मे० ॥ ३ ॥ तन धन सज्जन नानाविध नर, ख्याल तमासें लोभाया ॥ निज गुण भुल गे भूल होय कर, करमके फंद फंदाया ॥ मे० ॥ ४ ॥ प्रभु सरणा विन तरणा न होवे, ज्युं मंदिर विन पाया ॥ अंक विना शून्य काम न सारे, जेसें सुपनकी माया ॥ मे० ॥ ५ ॥ चरण सरणकी डरण करणसुं, भव अरणव भटकाया ॥ बिणजाराका बेल ज्युं जगसें, पच पच जनम गमाया ॥ मे० ॥ ६ ॥ सूरराय श्रीदेवी अंगजके, तिलोकरिख सरणे चल आया ॥ जिम तिम कर निज वास बतावो, तो में सकल भर पाया ॥ मे० ॥ ७ ॥ इति ॥ १७ ॥

॥ अथ अष्टादश अर जिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ कपूर होवे अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥ श्री अरनाथ अरति हरो रे, वीनती मुझ अवधार ॥ सेवा कठिन प्रभु ताहरी रे, सोहली खड्गकी धार ॥ जिनेश्वर अरहनाथ सुखपूर, मुझ राखो चरण हजूर ॥ जि० ॥ १ ॥ लोहचणा दांतें चावणा रे, सागर तरणो अथाह ॥ पवनने भरणो कोथले रे, इणसुंई भक्ति अगाह ॥ जि० ॥ २ ॥ श्वेतांवरी दिगंबरी रे, जेनमें भेद अनेक ॥ निज निज पक्ष करे खेंचना रे, एकांत नय पक्ष टेक ॥ जि० ॥ ३ ॥ अनेकांत मत ताहरो रे, हेय ज्ञेय उपादेय ॥ सप्तभंगी स्याद्वाद नो रे, समजण दुःकर अंग ॥ जि० ॥ ४ ॥ अंतर तेरे प्रकारका रे, किम करि दीजें ठेल ॥ कांस्यपात्र सिंहणी क्षीरने रे, किम करि राखे झेल ॥ जि० ॥ ५ ॥ देव अदोषी गुरु संजमी रे, धरम दयामांही सार ॥ निरवद्य

वाणी ताहरी रे, मानु शरण आधार ॥ जि० ॥ ६ ॥ श्रीधर नृप देवी नदना रे, वदणा झेलो दयाल ॥ तिलोक आश सफल करो रे, तुमे छो परम कृपाल ॥ जिनेश्वर ॥ अ० ॥ ७ ॥ इति ॥ १८ ॥

॥ अथ एकोनविंशति मल्लिजिन स्तवन प्रारभः ॥

॥ सुण चतन रे तुम गुणरत मुनिको सेवो ॥ ए देशी ॥ सुण चेतन रे तु मल्ली जिनद् समर ले ॥ कर धर्मध्यान गुणग्राम भवोदधि तर ले ॥ ए टेक ॥ एक विदेह देशमें, मथुरा नगरी सोहे ॥ जहा प्रजापाल भूपाल, कुभ मन मोहे ॥ राणी प्रभावति नाम, शीयल गुणधारी ॥ जिन कूखें लियो अवतार, मल्लि जिन जहारी ॥ सु० ॥ १ ॥ या हुडासर्पिणीकाल, अछेरो जाणो ॥ भयो प्रथम वेद अवतार, प्रभुको वखाणो ॥ दोयसें नन्याणव वर्ष, उमरमें आया ॥ छ भूप पूरव भव मित्र, परणन ऊमाया ॥ सु० ॥ २ ॥ प्रभुसु मोहन घरके माहि, छहु बुलवाया ॥ पूतलिको उगाड्यो ढक, दुर्गंधसु घबराया ॥ तव प्रभुजी दे उपदेश, सुणो रे शाणा ॥ ए देह अशुचि भडार, अत तज जाणा ॥ सु० ॥ ३ ॥ ए भोग रोगको मूल, सोगको घर हे ॥ ए फल किंपाक समान, दु ख आगर हे ॥ श्रवणवश अग्णमें हरिण, प्राण निज खोवे ॥ दीपकमें पतग निज अग, नयनसें विगोवे ॥ सु० ॥ ४ ॥ भमर फूल के माहिं, घ्राणवशें हाणी ॥ रसना वश मच्छ मरे, फरसे गज जाणी ॥ एक एक इद्रियके, वशें प्राण गमावे ॥ जे पाचुके वश होय, कवण गति थावे ॥ सु० ॥ ५ ॥ पूरव भव तप कपट, तणे परभावें ॥ तुम हम अतर जाणो, प्रभुजी दरसावे ॥ जातीसमरण पाय, सकल शिव जावे ॥ प्रभु तारया बहु नर नारि, अमर पद पावे ॥ सु० ॥ ६॥ अशरण शरण कृपाल, दयानिधि स्वामी ॥ प्रभु अधम उद्धारण विरुद, थें अतरजामी ॥ तिलोकरिख कर जोडि, नमे शिर नामी ॥ तुम चरण शरणको वास, किजो शिवधामी ॥ सु० ॥७॥ इति ॥१९॥

॥ अथ विंशति मुनिसुव्रत जिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ स्वामी सुणने सुंदरी भांखे ॥ ए देशी ॥ श्री मुनिसुव्रत साहिब साचो, रोम रोम मांहि राच्यो रे ॥ जबलग में तुझ जाणियो काचो, नट जिम चउगति नाच्यो रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ तुं अविनाशी गुणघनराशि, निरंजन निराकारी रे ॥ जैसी सिद्ध अवस्था तुमारी, तैसो मुझमें विचारी रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ द्वैत कल्पना ते सहु छोडी, समकी टाटी तोडी रे ॥ प्रीत पुराणी तुमशुं जोडी, आउ में किस करि दोडी रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ काम क्रोध मद मोहणी ताला, लागा निपट यह ताता रे ॥ क्षण भर लेन देन नहिं शाता, चउगतिमें अकुलाता रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ काल अनंत में एम गमायो, पारो ज्यु बुटो मूर्छायो रे ॥ तिम मिथ्या मोहनी कर्म बंधायो, मुनिसुव्रत पद नहिं भायो रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ हेय ज्ञेय उपादेय नयरस केली, जाणी में किंचित शेलि रे ॥ हवे मन तोडो प्रीत ए पहेली, विनती ल्यो प्रभु झेली रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ सुमित्र नृप पद्मावती जाया, अबके तो दुर्लभ पाया रे ॥ तिलोकरिख शरणागत आया, तार तार महाराया रे ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इति ॥ २० ॥

॥ अथैकविंशति नमि जिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ नहिं हे संदेह लगार निरुपम, ॥ ए देशी ॥ एकविंशमा नमि नाथ निरुपम, उपमा कही नहिं जावे ॥ तेज रविसम ज्यों कहुं प्रभुने, सो पर प्रतें दर्शावे ॥ एक० ॥ १ ॥ बाल तरुण वृद्ध तीन अवस्था, नित नित उदय अस्तावे ॥ वादलथी मंद अस्रअसे तस केतु, असंभव इण न्यावे ॥ एक० ॥ २ ॥ जो कहुं चंद्र सरिखा जिनेश्वर, सो तो कलंकी जनावे ॥ नित नित हानि वृद्धि तस दीसे, रवि उदय मंद थावे ॥ ए० ॥ ३ ॥ जो सागर सम कहुं जगतारक, आर पार दोई पावे ॥ खारापणमें कवण बढाई, जंतु अनेक डुबावे ॥ ए० ॥ ४ ॥ पारस सम कहेतां पण शंकूं,

वाणी ताहरी रे, मानु शरण आधार ॥ जि० ॥ ६ ॥ श्रीधर नृप देवी नदना रे, वदणा झेलो दयाल ॥ तिलोक आश सफल करो रे, तुमे छो परम कृपाल ॥ जिनेश्वर ॥ अ० ॥ ७ ॥ इति ॥ १८ ॥

॥ अथ एकोनविंशति मल्लिजिन स्तवन प्रारंभ. ॥

॥ सुण चतन रे तुम गुणवत मुनिको सेवो ॥ ए देशी ॥ सुण चेतन रे तु मल्ली जिनद समर ले ॥ कर धर्मध्यान गुणग्राम भवोदधि तर ले ॥ ए टेक ॥ एक विदेह देशमें, मथुरा नगरी सोहे ॥ जहा प्रजापाल भूपाल, कुंभ मन मोहे ॥ राणी प्रभावति नाम, शीयल गुणधारी ॥ जिन कूखें लियो अवतार, मल्लि जिन जहारी ॥ सु० ॥ १ ॥ या हुडासर्पिणीकाल, अछेरो जाणो ॥ भयो प्रथम वेद अवतार, प्रभुकों वखाणो ॥ दोयसें नन्याणव वर्ष, उमरमें आया ॥ छ भूप पूरव भव मित्र, परणन ऊमाया ॥ सु० ॥ २ ॥ प्रभुसु मोहन घरके माहिं, छहु बुलवाया ॥ पूतलिको उघाड्यो ढक, दुर्गंधसु घबराया ॥ तब प्रभुजी दे उपदेश, सुणो रे शाणा ॥ ए देह अशुचि भडार, अत तज जाणा ॥ सु० ॥ ३ ॥ ए भोग रोगको मूल, सोगको घर हे ॥ ए फल किंपाक समान, दु ख आगर हे ॥ श्रवणवश अरणमें हरिण, प्राण निज खोवे ॥ दीपकमें पतग निज अग, नयनसें विगोवे ॥ सु० ॥ ४ ॥ भमर फूल के माहिं, घ्राणवशें हाणी ॥ रसना वश मच्छ मरे, फरसे गज जाणी ॥ एक एक इंद्रियके, वशें प्राण गमावे ॥ जे पाचुके वश होय, कवण गति थावे ॥ सु० ॥ ५ ॥ पूरव भव तप कपट, तणे परभावें ॥ तुम हम अतर जाणो, प्रभुजी दरसावे ॥ जातीसमरण पाय, सकल शिव जावे ॥ प्रभु तार्या बहु नर नारि, अमर पद पावे ॥ सु० ॥ ६॥ अशरण शरण कृपाल, दयानिधि स्वामी ॥ प्रभु अधम उद्धारण विरुद, थें अतरजामी ॥ तिलोकरिख कर जोडि, नमे शिर नामी ॥ तुम चरण शरणको वास, किजो शिवधामी ॥ सु० ॥७॥ इति ॥१९॥

॥ अथ विंशति मुनिसुव्रत जिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ स्वामी सुणेल सुंदरी भांखे ॥ ए देशी ॥ श्री मुनिसुव्रत साहिब साचो, राम राम मांहि राच्यो रे ॥ जबलग में तुझ जाणियो काचो, नट जिम चउगति नाच्यो रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ तुं अविनाशी गुणघनराशि, निरंजन निराकारी रे ॥ जेसी सिद्ध अवस्था तुमरी, तेसी मुझमें विचारी रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ द्वैत कल्पना ले सहु छोडी, भर्मकी टाटी तोडी रे ॥ प्रीत पुराणी तुमशुं जोडी, आउ में किम करि दोडी रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ काम क्रोध मद मोहणी नाला, लागा निपट यह ताना रे ॥ क्षण भर लेल देत नहिं शाता, चउगतिमें अकुलाना रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ काल अनंत में एम गमायो, पारो ज्युं बुटो मूर्छायो रे ॥ तिम मिथ्या मोहनी कर्म बंधायो, मुनिसुव्रत पद नहिं भायो रे ॥ श्री०॥ ५ ॥ हेय ज्ञेय उपादेय नयरस केली, जाणी में किंचित शेलि रे ॥ हवे मत तोडो प्रीत ए पहेली, विनती ल्यो प्रभु झेली रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ सुमित्र नृप पद्मावती जाया, अबके तो दुर्लभ पाया रे ॥ तिलोकरिख शरणागत आया, तार तार महाराया रे ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इति ॥ २० ॥

॥ अथैकविंशति नमि जिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ नहिं हे संदेह लगार निरुपम, ॥ ए देशी ॥ एकविंशमा नमि नाथ निरुपम, उपमा कही नहिं जावे ॥ तेज रविसम ज्यों कहुं प्रभुने, सो पर प्रत्ते दझावे ॥ एक० ॥ १ ॥ बाल तरुण वृद्ध तीन अवस्था, नित नित उदय अस्तावे ॥ बादलथी मंद अरुग्रसे तस केतु, असंभव इण न्याये ॥ एक० ॥ २ ॥ जो कहुं चंद्र सरिखा जिनेश्वर, सो तो कलंकी जनावे ॥ नित नित हानि वृद्धि तस दीसे, रवि उदय मंद थावे ॥ ए० ॥ ३ ॥ जो सागर सम कहुं जगतारक, आर पार दोई पावे ॥ खारापणमें कवण बडाई, जंतु अनेक डुबावे ॥ ए० ॥ ४ ॥ पारस सम कहेतां पण शंकूं,

लोहने हेम वणावे ॥ न करे लोहका खडने सरिखो, गज हरि पशुमें [illegible] ॥ ए० ॥ ५ ॥ मेरु कहु तो कठिन घणेरो, अग्नि सो ला[illegible] लगावे ॥ सुरतरु चिंतामणि आदि पदारथ, परभवे काम न आवे ॥ एक० ॥ ६ ॥ विश्वसेन नृप विप्रा अगजने, तिलोक रिख शीश नमावे ॥ मोय अनुपम करो जगवत्सल, अवर कछू नाइ चावे ॥ एक० ॥ ७ ॥ इति ॥ २१ ॥

॥ अथ द्वाविंशति [illegible] जिन स्तवन प्रारभ ॥

॥ गाफल मत रह रे ॥ ए देशी ॥ जपो नेमिसरजी, मेरी जान, जपो नेमिसरजी ॥ नमीश्वर वालब्रह्मचारी, वडाई हे जगमें जहारी ॥ जपो० ॥ ए टेक ॥ समुद्रविजय शिवा देवी नदा, भये जादव कुलमे चदा, जे भविजनके सुखकदा ॥ हरिकी शस्त्र शालामाई, मित्र सग गया सो चलाई ॥ ज० ॥ १ ॥ नाक श्वासशु शख बजायो, ले धनुष्य टकार सुणायो, हरि सुण मन अचरिज आयो ॥ जाण्या जब नेमकुवर ताई, कृष्ण मन चिता अधिकाई ॥ ज० ॥ २ ॥ राज लेशे इम डर आयो, छल करकें फाग रचायो, जिम तिम करी व्याह मनायो ॥ उग्रसेन नृपति की बेटी, राजुल रूप गुणोंकी पेटी ॥ ज० ॥ ३ ॥ जिणसु करी हरजीयें सगाई, किनी खुब जान सजाई, जुनेगढ आया चढाई ॥ पशुपर करुणा दिल आणी, तोरणसु रथ फेरयो जाणी ॥ ज० ॥ ४ ॥ प्रभु वरशी दान नित दीनो, फिर सजम मारग लीनो, तप जप अति दु कर कीनो ॥ कर्म क्षयकर केवल पाया, प्रीत धर भवजन समझाया ॥ ज० ॥ ५ ॥ सति किनी हे झुरणा भारी, आखर फिर समता धारी, स तशें सखी सग भई त्यारी ॥ चोपन दिन पहेली शिव पाई, पिछेसे मुक्ति गया साई ॥ ज० ॥ ६ ॥ ज्यू पशुपर करुणा लाया, तिम महेर करो महाराया, तिलोकरिखजी तुम शरणें आया ॥ प्रभु तकसिर माफ कीजो, अवल शिव भक्ति लाभ दिजो ॥जपो०॥७॥२२॥

॥ अथ त्रयोविंशति पार्श्व जिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ पिले रे प्याला ॥ ए देशी ॥ भजले रे वाला, वामा देवी लाला, भगत रखवाला, जगत प्रतिपाला, रक्षपालक त्रस थावरका रे ॥ ए टेक ॥ अश्वसेन कुलदीपक सामी, मरद्या मान कमठ सुरका रे ॥ नाग नागणी जलत निकाल्या, करुणावंत साहेब परका रे ॥ भ० ॥ १ ॥ परमेष्ठी नवकार सुणा कर, ठाम दिया धरणी धरका रे ॥ नागणी पद्मावती गती सुरिकी, शासनाधिष्ट श्री जिनवरका रे ॥ भ० ॥ २ ॥ प्रभुजी जगमाया छटकाई, मारग लिना प्रभु मुनिसरका रे ॥ कमठासुर उपसर्गज दीना, संकट सह्यां प्रभु जलधरका रे ॥ भ० ॥ ३ ॥ धरणिंद्र डराया तब नरमाया, गुन्हा माफ करो अनुचरका रे ॥ में मूरख मतिहीन दुरातम, तुम साहेब शिव मंदिरका रे ॥ भ० ॥ ४ ॥ नील वरण तन दमकत काया, चरणमें लक्षन फणिधरका रे ॥ विषय कषायकी लाय बुझाई, नाश किया मोह मच्छरका रे ॥ भ० ॥ ५ ॥ श्री जिन केवलज्ञान जो पाया, क्षय किया घनघाति अरिका रे ॥ भव जन तारण तीरथ थाप्यां, उपदेश दिया हित संवरका रे ॥ भ० ॥ ६ ॥ ना वारसके वारस पारस, कुण उपगार चाहे परका रे ॥ तिलोकरिख कहे जिम तिम करिने, वास बतावो प्रभु शिवघर का रे ॥ भ० ॥ ७ ॥ इति ॥ २३ ॥

॥ अथ चतुर्विंशति वर्द्धमान जिन स्तवन प्रारंभः ॥

मेरी सुनीयो करुणा नाथ, भवोदधि पार कीजो जी ॥ ए देशी ॥ अर्जि सुणजो त्रिशलानंद, भवजल वेग तारो जी ॥ करुणा कीजो ॥ ए टेक ॥ कुंडलपुरमें लिया अवतारा, सिद्धारथ नृप कुल सिणगारा ॥ त्रीश वरस गृहवासमें रहिया, जग तज संजम मारग गहिया ॥ तपस्या पूर किनी जी, ममता त्याग दिनीजी ॥ अ० ॥ १ ॥ नर सुर तिर्यंच परिसह खमिया, राग द्वेष मोह मत्सर

वामया ॥ घनघातिक शत्रु चउ दमिया, धरम शुकल आराममें रमिया ॥ प्रभु केवलज्ञान पाया जी, सुर नर सेवा उमाया जी ॥ अ० ॥ २ ॥ सूत्र चारित्र दोय प्रकारा, दिया उपदेश ज्यों अमृत धारा ॥ चउदा सहस्र भये अणगारा, माहासतियाजी छत्तिस हजारा ॥ महाव्रत पच धारी जी, नित धोक महारीजी ॥ अ० ॥ ३ ॥ श्रावक एक लक्ष उगणसाठ हजारा, श्राविका तीन लक्ष सहस्र अठारा ॥ बारा व्रत धारक परकास्या, आज्ञा आराधी स्वर्गमें वासा ॥ जाशे मोक्ष माईजी, आठू कर्म खाइ जी ॥ अ० ॥ ४ ॥ ससार सागरमे कर्मको पाणी, भोगको कर्दम महा दु ख दाणी ॥ चार कषाय वडवानल भारी, राग द्वेष माहा मगर क रारी ॥ भवि रहे भर्म केरा जी, मिथ्यामोहनी परम अधेरा जी ॥ अ० ॥ ५ ॥ धर्मको दीवो पाटण शिवपुर हे, सो देखणकी अधिक आतुर हे ॥ अधम उद्धारण विरुद विचारो, सरणे आ-थाने पार उतारो ॥ तुम प्रभु जहाज थावो जी, सुखें सुख ठेठ पहोंचावोजी ॥ अ० ॥ ६ ॥ इद्रभूति अभिमानज कीनो, तिणने शिष्य करि शिवपुर दीना ॥ चडकोशें डक दीनो हे आई, मेल्यो तेहि स्वर्ग आठमा माइ ॥ अपराधी अनेक तारया जी, दुर्गति में पडता वारया जी ॥ अ० ॥ ७ ॥ अनादि कालको दुष्ट अधर्मी, चउगति दुःख हु पायो कुकर्मी ॥ तुम विन और उद्धारणहारो, दीसे नही कोई इण ससारो ॥ सरणो तुमारो शोध आयो जी, भयो में पूरणकायोजी ॥ अ० ॥ ८ ॥ अरोग बोध समाधि सयुक्ति, दीजो करुणानिधि वर मुक्ति ॥ इणभवें हिरि सिरि रिधी निधि वृद्धि, मन इच्छा करजो सब सिद्धि ॥ तिलोकरिखजी आश पूरो जी, राखो नित आप हजूरो जी ॥ अ० ॥ ९ ॥ इति ॥ २४ ॥

॥ कलश ॥

॥ चोवीश जिनवर, परम सुखकर, भावशु स्तवना करी ॥ उग-

णीशें अडातिस, ज्येष्ठ वदि पक्ष, वार रवी नव तिथि खरी ॥ माहाराज अयवंता, रिखजी प्रसादें, तिलोकरिख, विनवे सदा ॥ आरोग बोधि, समाधि शाता, दिजो ह्रीं श्रीं, संपदा ॥ प्रभु दिजो अविचल, संपदा ॥ इति चोवीश जिनस्तवनानि संपूर्णानि ॥

॥ अथ जिनेश्वरजीकी आरति प्रारंभः ॥

॥ ऐसे जिन ऐसे जिन ऐसे जिन हे ॥ ए देशी ॥ जय जय जय जय बोलो जिनवरकी, जो है आशा अमर शिवघरकी ॥ज० ॥ ए टेक ॥ १ ॥ जैसी कांति शशी दिनकरकी, काया दमके सकल हितकरकी ॥ जय० ॥ २ ॥ ज्युं खसबोइ अगर तगरकी, जिणसूं श्वास सुगंध मनोहरकी ॥ जय० ॥ ३ ॥ जैसी मीठी डली हे सक्करकी, वाणी अनंत गुणी सुमधुरकी ॥ जय० ॥ ४ ॥ काया सोहे सुर अनुत्तरकी, सोभा अनुपम प्रभुजीका नुरकी ॥ जय० ॥ ५ ॥ जैसी चाल मराल गजवरकी, तिणसुं गमनगति सुंदरकी ॥ ज० ॥ ६ ॥ चिंता आणी हे भव सागरकी, संवत्सरी दान इच्छा उजागरकी ॥ ज० ॥ ७ ॥ घात करवा करम रूप आरिकी, क्रियाधारी संजम संवरकी ॥ ज० ॥ ८ ॥ केवल ज्ञान दिशा जब फरकी, जब त्रिगडाकी रचना अमर की ॥ ज० ॥ ९ ॥ करुणा आणी हे जीव अपरकी, दी उपदेशना पापका डरकी ॥ ज० ॥ १० ॥ काया माया अथिर हे सुरकी, तिण आगें कहां ऋद्धि नरकी ॥ ज० ॥ ११ ॥ परथम थापना करी गणधरकी, पिछें चार तीरथ गुणिवरकी ॥ ज० ॥ १२ ॥ जे गति पावे मोक्ष नगरकी, पदवी सिद्ध अमर अजर की ॥ ज० ॥ १३ ॥ होड कुण करि शके उण नगरकी, गिणती सागर आगें क्या छिल्लरकी ॥ ज० ॥ १४ ॥ महिमा अपरमपार गुणागरकी, कहेवा शक्ति नहिं सुरगुरुकी ॥ ज० ॥ १५ ॥ अयवंतारिखजी महाराज सहेरकी, कीर्त्ति दाखी देव अघहरकी ॥ ज० ॥ १६ ॥ तिलोकरिख कहे धन जिनवरकी, भाव भक्ति करे तीर्थंकरकी ॥ ज०

॥ १७ ॥ इति चतुर्विंशति जिनस्तवनानि सपूर्णानि ॥

॥ अथ श्रीपचपरमेष्ठिका प्रत्येक स्तवन लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम श्री अरिहत स्तवन प्रारभ ॥

॥ सिद्धचक्र जिन पूजो रे भविका ॥ ए देशी ॥ श्रीअरिहतजी वदो रे भविका, दुष्कृत दूर निकदो रे ॥ भ० ॥ श्रीअरिहतजी वदो ॥ ए आकणी ॥ वीश बोल सेवन करी स्वामी, तिसरा भवके माही ॥ गोत्र तीर्थंकर बधन कीयो, चउद स्वपन दिया माईरे ॥ भ० ॥ १ ॥ शुभ विरिया माही जन्म भयो हे, इद्र सकल हरखाया ॥ मदर गिरिपर महोत्सव करकें, माता पास पोढाया रे ॥ भ० ॥ २ ॥ भोगावली कर्म भोगवियासु, वरसीदान दे करकें ॥ सजम ले कर कर्मक्षय कीना, केवल पद अनुसरकें रे ॥ भ० ॥ ३ ॥ पेंतिस वाणी निरवद्य जाणी, भव्य प्राणी सुखदाणी ॥ अमृत जिम उपदेश देइने, तीरथ चउ दिया ठाणी रे ॥ भ० ॥ ४ ॥ प्रथम सघयण सठाण प्रमुके, रोग रहित वर काया ॥ प्रभुको रूप देखीने सुर नर, रोम रोम उल्हसाया रे ॥ भ० ॥ ५ ॥ एक सहस्र अष्ट लक्षन स्वच्छन, जहा विचरे जिन राया ॥ सात ईति सो शोक न थावे, अशोक तरु करे छाया रे ॥ भ० ॥ ६ ॥ देवदुदुभि बाजे गगनमें, इद्रध्वजा लहकावे ॥ चोसठ जोडा बिंजाय चमरना, तीनछत्र शिर थावे रे ॥ भ० ॥ ७ ॥ योजन मडल वायु सुगधी, अचित्तजल बरसावे ॥ कुसुम पच वर्णा जल थल सरखा, ढग अधिक महकावे रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ८ ॥ विषम पथ सो पाधरो होवे, कटक अणी अधो थावे ॥ वैरभाव नाहिं जागे जोजनमें, सिंह अजा सम भावे रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ९ ॥ आभ कागल लेखण वनराइ, श्याही सागर जल लावे ॥ कोडाकोडि सागर सुरगुरु जो, लिखे तो पार नहिं पावे रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ १० ॥

जावे पण आवे नही पाछा, पंचमी गति सुखकारी ॥ तिलोकरिख कहे तुम स्थान बतावो, एमाग्र रिझ थारी, थारीमें जाउ बलिहारी ॥ व० ॥ १० ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय आचारज स्तवन प्रारभः ॥

॥ सुगुरु पिछाणो इण आचारें ॥ ए देशी ॥ आचारज प्रणमु पद त्रीजे, अष्ट सपदाधार जी ॥ चार तीरथके दे सुख शाता, आ देये वचनका धार जी ॥ आ० ॥ १ ॥ पच महाव्रत पूरण पाले, पंच सुमतिका धार जी ॥ तीन गुप्ति सो दृढ करी राखे, निर्मल पंच आचार जी ॥ आ० ॥ २ ॥ नव वाड शुद्ध ब्रह्मचर्य धारी, जीत्या चार कषाय जी ॥ पांच इद्रिय गणी वश करी राखे, निरवद्य वाणी न्याय जी ॥ आ० ॥ ३ ॥ श्रीजिनधर्मने खूब दीपावे, मिथ्या खडनहार जी ॥ वादी जनसु हार न पावे, बुध्दि प्रबल नय सार जी ॥ आ० ॥ ४ ॥ शूरा मन वचन कायाना, झलके नहिं लवलेश जी ॥ भव्य जीव तारनके कारण, साचो दे उपदेश जी ॥ आ० ॥ ५ ॥ क्लेश होवे जो चार तीरथमें, देवे आप मिटाय जी ॥ सतोशे अमृतवाणीशु, दिन दिन पुण्य सवाय जी ॥ आ० ॥ ६ ॥ शम दम उपशम तप जप राता, ध्याता निर्मल ध्यानजी ॥ नाता ताता तोड दिया सब, करता जिनगुणगान जी ॥ आ० ॥ ७ ॥ पच आचार जे पाले पलावे, टाले टलावे दोष जी ॥ पर उपगारी झाझ सरीखा, नाने राग ने रोष जी ॥ आ० ॥ ८ ॥ तिलोकरिख कहे छत्तिस गुण गणी, गुण गावो नरनार जी ॥ अशुभ कर्मका बधन छूटे, थावे सफल जमार जी ॥ आ० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्थ उवज्झाय स्तवन प्रारभ. ॥

॥ सुणो चदाजी, सीमधर परमातम पासे जाजो ॥ ए देशी ॥ सुणो भवियण जी, चउथे पद उवझाय नमो सुख कारणा ॥ शुध्द

श्रद्धा जी, बोध देइनें मिथ्या भरम निवारणा ॥ ए आंकणी ॥ जे अंग इग्यारका धारक छे, चउदा पूरव सुविचारक छे, शुद्ध पाठ अर्थ उच्चारक छे ॥ सु० ॥ १ ॥ जे सातुइ नयका जाणक छे, निश्चय व्यवहार वखाणक छे, जे शुद्ध अशुद्ध पहिचाणक छे ॥ सु० ॥ २ ॥ जे नीति वात बतावे छे, सब मिथ्या भर्म उडावे छे, भिन्न भिन्न करकें समझावे छे ॥ सु० ॥ ३ ॥ जे ज्ञान ग्रहणने आवे छे, शुद्ध पात्र देखिने पढावे छे, अज्ञानपणुं तस ढावे छे ॥ सु० ॥ ४ ॥ जे उपशम रसना सागर छे तप संजम गुण रतनागर छे, उत्पात माहाबुद्धि नागर छे ॥ सु० ॥ ५ ॥ जे चर्चा करवा आवे छे, सत्य न्याय बताई हरावे छे, फिटा हुइ करकें जावे छे ॥ सु० ॥ ६ ॥ जिन नहिं पण जे जिन जेवा छे, वाणी सत्य निरवद्य मेवा छे, हितकारी जेहनी सेवा छे, ॥ सु० ॥ ७ ॥ तिलोकरिख कहे जे गुण गावे छे, ज्ञानावरणीने खपावे छे, अनुक्रमें मुक्ति सिधावे छे ॥ सु० ॥ ८ ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम साधु स्तवन प्रारंभः ॥

॥ निर्मल शुद्ध समकित जिनपाई, जिणरे कमी रहे नही कांई ॥ ए देशी ॥ वंदो साधु सदा सुणो ज्ञाता, जिणसुं भवभवमें सुख शाता ॥ ए आंकणी ॥ ए संसार असार जानिकें, लीनो संजम भारो ॥ तप जपकी खप करता बिचरे, निरवद्य वेण उच्चारो ॥ ॥ वं० ॥ १ ॥ एक विचारे एक निवारे, दो पाले दो टाले ॥ तीनहु अराधे तीनके साधे, त्रिहुं गाले चिहुं ढाले ॥ वं० ॥ २ ॥ चार करे नही चार धरे चित्त, पंच पाले पंच छोडे ॥ छ प्रतिपालन छ प्रतिपाले, छ में तीनके मोडे ॥ वं० ॥ ३ ॥ छ जाणे अरु छकें त्यागे, सात विशुद्धि लावे ॥ सात सातके दूर निवारे, तजे आठ आठ चावे ॥ वं० ॥ ४ ॥ पाले नव टाले नव जाणे, दमण करे दश सेवे ॥ दश दशसो बोले नहिं मुखसें, दश बारासो कहेवे

॥ व० ॥ ५ ॥ हत्या करण करावण कामी, झूठ कहे जे जाणी ॥ अदत्त हेरे परको हित आणी, परधि प्रेमज ठाणी ॥ व० ॥ ॥ ६ ॥ धन अखूट अधर्मसा ध्यानी, महामानी निर्मानी ॥ मांस भखे नित्य मास भखे नही, मद्यथी तृपति आणी ॥ व० ॥ ७ ॥ हय गय रथ पायक तज दीना, लीनासो सहु पासें ॥ मात पिता नारी सुत त्यागी, अनुरागी नित्य भासे ॥ व० ॥ ८ ॥ पर दुःख देखी शाता थावे, इत्यादिक गुणधारी ॥ तिलोक रिख अनुभवरस शैली, समझ कही सुविचारी ॥ व० ॥ ९ ॥ सुगुणा समझी शिश नमावे, निगुणाने मन हासी ॥ एसा मुनिवर जो कोइ सेवे, सो होशे शिववासी ॥ व० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ कलश ॥ एम पञ्च नाम, नवकार जगमें, सार इण सम, को नही ॥ जे समरे भावे, सुख पावे, विघन सब, नासे सही ॥ उगणीशें सैंतिस, विजय दशमी, तिलोक रिख, स्तवना करी ॥ भव भव सरणु, होजो मुजने, अधिक दिन दिन हिरी सिरी ॥ प्रभु अधि० ॥ १ ॥ इती पञ्च परमेष्टिस्तवनानि सम्पूर्णानि ॥ सर्वगाथा ॥ ४९ ॥

॥ साधु स्तवनकी दुसरी गाथासू नवमी गाथासूधीको कठिणअर्थ होवाथी ते कहे छे ॥

एकविचारे-एकतत्त्व विचारे एकनिवारे एकदोष निवारे दोसयमपाले तप अन संजम पाले दोगाले-राग अने द्वेषने टाल तीनहुआराधे-ज्ञान दर्शन चारित्र ए त्रणने आराधे तीनकेसाध-मन वचनकायाका साधे त्रिहुगाले- तिन गव गाले चिहु ढाले-चारकषाय गिराने ॥ २ ॥ चारकरेनहि-चार विकथा न करे चारधरे चित-चार सरणा मनमें चितमे धारे. पचपाले-पञ्चमहाव्रत पाले पचटाले-पचेंद्रीयने पीछ छुथ तेपालन छव्रत पालक मुनिराज ते छ प्रतिपाले-छ कायनी दयापाले छमेंतीनकुभाके-छ लेश्यामेंसूं तीन अधमलेश्यान वरजे, ॥ ३ ॥ छजाणे-षट्द्रव्य भेद जाण अरु छके त्यागे-यती छ अव्रत त्यागे सातविशुद्धिलावे सात पिंडेषणा विशुद्ध आहार अने सातसातके दूरनिवारे-सात भय सात व्यसन वेगला करे तजेआठ-आठ मद छोडे आठचाव आठप्रवचन पांचसमिति तीन गुप्ति, ए आठकी पालना करे ॥ ४ ॥ पालेनव-नववाड ब्रह्मचर्य पाल टाले नव-नवनीयाणा टाले जाणे-

नवतत्त्व जाणे दमन करे दश--पांच इंद्रियो, चार कषाय, एक मन ए दशने दमे दश सेवे--दशप्रकारें श्रमण धर्म सेवे. दशदशसोबोले नहि मुखसें--दश प्रकारें असत्य दश प्रकारें मिश्र, ए भाषा न बोले दश बार सो कहवे--दश प्रकारें सत्य, बार प्रकारी व्यवहारी भाषा बोले ॥ ५ ॥ हत्याकरण--आठ कर्म रूप शत्रुने घात करे करावण कामी--कर्मरूपी शत्रुको नाश करावण कामी झूठ कहे जे आणी- जे पदार्थने मृषा जाणे तेने झूठो कहे अदत्तहेरे परको हित आणी--अपराधा जीव अदत्त ग्रहण करे ते छेडावे. तथा पुद्गल चोरी छे ईम ग्रहे परधी प्रेमज ठाणी--श्रीजिन वाणी रूपधी जेबुद्धि तेथी प्रेम आणे ॥ ६ ॥ धन अखूट--तप जप रूप धन भंडार युक्त छे अधर्मसाध्यानी--अधर्मास्तिनो गुण थिर छे तेम ते स्थिर ध्यानना करणहार छे माहामानी--श्रीजिननी आज्ञा माने छे निर्मानी--अहंकार रहित छे मांसभखे नित्य--मास तप करी शरीरको मांस निरंतर सोसे मांसभखे नहि--मांसदुगछनिक तथा बार मास भखे नहि मद्यथी--आठ मदथकी तृप्ति आणी--इछा नहिं ॥ ७ ॥ हय गय रथपायकतजदीना--लौकिक हाथी, घोडा, रथ पायक, ए चार दळ छोड्यां छे जेणें एवा लीनासोसहुवासें--लोकोत्तर चार त मनरूप घोडो धीरज रूप हाथी, शीलरूप रथ, भावरूप पेदल सदा राखे छे मातपिता नारी सुततयागी--सांसारिक मात पिता नारी पुत्र तेनो त्याग कीयो छे जेणे एवा अनुरागी नित्यभासे--अनुरागी ते दया रूप माता, ज्ञान रूप पिता, सुमति रूप नारी, सुबुद्धि रूप पुत्र तेथी राग राखे ॥८॥ परदुःख देइ शाता चावे--कर्मवर्गणा कर्मचेतना दुःख देवे अने जीव चेतनाके शाता वंछे, इत्यादिक गुणना धारक छे. तिलोकरिख अनुभव रसशैलि- तिलोकरिख नामा कवि कहे छे, के अनुभवरस अंतरज्ञानकी शैली जे विवेकता तेनी समझ कही सुविचारी- समझि बोधदृष्टि करिने कही विचारी छे ॥ ९ ॥

॥ अथ चोवीशजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ राग प्रभाती ॥ श्रीअरिहंत गुण गावो रे भविका, चोवीश जिन गुण गावो रे ॥ श्री अ० ॥ ए आंकणी ॥ ऋषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पद्म प्रभु ध्यावो रे ॥ श्री सुपार्श्व चंद प्रभु समरो, नित नित शीश नमावो रे ॥ श्री अ० ॥ १ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, विमल विमल चित ठावो रे ॥ अनंत धर्म श्रीशांति जिनेसर, शांतिकरण जग चावो रे ॥ श्री अ० ॥ ॥ २ ॥ कुंथु अर मल्ली मुनिसुव्रत जी, सुव्रत करण उमावो रे ॥ नमी नेम पारस माहावीर जी, सासणपति जिम नावो रे ॥ श्री अ० ॥ ३ ॥ ए चोवीश जिन संजम धारी, दियो करमके घावो रे ॥

केवल लेईने तीरथ थाप्या, भवजल तारण नावो रे ॥ श्री अ० ॥ ४ ॥ होय अजोगी मुक्ति सिधाया, फिर न रह्यो इहा आवो रे ॥ अजर अमर अविनाशी निरजन, सकल जगतका रावो रे ॥ श्री अ० ॥ ५ ॥ नाम लिया सब विघन विनासे, न रहे दु खको दावो रे ॥ शत्रु सो मित्र सम वरते, जो सुमरन मन ल्यावो रे ॥ श्री अ० ॥ ६ ॥ सवत् उगणिश आडतीस शालें, विजयदशमी दिन ठावो रे॥ दिन दिन विजय होवे प्रभु नामें, भव भवमें सुख पावो रे ॥ श्री अ० ॥ ७ ॥ तिलोकरिख कहे प्रभु तुम सरणो, भव भवमें मुझ थावो रे ॥ शिवसपत अरु द्यो तुम दरिसण, नित नित मगल वधावो रे ॥ श्री अ० ॥ ८ ॥ १ ॥

॥ अथ चोवशिजिन स्तवन प्रारभ ॥

॥ मेरी मेरी करता जन्म गयो रे ॥ ए देशी ॥ भजो रे भविक जिन चोवीश विख्याता, तजो रे आलस गुणिजन गुण गाता ॥ भ० ॥ १ ॥ ऋषभ अजित सभव जगताता, अभिनदनजी आनदके दाता ॥ भ० ॥ २ ॥ सुमति पद्म पद्म रग राता, सुपार्श्व चद्राप्रभु सबकु सुहाता ॥ भ० ॥ ३ ॥ सुविधि शतिल श्रेयास जो त्राता, वासुपूज्य तोड्या हे जगनाता ॥ भ० ॥ ४ ॥ विमल अनत धर्मधन माता, शाति जिनद करी है सुखशाता ॥ भ० ॥५॥ कुथु अर मल्लि मलघाता, मुनिसुव्रत व्रतमें रग राता ॥ भ० ॥ ६ ॥ नमि नेमी पारस वित भाता, महावीर रह्या पाप पलाता ॥ भ० ॥ ७ ॥ विहरमान गुणधर गुरु ज्ञाता, साधि सकल बधु सति माता ॥ भ० ॥ ८ ॥ इनके चरण सरण चित्त चाता, तिलोकरिख ताकु शिश नमाता ॥ भ० ॥ ९ ॥ २ ॥

॥ अथ ऋषभ जिन स्तवन ॥

॥ जे गणेश जे गणेश जे गणेश देवा ॥ ए देशी ॥ जे जिणद जे जिणद जे जिणद देवा ॥ उठि प्रभात समर नाथ, श्रीऋषभ देवा

॥ ए टेक ॥ पिता तेरे नाभिराजा, जननी हे रुदेवा ॥ देही ' - चन वृषभ लंछन, तेजें रतिपति जेहवा ॥ जे० ॥ १ ॥ जुगला धर्म निवार कियो प्रभु, छे कुलगरकी ठेवा ॥ संज लीधो श्रीजिन भावें, ' अरिने हणेवा ॥ जे० ॥ २ ॥ केवल ले प्रभु देशना दीधी, वाणी ज्युं अमृत मेवा ॥ चार तीरथकी स्थापना कीनी, भवजल पार करेवा ॥ जे० ॥ ३ ॥ दश सहस्र मुनि ंगें अष्टापद, चढीया अणसण लेवा ॥ छ दिन संथारे मुक्ति विराज्या, खि अनंत नितमेवा ॥ जे० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे में तुम चा र, छुं चरणारज खेवा ॥ जिम तिम करि भव पार ऊ रो, दिजो अविचल सेवा ॥ जे० ॥ ५ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ पद बीजुं ॥

॥ श्रीगौतम स्वामीमें गुण घणा ॥ ए देशी ॥

॥ प्रणमुं आदिजिनेश्वरजी, भयभंजण जगभाण ॥ गोत्रतीर्थंकर बांधिने, उपना सर्वार्थ सिध्दविमाण जी ॥ अषाढ विदि चोथ तिथि जाण जी, थयो प्रभुको चवण कल्याण जी, नाभि नामें नृपति कुल आणजी, माता मरुदेवजी वखाणजी ॥ श्रीऋषभ जिणंद जीसुं बंदणा ॥ ए टेक ॥ चैत्र विदि तिथि अष्टमीजी, भवेला शुभ वार ॥ जनम थयो जगदीशको, छपनकुमारी आइ तिणवार जी, जन्मकारज कियो सुविचार जी, आया इंद्र हरषें अपार जी, कियो मोछव मेरुमझार जी, सगें गया साधि व्यवहारजी ॥ श्री० ॥ १ ॥ वृषभ स्वपनलंच्छनथकी जी, ऋषभ कुमर दियो नाम ॥ पंचसें धनुष उंचापणे प्रभु, तन कंचन अभिरामजी, वि लख पूरव कुंवर पदठाम जी, राज कीयो त्रेशठ लख स्वामजी, जुगलधर्म निवार्यो तमाम जी, वसायां नगर पुर गाम जी, ॥ श्री० ॥ २ ॥ कला वहुत्तर पुरुषनी जी, चोशठकला वली नार ॥ बरन चार थापन किया प्रभु, सीखायो रुजगार जी, चैत्रवदि नौमी तिथि

सारजी, छठ तपस्या लिनि धार जी, चार सहस्त्र पुरुष परिवार जी, लीनो प्रभु संजम भार जी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ वरस दिवसने पारणे जी, लियो इक्षुरस आहार ॥ छद्मस्थपणे परिसा सह्या प्रभु, संवच्छर एक हजार जी, फागुन वदी ग्यारस जहार जी, घनघातिक हण्या कर्म चार जी, थया प्रभु केवल धारजी, उपदेश दीयो हितकार जी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ चार तीरथ प्रभु थापीया जी, तान्या बहु नर नार ॥ अष्टापद अणसण कन्या, साथे दश सहस्त्र अणगार जी, छ दिनको आयो संथारजी, माघकृष्ण तेरस जगधार जी, प्रभु पहता मुक्ति मझार जी, पाट असखें वरी शिवनार जी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ गजहोदे मातेश्वरी जी, पामी मोक्ष दुवार ॥ भरत आरिसा भवनमें, लहि केवल कमला सारजी, सो पुत्र दो पुत्री विचारजी, सहु शालि रूख परिवारजी, तिलोक रिख कहे वारोवार जी, महारी वीनतडी अवधार जी, प्रभु करो मुझ भवोदधि पारजी ॥ श्रीऋषभजी० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद त्रीजु ॥

॥ श्री वीरजिणद सासन घणी, जिन त्रिभुवनसामी ॥ ए देशी ॥

॥ प्रणमु आदिजिणद, युग्मचरणाबुज सरणो ॥ मनमधुकर मोही रह्यो, गुणरास आचरणो ॥ पूरवभवें भए पाच, पूर्वचक्रीपद त्याग कीना ॥ गोत्रतीर्थंकर बाध, चवी सर्वार्थ सिद्धलीना ॥ आषाढ विदि तिथि चोथमें ए, आधिरेण मझार ॥ चवणकल्याण प्रभुजीतणु, भाख्यु सूत्र मझार ॥ भा० ॥ १ ॥ नाभिरायकुलचंद, मात मरुदेवी जाणी ॥ तिणकूखें अवतार लियो, अध्दरयणी ठानी ॥ कृष्ण अष्टमी चैत्र, मास शुभवेलामाई ॥ जनम्याऋषभ जिणद, छपन कुमारी आई ॥ जनमकारज तिने सहुकियो ए, आसण चल्यो तिनवार ॥ शक्रइद्र चल आईया, आणी हरप अपार ॥ श० ॥ २ ॥ मूकी निद्रा मातवैक्रियें, निजरूपज धारिया ॥ पच रूप

करी इंद्र प्रभु, लेई प्रभु परवरीया ॥ गिरि सुदरसण जाइ, इंद्र कर्यो मोच्छव हरखे ॥ प्रभुको रूप अनूप, नेत्र अनिमेषित निरखे ॥ प्रभुके मेल्या फिर मातपें, रचि वनिता पुरसाज ॥ इंद्र गया निज- स्थानकें, करि मोच्छव सब साज ॥ क० ॥ ३ ॥ चउदे सपनामें प्रथम, वृषभवर उज्वल दीठो ॥ तेहनो फल एह पुत्र, महासुखका- र मीठो ॥ तिणकारण करि नाम, दियो प्रभु ऋषभ कुमार ॥ कंचन बरण शरीर, वृषभ लंछन पग धार ॥ पांचशें धनुष उंचापणे, देह मान जिनराज ॥ वीश लाख कुंवर पदें, रह्या श्री गरिब नि- वाज ॥ र० ॥ ४ ॥ पूर्व त्रेशठ लाख राज, जुगल धर्म दूरो कीनो ॥ लिखतगिणतादिक बहोंतेर, कला तस बोधज दीनो ॥ महिला गुण जे चोसठ, शिल्प कर्म सब विध स्थापी ॥ भरतादिक सो नंद, राजश्री सहुने आपी ॥ चैत्र कृष्ण नौमी दिन ए, चार सहस्र नर लार ॥ छठ तप धारी निकल्या, लीनो संजम भार ॥ ली० ॥ ५ ॥ चउ मुष्टी कर लोच, पंच महाव्रत उच्चरिया ॥ सह्या परिसह सर्व, पाली शुध्द मनसुं किरिया ॥ प्रथम पारणें हंस कुंवर, इक्षु- रस वहोराया ॥ सहस्र वरस छद्मस्थ, करणी करी मन वच काया ॥ चंद्र जेम शीतल कह्या ए, सागर जेम गंभीर ॥ अधिक तेज रवि किरणथी, मेरु अचल गज धीर ॥ मे० ॥ ६ ॥ ध्यावता निर्मल ध्यान, विचर्या श्रीजिनवर राया ॥ पुरिमताल पुर बाहिर, अष्टम तप करकें आया ॥ शकटमुख उद्यान, वृक्ष वड हेठे विराज्या ॥ ध्यायो शुक्ल ध्यान, पाय तिजें शुभ साजा ॥ फागण कृष्ण एकादशी ए, प्रात समयमें जान ॥ आदिजिनेश्वर पामिया, केवल दरिसन ज्ञान ॥ के० ॥ ७ ॥ लोकालोक सरूप, जाण्यो जिनवर जिन ज्ञाने ॥ दीनो तब उपदेश, चतुर्विध तीरथ ठाने ॥ ऋषभ सेणादिक जाण, चोराशी गणधर भारी ॥ चोराशी सहस्र मुनिराज, मांहे दीपे अधिकारी ॥ ब्राह्मी सुंदरी धन साधवी ए, सब सतियां

शिरदार ॥ तीन लक्ष थई साहुणी, श्रीजिन आज्ञाकार ॥ श्री० ॥ ८ ॥ चार सहस्त्र साडी सातशें चउदे पूरवधारी ॥ अवधिज्ञानी मुनिराज सहस्त्र नव सोहत भारी ॥ वैक्रिय लब्धिका धार, छशें विश सहस्त्र कहीजें ॥ मन परजव बारे सहस्त्र, छशें पचास लहीजें ॥ केवल नाणी मुनिवरु ए, वीश सहस्त्र परिमाण ॥ ते वदु नित भावशु, पाया पद निर्वाण ॥ पा० ॥ ९ ॥ चर्चावादी सहस्त्र, बारे साडी छसें कहीयें ॥ नवशें बाविश हजार, अनुत्तर वैमानिक गहीयें ॥ साधवी चालिश सहस्त्र, केवल ले मुगति विराजी ॥ अवर बहु गुण धार, मुनि निज आतम साजी ॥ ते प्रणमु सहु भावशु ए, जिनवर आज्ञाधार ॥ साथें रह्या जिनराजने, करता उग्र विहार ॥ क० ॥ १० ॥ बाराव्रतका धार, सिज्जसादिक श्रावक भारी ॥ पाच सहस्त्र तिन लक्ष, सवे इकविश गुणधारी ॥ सुभद्रादिक पच लाख, श्राविका चौपन हजारी ॥ श्रीजिन आज्ञामाहि, कही गुणवती नारी ॥ करी करणी शुद्ध भावशु ए, पाई अमर विमाण ॥ ए सख्या तीरथ तणी, आगममाहि प्रमाण ॥ आ० ॥ ११ ॥ एक लख पूरव सर्व, सजम केवलपद पाली ॥ भव्य जीव उपदेश, दियो कुगति मत टाली ॥ दश सहस्र मुनि साथ, अष्टापद चढीया जाइ ॥ पल्यक आसण करी ध्यान, अणसण छ दिनकी आइ ॥ माघ कृष्ण तेरश तिथि ए, प्रभु पहुता निर्वाण ॥ सागर पचास लक्ष कोडीनो, जिनशासन परिमाण ॥ जि० ॥ १२ ॥ कोडाकोडी असख, पाट केवलपद पाया ॥ गजहोदे प्रभुमात, केवल लेइ मुक्ति सिधाया ॥ श्रीभरतेश्वर भुवन, अरिसे केवल लीधो ॥ बाहुबल प्रभुनद, सोहि जगमें परसीधो ॥ पुत्र सकल मुर्के गया, पुत्री पण गुणवत ॥ प्रणमु आदि जिनेंद्रजी, भय भजण भगवत ॥ भ० ॥ १३ ॥ पटदारिसण सिद्ध आदि, जिणवर सुखकारी ॥ सब देवा सिरमोड, होड कोन करे चरणारी ॥ अरि करी भय दुःख दूर, होय जिण

समरण करतां ॥ प्रभुगुण अनंत अपार, पार नहिं आवे उच्चरतां ॥ सुगुरु शारदा स्वयमुखें ए, करे प्रभु गुण विस्तार ॥ कोडाकोड सागर लगें, तोहि न आवेजी पार ॥ तो० ॥ १४ ॥ मुझमति छे अति हीन, गुणोदधिपार न आवे ॥ मन समजावा काज, कह्या गु संमित भावें ॥ चंदनवृक्ष भुजंग, जीवसंग कर्मज लागे ॥ जिनवर जप छे गरुड, करम अहि दूरा भागे ॥ श्री परमेश्वर एहवा ए, जो समरे शुद्ध भाव ॥ भीम भवोदधि तारवा, परतख जिन जयनाव ॥ पं० ॥ १५ ॥ संवत उगणीशेंत्रीश, मास आषाढ उजारी ॥ तिथि तेरश भोमवार, शहेर मंदशोर मझारी ॥ अधमउद्धारण बिरुद, सुणी प्रभुसरणो लीनो ॥ जन्ममरण रोग सोग, दुःख संसार सुविहीनो ॥ तिलोकरिख कर जोडिने, अरज करे शिर नाम ॥ हवे तारो प्रभु मुझ भणी, आपो अविचल ठाम ॥ आ० ॥ १५ ॥

॥ अथ चतुर्विंशति जिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ केरवानी देशी ॥ जय जय रहो प्रभु ताहरी, ह्मारी वंदणां लीजो स्वीकार भलां जी ॥ ह्मारि० ॥ १ ॥ ऋषभ अजित संभव अभिनंदन, अधम उद्धारणहार ॥ भ० ॥ अ० ॥ जय० ॥ २ ॥ सुमति पदम सुपास चंदा प्रभु, अष्ट कर्म कियां छार ॥ भ० ॥ अ० ॥ जय० ॥ ३ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, जगनायक जयकार ॥ भ० ॥ ज० ॥ जय ॥ ४ ॥ विमल अनंत श्रीधर्म शांतीश्वर, शांति करि छे संसार ॥ भ० ॥ शां० ॥ जय० ॥ ५ ॥ कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रत, करुणानिधी किरतार ॥ भ० ॥ क० ॥ जय० ॥ ६ ॥ नमी नेम पारस माहावीरजी, सासणका सिरदार ॥ भ० ॥ सा० ॥ जय० ॥ ७ ॥ कर्म खपाई केवल पाया, शुक्लध्यान मझार ॥ भ० ॥ शु० ॥ जय० ॥ ८ ॥ ए चोवीश जिनवर जगराया, त्याग दियो छे संसार ॥ भ० ॥ त्या० ॥ जय० ॥ ९ ॥ संजम करणी भवजल तरणी, करि अति दुःकरकार ॥ भ० ॥ क० ॥ जय० ॥ १० ।

शिरदार ॥ तीन लक्ष थई साहुणी, श्रीजिन आज्ञाकार ॥ श्री० ॥ ८ ॥ चार सहस्र साडी सातशें चउदे पूरवधारी ॥ अवधिज्ञानी मुनिराज सहस्र नव सोहत भारी ॥ वैक्रिय लब्धिका धार, छशें विश सहस्र कहीजें ॥ मन परजव बारे सहस्र, छशें पचास लहीजें ॥ केवल नाणी मुनिरु ए, वीश सहस्र परिमाण ॥ ते वदू नित भावशु, पाया पद निर्वाण ॥ पा० ॥ ९ ॥ चर्चावादी सहस्र, बारे साडी छसें कहीयें ॥ नवशें बाविश हजार, अनुत्तर वैमानिक गहीयें ॥ साधवी चालिश सहस्र, केवल ले मुगति विराजी ॥ अवर बहु गुण धार, मुनि निज आतम साजी ॥ ते प्रणमु सहु भावशु ए, जिनवर आज्ञाधार ॥ साथें रह्या जिनराजने, करता उग्र विहार ॥ क० ॥ १० ॥ बाराव्रतका धार, सिजसादिक श्रावक भारी ॥ पांच सहस्र तिन लक्ष, सवे इकविश गुणधारी ॥ सुभद्रादिक पच लाख, श्राविका चौपन हजारी ॥ श्रीजिन आज्ञामाहि, कही गुणवती नारी ॥ करी करणी शुद्ध भावशु ए, पाई अमर विमाण ॥ ए सख्या तीरथ तणी, आगममाहि प्रमाण ॥ आ० ॥ ११ ॥ एक लख पूरव सर्व, सजम केवलपद पाली ॥ भव्य जीव उपदेश, दियो कुगति मत टाली ॥ दश सहस्र मुनि साथ, अष्टापद चढीया जाइ ॥ पल्यक आसण करी ध्यान, अणसण छ दिनकी आइ ॥ माघ कृष्ण तेरश तिथि ए, प्रभु पहुता निर्वाण ॥ सागर पचास लक्ष कोडीनो, जिनशासन परिमाण ॥ जि० ॥ १२ ॥ कोडाकोडी असख, पाट केवलपद पाया ॥ गजहोदे प्रभुमात, केवल लेइ मुक्ति सिधाया ॥ श्रीभरतेश्वर भुवन, अरिसे केवल लीधो ॥ बाहुबल प्रभुनद, सोहि जगमें परसीधो ॥ पुत्र सकल मुक्तें गया, पुत्री पण गुणवत ॥ प्रणमु आदि जिनेंद्रजी, भय भजण भगवत ॥ भ० ॥ १३ ॥ षटदरिसण सिद्ध आदि, जिणवर सुखकारी ॥ सब देवा सिरमोड, होड कोन करे चरणारी ॥ अरि करी भय दुःख दूर, होय जिण

समरण करतां ॥ प्रभुगुण अनंत अपार, पार नहिं आवे उच्चरतां ॥ सुगुरु शारदा स्वयमुखें ए, करे प्रभु गुण विस्तार ॥ कोडाकोड सागर लगें, तोहि न आवेजी पार ॥ तो० ॥ १४ ॥ मुझमति छे अति हीन, गुणोदधिपार न आवे ॥ मन समजावा काज, कह्या गुण संमित भावें ॥ चंदनवृक्ष भुजंग, जीवसंग कर्मज लागे ॥ जिनवर जप छे गरुड, करम अहि दूरा भागे ॥ श्री परमेश्वर एहवा ए, जो समरे शुद्ध भाव ॥ भीम भवोदधि तारवा, परतख जिन जयनाव ॥ पं० ॥ १५ ॥ संवत उगणीशेत्रीश, मास आषाढ उजारी ॥ तिथि तेरश भोमवार, शहेर मंदशोर मझारी ॥ अधमउद्धारण विरुद, सुणी प्रभुसरणो लीनो ॥ जन्ममरण रोग सोग, दुःख संसार सुविहीनो ॥ तिलोकरिख कर जोडिने, अरज करे शिर नाम ॥ हवे तारो प्रभु मुझ भणी, आपो अविचल ठाम ॥ आ० ॥ १५ ॥

॥ अथ चतुर्विंशति जिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ केरबानी देशी ॥ जय जय रहो प्रभु ताहरी, ह्मारी वंदणां लीजो स्वीकार भलां जी ॥ ह्मारी० ॥ १ ॥ ऋषभ अजित संभव आभिनंदन, अधम उद्धारणहार ॥ भ० ॥ अ० ॥ जय० ॥ २ ॥ सुमति पद्म सुपास चंदा प्रभु, अष्ट कर्म कियां छार ॥ भ० ॥ अ० ॥ जय० ॥ ३ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, जगनायक जयकार ॥ भ० ॥ ज० ॥ जय ॥ ४ ॥ विमल अनंत श्रीधर्म शांतीश्वर, शांति करि छे संसार ॥ भ० ॥ शां० ॥ जय० ॥ ५ ॥ कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रत, करुणानिधी किरतार ॥ भ० ॥ क० ॥ जय० ॥ ६ ॥ नमी नेम पारस माहावीरजी, सासणका सिरदार ॥ भ० ॥ सा० ॥ जय० ॥ ७ ॥ कर्म खपाई केवल पाया, शुक्लध्यान मझार ॥ भ० ॥ शु० ॥ जय० ॥ ८ ॥ ए चोवीश जिनवर जगराया, त्याग दियो छे संसार ॥ भ० ॥ त्या० ॥ जय० ॥ ९ ॥ संजम करणी भवजल तरणी, करि अति दुःकरकार ॥ भ० ॥ क० ॥ जय० ॥ १० ।

भविजनने उपदेश सुणायो, वाणी ज्यों अमृतधार ॥ भ० ॥ वा० ॥ जय० ॥ ११ ॥ सूत्र चरित्र धर्म प्ररूप्यो, थाप्या तीरथ चार ॥ भ० ॥ था० ॥ जय० ॥ १२ ॥ होय अजोगी मुगति सिधाया, अजर अमर अविकार ॥ भ० ॥ अ० ॥ जय० ॥ १३ ॥ तिलोकरिख कहे जिम तिम करिने, तारो भवजल पार ॥ भलाजी प्रभु तारो ॥ भ० ॥ ता० ॥ जय० ॥ १४ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ पद वीजु ॥

॥ सुण सुण रे सयण सयाणा ॥ ए देशी ॥ ऋषभ अजित सभव सुखकारी, अभिनदनकी वलिहारी ॥ सुमति पदम प्रभु जग राया, जाये आठु कर्मकू घाया ॥ १ ॥ सुपारस चदा प्रभु देवा, चाहु भव भवमे तुम सेवा ॥ सुविधि शितल श्रेयास दयाला, वासुपूज्य जगतप्रतिपाला ॥ २ ॥ विमल अनत धर्म धन दाता, शाति नाथजी करो सुखशाता ॥ कुथु अर मल्लिजी महाराया, प्रभु आठ करम रिपु घाया ॥ ३ ॥ विशमा श्रीमुनिसुव्रत वदू, भव भव दु.ख दूर निकदू ॥ नमी नेम पारस जसवता, महावीर प्रभु सासण कता ॥ ४ ॥ प्रभु थाप्या हे तीरथ चारी, प्रभु परमपति उपगारी ॥ प्रभु तुम बिन अति दु ख पायो, चारुगतिमें घभरायो ॥ ५ ॥ अब जाण्या में साहिब साचा, सब देव जाण्या अन्य काचा ॥ इम जाणी तुम सरणमें आयो, तिलोक वदे मन वच कायो ॥ ६ ॥ इति ॥ २ ॥

॥ पद त्रीजु ॥

॥ मल्लिनाथ मन मोह्यो रे, खटराजिंद केरो ॥ ए देशी ॥ प्रणमु नित पाया, तारो तारो जिनराया रे ॥ प्र० ॥ ऋषभ अजित स भव अभिनदन, भविजनने सुखदाया रे ॥ प्र० ॥ ॥ १ ॥ सुमति पदम सुपार्श्व चदा प्रभु, आठ कर्म रिपू घाया जी ॥ प्र० ॥ २ ॥ सुविधि शीतल श्रेयास वासुपूज्य, राग द्वेषकू हठाया जी ॥ प्र० ॥

॥ ३ ॥ विमल अनंत धर्मनाथ शांति जी, मरकी रोग उपशमाया जी ॥ प्र० ॥ ४ ॥ कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रत जी, चोतिस अतिशे दिपाया जी ॥ प्र० ॥ ५ ॥ नमी नेम पारस महावीर जी, सासण-पति मन भाया जी ॥ प्र० ॥ ६ ॥ ए चोवीश जिन कर्म निवारी, ज्ञान केवल प्रभु पाया जी ॥ प्र० ॥ ७ ॥ चार तीरथकी किनी थापना, ज्ञान केवल प्रभु पाया जी ॥ प्र० ॥ ८ ॥ तिलोकरिख कहे नित नित प्रभुकूं, वंदूं मन वच काया जी ॥ प्र० ॥ ९ ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ पद चोथुं ॥

॥ मेरी मेरी करतां जनम गयो रे ॥ ए देशी ॥ जय जय जिनंदा जय जय जिनंदा, टाले चउगति भव भव फंदा ॥ ज० ॥ ॥ १ ॥ रिषभ अजित संभव सुखकारी, अभिनंदण चरणन बलिहा-री ॥ ज० ॥ २ ॥ सुमति पद्म सुपारस सामी, चंदा प्रभु धन अंतरजामी ॥ ज० ॥ ॥ ३ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस दयाला, वासुपूज्य प्रणमुं किरपाला ॥ ज० ॥ ४ ॥ विमल अनंत धरम धनदाता, शांतिजिनंद करि हे सुखशाता ॥ ज० ॥ ५ ॥ कूंथु अर मल्ली गुणवंता, श्रीमुनिसुव्रत शिवपुर कंता ॥ ज० ॥ ६ ॥ नमी नेमी पारस मन भाया, महावीरपति शासनराया ॥ ज० ॥ ॥ ७ ॥ ए चोविश जिन जग छटकाई, लियो संजम तन मन उलसाइ ॥ ज० ॥ ८ ॥ जप तप किरिया करि अति भारी, कर्म-शत्रु सब दिया निवारी ॥ ज० ॥ ९ ॥ केवलज्ञान प्रगट्यो जिण वारी, देइ उपदेशना भवि हितकारी ॥ ज० ॥ १० ॥ मन वचन तन जोग निवारी, शिवगढ राज लियो तिन वारी ॥ ज० ॥ ११ ॥ तिलोकरिख कहे सरणो तुमारो, जिम तिम करि भव पार उतारो ॥ ज० ॥ १२ ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ पद पाचमु ॥

॥ शाति चरणारी जाउ वलिहारी ॥ ए देशी ॥ झेलो वदना स्वामि हमारी, तुमारे चरण वलिहारी ॥ ए टेक ॥ ऋषभ अजित सभव अभिनदन, सुमति पदम सुखकारी ॥ श्रीसुपार्श्व चदा प्रभु समरो, जगनायक जसधारी ॥ प्रभुजी पूर्ण ऊपगारी ॥ झे० ॥ १ ॥ सुविधि शीतल श्रेयास वासुपूज्य, विमल अनत धर्मधारी ॥ शाति जिनद सुखकद जगतमें, मेट दिनी सब मारी ॥ हरो मेरी विपत्त बिमारी ॥ झे० ॥ २ ॥ कुथु अर मल्लि मुनिसुव्रतजी, नमी नेमी सुविचारी ॥ तोरणसें पाछा फिर आया, छोडकें राजदुलारी ॥ नाथ तुम करुणा भडारी ॥ झे० ॥ ३ ॥ वे वारसके वारस पारस, पचपरमेष्टी उच्चारी ॥ नाग नागणी जलत वचाया, किना सुर अवतारी ॥ माहिमा जगमें अति थारी ॥ झे० ॥ ४ ॥ शासन नायक वीर जिनेश्वर, हद्द क्षमा प्रभु धारी ॥ केवल लई प्रभु धर्म वतायो, सूत्र चारितर सारी ॥ तीरथ थाप्या प्रभु चारी ॥ झे० ॥ ५ ॥ अणसण लेइ प्रभु जोग त्याग कर पहुता हे मुगति मझारी ॥ अनत सुखामाही जाइ विराज्या तो, निरजन निराकारी ॥ रह्या लोकालोक निहारी ॥ झे० ॥ ६ ॥ मोह मायामाहि उलज रह्यो में, पायो हु दु ख अपारी ॥ तुम सरण बिन चउगति भटक्यो, धर्मकी बुद्धि विसारी ॥ शीख सतगुरुकी न धारी ॥ झे० ॥ ७ ॥ अशुभ करम कछु दूर भयासु, वाणी लगी प्रभु प्यारी ॥ अधम उद्धारण विरुद सुणीने, सरणो लियो सुविचारी ॥ सार करजो प्रभु ह्मारी ॥ झे० ॥ ८ ॥ मुझ सरिखो नहि दीन जग तमें, तुम सरिखो दातारी ॥ जिम तिम करि भव पार ऊतारो, या मागु रिझवारी ॥ अरज लीजो अवधारी ॥ झे० ॥ ९ ॥ ओगणीसें अडातिस माघ कृष्ण पक्ष, तीज तिथि शनिवारी ॥ देश दक्षिण आवलकोटि पेठमें, जोड करी हितकारी ॥ तिलोकरिख

कहे सुविचारी ॥ झे० ॥ १० ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ पद छट्टं ॥

॥ पणीयारीकी देशी ॥ जय जय आदि जिनेश्वरु ॥ माहाराया रे ॥ भव भव दुःख निकंद ॥ तार माहाराया रे ॥ अजित जीत करी कर्मसुं ॥ मा० ॥ प्रभु भविजनके सुखकंद ॥ ता० ॥ १ ॥ संभव स्वामी सुहामणा ॥ मा० ॥ करुणानिधि किरतार ॥ ता० ॥ अभिनंदन हितकारीया ॥मा०॥ सुमति सुमति दातार॥ ता० ॥ २ ॥ पद्म कद्मको आसरो ॥ मा० ॥ सूपारस जसवंत ॥ ता० ॥ चंद आनंद सदा करो ॥ मा० ॥ शिवरमणीका कंत ॥ ता० ॥ ३ ॥ सुविधिनाथ बुद्धि दीजीयें ॥ मा० ॥ शीतल दीन दयाल ॥ ता० ॥ श्रीश्रेयांस कृपा करो ॥ मा० ॥ प्रभु वासुपूज्य कृपाल ॥ ता० ॥ ४ ॥ विमल विमल मति दीजीयें ॥ मा० ॥ अनंत अनंत गुणधार ॥ ता० ॥ धर्म धर्म दाता सदा ॥ मा० ॥ शांति शांति दातार ॥ ता० ॥ ५ ॥ कुंथुनाथ करुणानिधि ॥ मा० ॥ अरनाथजी जगभाण ॥ ता० ॥ मल्लि नाथ मनमोहियो ॥ मा० ॥ मुनिसुव्रत पद निरवाण ॥ ता० ॥ ६ ॥ नमुं नमी रिष्ट नेमजी ॥ मा० ॥ पशुकी सुणी हे पुकार ॥ ता० ॥ तोरणसुं पाछा फिऱ्या ॥ मा० ॥ जाय चढ्या गिरनार ॥ ता० ॥ ७ ॥ नावारस वारस प्रभु ॥ मा० ॥ पारस जिन जयकार ॥ ता० ॥ माहावीर जगधीरजी ॥ मा० ॥ शासनका शिरदार ॥ ता० ॥ ८ ॥ असरण शरण दयानिधि ॥ मा० ॥ तुम बिन नहीं को आधार ॥ ता० ॥ तिलोक रिख अरजी करे ॥ मा० ॥ तार तार प्रभु तार ॥ तार माहाराया रे ॥ ९ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ पद सातमुं

॥ देशी वणझारीकी ॥ जिन राया रे ॥ श्रीमरुदेवी नंद, प्रणमुं आदि जिणंदजी ॥ जि० ॥ जि० ॥ अजित संभव हितकार,

अभिनदन सुखकद जी ॥ जि० ॥ १ ॥ जि० ॥ सुमतिपद्म सुपास, चदा प्रभु हितकारिया ॥ जि० ॥ जि० ॥ सुविधि शीतल श्रेयास, वासुपूज्य उपगारिया ॥ जि० ॥ २ ॥ जि० ॥ विमल अनत धर्म नाथ, शाति जिनद शाता करो ॥ जि० ॥ कुथु अर मल्लीनाथ, मुनिसुव्रत आरति हरो ॥ जि० ॥ ३ ॥ जि० ॥ नमी नेमी जिनराज, पारसनाथ करुणा घणी ॥ जि० ॥ जि० ॥ वर्द्धमान सुखकार, जय जय जय सासणधणी ॥ जि० ॥ ४ ॥ जि० ॥ घनघातिक चउ कर्म, हणी केवल पद पामिया ॥ जि० ॥ जि० ॥ दीनो धर्म उपदेश, चार तीरथ थापन किया ॥ जि० ॥ ५ ॥ जि० ॥ थया निरजन निराकार, शिवरमणी प्रभुजी वरी ॥ जि० ॥ जि० ॥ तिलोकरिख कहे एम, तारजो मोहि कृपा करी ॥ जि० ॥ ६ ॥ जि० ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ पद आठमु ॥

॥ तु धन तु धन तु धन तु धन, शाति जिनेसर स्वामी ॥ ए देशी ॥ राग प्रभाती ॥ प्रात उठी चोविश जिनवरको, समरण कीजें भावधरी ॥ प्रा० ॥ ध्रु० ॥ ऋषभ अजित सभव अभिनदन, सुमति कुमति सब दूर हरी ॥ पद्म सुपारस चदा प्रभु ध्यावो, पुष्पदत हणया कर्म अरि ॥ प्रा० ॥ १ ॥ शीतल जिन श्रेयास वासुपूज्य, विमल विमल बुद्धि देत खरी ॥ अनत धर्म श्रीशाति जिनेश्वर, हरियो रोग असाध्य मरी ॥ प्रा० ॥ २ ॥ कुथु अर मल्लि मुनिसुव्रत जी, नमी नेमी शिवरमणी वरी ॥ पारसनाथ वर्धमान जिनेश्वर, केवल लह्यो भवओघ तरी ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ तुम सम नहि कोइ तारक दूजो, इम निश्चे मनमाहे धरी ॥ तिलोकरिख कहे जिम तिम करिने, मुक्ति श्री द्यो महेर करी ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ इति ॥ ८ ॥

॥ पद नवमुं ॥

॥ पारस जिनेश्वर रे स्वामी ॥ ए देशी ॥ श्रीजिन समरो रे भाइ, दिन दिन संपति पामो सवाइ ॥ भय सब जावे रे भागी, महा दुशमन होवे अनुरागी ॥ श्री० ॥ १ ॥ ऋषभ जिनेश्वर रे पहेला, अजित जिनंद नमुं अलबेला ॥ संभव स्वामी रे गावो, अभिनंदनके चरण चित्त लावो ॥ श्री० ॥ २ ॥ सुमति पदम प्रभु रे वंदो, सुपार्श्व नाम सदा सुखकंदो ॥ चंदा प्रभु पुष्पदंत रे स्वामी, शीतल श्रेयांस नमुं शिर नामी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ वासुपूज्य जगना रे ताता, विमल अनंत धर्म शिवदाता ॥ शांति कुंथु अर माल्लि रे देवा, मुनिसुव्रतजीनी करो नित्य सेवा ॥ श्री० ॥ ४ ॥ नमी नेमी पारस रे प्यारा, वर्धमान शासन शणगारा ॥ प्रभु तुम शिवपुर रे बसिया, तुम दरिसण नामें निशिदिन तसीया ॥ श्री० ॥ ५ ॥ अधम उद्धारण रे जाणी, चरण शरण इस हिर्दें थाणी ॥ तिलोकरिख वंदे रे पाया, तार तार कृपा करि माहाराया ॥ श्री० ॥ ६ ॥ इति ॥ ९ ॥

॥ पद दशलुं ॥

॥ माचका दोहाकी देशी ॥ प्रणमुं आदि जिनंदने जी कांइ, अजित नाथ महाराज ॥ संभवगुण संभव करोजी कांइ, अभिनंदन जिनराज हो ॥ चोविश जिनराया, एस बतावो सुगति महेलकी ॥ सुमति सुमति दातार दयानिधि, पद्मप्रभ जगदीश ॥ श्रीसुपास चंदा प्रभुकु, नित्य नमाउं शीस हो ॥ चो० ॥ १ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, विमल अनंत धर्मनाथ ॥ शांति कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रत, वंदू में जोडी हाथ हो ॥ चो० ॥ २ ॥ एकविशमा नमिनाथ निरुपम, बाविशमा रिष्टनेम ॥ ना वारसके वारस पारस, दीजो अविचल खेम हो ॥ चो० ॥ ३ ॥ वर्द्धमान शासनका साहेब, हण्या घनघातिक कर्म ॥ केवल लक्ष्मी पायनेजी कांइ, दाख्यो

श्रीजिनधर्म हो ॥ चो० ॥ ४ ॥ तीरथ थापी मिथ्या उथापी, किनो परम उपगार ॥ होय अजोगी मुगति विराज्या, अजर अमर अवि कार हो ॥ चो० ॥ ५ ॥ अलख निरजन भवदुःख भजन, सिद्ध-पद लियो सार ॥ तिलोकरिख कहे अहो जगवत्सल, जिम तिम करो भवपार हो ॥ चो० ॥ ६ ॥ इति ॥ १० ॥

॥ पद अग्यारमु ॥ चोपाइनी देशीमा ॥

॥ ऋषभ अजित सभव सुखकार, अभिनदन प्रभु जग आधार ॥ सुमति पद्म प्रभु तारण जहाज, प्रणमु चोवीशे जिनराज ॥ १ ॥ सुपारस चद्रप्रभ स्वाम, सुविधि शीतल जिन करू प्रणाम ॥ श्रेयास वासुपुज्य सारो काज ॥ प्र० ॥ २ ॥ विमल विमलमति दायक देव, अनत धर्म जिन करीयें सेव ॥ शाति करो श्रीशाति महाराज ॥प्र० ॥ ३ ॥ कुथु अर मल्लि जिन जाण, श्रीमुनिसुव्रत त्रिजग भाण ॥ नमी नेम राखो मुझ लाज ॥ प्र० ॥ ४ ॥ पारस नाथ महावीर दयाल, भवदु ख भजन परम कृपाल ॥ मुक्ति नगर को लीनो राज ॥ प्र० ॥ ५ ॥ तुम बिन नहिं कोई तारणहार, तिलोकरिख इम निश्चे धार ॥ अरज करे द्यो शिवपुरसाज ॥ प्र० ॥ ६ ॥

॥ पद बारमु ॥

॥ देशी न्यालदेमें ॥ ऋषभ अजित सभव नमु सभव नमु जी काई, अभिनदन जस धार ॥ सुमति पद्म प्रभु वदीयें वदीयें जी काई, सुपारस जिन हितकार ॥ करुणा सागर तारजो तारजो जी प्रभु, भक्तवत्सल भगवत ॥ क० ॥ १ ॥ चदा प्रभु सुविधि शिरे सुविधिशिरे जी काइ, शीतल जिन श्रेयास ॥ वासुपूज्य विमल नमु विमल नमु जी काइ, अनतनाथ अवतस ॥ क० ॥ २ ॥ धर्म शाति कुथु नमु कुथु नमु जी काइ, अरनाथजी जगतात ॥ मल्लिनाथ ओगणीशमा ओगणीशमा जी काइ, प्रभावतीना अग-जात ॥ क० ॥ ३ ॥ मुनिसुव्रत मुनिसुव्रत धणी जी काइ, नमि-

नाथ जस धार ॥ रिष्ट नेमी करुणा धणी करुणा धणी जी कांइ, पशुवाकी सुणिहे पुकार ॥ क० ॥ ४ ॥ पारस पारस सारीखा सारिखा जी कांइ, बलतां नागिणी नाग ॥ परमेष्ठी सुणाइ सुरपद दीयो सुरपद दीयो जी कांइ, कीना निण महाभाग ॥ क० ॥ ५ ॥ महावीर शासन धणी शासन धणी जी कांइ, हद क्षमा प्रभु धार ॥ केवल लेइ मुगतें गया मुगतें गया जी कांइ, पाया पद अविकार ॥ क० ॥ ६ ॥ तुम शरणा विनुं हुं भम्यो हुं भम्योजी कांइ, पायो दुःख अपार॥ तिलोकरिख कहे में लियो में लियो जी प्रभु, चरण शरणको आधार ॥ क० ॥ ७ ॥ इति॥ १२॥

॥ पद तेरमुं ॥

॥ सुमति सदा दिलमें धरो ॥ ए देशी ॥ ऋषभ अजित संभव नमुं, अभिनंदन श्रीकंत ॥ जिनेश्वर ॥ सुमति पद्म सुपास जी, कीधो करमको अंत ॥ जि० ॥ मोय तारो किरपा करी ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ चंदा प्रभु सुविधि वली, शीतल टालो संताप ।।जि० ॥ श्रेयांस वासुपूज्य विमल जी, अनंतजीको करो जाप ॥ जि० ॥ मो० ॥ २ ॥ धर्म शांति कुंथु अर, मल्ली मुनिसुव्रत श्याम ॥ जि० ॥ नमियें नमी रिठनेम जी, पारस प्रभु गुणधाम ॥ जि० ॥ मो० ॥ ३ ॥ वर्द्धमान शासन धणी, कर्म भर्म किया छार ॥ जि० ॥ केवल ज्ञान दीवाकरू, थाप्यां तीरथ चार ॥ जि० ॥ मो० ॥ ४ ॥ कियो उपगार दया निधि, पहुता क्षिमझार ॥ जि० ॥ तिलोक कहे जिम तिम करी, कीजो भवजल पार ॥ जि० ॥ मो० ॥ ५ ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ पद चौदमुं ॥

॥ चार पहेरको दिन होवे रे ॥ ए देशी ॥ ऋषभ अजित जिन वंदियें रे, संभव जिन सुखकार हो ॥ भविक जन ॥ अभिनंदन करुणानिधि रे, सुमति सुमति दातार हो ॥ भ० ॥ वंदो चोविश

जिन भावशु रे ॥ १ ॥ पद्म सुपारस चदा प्रभु रे, सुविधि शीतल कृपाल हो ॥ भ० ॥ श्रेयास वासुपूज्य ध्याइयें रे, विमल अनत सुविशाल ह। । भ० ॥ व० ॥ २ ॥ धर्मनाथ शातीश्वर रे, कुथु अर माल्लि जाण हो ॥ भ० ॥ श्री मुनिसुव्रत साहिवा रे, नमी नेम गुण खाण हो ॥ भ० ॥ व० ॥ ३ ॥ पारस प्रभु महा वीरजी रे, शासनका शिरदार हो ॥ भ० ॥ राग द्वेष मल जीतिने रे, पहोता मुगति मझार हो ॥ भ० ॥ व० ॥ ४ ॥ अहो अविनाशी साहिवा रे, जगवत्सल जगदीश हो ॥ जि० ॥ तिलो करिख करे विनति रे, कजो भव निस्तार हो ॥ भ० ॥ वदो० ॥ ५ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ पद पञ्चरमु ॥

॥ भूडी रे भुख अभागणी ॥ ए देशी ॥ प्रभु स्मरो नित्य भावशु, ऋषभ अजित सुखकार ॥ लाल रे सभव आभनदन भला, नाम लिया निस्तार ॥ लालरे ॥ प्र० ॥ १ ॥ सुमति पद्म सुपास जी, चदा प्रभु चद जेम ॥ ला० ॥ भवदु.ख ताप बुझावणा, भविजनने करे खेम ॥ला०॥२॥ सुविधि शीतल श्रेयास जी, वासुपूज्य शिवकत ॥ला०॥ विमल अनत धर्म धारणा, शातिकारक श्रीशाति ॥ लाल रे ॥प्र०॥३॥ कुथु अर मल्ली नमु, मुनिसुव्रत सुखदाय ॥ला०॥ एकविशमा नमिनाथ जी, भक्तवत्सल जिनराय ॥ लाल रे ॥प्र०॥४॥ रिष्टनेमि जिनवर जयो, पशुवाकी सुणी पुकार ॥ ला० ॥ तोरणसु पाछा फिऱ्या, शिववधूना भरतार ॥ला०॥प्र०॥५॥ पारस पारस सारिखा,सभलाया नवकर ॥ला०॥ बचाया नाग नागिणी, दियो सुर पद अवतार ॥ ला० ॥ प्र० ॥ ६ ॥ वर्धमान शासन धणी, दीनानाथ दयाल ॥ ला० ॥ केवल कमला लेइने, लीना सुख विशाल ॥ ला० ॥ प्र० ॥ ७ ॥ ए चोविश जगदीश जी, परमगुरु जगनाथ ॥ ला० ॥ तिलोकरिख कहे तारजो, वीनवु जोडी हाथ ॥ ला० ॥ प्र० ॥ ८ ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ पद शोलमुं ॥

॥ श्रीमुनिसुव्रत साहेबा ॥ अथवा अंजणाना रासना कडवामां ॥ प्रणमुं जिनेश्वर जगपति, परउपगार करुणाना भंडार तो ॥ जुगला रे धर्म निवारीया, ऋषभ जिनंद नृप नाभिकुमार तो ॥ प्र० ॥ १ ॥ अजित कंदर्प दल जीतिया, संभवनाथ गुणसंभव जाण तो ॥ अभिनंदण वंदण करुं भावशुं, सुमति पदम प्रभु त्रिजगभाण तो ॥ प्र० ॥ २ ॥ श्रीसुपार्श्व जस घणा, चंदा प्रभुजीने सुविधि जिनंद तो ॥ शीतल श्रेयांस गुणधारणा, वासुपूज्य जगगुरु टाल्या भवफंद तो ॥ प्र० ॥ ३ ॥ विमल विमल मति वंदियें, अनंत अनंत गुण सुखनी राश तो ॥ धर्म श्री शांति कुंथु अर, मल्ली जिनंद कियो शिववास तो ॥ प्र० ॥ ४ ॥ श्रीमुनिसुव्रत नमी प्रभु, रिष्टनेमी दयासिंधु दातार तो ॥ पशुकी पुकार सुणी साहिबा, तोरणसुं फिर गया मोक्ष मझार तो ॥ प्र० ॥ ५ ॥ पारस पारस सारिखा, जगत वारस प्रभु परम दयाल तो ॥ श्रीवर्धमान शासन धनी, भक्त-तारक प्रभु जग प्रतिपाल तो ॥ प्र० ॥ ६ ॥ अधम उद्धारण विरुद आपको, जाणिने शरण लियो जगदीश तो ॥ जिम तिम तारो प्रभु मुझ भणी, तिलोकरिख वीनवे पूरा जगीश तो ॥ ७ ॥ प्र० ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ पद सत्तरमुं ॥

॥ गाफल मत रहे रे, मेरी जान ॥ गा० ॥ ए देशी ॥ जपो जिनवर रे मेरि जान, जपो जिनवर रे ॥ जिनवर जप जगतमे सुखदाता, झूठा हे सब जगका नाता ॥ ज० ॥ ऋषभ अजित संभव सुखकारी, अभिनंदन जग जसधारी, सुमतिनाथ सुमति दातारी ॥ पद्मप्रभु सद्म अचल पाया, भया तीन भवन अचल राया ॥ ज० ॥ १ ॥ सुपास आश सब पूरे, चंदा प्रभु संकट चूरे, सुविधि शीतल मोह कियो दूरे ॥ इग्यारमा श्रेयांसनाथ स्वामी,

वासुपूज्य वदू में शिर नामी ॥ ज० ॥ २ ॥ श्रीविमल विमल मतिवता, श्रीअनत धर्म शिवकता, शांति करो शांति महता ॥ कुथु अर कियो कर्म घाणो, केवल लेइ पाया निर्वाणो ॥ ज० ॥ ३ ॥ मल्लिनाथ अनत बलिराया, छहू नृपतिकू प्रभु समझाया, मुनिसुव्रत व्रत सुहाया ॥ एकविशमा नमिनाथ म्होटा, नमता मिटे जन्म मरण दोटा ॥ ज० ॥ ४ ॥ रिष्टनेमी शिवादेवी नदा, जादव कुल-दीपक चदा, चढ्या व्याहन भ्रातके छदा ॥ पशुकी पुकार अवधारी, त्यागी प्रभु राजुलसी नारी ॥ ज० ॥ ५ ॥ पारस करुणाके भडारी, नागनागिणी जलत उगारी, परमेष्टीको शरण उचारी ॥ कमठमद भजण निःशका, दिया प्रभु मुक्तिमाहे डका ॥ ज० ॥ ६ ॥ वर्द्धमान शासन पति स्चा, जग जान लिया प्रभु कच्चा, सजम करणी माही राच्या, केवल लेइ थाप्या तीरथ चारी, मुलकर्म कीर्त्ति अपरम पारी॥ ज० ॥ ७ ॥प्रभु असरण सरण कहाया, जगवत्सल नाम धराया, तिलोकरिख सरण तुम आया ॥ नाथजी में भवभव तुम बदा, मेटो मेरा जनम मरण फदा ॥ ज० ॥ ८ ॥ इति ॥ १७ ॥

॥ पद अढारमु ॥

॥ कुथु जिनराज तु ऐसो ॥ रेखताकी देशीमें ॥ समर जिन नामकू प्यारा, मिटे सब कर्मका भारा ॥ ध्रु० ॥ ऋषभ जिन नाम सुख दाता, दरिसण षटमाही विख्याता ॥ स० ॥ १ ॥ अजित जिनराज गुणवता, सभव जगदीश शिवकता ॥ जय जय जय अभिनदन स्वामी, सुमति पद्मप्रभजी अतरजामी ॥ स० ॥ २ ॥ सुपारस नाथ जसधारी, जिनोंके चरण बलिहारी ॥ चदा प्रभु वदू चद्रवरणा, भवो भव चरणका सरणा ॥ स० ॥ ३ ॥ शीतल श्रेयास जगदीशा, नमू नित्य वासुपूज्य ईशा ॥ विमलमति विमल प्रभु कीजो, अनत सुख अनत नाथ दीजो ॥ स० ॥ ४ ॥ धरम धन धरमनाथ धरता, शातिप्रभु शातिके करता ॥ कुथु अर मल्लि

मल धाया, मेरे प्रभु मुनिसुव्रत भाया ॥ स० ॥ ५ ॥ एकाविंशमा नमिनाथ ध्याउं, चरण पें शीश नमाउं॥ बावीशमा रिष्टनेमी सांई, तारिफ मामुरमुलक ठाई ॥ स० ॥ ६ ॥ त्रेवीशमा पारसनाथ सच्चा, जिनोंका प्रगट हे परचा ॥ सासणपति महावीर बंका, बजे हे आज उनका डंका ॥ स० ॥ ७ ॥ करी प्रभु जबरदस्त करणी, लीनी हे अचल शिवघरणी ॥ प्रभुजी मेरी अर्ज मान लीजो, तिलोकरिख पद्वी मोय दीजो ॥ स० ॥ ८ ॥ इति ॥ १८ ॥

॥ पद ओगणीशसुं ॥

॥ कडखाकीदेशी ॥ वंदूं चोवीश, जिनंद आनंदसुं, तारो कृपाल, करुणा भंडारी ॥ तुम सम और नहिं, ठौर त्रिहुं भुवनमें, जाणीने सरण, लीयो विचारी ॥ वं० ॥ १ ॥ ऋषभ आजित संभव अभिनंदन, सुमतिपदम, सुपार्श्व देवा ॥ चंद्रलच्छन चंद्रवर्ण चंदा प्रभु, भवभव दिजो प्रभु, अचल सेवा ॥ वं० ॥ २ ॥ प्रणमुं पुष्पदंत, शीतल श्रेयांसजिन, वासुपूज्य पूजनिक, जगजन सुहाया ॥ विमल अनंत धर्म, शांतिशांति करो, जक्तनायक जगगुरु कहाया ॥ वं० ॥ ३ ॥ श्रीकुंथु अर मल्लि, श्री मुनिसुव्रत, सुकृत करणी सरल भावें ॥ नमी नेमी श्री पार्श्व महावीरजी, नाम लियां सकल, विघन जावे ॥ वं० ॥ ४ ॥ ईशका ईश, जगदीश चोविस प्रभु, कर्मकाटी काटी, सात्रिमुक्ति पाया ॥ तिलोकरिख बीनती, दरिसण दीजीयें, अचलभक्ति अरु, चरण छाया ॥ वं० ॥ ५ ॥ इति ॥ १९ ॥

॥ पद वीशसुं ॥

॥ प्रभु थारा गुण अनंत अपारा ॥ ए देशी ॥ प्रभुजी थारा चरणको आधार, प्रभुजी थारा धर्मको आधार ॥ध्रु०॥ ऋषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति सुमतिदातार ॥ प्र० ॥ १ ॥ पद्म सुपास चंदा प्रभु समरो, सुचंद्रवदन सुखकार ॥ प्र० ॥ २ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, जगमें कीर्ति अपार ॥ प्र० ॥ ३ ॥ विमल अनंत

धर्म शातीश्वर, शातिकरण ससार ॥ प्र० ॥ ४ ॥ कुथु अर मल्ली मुनिसुव्रतजी, सुव्रतपद दातार ॥ प्र० ॥ ५ ॥ नमी नेमि पारस महावीरजी, सासणपति शिरदार ॥ प्र० ॥ ६ ॥ मुझ सम दीन नहीं कोइ जगमें, तुम सम नहिं को दातार ॥ प्र० ॥ ७ ॥ अधम उद्धारण बिरुद विचारो, करुणानिधि किरतार ॥ प्र० ॥ ८ ॥ तिलोकरिख कहे जिम तिम करिने, कीजा भवजल पार ॥ प्र० ॥ ९ ॥ इति ॥२०॥

॥ पद एकवीशमु ॥

॥ आज भलो दिन उगो जी ॥ भटीयाणी नी देशी ॥ प्रात उठ नित भावेंजी, प्रणमु चोविश जिनदजी, प्रभु करजो भवजल पार ॥ ध्रु० ॥ ऋषभ अजित सुखदाई हो, सभवजगमाइ दीपता, प्रभु अभिनदन हितकार ॥ सुमति सुमतिके दातार हो, जगत्राता पद्म सुपासजी काइ, वछित पूरणहार ॥ प्रा० ॥१॥ चद्रा प्रभु चदवरणा हो सुखकरणा सुविधि जिनेश्वरू, प्रभु शीतल शिवदातार ॥ श्रेयांस वासुपूज्य ध्याउ हो, मनाउ विमल जिनद जी प्रभु, अनत अनत गुणधार ॥ प्रा० ॥ २ ॥ धर्मधर्म धननायक हो, दायक शाति दया करु प्रभु, शाति करी ससार ॥ कुथु अर मल्ली वदु हो, निकदु पातक माहेरा प्रभु, मुनिसुव्रत व्रतधार ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ नामि नेमी जिनराया हो, मनभाया पारसनाथजी, प्रभु पच्चा पूरणहार ॥ महावीर जग डाह्या हो, ताजि माया ममता मोहनी, प्रभु कर्म भर्म किया छार ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ केवलज्ञानज पाया हो, जब आया इद्र उमाव्रसु, कियो मोच्छव हर्ष अपार ॥ हितउपदेश सुणायाजी, जगराया पर उपगारीया, प्रभु, थाप्या तीरथ चार ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ सुगतिनगर सीधाया जी काई, पाया शिर सुखसासता, प्रभु अजर अमर अविकार ॥ तिलोकरिख इम बोले हो, प्रभु खोले आयो आपके, मुझ द्यो अविचल सुखसार ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ इति ॥ २१ ॥

॥ पद बाविशमु ॥

॥ सद्गुरुजी कहे जग सपनां ए ॥ ए देशी ॥ जपो जपो भविक जिन राया, कर्म काटके अमर पदपाया रे ॥ ज० ॥ १ ॥ ऋषभ अजित संभव मन भाया, अभिनंदन वंदूं ननकाया रे ॥ ज० ॥२॥ सुमति पद्म सुपास सुखदाया, चंदाप्रभु चंद वरन सोहाया रे ॥ ज० ॥३॥ सुविधि शीतल श्रेयांस अति डाह्या, वासुपूज्य कर्मरिपु घाया रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ विमल अनंत धर्मधन पाया, शांतिनाथ भविक समझाया रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ कुंथु अर मल्लि मलहठाया, मुनिसुव्रत व्रत दृढ ठाया रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ नमी नेमी पारस सरसाया, महावीर त्रिशलादेवी जाया रे ॥ज०॥७॥ तिलोकरिख प्रभुसरणे चल आया, जिम तिम करि तार महाराया रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ इति ॥ २२ ॥

॥ पद तेवीशमुं ॥

॥ कपूर होवे अतिउजलो जी ॥ ए देशी ॥ प्रणमुं आदिजिनेश्वरू जी, भयभंजण भगवंत ॥ आजितनाथ जीत्या अरि जी, संभव गुण अनंत ॥ जिनेश्वर आपतणो छे आधार ॥ ध्रु० ॥ १ ॥ अभिनंदन आनंदकरो जी, सुमति सुमतिदातार ॥ पदमप्रभु करुणा निधि जी, सुपारस सुखकार ॥ जि० ॥ २ ॥ चंद्रप्रभ चंद्रलच्छना जी, चंदवरण शरीर ॥ पुष्पदंत शीतल नमूं जी, श्रेयां श्रेयांस गुणधीर ॥ जि० ॥ ३ ॥ वासुपूज्य विमल नमूं जी, अनंत अनंत सुखलीन, धर्मनाथ शांतीश्वरू जी, मरीनो रोग शांकीन ॥ जि० ॥ ४ ॥ कुंथु अरजिनवर जपो जी, मल्ली मलमद मार ॥ केवलकमला पाईया जी, मुनिसुव्रत व्रतधार ॥ जि० ॥ ५ ॥ नमी नेमी पारस नमुं जी, चोविशमा वर्धमान ॥ ए चोविशजिन जगगुरु जी, पाम्या अविचल थान ॥ जि० ॥ ६ ॥ तिलोकरिख कर जोडिने जी, वंदे वारम वार ॥ अरज एतिक अवधारजो जी, कीजो भवजल पार ॥जि० ॥ ७ ॥ इति ॥ २३ ॥

॥ पद चोवीशमु ॥

॥ श्रीमुनिसुव्रत साहिव साचो ॥ ए देशी ॥ वदू चोविश जगदीश दयाला, गुणरतनाकर माला रे ॥ जग उद्धारण जगरच्छ पाला, काट्या कर्मका जाला रे॥ व०॥ १ ॥ ऋषभ अजित स भव सुखकारी, अभिनंदन जसधारी रे ॥ सुमति पद्म प्रभुजी उपगारी, चरणसरण बलिहारी रे॥ व०॥ २॥ सुपारस चंदा प्रभु स्वामी, सुविधि शीतल गुणधामी रे ॥ श्रीश्रेयास नमू शिवगामी, जय जय अतरजामी रे ॥ व०॥ ३॥ वासुपूज्य श्रीविमल महंता अनत धरम शिवकंता रे॥ शातिजिनेश्वर शाति करता, किना करम रिपुअंता रे॥ व०॥ ४ ॥ कुंथु अर मल्ली मल घाया, मुनिसुव्रत व्रत डाया रे॥ नमी नेमी पारस भाया, भक्तवत्सल पद पाया रे॥ व०॥ ५॥ श्रीमहावीर सासणपति साचा, भव दुःख भजन जाचा रे ॥ रोम रोममें मन तन राचा, खोटा जगका लाचा रे ॥ व०॥ ६॥ तिलोकरिख कहे अहो जगराया, दुर्लभ दुर्लभ पायारे॥ कुदेव त्यागी तुम शरणे आया, तार तार महारायारे ॥ व०॥ ७॥ इति ॥ २४ ॥

॥ अथ देवगुणस्तवन प्रारभ ॥

॥ देशी बाबा आदमकी ॥ ऐसा जिन ऐसा जिन ऐसा जिन है, ललि ललि वदु सदा निश दिन है॥ ऐ०॥ १॥ एक सहस्र अष्ट लक्षण है, तनकाति झलक ज्यों रतन है ॥ ऐ०॥ २ ॥ जाके परथम सठाण सघयण है, उत्कृष्ट रूप सुवर्ण है ॥ ऐ०॥ ३ ॥ जाण्यो सब अथिर तन धन है, किया सजम लेवनको मन है ॥ ऐ०॥ ४ ॥ एक कोड अठ लख दिन दीन है, देई दान महा तप कीन है ऐ०॥ ५॥ शुकल ध्यानविषे लय लीन है, घनघातिक कर्म छिन है ॥ ए०॥ ६॥ केवल ज्ञान प्रगट्यो तत्क्षण है, सब द्रव्य जाणे भिन्न भिन्न है ॥ ऐ०॥ ७॥ चोतिस अतिशय पेंतिस

वचन है, उपदेश देते भविजन है ॥ ऐ० ॥ ८ ॥ नारी पुत्र जण त कोटीन है, स्वामी सरिखो न ओर नवीन है ॥ ऐ० ॥ ९ ॥ कर्म बंधनकी ज्याकूं धीन है, परमपात्र परम प्रवीन है ॥ ऐ० ॥ ॥ १० ॥ तीर्थ थापे कापे कर्मवन है, प्रभु पहुंचे अचल भवन है ॥ ऐ० ॥ ११ ॥ अजर अमर अविनाशी पद लीन है, जन्म मरण किया पर क्षीन है ॥ ऐ० ॥ १२ ॥ अयवंता रिखजि महाराज मया कीन है, ऐसा देव लिया मेनें चिन है ॥ ऐ० ॥ १३ ॥ तिलोक रिख कहे प्रभु धन धन है, ऐसा देव वसे मेरे मन है ॥ ऐ० ॥ १४ ॥ इति ॥२५॥

अथ गुरुगुण स्तवन प्रारंभः ॥

॥ देशी एहीज ॥ ऐसा गुरु ऐसा गुरु ऐसा गुरु है, रहे कनक कामिनीसे दूर है ॥ ऐ० ॥ ॥ ज्ञान ध्यानमें रहे भरपूर है, वीतराग शरण सदा उर है ॥ ऐ० ॥ २ ॥ आठुं कर्मकी फौज करूर है, सो तप जपसें करे चक चूर है ॥ ऐ० ॥ ३ ॥ नहिं क्रोध कपट मगरूर है, विषय मदन किया चक चूर है ॥ ऐ० ॥ ४ ॥ त्यागे पाप अठारा जे क्रूर है, बोले निरवद्य वचन मधुर है ॥ ऐ० ॥ ५ ॥ नर पशु ओर सुर असुर है, सहे परिसह सकल सखा शूर है ॥ ऐ० ॥ ६ ॥ शील समकित धन भरया भूर है, दूर होत कर्मरूपी धूर है ॥ ऐ० ॥ ७ ॥ सझाय रूप वजे रणतूर है, कीर्त्तिरूप नौवत रही घूर है ॥ ऐ० ॥ ८ ॥ नही माने विकथा मजकूर है, जे जिनागमकु करे मंजूर है ॥ ऐ० ॥ ९ ॥ संसार माने सो क्षणभंगूर है, जाणे धर्म थिर सदा मशहूर है ॥ ऐ० ॥ १० ॥ मिथ्यामत माने फितूर है, नय तत्त्व पेछाने चतुर है ॥ ऐ० ॥ ११ ॥ भविजन मन भावे जरूर है, नहिं वंदे सोई बे शहूर है ॥ ऐ० ॥ १२ ॥ अयवंतारिखजी महाराज हजूर है. मैनें जाण्यो धर्मको अंकुर है ॥ ऐ० ॥ १३ ॥ तिलोकरिख कहे जे

सतगुरु है, सदा बदणा उगता सूर है॥ ऐ० ॥ १४ ॥ इति ॥२६॥

॥ अथ धर्मवर्णन स्तवन प्रारभ ॥

॥ देशी एहीज ॥ ऐसा धर्म ऐसा धर्म ऐसा धर्म है, जिणसें मिटत सकल भयभर्म है ॥ ऐ० ॥ १ ॥ सब जीव चाहे शाता परम है, नहिं दे परकु परिश्रम है ॥ ऐ० ॥ २ ॥ नहिं भाखे मृषा को मरम है, टाले चोरी पाले व्रत ब्रह्म है ॥ ऐ० ॥ ३ ॥ टाले ममता छल रहे नरम है, नही राग द्वेष नहिं गरम है ॥ ऐ० ॥ ४ ॥ कलहो कलक चाडीसुबधे कर्म है, परिहर सुगुणी राखे शरम है ॥ ऐ० ॥ ५ ॥ श्रीजिन आज्ञाके माही धर्म है कोइ बुध जनकु महेरम हे ॥ ए० ॥ ६ ॥ पाले धर्म होवे अकरम है, केवल लेई भया भव चरम है ॥ ऐ० ॥ ७ ॥ तिलोकरिख कहे सिद्ध परिब्रह्म है, गुरु महेरसु हुवो महेरम है ॥ ऐ० ॥ ८ ॥ ॥ इति ॥२७॥

॥ अथ जिनगुणविस्मयस्तवन प्रारभ ॥

॥ मेरी मेरी करता जनम गयो रे ॥ ए देशी ॥ अहो प्रभु तुम गुण अचरिज आवे, कहेता सुरगुरु पार न पावे ॥ अ० ॥ १ ॥ तुम सहु जाण कहे जग माइ ॥ जीवकी आदि सो कछु न बताई ॥ अ० ॥ २ ॥ जगत कहे देखे सब स्वामी, स्वपनु नहि देखो शिवगामी ॥ अ० ॥ ३ ॥ वेदो नहिं सुख दु ख जग जाणे, सुख अनत सिद्धात बखाणे ॥ अ० ॥ ४ ॥ तुम बीतराग दशा सदा पावे, आराध्या विण कोइ मोक्ष न जावे ॥ अ० ॥ ५ ॥ निगुणा पर नहि द्वेष तुमारो, आज्ञा नही माने तो भमत ससारो ॥ अ० ॥ ६ ॥ पच्चक्खाण तो प्रभु एक न काइ, आश्रव नहिं लागे तुम ताइ ॥ अ० ॥ ७ ॥ आउखा कर्मको बधन नाइ, अनत कालकी थिरथिति पाइ ॥ अ० ॥ ८ ॥ नाम करम क्षय करि शिववासो, नाम लिया सब विघन विनासो ॥ अ० ॥ ९ ॥ गोत्र

करम तुमने नहि देवा, गोत्र संभालि करे जन सेवा ॥ अ० ॥ १० ॥ अंतराय करि दुरि थां सांइ, नूंतन लाभ दिसे नहिं कांइ ॥अ० ॥ ११ ॥ करुणासागर जगमें कहावो, करम रिपु सब दूर भगावो ॥ अ० ॥ १२ ॥ परिग्रह नहिं तुमने जग दाखे, जगनायक कहे आगम साखें ॥ अ० ॥ १३ ॥ कामिनी त्रिविध त्रिविध तुम त्यागी, शिवरमणी पति कहे जगरागी ॥ अ० ॥ १४ ॥ तिलोकरिख लियो शरण तुमारो, अधम उद्धारण बिरुद विचारो ॥ अ० ॥ १५ ॥ मुझ अवगुण प्रभु दूर निवारो, जेम तेम करि भव पार उतारो ॥ अ० ॥ १६ ॥इति॥२८॥

॥ अथ उपदेश स्तवन पद पहेलुं प्रारंभ ॥

॥ समज समज गुणवंत सयाणां, कर ले सुकृत प्रभुका गुण गाणां ॥ स० ॥ १ ॥ काल अनंत भम्यो चउ गतिमें, राच्यो नहिं तुं श्रीजिनमतमें ॥ स० ॥ २ ॥ गर्भवासमें बहुत दुःख पायो, नवमास लुं उंधो लटकायो ॥ स० ॥ ३ ॥ जन्म भयो विसरयो दुःख सारा, खावण पीवण प्रेम अपारा ॥ स० ॥ ४ ॥ बालपणुं हसि खेल गमायो, धर्म ध्यान कछु दाय न आयो ॥ स० ॥ ५ ॥ जोबन वयमांहि पाप कमायो, भोग विलासविषे ललचायो ॥ स० ॥ ६ ॥ निशिदिन हाय करे धन केरी, देश विदेश देवे घणि फेरी ॥ स० ॥ ७ ॥ भूलो कहे माया मेरी या मेरी, तेरे कहे कछु होत न तेरी ॥ स० ॥ ८ ॥ बाप दादा सबही गये छंडी, किसविध आश करे तुं घमंडी ॥ स० ॥ ९ ॥ मुष्टि बांधके जन्म तुं पायो, हाथ पसारके आगें सिधायो ॥ स० ॥ १० ॥ कर कर खोटा धंदा धन जोडे, धर्मकरणीसुं प्रीती क्युं तोडे ॥ स० ॥ ११ ॥ पिप्पलपान संझाका उजासा, बादल छाय सुपन धन आशा ॥ स० ॥ १२ ॥ देहसुं ममत करे तुं घणेरी, होवे घडीकमें राखकी ढेरी ॥ स० ॥ १३ ॥ पल पल आयु घटे नर तेरो, पाप कमायासुं

नरकमें डेरो ॥ स० ॥ १४ ॥ देव निरंजन भक्ति करीजें, गुरु निर्ग्रंथके नित्य नमीजें ॥ स० ॥ १५ ॥ धर्म दयामें हे सुखदानी, ए तीन तत्त्व लो न्याय पीछाणी ॥ स० ॥ १६ ॥ मिथ्या भर्म कर्म सब छंडो, छकाय जीव भणा मन दंडो ॥ स० ॥ १७ ॥ तिलोकरिख कहे सुणो नर नारी, इण भव जस आगें सुख भारी ॥ स० ॥ १८ ॥

॥ पद बीजु ॥

॥ देशी एहीज ॥ गफलतमें मत रहे रे दिवाना, जीव चिडा यमराज सिचाना ॥ ग० ॥ १ ॥ रात दिवस करता नित धधा, जाणके होय रह्या क्रैसें अधा ॥ २ ॥ ग० ॥ जैसें त्तित्तरकु बाझ झपटे, मुसकुको ज्यों माजर गटके ॥ ३ ॥ ग० ॥ कुरगको सिंह ज्यों पकड विदारे तैसेंही प्राणीकु काल प्रहारे ॥ ४ ॥ ग० ॥ मात पिता तिरिया सुत सारा, मरण आया नहिं राखणहारा ॥ ५ ॥ ग० ॥ सात कोट भूतल धसि जावे, जहा पण यम आयके गटकावे ॥ ६ ॥ ग० ॥ हरि हर इद्र चद्र नर राया यमकी त्रासेंसे सब घवराया ॥ ७ ॥ ग० ॥ जिण घर हय गय लक्ष चोराशी, वे पण हो गये मसाणके वासी ॥ ८ ॥ ग० ॥ छप्पन कोडिके नाथ कहाया, पाणी विना वनमे मरण पाया ॥ ९ ॥ ग ॥ काहेकु तु करता अकडाइ, देख तु दादा पडदादाके ताइ ॥ १० ॥ ग० ॥ केइ चल्या केइ चालणहारा, क्यु न हुशियार होवे तु गमारा ॥ ११ ॥ ग० ॥ दिन दिन चलणो निकट जो आवे, काल अचानक झपट ले जावे ॥ १२ ॥ ग० ॥ धन दौलत और माल खजाना, छेरट छोड अकेला सिधाणा ॥ १३ ॥ ग० ॥ धन कमाया सो पाछला खावे, कर्ममें कोय न पाति पडावे ॥ १४ ॥ ग० ॥ घेवर सो तो जमाइने खाया, केदखानामें मोदी दु ख पाया ॥ १५ ॥ ग० ॥ दो कोसाके आतरे जावे, तो पण

खरची साथ ले सिधावे ॥ १६ ॥ ग० ॥ परभव नो निश्चय तुझ जाणो, क्युं नहिं लेव तुं धर्मको नाणो ॥ १७ ॥ ग० ॥ सद्गुरु चोकिदार चेतावे, सुकृतसोदा तेरे संग आवे ॥ १८ ॥ ग० ॥ ओगणीसें गुणचालिस मझारो, मगशिर शुदि अष्टमी चंद्र वारो ॥ १९ ॥ ग० ॥ शहेर सतारो दक्षिणमांइ, तिलोकरिख केहे चेतजो भाई ॥ २० ॥ ग० ॥

॥ अथ उपदेशीफटको स्तवन प्रारंभः ॥

॥ चाल एहीज ॥ धिक तेरा जीवडा, न करता धरमकुं ॥ धिक तेरा तन मन, धिक हे जनमकुं ॥ धि० ॥ १ ॥ रत्नचिंतामणि जन्म जो नरको, खोय दियो जेसें भव तेने खरको ॥ धि० ॥ २ ॥ नीचकुं देखिकें शिश नमावे, संतकुं देखि अधिक अकडावे ॥ धि० ॥ ३ ॥ धर्मकथा कछु दाय न आवे, जो सुण तो झुकझुक झोला खावे ॥ धि० ॥ ४ ॥ इष्कका ख्याल राग अनुरागें, धक्का खाय तोहि धसे आगें ॥ धि० ॥ ५ ॥ नाटकमें उभा रहे रात सारी, मुनिदरसण आलस अति भारी ॥ धि० ॥ ६ ॥ तप जप वातमें पट नट जावे, खाणेमें लोटी लेई झट जावे ॥ धि० ॥ ७ ॥ स्तवन सझाय केहेतां शरमावे, लडतां तो कछु दाय न आवे ॥ धि० ॥ ८ ॥ दान देतां थरथर कर धूजे, हिंसा करणमें कर अति जूझे ॥ धि० ॥ ९ ॥ लोभ कारण करे अति नरमाई, सहधर्मीसुं करे गुसराइ ॥ धि० ॥ १० ॥ पापकरणीमें मन उल्लसावे, धर्मक्रियामें न चित्त लगावे ॥ धि० ॥ ११ ॥ क्रोध मान तृष्णा छल भारी, दान शीयल तप भाव विसारी ॥ धि० ॥ १२ ॥ पाप करणमें जोर जणावे, धर्म उद्यममांहि कायर थावे ॥ धि० ॥ १३ ॥ परख नहिं देव गुरु धर्म केरी विणजमें द्रष्टि पहोंचावे घणेरी ॥ धि० ॥ १४ ॥ जीवदयामें खरचतां रोवे, जस शोभामें निर्थक धन खोवे ॥ धि० ॥ १५ ॥

निंदा विकथामें निशदिन रातो, गुणिजनका गुण सुणी अकलातो ॥ धि० ॥ १६ ॥ कर्मवधनकी शिख सुणि राजी, धर्मशिक्षा सुणि अधिक नाराजी ॥ धि० ॥ १७ ॥ पापीकु आदर देकें बिठावे, धर्मीकु देख अधिक घुररावे ॥ धि० ॥ १८ ॥ पापथी परचो दयाथकी दूरो, धर्ममें पाछो कर्ममाही शूरो ॥ धि० ॥ १९ ॥ परदुःख देखीने अति हरखावे, निज सपत्तसें अधिक धोमावे ॥ धि० ॥ २० ॥ बबुल बोय आमफल चहावे, विष भक्षण करि जीवणो चहावे ॥ धि० ॥ २१ ॥ पच पच खोय दीयो भव सारो, तेलीका बेल ज्यु हार्यो जमारो ॥ धि० ॥ २२ ॥ निशदिन हाय हाय धन धनकी, लाज नहीं परभव गुरुजनकी ॥ धि० ॥ २३ ॥ धोबीका श्वान ज्यु कहे धन मेरो, सोचे न छेवठ नरकमें डेरो ॥ धि० ॥ २४ ॥ इहा अपजस आगें जस भारी, धर्म बिना भव भवमें खुवारी ॥ धि० ॥ २५ ॥ जेसा जाया तेसा सिधाया, धिक जननी जिणें गोद खिलाया ॥ धि० ॥ २६ ॥ ओगणिशें अडातिस माहावदि जाणो, चौथ तिथि रवि वार वखाणो ॥ धि० ॥ २७ ॥ तिलोकरिख कहे आवलकोटी माइ, इम सुणी करजो थे धर्म कमाई ॥ धि० ॥ २८ ॥ इति ॥

॥ पद बीजु ॥

॥ उपदेशमें सुलट ॥ देशी एहीज ॥ धन तेरा जीवडा, नित करता धरमकु ॥ धन तेरा तन मन, धन हे जनमकु ॥ १ ॥ रत्न चिंतामणि नरभव पाई, धर्मचिंतामणि ले उलसाई ॥ २ ॥ मिथ्यात्वी नरकु नहिं सरसावे, धर्मीकु देख अधिक हरखावे ॥ ३ ॥ धर्मकथा सुणवा चित्त चहावे, सुण कर सार ग्रही उलसावे ॥ ४ ॥ तप जप किरियामें रहे अगवानी, पुद्गल पर कछु ममता न आणी ॥ ५ ॥ ख्याल नाटकमें कबहू न जावे, मुनि दारसण आलस नहिं लावे ॥ ६ ॥ प्रभुगुण गावता अधिक गुजावे, क्रोध कलेश थकी

शरमोव ॥ध०॥७॥ दान देवे नित उलट परिणामें, थर थर धूजे सो हिंसाके कामें ॥ध०॥८॥ पापका काममें डर अति आणे, धर्मको काम सदा भलो जाणे ॥ध:॥९॥ क्रोध मान तृष्णा छल त्यागे, दान शीयल तप भावमें आगे ॥ध०॥१०॥ पापका काममें निर्वल अंग, धर्मका काममें शूरपणुं रंगे ॥ध०॥११॥ सत्यपक्षकी प्रतीत जो आणे, झुठको पक्ष रति नहीं ताणे ॥ध०॥१२॥ जीव दया धन खरचण जाणे, लाभ अनंत हिये इम ठाणे ॥ध०॥१३॥ न करे निंदा विकथा सुणे नांई, गुणि-जननां गुण सुणि उल्लसाई ॥ ध० ॥ १४ ॥ कर्मबंधणकी शीख न धारे, धर्मशिक्षा सुखदायी विचारे ॥ध०॥१५॥ पापीसुं प्रीति न राखे कदाई, धर्मीकुं आदर दे अधिकाई ॥ध०॥१६॥ धरमसुं परचो पापथी दूरो, कर्ममें पाछो सो तप जप शूरो ॥ ध० ॥ १७ ॥ पर दुख देखि अणुकंपा घणेरी, मगरूरी करे नहीं निज सुख केरी ॥ ध० ॥ १८ ॥ आमके बोय आम फल चहावे, ऐसे गुणीसों कदि न ठगावे ॥ध०॥१९॥ निशिदिन बंछना धर्म मरम की, लाज घणी परभव गुरुजनकी ॥ध०॥२०॥ धन कुंटुंब तन नहीं जाणे मेरो, जाणे जैनधर्म सहायक तेरो ॥ध०॥२१॥ इणभव शोभा आगे सुख भारी, कर्मशत्रु हाणि वरे शिवनारी ॥ध०॥२२॥ नरभव पायके धर्म कमाया, धन जननी जिणें गोद खिलाया ॥ध०॥२३॥ तिलोकरिख कहे हित उपदेशो, इम सुणि करजो थें धर्म हमेशो ॥ ध० ॥ २४ ॥ इति ॥

॥ पद त्रीजुं ॥

॥ देशी एहीज ॥ देखि बदन गोरा, क्यों तुं भुलाना, रंग पतंग जिम संझा फुलानां ॥ दे० ॥ १ ॥ हाडका पिंजर चाम मढानां, भिंतर दुर्गधका भरा है खजाना ॥ दे० ॥ २ ॥ कच्चा घडामांहि पानी भराना, टूटे अचानक पींपल पाना ॥ दे० ॥ ३ ॥ तैसा बदन तेरा है रे दिवाना, देत दगो यह क्यों तुं लुभाणा ॥ दे० ॥ ४ ॥ निशिदिन मांगे यह खानांहि खानां, देत नहिं तब करत हैराना

॥ दे० ॥ ५ ॥ तेने तो इसकू मेरा करी माना, कर कर हिंसा तु देत हे खाना ॥दे०॥६॥ ए दगादार महा दु खदाना, छेवट निकाले अकेला ही जाना ॥ दे० ॥ ७ ॥ तिलोकरिख कहे समज सयाणा, तप जप करकें लहे निर्वाणा ॥ दे० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ पद चौथु ॥

॥ देशी एहीज ॥ एक दिन एसा बीतेगा सकलमें, कर ले सुकृत तु सोच अकलमें ॥ ए० ॥ १ ॥ ककर चुन चुन महेल वनाया, उनका मसाणमें वास वसाया ॥ ए० ॥ २ ॥ जिणके धन होतो केई कोडी, उनके सग गइ नहीं एक कोडी ॥ ए० ॥ ३ ॥ केइ कोडी दल लाखोही हाथी, वे पण नगे गये नहिं साथी ॥ ए० ॥ ४ ॥ हरि हलधर चक्री नर राशी, छेवट सवहीं मसाणके वासी ॥ ए० ॥ ५ ॥ जमका लश्कर जब चढि आवे, ततक्षण हस कूच कर जावे ॥ ए० ॥ ६ ॥ श्वास रहे जवहीं लग आशा, श्वास गया तव होत निराशा ॥ ए० ॥ ७ ॥ मात पिता सुत बधव नारी, रुदन करे मतलव परिवारि ॥ ए० ॥ ८ ॥ गहेणा आभूपण लेव उतारी, मतलबकी जगमें सब यारी ॥ ए० ॥ ९ ॥ आठ हाथ को कपडो मगाई, ओढाय सिढींमें दे पधराई ॥ ए० ॥ १० ॥ चार जणा लेवे खाधे उठाई, कोइ रोवे कोई हरखाई ॥ए०॥ ११ ॥ पलग उपर जे सोते सदाई, उनकु लकड चुण देवे जलाई ॥ ए० ॥ ॥ १२ ॥ हाड लकडकें सज्यो घास पूलो, होवे भस्म तु कहिंयें भूलो ॥ ए० ॥ १३ ॥ स्नान करी सब घर चल आवे, कोई कीसिके सग न जावे ॥ ए० ॥ १४ ॥ दो दिन याद करे उस नरकें बरस छ मासमें जाय विसरकें ॥ ए० ॥ १५ ॥ पाती करकें, सजन धन खावे, पाप कमाया तेरे सग आवे ॥ ए० ॥ १६ ॥ ए जगका सब झूठा हे नाता, क्यु तु कमावत कर्मका खाता ॥ ए० ॥ १७ ॥ जो इस जगमें देहज धारी, छेवट जल वल होवेगा

क्षारी ॥ ए० ॥ १८ ॥ ओगणिशें गुणचालिश मागशिर सो, तिथि इग्यारस पक्ष उजासो ॥ ए० ॥ १९ ॥ तिलोकरिख कहे सतारा मझारो, करी उपदेशी भविक हित कारो ॥ ए० ॥ २० ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ पद पांचमुं ॥

॥ देशी एहीज ॥ धर्म कर्मका मर्म न जाणा, जिनका जन्म जैसा पशुके समाना ॥ १ ॥ सुकृत दुःकृत भेद न जाना, जीव अजीव कछु न पिछाना ॥ २ ॥ पुण्यपापकी परख न कांई, आश्रव संवर समज न आई ॥ ३ ॥ निर्जरा बंध मोक्ष पद जाणी, खवर नहिं कछु श्रीजिनवाणी ॥ ४ ॥ कौन है साधु असाधु है कैसा, इह भव परभव नहिं को अंदेसा ॥ ५ ॥ निशि दिन पाप करे निःशंका, साधुकुं देख होवे बडा वंका ॥ ६ ॥ धर्मकी शिक्षा जो दरसावे, हडक्या श्वान ज्युं काटण धावे ॥ ७ ॥ आप बडाई निंदा करे परकी, देखे नही करणी निजघरकी ॥ ८ ॥ हाय हाय करी जन्म गमावे, करके कुकर्म नंहिं पछतावे ॥ ९ ॥ ममत करे तन सज्जन धनकी, खबर नाहिं कछु अपने वतनकी ॥ १० ॥ सींग पुंछकी रहि हिणताई, डाढी मूंछकी भइ अधिकाई ॥ ११ ॥ नरभव पायकें दान न दीनो, तप जपको कछु काम न कीनो ॥ १२ ॥ संतकुं देखिकें शीश न नमाया, जीभसुं प्रभु गुण नाहिं गाया ॥ १३ ॥ कानसुं सूत्रकी सुणि नाहिं वाणी, नेत्रसुं मुनिदरिसण नाहिं जाणी ॥ १४ ॥ धरणीके भारें भारी अधिकाई, फिट फिट जननीकी कूख लजाई ॥ १५ ॥ ऐसा प्राणी चउगतिमांहे भटके, वडवागुल ऊंधे मुख लटके ॥ १६ ॥ पावे सो दुः अनंत आपारा, बांध लिंया संग पापका भारा ॥ १७ ॥ तिलोकरि जी सताराके मांही, धर्म कियां होवे सु सदाई ॥ १८ ॥

॥ अथ चतुर्विंशतिजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ बाजुबंध बिसर गई कंगनां ॥ ए देशी ॥ नमो रे

भविक प्रभुचरणा, मिट जावे सकल दुःख मरणा रे ॥ न० ॥ १ ॥ आदि अजित संभव हित करणा, अभिनंदन सुमति शुद्ध धरणा रे ॥ न० ॥ २ ॥ श्रीपद्म सुपासजी उच्चरणा, चंद्रप्रभजी लछन चंद्रवरणा रे ॥ न० ॥ ३ ॥ सुविधि शीतल अताप दुःख हरणा, श्रेयांस वासुपूज्य शरणा रे ॥ न० ॥ ४ ॥ होय विमल जपत भय टरणा, अनंत धरम मेटे भवफिरणा रे ॥ न० ॥ ५ ॥ शांति कुंथु अर किया न्याय निरणा, मल्ली मुनिसुव्रतजी स्मरणा रे ॥ न० ॥ ६ ॥ नमि नेमि पारस करि अहि करुणा, महावीरजी चरणे शीश धरणा रे ॥ न० ॥ ७ ॥ तिलोकरिख कहे जो दुःख हरणा, तो समरो प्रभु तारणतरणा रे ॥ न० ॥ ८ ॥ इति स्तवन ॥

॥ अथ देवआश्रयी पद प्रारंभ. ॥

॥ नमो नमो रे देव अरिहंता, प्रभु शिवरमणीके कंता रे ॥ न० ॥ ॥ १ ॥ घनघातिक करम सब हंता, सब जाणत केवल वंतारे ॥ न० ॥ २ ॥ जे अतिशय चोतिस सोहंता, प्रभु तीन भवनमें महंता रे ॥ न० ॥ ३ ॥ एक योजन वाणी वागरंता, चार तीरथ थापना करता रे ॥ न० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख मन तनसें नमता, सेवा दीजो सदाई भगवंता रे ॥ न० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ गुरु आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ सतगुरुजी जपो रे मेरे भैया, जे भवजल पार करैया रे ॥ स० ॥ १ ॥ सतगुरुजी हे नाव खेवैया, परने तारत आप तरैया रे ॥ स० ॥ २ ॥ गुण सत्ताविंशके धरैया, सत्यमधुर वाणीके उच्चरैया रे॥स० ॥ ३ ॥ विषय कषायकी अगन बुझैया, वे तो ज्ञानको जल वरसैया रे ॥ स० ॥ ४ ॥ गुरु जोगें अनंत शिव लैया, सब सूत्रमें न्याव चेतैया रे ॥ स० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे गहि वैया, सो तो अविचल वास वसैया रे ॥ स० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ धर्म आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ धर्मरूपी वणाय लो नैया, मानो सानो रे शीख मेरी भैया रे ॥ ॥ ध० ॥ १ ॥ संतोषका पाटिया जमैया, क्षमाकी मेख लगैया रे ॥ ध० ॥ २ ॥ पंच आश्रव द्वार बुरैया, करो चाटु वैराग सोहैया रे ॥ ध ॥ ३ ॥ सतगुरुजी हे चतुर खेवैया, पर तारे और आप तरैया रे ॥ ध० ॥ ४ ॥ भवोदधिसूं तरणकी जो चैया, तिलोकरिख कहे धर्म गहैया रे ॥ ध० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ ज्ञान आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ करो ज्ञान दीपक अजवालो, जिणसुं मिटत अज्ञानको कालो रे ॥क० ॥ १ ॥ पहेली उंघ आलसकुं टालो, छोडो विकथा रसको प्यालो रे ॥ क० ॥ २ ॥ करो सुगुरु सेव विशालो, सूत्रसंधिसुं खोल देवे तालो रे ॥ क० ॥ ३ ॥ कुमति कलेश कषायकुं थें बालो, जाणपणा विना किरिया वेथालो रे ॥ क० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे ज्ञान गुणिमालो, वेगी लहेगा मुक्तिको मालो रे ॥क०॥

॥ अथ सम्यक्त्व आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ शुद्ध समकित व्रत रस राचो, जैन येन विना केन सब काचो रे ॥ शु० ॥ १ ॥ सच्चा देव गुरु धर्म परख जाचो, खोटो पक्ष सो मत ंचो रे ॥ शु० ॥ २ ॥ नित्यप्रतें जैन श कुं बांचो, वली सुणके लगावो तन आंचो रे ॥ शु० ॥ ३ ॥ इणसुं सिवीजें कालको डाचो, छुटे अनंत भव सरधा साचो रे ॥ शु० ॥ ४ ॥ इण बिना चारी गतिमें नाचो, नहीं छुटो कर्मको लाचो रे ॥ शु० ॥५॥ तिलोकरिख कहे समकित माचो, कुमति लता जड टांचो रे॥शु०॥६॥

॥ अथ चारित्र आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ पालो पालो रे संजमकी किरिया, जिणथी जीव अनंताहि तिरिया रे ॥ पा० ॥ २ ॥ पंच माहाव्रत भावें उच्चरियां, रहो पाप कर्मसूं टरिया रे ॥पा० ॥ ३ ॥ पंच आश्रवद्वारकु बुरियां, राग द्वेष

शत्रु सब चूरिया रे ॥ पा० ॥ ३ ॥ जो सजम करणीथकी डरि या, सो तो चार गति मांहे फिरिया रे ॥ पा० ॥ ४ ॥ ऐसो जाणके सजम आदरिया, सो तो अनत गुणाका हे दरिया रे ॥ पा० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे परहित धरिया, पुण्यजोगसु मिलि एह विरिया रे ॥ पा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ तप आश्रयी पद प्रारभ ॥

॥ तुम तपस्या करो भव प्राणी, शम दम उपशम चित्त आणी रे ॥ तु० ॥ १ ॥ कर्म धान्य पिसणकु ए घाणी, मोह अटवीके आग लगाणी रे ॥ तु० ॥ २ ॥ अहकार पर्वत दु.खखाणी, तपस्या सो वज्र समाणी रे ॥ तु० ॥ ३ ॥ भव ताप बुझावण पाणी, करे सकल कलेशनी हाणी रे ॥ तु० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे तप सुखदाणी, जो करे सो वरे शिवराणी रे ॥ तु० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ क्रोध आश्रयी पद प्रारभ ॥

॥ मटो मेटो रे भविक जन लाली, जिनसु रहोगे सदाइ खुशि याली रे ॥ मे० ॥ १ ॥ पेली देवें निज आत्मा बाली, पिछें दु जाने देवे प्रजाली रे ॥ मे० ॥ २ ॥ यातो धर्मतरु छेदन वाली, जगमें रीश बडी हे जजाली रे ॥ मे० ॥ ३ ॥ ऐसी जाणकें देवणी नाहिं गाली क्षमा जाणजो सदा हितवाली रे ॥ मे० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे क्षमा धर्म झाली, गया शिवमदिर सुवि-शाली रे ॥ मे० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ मानआश्रयी पद प्रारभः ॥

॥ मत करो रे चतुर अभिमाना, अत दावे तो परभव जानां रे ॥ म० ॥ १ ॥ फूल फूले सो देख कुमलाना, जो बध्या सो तो विखराना रे ॥ म० ॥ २ ॥ थिर नहिं इद्र चद्र रवि भाना, थिर नहि हे जगमें राजा राणा रे ॥ म० ॥ ३ ॥ ऐसी समजकें दिल नरमाना, नित गुणिजनके गुण गाना रे ॥ म० ॥ ४ ॥ तिलो-

करिख कहे सुणजो शहाणा, विनय कियासुं पद निर्वाणा रे ॥ म० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ कपट आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ छोडो छोडो रे कपटकी कतरणी. या तो धर्म डेराकी छिन करणी रे ॥ छो० ॥ १ ॥ या तो नरकनिगोदकी निसरणी, या तो धूर्त लोभीके घर घरणी रे ॥ छो० ॥ २ ॥ या तो अंतरका शल्य जैसी वरणी, या तो देवे भवोभव दुःख अरणी रे ॥ छो० ॥ ३ ॥ या तो दुःख देवावे वैतरणी, या तो शिवपुर सुखकी हरणी रे ॥ छो० ॥ ४ ॥ तिलोकारिख कहे कपट न करणी, जो थाने शिववधु वरणी रे ॥ छो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ मायाआश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ मत कहो रे चतुर माया मेरी, या तो पुण्य जिहां लगे ठैरी रे ॥ म० ॥ १ ॥ जब वीत जावे पुण्यकी लहेरी, तब राखि रहेगी नहि तेरी रे ॥ म० ॥ २ ॥ या तो साथी नहिं छे किण केरी, भाग्य विना मिले नहिं हेरी रे ॥ म० ॥ ३ ॥ चार रोजकी चांदणी गहेरी, छेवट रयण अंधेरी रे ॥ म० ॥ ४ ॥ या तो ज्युं ज्युं भेलि होवे गहेरी, त्युं त्युं तृष्णा वधे बहु तेरी रे ॥ म० ॥ ५ ॥ जाणो नरक निगोदकी या सेरी, ऐसी जाणकें ल्यो तृष्णा थें केरी रे ॥ म० ॥ ६ ॥ तिलोकरिख कहे उपदेश किया भेरी इसकी संगत जा शिवशेरि रे ॥ म० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ उपदेशआश्रयी पद पहेलुं प्रारंभः ॥

॥ मानो मानो रे सुगुरुका कहेनां, जिणसें पावोगा अमर सुखचेना रे ॥ मा० ॥ १ ॥ मिथ्या धर्म जाणे सच फैना, खोल देखो थें अंतर नैनां रे ॥ मा० ॥ २ ॥ करो छकाय जीवकी जयणा, बोले मधुरता निरवद्य वेणां रे ॥ मा० ॥ ३ ॥ बिनादिया किसीका नहि लेणां परत्रिया गिणो माई बेनां रे ॥ मा० ॥

४ ॥ अति तृष्णा करो मति सेणा, चाडि चुगली आल नहिं देणा रे ॥ मा० ॥ ५ ॥ सजम आदरकें परिसह सहेणा, तिलोकरिख कहे प्रभु सरणे रहेणा रे ॥ मा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ उपदेशी पद वीजु ॥

॥ भोर भइ रे वटाउ जागो जागा, थाने जाणो देशावर आघो रे ॥ भो० ॥ चले सग चतुरको सागो, जिणसु रहे मति पाछो आघो रे ॥ भो० ॥ २ ॥ ले ले खरची आगें नहिं थागो, जिनसें लागें नहिं दु खदाघो रे ॥ भो० ॥ ३ ॥ पच ठगाणि सु मति करे रागो, वश पडियासु करदेशी नागो रे ॥ भो० ॥ ४ ॥ तिलोक रिख कहे मोहनिंद त्यागो, उवट छोडकें शिवपथ लागो रे ॥ भो० ॥ ५ ॥

॥ उपदेशी पद त्रीजु ॥

॥ चेतो चेतो रे चतुर जग खोटा, करो धर्मध्यान फल महोटा रे ॥ चे० ॥ १ ॥ धर्म विना भमेगा दडि दोटा, सहेगा नरक विषे जम साटा रे ॥ चे० ॥ २ ॥ नहि मिले पापीने पूरा रोटा, पाणी पिवणका मिले नहिं लोटा रे ॥ चे० ॥ ३ ॥ भेलो करे नर धन केइ कोटा, तोइ तृष्णावत मन टोटा रे ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे ले लो धर्म ओटा, तो मिट जावेगा जमचोटा रे ॥ चे० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ काल आश्रयी पद प्रारभ ॥

॥ काटो काटो रे कालकी फासी, रहो रहो जगतसें उदासी रे ॥ का० ॥ १ ॥ काल रिपु तुझ पर चड आसी, ऐसी ठोर नहिं जहा लुक जासी रे ॥ का० ॥ २ ॥ इद्र चद्र असुर सुरराशि, जो उपजे सो सकल विनाशी रे ॥ का० ॥ ३ ॥ तु तो चार दिवसको है वासी, कर्म करेगा जैसी गति पासी रे ॥ का० ॥ ४ ॥ भय मरणको मनमें विमासी, करो सुकृत सौदा उल्लासी रे ॥ का० ॥ ५ ॥ जो मोहनी कर्म खपासी, तिलोकरिख कहे काल नहिं खासी रे

॥ का० ॥ ६ ॥

॥ अथ धर्म आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ रहो रहो रे धरम धन तसीया, जो थें शिवरमणीका रसिया रे ॥ र० ॥ १ ॥ राखजो थें तन तनके कसिया, शुद्ध समकित व्रतमें ठसिया रे ॥ र० ॥ २ ॥ राग द्वेष जगत जन डसिया, भविजन सो तो दूर नसिया रे ॥ र० ॥ ३ ॥ काम क्रोध ठगोमें जे फसिया, सो तो अचल दुकानसुं चासिया रे ॥ र० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे जे धर्म वसिया, सोवे शिवसजमें उल्लसिया रे ॥ र० ॥ ५ ॥

॥ अथ उपदेश आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ चेतो चेतो रे कुटुंवके विगारी, जाणो मतलबकी जग यारी रे ॥ चे० ॥ १ ॥ मात पिता सुत बंधव नारी, तुं जाणी रह्यो दिल झारी रे ॥ चे० ॥ २ ॥ कुटुंवी हे कपटके भंडारी, करे खुशामद उपरसुं थारी रे ॥ चे० ॥ ३ ॥ ज्यों पंखी बेठे तरु डारी, मन मांहि सो गरज विचारी रे ॥ चे० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे ल्यो धर्मधारी, जो उतरवा चाहो भवपारी रे ॥ चे० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ शिखामण आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ मानो मानो रे अचल सुख गरजी, मत होवो थे करम करजी रे ॥ मा० ॥ १ ॥ मत दुःखाना किसीकी मरजी, होणहार टले नहिं जो सरजी रे ॥ मा० ॥ २ ॥ कुसंगतिको देवो तुम वरजी, पाप त्यागो सयाणे चित्त लरजी रे ॥ मा० ॥ ३ ॥ मत होना जुवेगारका थे दरजी, विषय कषायकुं देवो तुम तरजी रे ॥ मा० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे धन जिनवरजी, करे प्रभुजीसुं शिव अरजी रे ॥ मा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ उपदेश आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ मानो मानो रे शिखामण मेरी, ज्यों चाहो सुगतिकी शेरी रे ॥ मा० ॥ १ ॥ मात पिता कुटुंब सव वैरी, जिणसुं ममता

करथा दु ख केरी रे ॥ मा० ॥ २ ॥ मायाकी सपना सम लेरी, मत कर तु ममता बहु तेरी रे ॥ मा० ॥ ३ ॥ काचा कुंभ जैसी कायाकी देहरी, छेवटम होवेगा राख ढेरी रे ॥ मा० ॥ ४ ॥ राग द्वेष सर्प महा जहेरी, ले उपशमकी जडी छेरी रे ॥ मा० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे शिख हेरी, पियासु अमृता शिव नेरी रे ॥ मा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ जोवन आश्चर्यी पद प्रारभ. ॥

॥ मत अकडे जोवनके मटके, तेरे शिरपर काल वैरी भटके रे ॥ म० ॥ १ ॥ नित अभक्ष आहारके गटके, वार वार तोय जानी गुरु हटके रे ॥ म० ॥ २ ॥ ख्याल तमासामें निशिदिन भटके, धरमके कामें दूरो छटके र ॥ म० ॥ ३ ॥ ते तो नरककुंडमाही लटके, ज्यानें पकड पकड जम पटके रे ॥ म० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे कर्म रज फटके, सो तो वेगा अचल सुख सटके रे ॥ म० ॥ ५ ॥

॥ अथ जोवन आश्चर्यी पद बीजु ॥

॥ क्यों भूल्यो रे जोवनमें अकडी, नवमास लटक्यो सेरी सकडी रे ॥ क्यो० ॥ १ ॥ बालपणामें रम्यो ख्याल खखडी, रह्यो जोवनवयमें जकडी रे ॥ क्यों० ॥ २ ॥ आयो बुढापो सुझत नहिं अखडी, जोर पडियासु पकडी लकडी रे ॥ क्यों० ॥ ३ ॥ तिलोकरिख कहे धर्म लेवो पकडी, तो पावोगा मुगति फुल पखडी रे ॥ क्यों० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ ससार आश्चर्यी पद प्रारभ ॥

॥ सतगुरुजी कहे जग सपना, करो धर्मध्यान सोहि अपना रे ॥ स० ॥ १ ॥ ज्ञान ध्यान करत नहिं धपना, पाप करता तो दिलमाहे कपना र ॥ स० ॥ २ ॥ दान देना शील पाल तप तपना, शुद्ध भावनामें दिल थपना रे ॥ स० ॥ ३ ॥ सजन सनेही नहिं हे कोइ अपना, आखर तो जरूर तुझ खपना रे ॥ स० ॥ ४ ॥

सुगुरु सेश करत नहिं छिपनां, तिलोकरिख कहे प्रभु जपनां रे ॥ स० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ शिक्षा आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ वार वार सतगुरु समजावे, क्यों तुं कर्म बंध उपावे रे ॥ वा० ॥ १ ॥ जीव हसतां हसतां जलावे, छोडतां अति मुशकिल थावे रे ॥ वा० ॥ २ ॥ ओ तुं आक धतुरा वावे, तो तुं आंब कहांसुं खावे रे ॥ वा० ॥ ३ ॥ जेहर खायकें जिवणो उमावे, तिम पाप करिने सुख चावे रे ॥ वा० ॥ ४ ॥ जैसा बांध्या तैसा उदय आवे, चारुं गतिमांहि सो दुःख पावे रे ॥ वा० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे कर्म उडावे, सो तो शिवपुर वेग सिधावे रे ॥ वा० ॥ ६ ॥

॥ अथ कर्म आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ कर्मगति हे अजब जगमांहि, इण सम शत्रु कोइ नांइ रे ॥ क० ॥ १ ॥ कुंडरिक तप करियो उलसाइ, मर गयो नरक सात मी मांइ रे ॥ क० ॥ २ ॥ अढीदिन संजम पद पाइ, पुंडरीक सर्वार्थसिद्ध जाइ रे ॥ क० ॥ ३ ॥ प्रभुजी कीकिनी अधिक बुराइ, गोसालक पायो सुर प्रभुताइ रे ॥ क० ॥ ४ ॥ जमाली श्रीवीरका जमाइ, करमासुं खोटी सरधा आइ रे ॥ क० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे कर्म कसाइ, इनके कोइको मुलाहजो नांइ रे ॥ क० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ शूरपणा आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ करो करो करमसें दंगा, जिणसुं पावोगा सुख उत्तंगा रे ॥ क० ॥ १ ॥ वश कर लो मनकी तरंगा, छोडो विषय कषाय प्रसंगा रे ॥ क० ॥ २ ॥ राखो चित्त निर्मल जिम गंगा, छोडो पंच प्रमाद अडंगा रे ॥ क० ॥ ३ ॥ तप जप करणीमें रहो चंगा, मेटो कर्म बंधणकी उच्छंगा रे ॥ क० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे केवल संगा, तरो भवोदधि तरंग अथंगा रे ॥ क० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ दयाव्रत आश्रयी पद प्रारम्भ ॥

॥ पालो पालो रे भविक दया माता, इणसु पाओगा अचल सुखशाता रे ॥ पा० ॥ १ ॥ जग प्राणी सब जीवणो चहाता, दुःख मरणसें सब थरराता रे ॥ पा० ॥ २ ॥ ऐसें जाणके होवो थें अभयदाता, कोइ जीवकु न देणी अशाता रे ॥ पा० ॥ ३ ॥ टले नरकानिगोदका खाता, जो रहे दयारस रगराता रे ॥ पा० ॥ ४ ॥ साठ नाम बताया जगत्राता, जो आराधे सो शिवसुख पाता रे ॥ पा० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे आगम वाता, कोइ हलुकर्मी चित चाता र ॥ पा० ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥

॥ अथ सत्यवचन आश्रयी पद प्रारभ ॥

॥ सत्य वचन बोलो रे भविप्राणी, सो तो निरवद्य शिवसुख दाणी रे ॥ स० ॥ १ ॥ सत्य असत्यका भेद पिछाणी, पिछें बोलो वचन शुद्ध छाणी रे ॥ स० ॥ २ ॥ कोमल मृदु अमृतसी वाणी, जिणमें होवे नहिं धर्म हाणी रे ॥ स० ॥ ३ ॥ बोलो शुध्द सत्य मती ठाणी, जिनकी कीर्त्ति अधिक जग जाणी रे ॥ स० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे आगम वाणी, सत्यवादी वरे शिवराणी रे ॥ स० ॥ ५ ॥

॥ अथ अदत्त व्रत आश्रयी पद प्रारभ ॥

॥ मत लेवो रे अदत्त पर भाइ, जिणसु कमी रहे नहिं काइ रे ॥ म० ॥ १ ॥ जे चोरी तजेगा चित्त चहाइ, कछु फिकर नहिं उणताइ रे ॥ म० ॥ २ ॥ रहे जगमें प्रतीत सवाइ, सतोष समान सुख नांइ रे ॥ म० ॥ ३ ॥ जिसके अनेक विघन टल जाइ, मर जावे सुरगतके माइ रे ॥ म० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कह दत्तव्रत की बडाइ, जिनशास्त्रमें प्रभु फरमाइ र ॥ म० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ शीयलव्रत आश्रयी पद प्रारभ ॥

॥ सदा पालो रे शियल सुखदाइ, दोइ भवमें कीर्त्ति सवाइ रे ॥ स० ॥ १ ॥ चोर शत्रु सो जावे नरमाइ, शीलवतने नमे सुर

आइ रे ॥ स०॥ २ ॥ सूत्र प्रश्नव्याकरणके मांइ, वत्तिस ओपमा प्रभु फरमाइ रे ॥ स० ॥ ३ ॥ सोला ओपमा छोटी वताइ, ए अद्भुत व्रत अधिकाइ रे ॥ स० ॥ ४ ॥ त्रिण मनसुंहिं पालो इणतांइ, चोसठ सहस्र वर्ष सुर जाइ रे ॥ स० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे धन उणतांइ, शील पाले सदा उलसाइ रे ॥ स० ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥

॥ अथ ममत्व आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ त्यागो ममता परिग्रह दुःखदाइ, ए तो जगतपति फरमाई रे ॥ त्या० ॥ १ ॥ संतोषको सुख अधिकाई, दवे तृष्णाकी लाय वुझाई रे ॥ त्या० ॥ २ ॥ इणमांही जे रह्या मूच्छांइ, सो तो संचे अति कर्म कमाई रे ॥ त्या० ॥ ३ ॥ लोभ गिणे नहिं सयण सगाइ, देखो भरत वाहुबल भाई रे ॥ त्या० ॥ ४ ॥ जिम जिम वधे धन प्रभुताइ, तिम तिम वधे तृष्णा सवाई रे ॥ त्या० ॥ ५ ॥ ऐसी समझके टाले मूर्च्छातांई, तिलोकरिख कहे सो शिव पाई रे ॥ त्या० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ रात्रिभोजनव्रत आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ मत करोरे भोजन निशिमांहि, द्रव्यभाव अणुकंपा लाइ रे ॥ म० ॥ १ ॥ त्रस जीव थालीमांहे पडे आइ, सुझे नहिं कछु अंधाराके मांइ रे ॥ म० ॥ २ ॥ जूं भक्षणें जलोदर थाइ, विंछुथी कपाल सड जाइ रे ॥ म० ॥ ३ ॥ माखी भक्षण वमण दरसाइ, इत्यादिक दुःख इण भवमांइ रे ॥ म० ॥ ४ ॥ जो त्यागे निशिभोजन तांइ, संवच्छरमें छमासी तपसाइ रे ॥ म० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे त्यागो भाइ वाइ, द्रव्यभावें फल अति सुख दाइ रे ॥ म० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ दुःकृत आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ छोडो छोडो रे दुःकृत दुःखदानी, इसकुं कुमति रूप पट्टराणी

॥ छो० ॥ १ ॥ नरक निगोदमें सेज बिछाणी, जिहा न मिले अन्न और पाणी रे ॥ छो० ॥ २ ॥ करे सुख संपत्ति जस हाणी, जम देवे अति त्रास पिले घाणी रे ॥ छो० ॥ ३ ॥ दुःख पावे चारी गतमें प्राणी, सो तो जाणत केवल नाणी रे ॥ छो० ॥४॥ तिलोकरिख कहे न्याय पिछाणी, सो तो भविजनके मन मानी रे ॥ छो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ मन आश्रयी पद प्रारभ ॥

॥ चित्त चचल चपल थिर करणा, नित धरम शुक्र ध्यान धरणा रे ॥ चि० ॥ १ ॥ तीन दड तीन शल्य परिहरना, पचपरमेष्ठीका गुण सो उच्चरनो रे ॥ चि० ॥ २ ॥ पच आश्रव पापसेंती डरणा, आठ कर्मशत्रुसेंती लरना रे ॥ चि० ॥ ३ ॥ म्हो मुनिधर्म दश चउ सरणा, वार भावना तप अनुसरणा रे ॥ चि० ॥ ४ ॥ तिलोक रिख कहे भवोदधि तरणा, धारो सुगुरु सुदेवका चरणा रे ॥ चि० ॥ ५ ॥ इति॥

॥ अथ आउखा आश्रयी पद प्रारभ ॥

॥ दम जमका नहिं विसवासा, क्यों करे मेरी तेरी धन आशा रे ॥ द० ॥ १ ॥ मत समझो इसमें कछु हासा, ये आसा हे जब लग सासा रे ॥ द० ॥ २ ॥ जैसा फुले सझाका उजासा, पड्या पाणीके वीच पतासा रे ॥ द० ॥ ३ ॥ जैसा जल मोतीका उकासा, तैसा हे इस तनका तमासा रे ॥ द० ॥ ४ ॥ क्यु चुणे उचा उचा आवासा, एक दिन होयगा जगलवासा रे ॥ द० ॥ ५ ॥ काल अहेडीका नहिं विश्वासा, एकदिन देगा सब पर फासा रे ॥ द० ॥ ६ ॥ तजो क्रोध मानका पासा, जिणसु वजत सुजसका त्रासा रे ॥ द० ॥ ७ ॥ इणसु नर सुर सबही त्रासा, एक सिद्ध सदा उल्लासा रे ॥ द० ॥ ८ ॥ तिलोकरिख कहे सबकु खुलासा, करो धर्म ध्यान नित्य खासा रे ॥ द० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ उपदेश आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ सुण चेतन रे, तुम गुणवंत मुनिकों सेवो ॥ ए देशी ॥ सुणो सुगुणा रे, तुम धर्म ध्यान नित कर लो ॥ तुम त्यागो पंच प्रमाद, भवोदधि तर लो ॥ ध्रु० ॥ यो नरभव लीनो नीठ, आरज देश पायो ॥ या काया निरोगी धार, उत्तम कुल जायो ॥ तोय सद्गुरु को मिल्यो जोग, सूत्र सुण कानें ॥ तुं मत कर आलस धार, शुद्ध सरधानें ॥ सु० ॥ १ ॥ या देह ओदारिक जाण, उपरसें चंगी ॥ या पलमें सुंदराकार, पलमें विरंगी ॥ या माया हे बादलछांय, सुपन जो जाणो ॥ या जोवन नदीपूर, गरव मत आणो ॥ सु० ॥ २ ॥ ये मात पिता सुत भ्रात, कुटुंब और नारी ॥ सरणागत नहिं कोय, गरजकी यारी ॥ ज्यों तरुवर पर पंखेरु, आय ले वासो॥ जावे चउ दिशी विखर, दिवस उजासो ॥ सु०॥ ३ ॥ केइ बाजीगर ज्यों बाद, मचावे जाई ॥ डुम डुमीको सुण शब्द, खलक जुड आइ ॥ होय तमासो बंध, सवि भग जावे ॥ बाजीगर निज ठाम, अकेलो जावे ॥ सु० ॥ ४ ॥ महारुं महारुं ५,र रह्यो, जीव अज्ञानी ॥ पण छेवट जावे छोड, अकेलो प्राणी ॥ जगकाल जोरावर निपट ले जावे ताणी ॥ इम जाणीने चेतो चतुर, मानो प्रभु वाणी ॥ सु० ॥ ५॥ ओगणीशें अडतीस जेठ, शुद्ध छट जाणो ॥ ए रत्तापुरके मांय, किधो लखाणो ॥ तिलोकरिख कहे चेले, सोइ सुख पावे ॥ पावे अमर विमान, सुगति सिधावे ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ उपदेश आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ फागणकी देशीमें ॥ मत राचे रे, हांरे मतराचे रे ॥ संसार हे सपन माया, मत राचे रे ॥ हाडका को पिंजरो ने चामडासुं मढियो, काचाकुंभ जैसी तेरी काया ॥ म० ॥ १ ॥ पुण्यजोग धन संपदा रे पायो, विणस जाय जैसी बादल छाया ॥ म० ॥ २ ॥ जोबन रंग पतंग नदीपुरसों, ढलती जाणजो दूपेरकी छाया ॥ म० ॥ ३ ॥

आयो बुढापो कुडापो रे आयो सामा बोलण लागा घरजाया ॥ म० ॥ ४ ॥काल वेताल किया धाक तिहु लोकमें, इद्र चद्र सव थरराया ॥ म० ॥ ५ ॥ सुखी दु खी वाल जुवान वृद्धनरने, छोडे नहिं हरि हर राया ॥ म० ॥ ६ ॥ माता पिता तिरिया सुत बधव, आदर देवे मतलव आया ॥ म० ॥ ७ ॥ गरजविना कोइ सार नहिं पूछे, मूरखपणे क्यों तु ललचाया ॥ म० ॥ ८ ॥ अकेलो तु आयो ने अकेलो रे जावसी, सुकृत का सोदा थें कर लो भाया ॥ म० ॥ ९ ॥ धर्म विना तु भटक्यो चारु गतिमें, जनम मरण वहु दु ख पाया ॥ म० ॥ १० ॥ दान शियल तप भावना रे भावो, तिलोकरिख कहे अवसर आया ॥ म० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ पद बीजु ॥

॥ देशी पहीज ॥ मानो मानो रे, हारे ॥ मा० ॥ चतुर सद्गुरु वाणी, मानो मानो रे ॥ देव गुरु धर्म साचा रे सरधो, तीन रतन ग्रहो सुखदाणी ॥ मा० ॥ १ ॥ ज्ञान दरिसण चारित्र तप कर लो, आठ करम करो धूल धाणी ॥ मा० ॥ २ ॥ क्रोध कपट अहकार तज दीजो, तृष्णाकी लाय बुझावो प्राणी ॥ मा० ॥ ३ ॥ प्राणा तिपात झूठ चोरी नहिं करिये, पालो शील सजम समता आणी ॥ मा० ॥ ४ ॥ छिन छिनमाहे थारो छीजे रे आउखो, खूट जाय जैसो अजलीको पाणी ॥ मा० ॥ ५ ॥ तन धन जोवन थिर मत जाणजो, मोह ममता कर्या दु खखाणी ॥ मा० ॥ ६ ॥ ओगणिसें सेंतिस माघशुदि तेरश, तिलोकरिख कहे हित आणी ॥ मा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ धन आश्रयी पद प्रारभ. ॥

॥ देशी एहीज ॥ करे कायकु, हारे ॥ क० ॥ हाय माया नहिं साथी ॥ क० ॥ एकलोही आयो ने एकलोही जावसी, सगें कोडी नहि आवे सुगुणा ॥ क० ॥ १ ॥ दामके काम फिरे देश पर देशमें, पुण्यविना

आवे रीतो सुगुणा ॥ क० ॥ २ ॥ कूड कपटसुं तो माया करे एकठी, जिणमांहि साल पांती पडे सुगुणा ॥ क० ॥ ३ ॥ पाप कमाइने जावे मरी एकिलो, धनको मालक और होवे सुगुणा ॥ क० ॥ ४ ॥ नरकमांहे प्राणी दुःख सहे एकिलो, कुटुंबी सो आडा नहिं आवे सुगुणा ॥ क० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे हाय लाय छोड दो, समतासुं शिवपुर पावे सुगुणा ॥ क० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ उपदेश आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ देशी एहीज ॥ जागो जागो रे, हांरे ॥ जा० ॥ विदेशी थाने दूरो जाणो ॥ जा० ॥ काल अनंतको तुं सुतो मोहनिंदमें, कायासा नगरमांहि वण्यो राणो ॥ जा० ॥ १ ॥ कामक्रोध मद ठग लारें पडिया, तपसंजमको लूटे छे नाणो ॥ जा० ॥ २ ॥ चार तीरथको सागर मोटको, धर्मरूपि मोटी जहाज माणो ॥ जा० ॥ ३ ॥ ज्ञान दरिसण चारित्र तप जपको, भर लो हरखसुं करियाणो ॥ जा० ॥ ४ ॥ सतगुरु खेवटीया मांहि जाणजो, भला परिणामको पवन आणो ॥ जा० ॥ ५ ॥ मोक्षरूपी पाटणमें वेगसुं सिधावणो, सिद्ध वेपारी ज्याको सदा थाणो ॥ जा० ॥ ६ ॥ तिलोकरिख कहे माल खप जावसी, कर लो हुशियारी पद निर्वाणो ॥ जा० ॥ ७ ॥

॥ अथ नरकदुःख वर्णन पद प्रारंभः ॥

॥ चेतो चेतो रे, हांरे चेतो चेतो रे, धरमबिना दुःख पायो ॥ चेतो० ॥ पाप करीने जीव नरकमांही उपज्यो, अनंत दुःख देखी घभरायो ॥ चे० ॥ १ ॥ जम अरडाट सुणिने चल आवे, लेइ तरवार तिहां झटकायो ॥ चे० ॥ २ ॥ भूख लागी जद तिणनांही तनको, मांस काट काट कर खवायो ॥ चे० ॥ ३ ॥ तृषा लागी जद जम देव आयने, तांबो उकाल कर पाणी पायो ॥ चे० ॥ ४ ॥ गरमि लागी जब जबरीसुं पकडी, कूड सामली तलें लटकायो

॥ चे० ॥ ५ ॥ टुट टुट कायापर पडे रे पानडा, टुक टुक हुवो अति घभरायो ॥ चे० ॥ ६ ॥ पाय पकडकें उछाल्यो रे गगनमें, झेल्यो त्रिशूल माहा दु:ख आयो ॥ चे० ॥ ७ ॥ अणछाण्या जलमाहि घणो रे न्हावतो, नदी वेतरणीमाहि छटकायो ॥ चे० ॥ ८ ॥ पराइ तिरियानें प्यारी करि मानतो, लालथभो करी चपकायो ॥ चे ॥ ९ ॥ दारु मास विना घडि नहि चालतो, अगनिका कुंडमाहि डुबकायो ॥ चे० ॥ १० ॥ नरकमाहि दु:ख सह्या रे अनत थें, पल सागरथिति थररायो ॥ चे० ॥ ११ ॥ तिहाथी मरिने तिरजच गति उपज्यो जन्म मरण भयो दु.ख कायो ॥ चे० ॥ १२ ॥ नीठ नीठ कर नर भव पायो, देश आरज उच कुलें जायो ॥ चे० ॥ १३ ॥ दीर्घ आउखो ने पूरण इद्री, काया निरोगी पोतें पुण्य लायो ॥ चे० ॥ १४ ॥ सतगुरु जोग मिल्यो सूत्रकी सरधा, जैन धरम सत्य मन भायो ॥ चे० ॥ १५ ॥ वाटी साटे नरभव मतिहारो, वासी टुकडामें क्यु तु ललचायो ॥ चे० ॥ १६ ॥ तन धन जोबन कुटुब कबीलो, अथिर सकल प्रभु दरसायो ॥ चे० ॥ १७ ॥ काल बेरी थारी लारा रे पडियो, सकल लोक इणसु थररायो ॥ चे० ॥ १८ ॥ धर्मध्यान सुकृत कर लीज्यो, जो शिवपुर सुख होवे चहायो ॥ चे० ॥ १९ ॥ उगणिशें सैंतिश माघशुदि तेरश तिलोकरिख यो उपदेश गायो ॥ चे० ॥ २० ॥ इति ॥

॥ बीस विहरमान को छद ॥

॥ श्री सिरिमदर स्वामी । थारो ध्यान धरू सिर नामी जी । जुगमदर आतरज्यामी हो जिणद जसधारी जसधारी । चरण बलिहारी हो ॥ १ ॥ या टेर ॥ बाहु सुबाहुजी म्ही करू सेवा ॥ हुतो ध्याहु नित मेवा जी । धन धन थे देवाधी थे देवाहो ॥ जि० ॥ २ ॥ सुजयत स्वामी प्रभु ध्यावु । रीखभानदनजी गुण गाऊ । अनत

वीरजी सीस नमाऊं हो ॥ जि० ॥ ३ ॥ सुर प्रभुजी सब कंता । विसलधरजी विख्याता । दीजो मूज भव भवमें सुख साता हो ॥ जि० ॥ ४ ॥ वालेसर वज्रधरजी । सुणो चद्रानंदन आरजी । ह्मारो जनम मरण द्यो वरजी हो ॥ जि० ॥ ५ ॥ चंद्रबाहु भुजंग दयाला । छे काय जीवांरा प्रतिपाला । जे रोक दीया आश्रवनाला हो ॥ जि० ॥ ६ ॥ ईश्वर नेमीश्वर राया । वीरसेन सदा सुखदाया । माहाभद्रजी सर्व करम हटाया हो ॥ जि० ॥ ७ ॥ देवजसजी हे जसवंता । अनंतवीरजी सुखकंता । दुःख जावे ध्यान धरंता हो ॥ जि० ॥ ८ ॥ विचरे महाविदेह क्षेत्रके माया । प्रभुजीरी पांचसे धनुष्यें नी काया जुगमे सवाया हो ॥ जि० ॥ ९ ॥ प्रभुजी की कंचन बरणी काया । भवि जीवांके मन भाया । तिलोकरीख गुण गाया हो ॥ जि० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ वीश विहरमानकी लावणी ॥

॥ दीनदयाल कृपाल, करुणा भंडारी ॥ क० ॥ जय विहरमान जिन वीश, धर्म अधिकारी ॥ श्री सीमंधर स्वामि, सदा सुखकारी ॥ स० ॥ जय युग्मंधर जसवंत, चरण बलिहारी ॥ बाहुजिणंद कृपाल, करुणा भंडारी ॥ क० ॥ श्री सुबाहु जगदीश, परम पद धारी ॥ सुजात प्रभु घनघाती, कर्म कीया छारी ॥ क० ॥ स्वयं प्रभ वीतराग, ममता विडारी ॥ रिखभानन आनंद, करे नर नारी ॥ क० ॥ जय विहरमान माहाराज, धर्मअधिकारी ॥ १ ॥ अनंत वीरज जगनाथ, तज्या जगनाता ॥ त० ॥ श्री सूर प्रभु सुविख्यात, करो सुखशाता ॥ विशाल प्रभु सुविशाल, त्रिजगके त्राता ॥ त्रि० ॥ श्री वज्रधर तप वज्र, कर्मके घाता ॥ चंद्रानन सुखकंद, दर्श चित्त चाता ॥ दर्श० ॥ चंद्रबाहु कर्मराहु, मिटाया खाता ॥ कियो कर्मसें जंग, भुजंग प्रभु भारी ॥ मु० ॥ ज० ॥ २ ॥ ईश्वर त्रिजग

ईश, मेरे मन भावे ॥ मे० ॥ श्री नेमीश्वरजिन ध्यान, करता दुःख जावे ॥ वीरसेन करे केण, अमर पद पावे ॥ अ० ॥ माहाभद्र करे भद्र, विघनकु हठावे ॥ देवजस करे सेव, रिद्ध सिद्ध आवे ॥ रि० ॥ अजित वीरज निजपद, देत भज भावें ॥ जघन्यपदें वर्तमान, जिनद उपगारी ॥ जि० ॥ ज० ॥ ३ ॥ धनुष्यपाचशें प्रमाण, प्रभुजीकी काया ॥ प्र० ॥ ८ क्ष चोराशी पूरव, आयु फरमाया ॥ थाप्या हे तीरथ चार, भविक मन भाया ॥ भ० ॥ होय अयोगी मोक्ष, जासि महाराया ॥ में अधम उद्धारण बिरुद, सुणी हरखाया ॥ सु० ॥ तिलोकरिख यों जाण, शरणागत आया ॥ जिम तिम करो भवपार, अरज अवधारी ॥ अ० ॥ ज० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ शातिनाथ जिन लावणी ॥

॥ अगडद अगडद ॥ ए देशी ॥ प्रभु तुम विण में भम्यो जगतमें, अब द्यो सुख सपंति स्वामी ॥ शाति जिनेश्वर शाति करो मोय, विघन हरण अतरजामी ॥ पाल्यो पारेवो मेघरथ नृपभव, गोत्र तीर्थंकर बाध्यो जिहा ॥ सर्वार्थ सिद्ध गये सयम लेकर, स्थिति तेत्रिश सागरकी तिहा ॥ हथिणापुर विश्वसेन पट्टराणी, अचिरा कूखें जन्म लियो ॥ छे पदवी उपराजी पुण्यसें, मरकी रोग प्रभु दूर कियो ॥ जस फेल्यो तव सारे देशमें, परजा पण शाता पामी ॥ शा० ॥ १ ॥ पचिश पचिश हजार वर्ष लग, कुअर राज चक्रवर्त्ती ॥ एक हजार पुरुष सगें प्रभु, सजम लीनो शूभ मती ॥ एक वरस छद्मस्थ पणामें, सह्या परिसह जिनराया ॥ घनघातिक चउ कर्म काटकें, श्रीजिनवर केवल पाया ॥ दियो उपदेश भविक जन तारण, धन जगवत्सल शिवगामी ॥ शा० ॥ २ ॥ पचीस सहस्र वर्षमें एक कम, केवल पदवी दीपाई ॥ छत्तिस गणधर हुवे नायके, वासठ सहस्र भये मुनिराई ॥ एकशठ हजार और छशें आर्जका, एक लक्ष नेवु हजारा ॥ भये श्रावक एकविश

गुण पूरण, बाराव्रत धारणहारा ॥ तीन लक्ष त्र्याणुं सहस्त्र श्राविका, करणीमें कुछ नहिं खामी ॥ शां० ॥ ३ ॥ लक्ष वर्षको सर्व आउखो, जिन मारग हद दीपाया ॥ समेतशिखर पर्वत पर चढके, जगतारक अणसण ठाया ॥ वदि तेरश नक्षत्र रेवती, ज्येष्ठ मास में मुक्ति लही ॥ अजर अमर अविकार निरंजन दुःखभंजन बिर्द आप सही ॥ तिलोकरिख कहे तारो मुझकुं, अर्ज करुं नित शिर नामी ॥ शांति० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ उदायिन रिखकी लावणी ॥

॥ देशी तेहीज ॥ नरपति सुरपति नमे जिनोकुं, ध्यान धरे हे साधु सती ॥ जग उद्धारण समरो साहिब, महावीर त्रिजगतपति ॥ ए टेक ॥ वीतभय पाटणके अंदर, नाम उदायिन था राजा ॥ शूरवीर माहाधीर जोरावर, सोला देशका शिरताजा ॥ मुकुट बंध दश राजा जिनकी, सेवा करता हर्ष धरी ॥ पद्मावती नामें पट्टराणी, शील रूप गुण प्रेम भरी ॥ परजाकुं फरजंदसी पाले दिन दिन चढती पुण्यरति ॥ ज० ॥ १ ॥ वर्द्धमान जगनाथ पधारे, वंदन गये राजा चालिकें ॥ धर्मकथा प्रभुजी फरमाइ, दूनीयामें ममत छलके ॥ बिन मतलबसें कोइ न किस्का, जग माया हे स्वप्ने ज्यों ॥ इस्कों छोड कर धर्म आराधो, सुणकें लगा नृप कंपनें ज्यों ॥ प्रभुसुं कहे मे संजम लेउंगा, पुत्रकुं दे के राज क्षिति ॥ जग० ॥ २ ॥ पीछें जोग में लेउंगा तुमपें, जेज करो मत लीगारा ॥ राजमें जाता सोचे दिलमें, एकी पुत्र मुझ अति प्यारा ॥ राज करेगा नरक पडेगा, दुःख पावेगा बहुत सही ॥ इसी सबब भाणेज राज देउं, सला दिलमें यौं राजा ठही ॥ केशी नाम भाणेज राज दे, भूप भया निर्ग्रंथ जति ॥ ज० ॥ ३ ॥ पुत्र विचार किया दिल अंदर, मेरेमें क्या ऐब भरी ॥ क्युं नहिं दिया राजछत्र मुझ, दिलमें चिंता बहुत करी ॥ रोष भराकें गया

सो चपा, मासी भ्रातके पास चली ॥ वारा व्रत वो पाले निर्मल, सो मुनि उपर द्वेष वली ॥ अब सुण लो मुनिवरकी किरिया, तप सजममें अधिक रति ॥ ज० ॥ ४ ॥ मास मास तप करत निरतर, अरस निरस तुच्छ आहार करे ॥ अग्यारा अग कठाग्र करकें, आज्ञा ले जनपद विचरे ॥ विहार करता आया सोही पुर, केशी राजा दिल वहेम भया ॥ दुआइ फेराइ पुरमें साधुकु, उतरने मत देना यहा ॥ जो उतारेगा इनकु घर अदर, राजा करेगा घर जपति ॥ ज० ॥ ५ ॥ कुभकार ए, था भवि प्राणी, दिल अदर विचार कीया ॥ राजा रूठा लेगा गद्धा, भांडा राखका ढग रीया ॥ मेरे टपरी फुसकी हेगी, क्या कर ले राजा मेरा ॥ ऐसी समज कर दिनि हे आज्ञा, मुनिवर आकर जहां ठहेरा ॥ राजा सुन कर चुप रहा दिल, अच्छि नहिं कछु जिनस छती ॥ ज० ॥ ६ ॥ राजहकीमसु राजा कहे तुम, जहेर देनां औषध भाइ ॥ दवा लगे नहिं फिर जीवणकी, ऐसा काम करो भाइ ॥ ऐसा हुकुम उन मान लिया और, साधुकु दिया जहेर माहा ॥ दवा लेतेही भइ रिख दीकत, रोम रोममें प्रगटी दहा ॥ मुनिवर समता सागर पूरे, निर्मल जिनकी धर्म मति ॥ ज० ॥७॥ लहेने वाला माग लहेना, आनाकानी काम नहीं ॥ दे दिल साफी ढील करे मत, ध्याया शुकल ध्यान सही ॥ पाये केवल ज्ञान मुनीश्वर, मुक्ति नगरमें डका दिया ॥ जय जय बोलो उनकी भइय्या, शमदम रसका प्याला पिया ॥ अजर अमर अविकारी निरजन,सुख अनन लहि सिद्धगति ॥ ज० ॥८॥ समकेती सुर दिल घुसे भराणे, विन तकसीरी हत्यारा ॥ दिया मुनिवरकु जहेर हलाहल,प्रजा प्राण कर दिया न्यारा ॥ धूल वृषा करी दट्टण पट्टण, वदी कीया दु.ख पावत हे ॥ एसी दिलमें समजो सुगुणा, तिलोकरिख दरसावत हे॥ धन जिनमारग धन परमेश्वर, धन जो पाले धर्म अति ॥ ज० ॥ ९ ॥ इति उदायिन रिखकी लावणी ॥

॥ अथ धन्नाजीकी लावणी ॥

॥ साल स्वप्नकी लावणीकी देशीमें ॥ श्री वीरजिनेश्वर नमत सुरेश्वर, चोतीस अतिशय करि छाजे ॥ सकल कर्म भय भर्म मिटाया, वाणी पेंतिस ज्यों घन गाजे ॥ पाखंडी बंड अफंड करे नहिं, भगे शीयाल ज्यों सिंह देखी ॥ अपरंपार महिमा जिनवरकी, होये खुशी भवजन पेखी ॥ गाम नगर पुर पाटण फिरते, नगर राजगृहीकुं आया ॥ धन धन्नो मुनिराज जहाज सम, सब मुनिवरमें सरसाया ॥ ध० ॥ १ ॥ बागवान दिल हरख आनकें, कहेता श्रेणिक राजनके ॥ पुण्य उदय प्रभु बागमें आये, संग बहुत मुनि हे उनके ॥ विदा दे कें चले सज असवारी, वंदना कर बेठे सामे ॥ प्रभुजी दे उपदेश सभामें, पूछे श्रेणिक शिर नामे ॥ कहो मुझ दीनदयाल कृपा कर, तुम सब जाणक जगराया ॥ ध० ॥ २ ॥ चउदे सहस्र मुनि संग आपके, शिवपुर आश करे सारा ॥ निजमेंतज हे कोन इनोमें, करणीमें दुःकरकारा ॥ प्रभुजी कहे सब सोतमाल सम, संजम करणी हुशियारा ॥ दुःकर दुःकर कार सकलमें, धन्नो मुनिवर अधिकारा ॥ नाम ठाम करणीका परसन, पूछे श्रेणिक उमाया ॥ ध० ॥ ३ ॥ काकंदी नगरीके अंदर, गाथा पतणी भद्रा नामें ॥ धन्नो सुत गुणवंत विचक्षण, बोंतेर कला जोवन पामे ॥ बत्तिस लडकी इभपातियोंकी, बहुत धूमसें परणाइ ॥ बत्तिस बत्तिस जिनसा दायजे, सब एक सो बाणव आइ ॥ पडे नाटक धुंकार महेलमें, भोग भोगवे मन चाया ॥ ॥ ध० ॥ ४ ॥ एक दिन त्रिशलानंद दिवाकर, काकंदी नगरी आया ॥ जितशत्रु नृप प्रजा लोक सब, श्री जिन दरिसणकुं धाया ॥ धन्ना शेठ पण आया उलट धर, वंदणा कर बेठे आइ ॥ फरमाया उपदेश धरमका, धिग धिग धिग हे जगताइ ॥ राच रह्या जग जीव अज्ञानी, माने मेरी संपत माया ॥ ध० ॥ ५ ॥

तन धन जोवन सर्व अथिर है, पुद्गल सोभा हे सारी ॥ मात पिता ओर कुटुंब कबीला, मतलबकी जगमें यारी ॥ त्राण शरण नहिं मरण रोगमें, इस्में कुछ नहिं हे शका ॥ काचकी शीशी फूटे पलकमें, मत मगरूर करे अगका ॥ धरम ध्यान दोइ हे तुझ सगी, जग सब सुपनेकी माया ॥ ध० ॥ ६ ॥ काम क्रोध मद राग द्वेष छल, सकल करमके बधन हे ॥ चेतनकु बेहाल करे है, चार गति दुःख फदन हे ॥ जबलों जरा व्याधि नहिं आवे, इद्रियका बल घटे तेरा ॥ जिस पहले हुशियार होय कर, धरम ध्यान करलो गहेरा ॥ शिवसुखकी जो चहाय तुमारे, ए कहेणी मानो भाया ॥ ध० ॥ ७ ॥ धन्नो शेठ वैराग आणादिल, कहे साहिबसु शिर नामी ॥ आप कही सो हे सब सच्ची, में सजम लेवणकामी ॥ जननीकी आज्ञा ले आउ, प्रभु कहे ज्यों सुख तुम ताइ ॥ जेज करो मत धर्म काममें, गइ पल सो आवे नाहि ॥ वदणा कर चल आया मातपे, आज्ञा मागे उलसाया ॥ ध० ॥ ८ ॥ पुत्र सवाल सुणी ततक्षण सा, मूर्च्छा खाय पडी धरती ॥ दासी मिल कर करी सचेतन, आखो बुदनसें झरती ॥ कहे पुत्रकु सजम किरिया, दुर्लभ हे तुझकु भाइ ॥ बत्तिस तरुणी लघु वयें सारी, हाल जाये मत छटकाइ ॥ मेरे पीछें तुझ वृद्ध वय आया, फिर सजम लीजें जाया ॥ ध० ॥ ९ ॥ खड्ग धार ओर छुरी पान पर, चलणा दुष्कर अधिकाइ ॥ लोह चणा मोम दातें चावणा, वेलुकवल नहिं सरसाइ ॥ पवनसु कोथलो भरणो जैसें, मेरु तोलणो कठिणाइ ॥ गगा नदीकी धार पकड कर, चढना जेसें गगनमाइ ॥ ऐसे सजम दुःकर दुःकर, तेरी हे कोमल काया ॥ ध० ॥ १० ॥ जननीका सवाल समज कर, धन्नो कहे सुणरी माइ ॥ नारी न्यारी नरक कुडकी, फल किंपाकसी दरसाइ ॥ काल जोरावर तीन लोकमें, छोडे नही ए किसताइ ॥

कौण वखत ओर कौण योगसें, पहेलां पीछें खबर नांइ ॥ मेरेतांइ झट दे दे आज्ञा, जनम मरणसें घभराया ॥ ध० ॥ ११ ॥ संजम मारग दुःकर दुःकर, इससें फरक नहिं माता ॥ कायर कृपण निर्बल नर ओर, इण भवकी चाहत शाता ॥ परभवकी नहिं चाहत जिसके, सो संजमसुं थरराता ॥ शूरवीरकुं सहज हे संयम, जगका झूठा हे नाता ॥ जो पल जावे सो नहिं आवे, जगनायकने दरसाया ॥ ध० ॥ १२ ॥ सवाल जवाब भये मा बेटाके, अधिक थकी आज्ञा दीनी ॥ बहुत मोच्छव ओर उलट भावसें, धन्नाने दीक्षा लीनी ॥ हाथ जोड कर कहे प्रभुजीसुं, जावजीव छठ तप धारुं ॥ पारणे आंबिल आहार नाखतो, मिले तो लउ पारणा सारु ॥ भगवंत कहे तुम सुख होय सो, करो देवाणुप्रिय डाह्या ॥ ध० ॥ १३ ॥ चड़ते भाव और सम परिणामें, तप धाच्यो दुक्करकारी ॥ कोई दिन आहार मिले नहिं मुनिकुं, कोई दिन नहिं मिलता वारी ॥ सूका लूखा तन भया भूखसें, लोही मांस सब सकाणो ॥ काचा तुंबा सो शीस मुनिको, नेत्र आंत तारा जाणो ॥ उंडा कडेला सो पेट ज्युं दीखे, रसना पान जो सूकाया ॥ ध० ॥ १४ ॥ अंबपेसी ज्युं नासिका रिखकी, काचरी छाल ज्युं कान कया ॥ ढींक पंखी ज्युं जंघा दरसे, सूका सरप ज्यों बदन भया ॥ काक पाव ज्युं पावकी पिंडी, आंगली सूकी ज्यों मुंगफली ॥ न्यारा न्यारा हाड़ दीसे सब, अलग अलग सोले पसली ॥ सकल खुलासा हे शास्तरसें, श्री मुख साहेब फरमाया ॥ ध० ॥ १५ ॥ कोयलातिक और एरंड लकड़को, चलतो गाड़ो बजे जैसें ॥ उठतां बेठतां हालतां चलतां, मुनिके हाड़ बजे तैसें॥तप तेजसे पुष्ट भया मुनि, निर्बल बहुत भये तनमें ॥ हिरते फिरते शब्द बोलते, सुणते खेद पावे मनमें ॥ आयुष्य बलसें काम करे सब, भाव संजम निश्चल ठाया ॥ ध० ॥ १६ ॥ श्रेणिक सुणी हवाल मुनिका, प्रभुकुं वंदे शिर नामी ॥ धन्ना मुनिके पास

जायकें, कहे तुम धन अतरयामी ॥ सफल कियो तुम मनुष्य जनमकों, करणीमें कुछ नहिं खामी ॥ छता भोग छटकाय दिया मन, दु कर तप किरिया कामी ॥ तुम हो गरीबनिवाज दयानिधि, चरण शरण मुझ मन भाया ॥ ध० ॥ १७ ॥ मुनिका करि गुणग्राम भूपति, प्रभु प्रणमी गये निज ठामें ॥ दिन किता रहि विहार कीयो प्रभ, विचरे पुर पाटण ग्रामें ॥ कोई दिन राजगृही नगरमें, समो मन्या फिर जिनराया ॥ धर्मजागरणामें मुनि चिंत्यो, शक्ति नहिं किंचित् काया ॥ दिन उगा प्रभु आज्ञा ले कर, साध साधवी खमाया ॥ ध० ॥ १८ ॥ विपुलगिर पर्वत पर चढकें, पादोपगमण अणसण कीना ॥ एक मास सथारो आराधि, रिख सर्वार्थसिद्ध लीना ॥ अरथ पाठ पढे अग ग्यारा, नव महिना दीक्षा पाली ॥ आदि अत चढते परिणामे, बहोत करम दिया परजाली ॥ सात लवका रह्या कमती आउखा, एकावतारी सो पद पाया ॥ ध० ॥ १९ ॥ कोडी तीन पच लाखके ऊपर, सहस्र एकसठ तीनसें जाणो ॥ मास नवका सास बताया, सुकृत करणीके मानो ॥ एकसो सीतेर कोडी क ऊपर, लाख सत्ताणु पल कहीयें ॥ सहस्र अठाणु नवसें छन्न त्रीजो भाग अधिक लहीयें ॥ एक एक द्रम पर इतनी पलको, सर्वार्थ सिध्दमें सुख पाया ॥ ध० ॥ २० ॥ सवत ओग णीसें अडतास शाले, चैत्र शुरु ग्यारश आइ ॥ वार चद्र दिन पेठ आरोरी, ठाइ देश दक्षिण माइ ॥ महाराज अयवता रिखजी प्रसादे, तिलोकरिख लावणी गाइ ॥ गुणी जनकी तारीफ करी यह, अशुभ कर्मके क्षय ताइ ॥ ऐसी समज सब गाना गुणी गुण, काम सिद्धि सुख सवाया ॥ ध० ॥ २१ ॥ इति धन्नाकाकदीजीकी लावणी सपूर्ण ॥

॥ श्रावकके बाराव्रतकी लावणी ॥

॥ तुम सुणो सीख शास्त्रकी मान लो कहेना २॥ क्यों सोते

मोहकी नींद, खोलो अब नयणा ॥ १ ॥ टेर ॥ रहो निश्चल समकितवत, ध्यान शुद्ध धरणा २॥ एक देव नमो आरिहंत, सुगुरुका सरणा ॥ हे धरम केवली भाख्या दयामें जानो २ ॥ संका कंखा दिल माहे, कछु मत आणो ॥ करणी का फल संदेह, आनो मत भाइ २॥ पर पाखंडी परसंसा करणी कछु नाहीं ॥ सरच्यो परच्यो सब तज्यो, भजो एक जैना २॥ क्यों० ॥ तुम० ॥ ॥ २ ॥ मत करो प्राणीकी घात, झुट मत बोलो २॥ मत करो कोइसे कपट, पडदा मत खोलो ॥ मत लेवो चोरीका रे माल, चोरी परिहरना २ ॥ करच्यो परनारीका त्याग, पापसे डरना ॥ अब करो धन मर्याद, लोभकुं छोडो २ ॥ तृष्णा हे दुःखको मूळ, काहेकुं जोडो ॥ करो दिलमें संतोष, परम सुख चैना २ ॥ क्यों० ॥ तुम० ॥ ३ ॥ अब करो दिशाकी मर्याद, अधिक नहीं जाना २ ॥ ए पंदरा करमादान, त्याग देवो शाना ॥ हिंसाकारी उपदेश, कूड नहीं लिखना २ ॥ हिंसाकारी अधिकरण, संग्रह नहीं करना ॥ करो सामायिक शुद्ध दोष सब टाली २ ॥ दसमो दीसावगासिक व्रत सुविसाली ॥ सच्चा है जीनराज, और सब कहना २ ॥ क्यों० ॥ तुम० ॥ ४ ॥ अब करो पोसा उपवास, शक्ति मत गोपो २॥ कोई देवे सूधी सीख, तास मत लोपो ॥ तुम उलट भाव दो दान, नेम नित धारो २॥ ए तीन मनोरथ मन माय, सदा चितारो ॥ नवतत्वका निरणा, करो गुरूपास २॥ यासे होय अमर विमान, फेर शिववास ॥ तिलोकरीख कहे सदा सुखसे तुम रहेना ॥ क्यों० ॥ तुम० ॥ ५ ॥ इति ॥ संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रावक उपर लावणी ॥

॥ चेत चेत रे चेत सयाणां, दुर्लभ नर अवतार ॥ धरम करी उतरो भव जल पार ॥ आरज देश उत्तम कुल जनम्यो, देह निरोगी धार ॥ आउखो इंद्रिय पूरण सार ॥ सतगुरु जोग शास्त्रकी

सरद्धा, धारो हिरदा मझार ॥ जगतमें जैनधर्म सुखकार ॥ ज्ञान दर्शन चारितर करणी, तप बारा परकार ॥ धारकें तरे अनंत नर नार ॥ झेलो ॥ ऐसो जाणक धरम करीजें, करम बधणसें अधिक डरीजें ॥ मिथ्या भर्मकु दूर हरीजें जप तप संजममें चित्तदीजें, ॥ ज० ॥ निश्चल समकित धार ॥ होय तेरी आतमको उध्दार ॥ चेत० ॥ १ ॥ मात पिता तिरिया सुत बधव, सजन स्नेही परिवार ॥ येतो सब हेगा मतलब थार ॥ बिन मतलब सब हे दु खदाइ, नहिं तुझ तारणहार ॥ इसमें शका नहिं हे लगार ॥ पुत्र अगकु भग किया नृप, कनक रथ दु खकार ॥ जिनोंका छठे अंग विस्तार ॥ चुलणी राणी ब्रह्मदत्त सुतकु, लाखका महल मझार ॥ बालवा किया अगन परिचार ॥ झेला ॥ सुरिकांता पति जहेर खवायो, श्रेणिकके सुत पिजरे ठाया ॥ भरत बाहुबलि हाथ उठायो ॥ दुर्योधन महा जग मचायो ॥ दु० ॥ कीयो कुलको सहार ॥ चे० ॥ २ ॥ काचा कुभ जैसी काया र तेरी, छिनमें होय विनास ॥ इसीका झूठा हे विश्वास ॥ खावणा पीणा भोग इद्रीका, ये सब है दु खरास ॥ भोगसें होवे नरकको वास ॥ पावे कष्ट अपार जहा सहे, परवश जमकी त्रास ॥ शाता नहिं हे क्षण भरकी तास ॥ वीते काल असख्य जहा नहिं, सुख रच एक सास ॥ बंध रह्यो अष्ट कर्मकी फास ॥ झेलो ॥ भोग हलाहल जहेरसा जाणो, उपमा फल किंपाक वखाणो ॥ अनित्य जाण जगके छिटकाणो, लेलो खरची धर्मको नाणो ॥ ले० ॥ करे सतगुरु हुशियार ॥ अवसर ऐसा नहिं है बार बार ॥ चे० ॥ ३ ॥ धन सपत सब कारमी जाणो, ज्यो विजली झबकार ॥ कवडी नहिं चलेगा तेरी लार ॥ छिन छिनमाहे छिजे आउखो, ज्यों अजलीको वार ॥ जोरावर काल लग्यो हे तेरी लार ॥ देव दाणव हरि हर और चक्री, इद्र चद्र अवतार ॥ छोडे नहि किसकु काल करार ॥

वखत वार नहि देखे जोगणी, बाल तरुण वयधार ॥ देखे नहि सुखी दुःखी नर नार ॥ झेलो ॥ दान शील तप भावना भावो, धरम ध्यानको लीजें लावा ॥ धन संपतमें मत अकडावो, साधु संतकुं शीश नमावो ॥ ला० ॥ जो चाहो निस्तार ॥ माया तजि आदरो संजमभार ॥ चे० ॥ ४ ॥ निज आतम सम जीव छकाया, जाणो दया जयकार ॥ दया बिन करणी सब बेगार ॥ सत्य वचन निरवद्यसो बोलो, चोरी सर्व निवार ॥ शील नव वाड सहित शुद्ध धार ॥ परिग्रह ममता क्रोध निवारो, लोभ कपट अहंकार ॥ राग द्वेष करो सकल संहार ॥ कलह आल पर चुगली निंदा, रत आरत परिहार ॥ माया मृषा मिथ्या तज दुःखकार ॥ झेलो ॥ नरक गति दुःखकार ए जाणी, छोडो इनकुं भव्य जन प्राणी ॥ इण भव जस परभव सुखदाणी, लावणी श्रीगोंदा में जोडाणी ॥ ला० ॥ ओगणीसें सेंतीस मझार, तिलोकरिख कहेता पर उपगार ॥ चे० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ जीवरक्षा उपदेशनी लावणी ॥

॥ उत्तम कुल अवतार पाय कर, श्रावक, करणी धार ॥ तोही पण उतरोगे भवपार ॥ देव नमो अरिहंत भावशुं, गुरु गिरुवा गुण धार ॥ जिनोंकी सेव कियां निस्तार ॥ धर्म केवली आज्ञामें सद्दों, जीव दया ततसार ॥ सकल शास्त्रमें है अधिकार ॥ त्रस थावर दो भेद प्ररूप्या, न निभे सर्व प्रकार ॥ तोहि पण त्रस जीव उगार ॥ झेलो ॥ जाणी देखी निरअपराधी, अथवा तनकुं दे न उपाधी ॥हणवाकी बुद्धि दिलसुं साधी, हणो मत जिन आज्ञा आराधी ॥ ह० ॥ निर्दय हुइ मत मार, शक्तिसुं अधिक भरो मत भार ॥ उत्त० ॥ १ ॥ गाढो बंधण अंग छेदना, बंद करो मत अहार ॥ अणुकंपा निशदिन दिलमें धार ॥ वापरणो नहीं अणछाण्यो जल, निरर्थक मत करो खुवार ॥ पुंजे अग्नि मत दो नर नार

वासी लीपण लीपणो टालो, जू माकड मत मार ॥ मच्छरकु हण न कुथुवो निवार ॥ अनतगुणा पुनि थावरसू त्रस, पाप तणो नहिं पार ॥ निजात्मसम सव जीव उगार ॥ झेलो ॥ तडको न देणो सल्या धानके, मोल न लेणो पाप जाणके ॥ सेकणो पीसणो नहिं पाप मानके, जीव उगारो दया आनकें ॥ जी० ॥ तरस त्रास दुखकार, दानमें अभय दान श्रीकार ॥ उ० ॥ २ ॥ कन्या पशु और धरती कारण, झूठ करो परिहार ॥ थापण पर ओलवणो नहिं यार ॥ लाच लेइ कूडी साख भरो मत मत करो मर्म जहार ॥ झूठा खत माडो मत कुविचार ॥ विना विचारे बोलणो नहिं कुछ, सत्य वडो ससार ॥ सत्यसू कदी न होवे हार ॥ खातर खाणि धाडा मत पाडो, पडकूची परिहार ॥ धणियाती पडि वस्तु द्यो टार ॥ झेलो ॥ राज दडे सो काम न कीजे, चोखी बताइ खोटी न दीजें ॥ चोरीकी वस्तु मोल न लीजें, कूडा तोला मापा परहरीजें ॥ कू० ॥ चोरी हे दुखकार, समज कर त्यागो सव नर नार ॥ उ० ॥ ३ ॥ परनारीको पाप बहोत हे, खट मतमें विस्तार ॥ समझ कर ममता दिलकी मार ॥ शीलव्रत सुखदाइ हे सबकु, वछित पूरणहार ॥ ऊपमा बत्रीश सूत्र मझार ॥ अल्पवयें अणसार्खी पचकी, सो वरजो निज नार ॥ तीव्र अभिलाषाको अतिचार ॥ धन मरजा दा करी हे तिणसु, अधकी ममत निवार ॥ परधन देखी मत मुरझो लगार ॥ झेलो ॥ पुण्य विना दोलत नही पावे, निरर्थक मनमें क्यों मुरझावे ॥ धन सपत छिनमें विरलावे, एकलो आयो एकलो जावे ॥ ए० ॥ पुण्य पाप दो लार, पुण्यसे आश फले ससार ॥ उ० ॥ ४ ॥ ऊर्ध्व अधो तिरछी दिश जावण, मर्यादा लो धार ॥ टले ज्यू आश्रव पच प्रकार ॥ छवीश बोल मर्यादा कर लो, कद मूल तुच्छ अहार ॥ कर्मादान पद्रा तज महा भार ॥ तज प्रमाद ओर निरर्थक आरत, हिसा दान निवार ॥ खोटा

उपदेश न दीजें लगार ॥ कुचेष्टा विकथा नहिं कीजें, पाप श परिहार ॥ ऐसा है विकका आचार ॥ झेलो ॥ तीन वखत सामायिक कीजें, बत्री दूषण दूर हरीजें ॥ शत्रु मित्र समभाव गुणीजें, सावद्य कारज सब तज दीजें ॥ सा० ॥ समता चित्तमें धार ॥ जिसको नफो है अपरमपार ॥ उ० ॥ ५ ॥ देशावगासिक नेम चितारो, खट पोषध व्रत धार ॥ जिसमें वर्जो दोष अढार ॥ तीन मनोरथ नित्य चितारो, धारो सरणा चार ॥ भावशुं प्रतिलाभो अणगार ॥ एकवीश गुण कह्या श्रावकका, सो लीजो हिरदे धार ॥ होय ज्युं आतमको उद्धार ॥ संवत् ओगणीशें साल सेंतिशका, श्री-गोंदाके मझार ॥ पोष शुदि अष्टमी शुक्रवार ॥ झेलो ॥ श्राव कारणी करजो भाइ, नरभव चिंतामणी अधिकाइ ॥ वार वार ए अवसर नांइ, चेतो चतुर करो धर्म सवाइ ॥ चे० ॥ कटे करमको खार, तिलोकरिख कहेता पर उपगार ॥ उत्त० ॥ ६ ॥ इति॥

अथ पुण्यआश्रयी लावणी प्रारंभः ॥

॥ धन्नाशेठ भवमांय दान दियो भावे ॥ दा० ॥ जिहां बांध्युं तीर्थंकर गोत्र, ऋषभजिन थावे ॥ खट दरिसण परसिद्ध, ऋद्धि अति पावे ॥ ऋ० ॥ प्रभु थाप्यां तीरथ चार, अचल गति जावे ॥ अजर अमर अविकार, कमी नहीं कांइ ॥ क० ॥ तुम करो धर्मका काम, सदा सुखदाइ ॥ १ ॥ पारणो पांचशें मुनिकुं, करायो भावें ॥ क० ॥ सो गया सर्वारथ सिद्ध, भरत नृप थावे ॥ छलाख पूरब कीयो राज, छ खंडके सांइ ॥ छ० ॥ भवन आरिसाके बीच, भावना भाइ ॥ पाया केवल ज्ञान, सुखें शिव पाया ॥ सु० ॥ करि वेयावच्च भावें, बाहुबलि राया ॥ अपरबली जगमांहि, भरते श्वर भाइ ॥ भ० ॥ तु० ॥ २ ॥ मेघरथ नृप भवमांय, दया दिल आणी ॥ द० ॥ जा राख्यो पारेवो सरण, ध्रूजतो प्राणी ॥ बदनको मांस दियो काट, दियो बचाई ॥ दि० ॥ सर्वार्थसिद्धकें मांइ, उत्कृष्ट

स्थिति पाई ॥ ज्ञानि जिनद सुख कद, चक्रिपद पाया ॥ च० ॥ दीपायो जिन धर्म, धन्य महाराया ॥ पाया केवल ज्ञान, आठु कर्म धाइ ॥ आ० ॥ तु० ॥ ३ ॥ दीयो द्राखको पाणी, राजा और राणी ॥ रा० ॥ हर्ष भाव शखराय, कपट नहिं आणी ॥ बाध्यु तीर्थंकर गोत्र, नेमि जिनराया ॥ ने० ॥ समुद्रविजयजी का नद, जगत मन भाया ॥ तोरणसें फिर आया, पशु दया आणी ॥ प० ॥ प्रभु तज कर राजुल नार, सजम पद ठाणी ॥ जिनकी कीर्ति जगमाहि सदा है सवाइ ॥ स० ॥ तु० ॥ ४ ॥ धर्मरुचि मुनिराज, मास तप ठाया ॥ मा० ॥ वे चपानगरी बीच, विचरता आया ॥ नागसिरि घर गया, तुवो वोहोरायो ॥ तु० ॥ गुरु आज्ञाथी जाय, बिंदु परठायो ॥ मरती किडिया देख, दया दिल आणी ॥ द० ॥ मुनि जहेर हलाहल पियो, खीर सम जाणी ॥ खी० ॥ तेतीस सागर अमर, सुगति पुरी पाइ ॥ सु० ॥ तु० ॥ ५ ॥ दीयो क्षीरको दान, सगम भव माइ ॥ स० ॥ शालिभद्र सौभागी, महा ऋद्धि पाइ ॥ सुवाहुदिक दश कुमर, दान परभवें ॥ दा० ॥ पद्रह भवके माय, सुगति सव पावे ॥ कृष्ण श्रेणिक नरनाथ, धर्म दलाली ॥ ध० ॥ जिणे बाध्यु तीर्थंकर गोत्र, सूत्रमें चाली ॥ करी क्षमा परदेशी, पाप छिटकाइ ॥ पा० ॥ तु० ॥ ६ ॥ दान शील तप भाव, शुद्ध आराधी ॥ शु० ॥ पाया हे सुख अनत, छोडे उपाधी ॥ ऐसो जाण सुकृत करो, थें नर नारी ॥ थें० ॥ छोडो पाप प्रमाद, महा दु.खकारी ॥ पुण्यानुबधी पुण्य, जिससें सुख पावे ॥ जि० ॥ तिलोकरिख कहे सत्य, सूत्रक न्योंव ॥ शहर पुनाकी माइ, लावणी बणाइ, लावणी गाइ ॥ तु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शील स्वमानी लावणा ॥

॥ दोहा ॥ सासण नायक सुरतरु, भयभजण भगवत ॥ त्रिशलानद

दिनंद सम, प्रणमुं मन धरि खंत ॥ १ ॥ वली प्रणमुं गौतम गुरु, तप संजम दातार ॥ तास प्रसादें वर्णवुं, सुपन सोले अधिकार ॥ २ ॥ पाडलिपुर नगरविषे, चंद्रगुप्त राजिंद ॥ बारे व्रत धारक गुणी, परजाने सुखकंद ॥ ३ ॥ चउदे पूरव ज्ञान शुद्ध, भद्रबाहु मुनिराज ॥ समोसरया उद्यानमें, तारण तरण जहाज ॥ ॥ ४ ॥ पक्खी पोसाने विषे, देख्या स्वपनां सोल ॥ पूछे नृप कर जोडिने, अर्थ कहो मुनि खोल ॥ ५ ॥

॥ अगडदम अगडदम वजे चोघडां ॥ ए देशी ॥ कल्पवृक्षकी शाखा तूटी, अर्थ सुणो यह स्वपनेका ॥ अब जो राजा होयगा कोई, संजम वो नहीं लेनेका ॥ दूजे अस्त भया सूर्य अकालें, भेद सुणो अब इसका सही ॥ पंचमे आरे जन्म लिया है, उनकुं केवलज्ञान नहीं ॥ नहिं मनपरयव अवधि पूरण, ये अंधकार भया भारी ॥ भद्रबाहु मुनि कहे भूपसूं, पंचमो आरो दुःखकारी ॥ १ ॥ चांद देखा तुम चालणी जैसा, तीसरे सपनाके मांई ॥ अलग अलग समाचारी होयगी, बोल फरक कुछ दरसाई ॥ भूत भूतणी नचते हिल मिल, देखा चौथे स्वप्नमांई ॥ देव गुरु धर्म खोटा जिनकुं, लोक मानेगा अधिकाई ॥ दया धर्मपर बहोत जलेंगे, थोडे जैनधरमधारी ॥ भ० ॥ २ ॥ पांचमे देखा सर्प भयंकर, बारे फणकर फूंकारे ॥ कितेक साल पीछें काल पडेगा, बारे बरस लग भयंकारे ॥ उत्तम साधु कर संथारा, आतमकारज सारेगा ॥ कायर साधू सो ढीले पडेंगे, हिंसाधर्म विस्तारेगा ॥ खोटा दे उपदेश लोकोकुं, होवेगा केई घरबारी ॥ भ० ॥ ३ ॥ छठे स्वपने देवविमाण कुं, आता सो देख्या फिरता ॥ जिसका अर्थ सुणो तुम राजिंद, दिल अंदर आणी थिरता ॥ जंघाचारण लब्धि धारक, और विद्याचारण जाणो ॥ ये दो लब्धिके हैं धारक, ऐसे मुनिवरकी हाणो ॥ वैक्रिय और आहारिक की लब्धि, ये भी विछेदेगा सारी ॥ भ० ॥ ४ ॥

विकसा कमल उकरडी उपर, जिसका भेद सुनो भाई ॥ चार वर्णमें महाजन के घर, धरम रहेगा अधिकाई ॥ शास्त्रकी रुचि रहेगी थोडी, सुणता निद्रा लेवेगा ॥ स्तवन सझाय और ढाल चौपाइ, जिसमें बहुत खुश रहवेगा ॥ प्रतिबोध पण इसमें पावें, होवेगा सजमधारी ॥ भ ॥ ५ ॥ आगियाका चमत्कार आठमें, भेद सुणो इसका नीका ॥ उद्योत होयगा जैनधरमका, बाकी मिथ्यातम है फीका ॥ समुद्र सूको तीन दिशा पर, दक्षिणदिश डोलो पाणी ॥ दक्षिण दिशपर धरम रहेगा, तीन दिशा रहेगा हाणी ॥ पचकल्याणिक भये जिणपुरमें, धरम हानि जहा उच्चारी ॥भ०॥६॥ दशमें सोनेकी थाली जिसमें, कुत्ता देखा खीर खाता॥उत्तमकुलकी दौलत है सो, जावेगी मध्यम हाता॥नट खट सौदा चोर ठगारा, धूर्त होयगा धनवाला॥साहुकार सो झुरेगा दिलमें, कह न सके मनकी ज्वाला ॥ धन सपत सज्जन की हाणी, सत्यवादी कम नर नारी ॥ भ० ॥ ७ ॥ हस्तीके ऊपर ग्यारमे स्वपने, देखा बदरकु बैठा ॥ नीच राजा सो मालिक होयगा, उच्च राजा रहेगा हेठा ॥ बारमे स्वपने देखा तुमने, दरिये मर्यादा छोडी ॥ बेटा बेटी मात पिताकी, मर्यादा राखे थोडी ॥ बहू सासू का न करेगी कहेणा, उलटी दुःख देगी भारी ॥ भ० ॥ ८ ॥ लाच ग्राही सो क्षत्री होयगा, वचन देके नट जावेगा ॥ दगादार विश्वासघाती नर, सबे नरकु हटावेगा ॥ भला शक्स का आदर कमती, पापी आदर पावेगा ॥ गुरु गुराणीका चेला चेली, सेवा भक्ति कम चावेगा ॥ अपनी बडाइ करेगा मुखसे, गुरुकु होयगा दु खकारी ॥ भ० ॥ ९ ॥ जोत्या देखी स्वपने तेरमें, वाछरुके महारथ माही ॥ नादान उमरके धरम करेगा, सजम लेगा उलसाइ ॥ लज्जासु तप सजम पाली, तप जपमे चित्त देवेगा ॥ बुड्ढा धिठा होयगा धर्ममें, आलस अधिको रेवेगा

॥ सरखा नहिं सब लड़का बुढ्ढा, समुचय भाव कह्या जहारी ॥ भ० ॥ १० ॥ रत्नकी कांति मंदी देखी, चउदमा स्वपना में जाणो ॥ भरतक्षेत्रका संत साधके, हेत इकलास थोडो मानो ॥ क्रोधी क्रूपी अरु अभिमानी, अपनी बात जमावेगा ॥ भली सीख जो देगा कोइ, उसका अवगुण बतावेगा ॥ अल्प होयगा संजमवंता, होयगा वहोतसा लिंगधारी ॥ भद्र० ॥ ११ ॥ राजकुंअर सो चढ्या पोठिपर, देखा स्वपने पंदरमे ॥ राजा जैनधरम तज देगा, राचेगा मिथ्या करमें ॥ बात करे जो सच्चावट की, उसकी थोड़ा मानेगा ॥ झूठेकी परतीत करेगा खोटेका पक्ष तानेगा ॥ धर्मी पुरुषकी करेगा ठट्टा, पापीका आदर भारी ॥ भ० ॥ १२ ॥ लड़ते हस्ती देखे सोलमे, विन महावत आपस मांहीं ॥ वार वार दुष्काल पडेगा, मन च्हाया वर्षेगा नांहिं ॥ मात पिता गुरु बातके करता, विच विच बात करेगा छोटा ॥ भाई भाईमें संपत ओछी, बोलेगा निर्थक खोटा ॥ पिता पक्षको आदर ओछो त्रियापक्षसुं करेगा यारी ॥ भ० ॥ १३ ॥ कायदावाला प्रामाणिक न्यायी, गुणिजन थोडा होवेगा ॥ झगडा टंटा निरर्थक करकें, राजमांहीं धन खोवेगा ॥ केण न माने भला शख्सकी, फिर पीछे पछतावेगा ॥ एकविंश हजार वरस लग राजिंद, ऐसी रीत कर जावेगा ॥ अर्थ सुणी सोले स्वपनाका, राजा भया दृढ व्रतधारी ॥ भ० ॥ १४ ॥ संवत ओगणीशें साल सेंतिसका, फागण वदि ग्यारस आई ॥ तिलोकरिख कहे स्वपन लावणी, गाम कड़ामें बणाई ॥ पंचम आरो दुःखम नामें, दुःख है इणमें अधिकाई ॥ धरम ध्यान और समता राखे, उनकुं सुख समजो भाई ॥ ऐसो जाणकें करजो सुकृत, उतरोगे भवजल पारी ॥ भद्रबाहु० ॥ १५ ॥ इति सोल स्वप्नानी लावणी ॥

॥ अथ कालकी लावणी ॥

॥ साखी ॥ छिन छिनमांहे छीजे आउखो, ज्यू अजलि जल जाण॥ ओस बुद पाणी परपोटो, वार न लागे हाण रे ॥ करलो हुशियारी, धर्म तैयारी डरजो कालसू ॥ १ ॥ जोवन जाता जेज न लागे, ज्यु नदीको पूर ॥ नदी किनारे तरुवर जैसे, कोई दिन जाये जरूर हो ॥ कर लो हुसियारी ॥ ध० ॥ २ ॥ वाल तरुण वृध्द सुखी दु.खी और, राय रक नर नार ॥ हरि हर इद्र नरेंद्र सुरासुर, छाडे न काल करार रे ॥ करलो हु० ॥ ध० ॥ ३ ॥ वैधरत व्यतिपात जोगिणी, कालवास दिशाशूल ॥ काल न देखे वक्त वारने, जिनसें करेगे भूल हो ॥ करलो० ॥ ध० ॥ ४ ॥ सूता जागता खाता पीता, करता वात विचार ॥नहीं भरोसो कालदूत को जवरदस्त ससार हो ॥ करलो० ॥ ध० ॥ ५ ॥ झाड पहाड उजाडगाममें, नदी खाल नवाण ॥ खवर नहिं किण ठामके उपर, काल ले जावे ताण रे ॥ करलो० ॥ ध० ॥ ६ ॥ जल अग्नि और जहर भुजगम, सिंह रीच्छ पशु व्याल ॥ खवर नहि रोग सोग उपद्रव की, आसी किण जोगें काल रे ॥ करलो० ॥ ध० ॥ ७ ॥ जाया सो तो जरूर जावेगा, फूल्या सो कुम्हलाय ॥ वधा सो विखरे इण जगमें, वेहेम नहि इणमाय रे ॥ करलो० ॥ ध० ॥ ८ ॥ जो क्षण जावे सो नहिं आवे, करता कोडि उपाय ॥ आउखु समोलक्ष पायके चेतन, खोने मत फोकटमाय रे ॥ करलो० ॥ ध० ॥ ९ ॥ ज्ञान ध्यान तप जपको उद्यम, करजो सुगुणा लो.क ॥ परभव खरची साथी जीवने, लीजो नाणो रोक रे ॥ करलो० ॥ ध० ॥ १० ॥ ये ससार असार वावले, ममता मोह निवार ॥ कालको डर जो मेटणो तुझने, करले खेवा पार रे ॥ करलो० ॥ ध० ॥ ११ ॥ ओगणीशे अडतीस जेठ कृष्ण पख, तीज तिथि शशिवार ॥ देवटाकली में तिलोकरिख कहे, धर्मसु

जयजयकार रे ॥ करलो॰ ॥ ५० ॥ १२ ॥ ५ ॥

॥ अथ पांचमा आरानी लावणी ॥

॥ जमी निरस हो गई, पाणी कम वरसे ॥ पा॰ ॥ कबही धान्य गल जाय, कबहीं जन तरसे ॥ कबहिंक ओछी थंड, लोक चित्त चहावे ॥ लो॰ ॥ कबहींक पडती वहोत, नाज जल जावे ॥ कबहिंक गरमी अल्प, रोग उपजावे ॥ रो॰ ॥ कबहीं गर्म पड़े वहोत, आलस घबरावे ॥ करो धर्म ध्यान संतोष, सदा सुखकारी ॥ स॰ ॥ सुणि इस आरेका हाल, करो हुशियारी ॥ ए टेक ॥ १ ॥ वस्ती ऊजड़ वोत, नहिं धनवाला ॥ न॰ ॥ जो किसके मिले धन, नहिं रखवाला ॥ होवे तो जीवे नांय, सोग मन लावे ॥ सो॰ ॥ जीवे तो निकले कपूत, माया गमावे ॥ अथवा देवे दुःख झगडा देइ लावे ॥ झ॰ ॥ कोइके कुव्यसनी होय, छाती दझावे ॥ कुलमें लगावे दाग, लजावे भारी ॥ ल॰ ॥ सु॰ ॥ ॥ २ ॥ बोले बापके सामे, देवे तुंकारो ॥ दे॰ ॥ साठीमें नाठी अक्कल, माने कुण थारो ॥ पुत्र पिताकी कहेण, मांहे नहिं रेवे ॥ मा॰ ॥ सासू कुं हुकम में राखे, वहु दुःख देवे ॥ बेटा होवे अलग, परणके नारी ॥ प॰ ॥ करे पिता सुं जोरो, माया सब हारी ॥ झगड़े राजके मांय, बोले कुविचारी ॥ वो॰ ॥ सु॰ ॥ ३ ॥ कोईके पूत सपूत, नारी दुःखकारी ॥ ना॰ ॥ दुःख देवे दिन रात, महा कलहकारी ॥ छेडी लंका ी लाय, शरम नहिं तनमें ॥ श॰ ॥ भांडे लोकके बीच, कथ दुःखी मनमें ॥ जो नारी सुख होय, भ्रात संतावे ॥ भ्रा॰ ॥ वे झगड़ा टंटा करके, राजमें जावे ॥ बात बातमें द्वेष, करे अति जहारी ॥ क॰ ॥ सु॰ ॥ ४ ॥ जो होवे वहोत कुटुंब, चिंता रहे भारी ॥ चि॰ ॥ घरमें धन होय अल्प, खर्च दुःख त्यारी ॥ दास सम सब कुटुंब, काम करे सारा ॥ का॰ ॥ तो पण न भरे पेट, सदा दुःखियारा ॥ कोइ

रुसे कोइ रोवे, कोइ मनावे ॥ को० ॥ निशदिन रहे उद्वेग, कालजो खावे ॥ जो नहीं होवे कुटुव, तोहि दु.खियारी ॥ तो० ॥ सु० ॥ ५ ॥ भाई गोत्रीसें वैर, हेत करे परसु ॥ हे० ॥ गुणकी नहीं कछु परख, राजी आडवरसु ॥ अल्प सपदामाहे, करे मगरूरी ॥ क० ॥ धर्मी नरपें द्वेष, निंदा करे कूरी ॥ गुमास्ता परपची, सेठ धन खावे ॥ से० ॥ सेठको काढी दीवालो, आप भग जावे ॥ भली शीख जो देत, देत तस गारी ॥ दे० ॥ सु० ॥ ६ ॥ छोटे वडेकी रीत, कायदो नाही ॥ का० ॥ मनका ठाकर वणे, करे अकडाइ ॥ वीच वीचमें करे वात, जाणे में श्याणो ॥ जा० ॥ वचन दे कें फिर जाय, ज्यों तेली घाणो ॥ मुख मीठो चित धिठो, उससें दिलराजी ॥ उ० ॥ कठण कहे हित वेण, उससें नाराजी ॥ पिता पक्षसु नहिं हेत, नारी पक्ष यारी ॥ ना० ॥ सु० ॥ ७ ॥ दया दानके माहे, खरचता रोवे ॥ ख० ॥ ख्याल गोठके माही, वृथा धन खोवे ॥ साधु सतके पास, जाता दिल शरमे ॥ जा० ॥ मिजलसमें अणतेड्यो, जाय कुकर्मे ॥ धर्म काममें पाछे, पाप अगवानी ॥ पा० ॥ खावणमें तैयार, तपमें करे कानी ॥ प्रभु गुण गाता लाज, ख्याल अधिकारी ॥ ख्या० ॥ सु० ॥ ८ ॥ करके कन्या म्होटी, दाम लिया च्हावे ॥ दा० ॥ माथे देणो कर कें, जाति जिमावे ॥ परम देवाधिदेव, जिनकु नहिं ध्यावे ॥ जि० ॥ भैरव भवानी भूत, पीर मनावे ॥ गुरु गिम्न्या निर्ग्रंथ, दाय नहिं आवे ॥ दा० ॥ लोभी ठगारा धूर्त, सत चित्त च्हावे ॥ धारे खोटी शीख, अच्छी लगे खारी ॥ अ० ॥ सु० ॥ ९ ॥ दया धरम पर प्रेम, दिलमें नहिं राखे ॥ दिल० ॥ हिंसा धरम में राचे, कूड मुख भाखे ॥ भरे सायदी झूठ, प्रपची पापी ॥ प्र० ॥ दगादार कृतघ्न, वहोत परलापी ॥ निंदा विकथा वात, करकें हरखावे ॥ क० ॥ जो

कहे शास्त्र बोल, तो झोका खावे ॥ जप तप करणी वात, लगे नहिं प्यारी ॥ ल० ॥ सु० ॥ १० ॥ किसके लेणेका दुःख किसके देणेका ॥ कि० ॥ किसके गेणेका सोच, किसके रेणेका ॥ किसके खाणेका दुःख, किसके दाणेका ॥ कि० ॥ किसके जाणेका दुःख, किसके लाणेका ॥ किसके पिताका दुःख, किसके माईका ॥ कि० ॥ किसके बहेन सुत दुःख, किसके भाईका ॥ किसके धनकी फिकर, किसके बीमारी ॥ कि० ॥ सु० ॥ ११ ॥ कोईके शत्रुका सोच, कोईके साजनका ॥ को० ॥ कोईके परचक्री दुःख, कोईके राजनका ॥ किसके खेतीका दुःख, कोईके वतनका ॥ को० ॥ कोईके चोर हाकम, धाड़ अगनका ॥ कोईके पड़ोशी दुःख, दुष्ट जन जलका ॥ दु० ॥ कोईके अकलका दुःख, कोईके दल बलका ॥ नहिं संपूरण सुखी, कोइ नर नारी ॥ को० ॥ सु० ॥ १२ ॥ जो कोई माने सुख, सकल मुझ मांई ॥ स० ॥ सांज तलक कोई दुःख, आवे उसतांई ॥ जो नहिं मानो बात, देखो अजमाई ॥ दे० ॥ ये शास्त्रकी बात, बिचारो भाई ॥ पंचम कालका हाल, बड़ा है बंका ॥ ब० ॥ तिलोकारिख कहे साच, इसमें नहिं शंका ॥ कलियुगकी निसाणी, कही सुविचारी ॥ क० ॥ सु० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ चेतनकर्मकी अदालत लावणी ॥

॥ दोहा ॥

॥ समरुं शासन स्वामिकुं, त्रिकरण शीश नमाय ॥ झगड़ो चेतनकर्मको, न्याय कहुं चित्त चहाय ॥ १ ॥ अथ धोसो ॥ समरुं गुणधर संघपति, जैन शुद्ध जति, शारदा सति, असल द्यो मति, पुण्यकी रति, वृद्धि करो अति, करो कर्म कति, देवो सिद्ध गति, चाहुं भगति, अनंत शक्ति जी ॥ १ ॥ अथ घन ॥ धर्मकी वनी कचेरी भारी, सिंहासन धर्जि रूप धारी ॥ वैठे प्रभु जिस पर हुशियारी, सभामें जुड़े तीर्थ चारी ॥ अदालत करे सत्त जहारी,

खोटकी नहीं है कछु यारी ॥ दगा जीव चेतनका है बका, न्याव तुम सुण लो नि शका जी ॥१॥ अथ लावणी ॥ मेरी धन दौलत जमीन, अचल दिलवाणा ॥ अचल दिलवाणा ॥ तुम करो अदालत मेरी, जगतपति राणा ॥ ए टेक ॥ खुद चेतन मुद्दइ, वणा है जहारी ॥ प० ॥ आठु कर्म मुद्दायले कपट भडारी ॥ धीरजका इष्टांप, शोध कर लाया ॥ शो० ॥ सज्झाय ध्यान मजमून, सच्च वणवाया ॥ अर्जी आन गुजारी, क्षमा तलवाणा ॥ क्ष० ॥ तुम० ॥ १ ॥ मैं जाता शिवपथ, कर्म दिया घेरा ॥ क० ॥ धोका दे मिले सग, लूटा सब डेरा ॥ लक्ष चोरासीके वीच, मोकु अटकाया ॥ मो० ॥ फिर राग द्वेष दृढ वध, मोकु वधवाया ॥ मैं पाया दु ख अनत, भेद नहिं जाणा ॥ भे० ॥ तुम० ॥ २ ॥ ये टटा है वेपार, बोत है जूना ॥ बो० ॥ में रहा भोलपके माहि, माफि करो गूना ॥ मोय मिले नहिं वकील, सवे कानूना ॥ स० ॥ ये झगडा बढा वहोत, दिनो दिन दूना ॥ मैं तो भया बलहीण, वढे कर्म दाणा ॥ व० ॥ तु० ॥ ३ ॥ अब खुली कछु तकदीर, पुण्य परभावें ॥ पु० ॥ जाणा मैं हु सच्च, हारु नहिं न्यावें ॥ सत्तावीश गुणधार, वकील कानूना ॥ व० ॥ जाणे अर्जकी मर्ज, वहोत मजमूना ॥ मैं किया जाके मिलाप, बहुत हरखाणा ॥ व० ॥ तुम० ॥ ४ ॥ उन देख शास्त्रका न्याय, भेद बताया ॥ भे० ॥ मैं जाना कर्मोंका जुल्म, मसोदा वनवाया ॥ तुम निन करे दृण न्याय, अर्जी मैं लाया ॥ अ० ॥ सुमति गुप्ति ये आठ, गवाह वुलवाया ॥ शील असेसर चौधरी, उसकु बुलवाणा ॥ उ० ॥ तु ॥ ५ ॥ अब अर्जी गुजरी उस वखत, हुकुम फरमाया ॥ हु० ॥ प्रभु ज्ञान चपरासी भेज, मुद्दायले वुलवाया ॥ सो बोले हम सग, कछु नहीं दाना ॥ क० ॥ चेतन झगडे झूठ, खलकर्म ठावा ॥

॥ पंचप्रमाद विखवाद गवाह संग आणा ॥ ग० ॥ तु० ॥ ६ ॥ हम घर आया यह, उपत चलाई ॥ उप० ॥ खाया है कर्जा वहोत, हमसे उभाई ॥ राचा भोग विलास, मन वच काया ॥ म० ॥ घाटा नफा नहिं जाना, कर्जा चढाया ॥ जब हम मंगण गये, तबे घबराणा ॥ त० ॥ तु० ॥ ७ ॥ हाजर खडे गवाही, हाल सुणाया ॥ हा० ॥ तब चेतन दे उत्तर, सुणो जी महाराया ॥ इमानदार है सच्चे, मेरे गवाही ॥ मे० ॥ जाणत सवे जहान, झूठ कछु नांही ॥ छुडा दीनी मेरी वतन, अखुट धन नाणां ॥ अ० ॥ तु० ॥ ८ ॥ करम फेरेवादार, वहोत दुःखदाना ॥ व० ॥ लूट मचाई बहुत, किया हेराना ॥ लक्ष चौरासी मांहे, वहोत भमाया ॥ व० ॥ वहोत कराया स्वांग, किया मुझ काया ॥ लूटे हरि हर इंद्र चंद्र नरराणा ॥ चं० ॥ तु० ॥ ९ ॥ लूटे केई विद्वान, बडे पंडितकुं ॥ व० ॥ मेले नरकके वीच, वहोत से नितकुं ॥ कहा पुण्यका नाम, पाप करवाया ॥ पा० ॥ कर कर हिंसा काम, धर्म वतलाया ॥ वहोत फेलाया जाल, जिससे ललचाणा ॥ जि० ॥ तुम० ॥ १० ॥ एसा करो इन्साफ, चेतन दरसावे ॥ चे० ॥ अब करमों की अपील, होणे नहिं पावें ॥ जन्म मरण दुःख रोग शोक मिट जावे ॥ शो० ॥ ज्ञान दरसण मुनसफी, करके समझावे ॥ चेतनका कर्जा करो अदा, भया फरमाणा ॥ भ० ॥ तुम० ॥ ११ ॥ असल कर्ज जो देना, होता कर्मोंका ॥ हो० ॥ चेतन से दिलवा दो, मिटे सब धोका ॥ तपका नाणां रोक, दिलवाया जहारी ॥ दि० ॥ शुद्ध संजम जमानत, करी है तब सारी ॥ भया कर्जासे अदा, सदा सुखियाणा ॥ स० ॥ तु० ॥ १२ ॥ अदल न्याय किया नाथ, हटाया तस्कर ॥ ह० ॥ चेतनकुं मिली फारगती, रह्या दिल हंसकर ॥ उगणीसें अडतीस साल, घोडनदी लश्कर ॥ घो० ॥

कीनी लावणी एह, समज दिल ठसकर ॥ तिलोकरिख कहे सार, समझो कछु स्याणा ॥ स० ॥ तु ॥ १२ ॥ इति॥

॥ अथ कर्मपच्चीसीकी लावणी ॥

॥ चेत पिछले पाख, रामनवमीको जन्म लियोरे ॥ ए देशी ॥ करमकु मत बांधे भाई रे ॥ क० ॥ करम रेख नां टले करो कोई, लाखों चतुराई ॥ ए टेक ॥ श्रीआदीश्वर अतरायसु, वर्ष अहार पाया ॥ वर्द्धमान प्रभु कर्म जोगसु, ब्राह्मणी कुखें आया ॥ वात यह इंद्र जब जाणी ॥ वा० ॥ हरण कराय मेल्या क्षत्री कुलमें, त्रसलादे राणी ॥ भयो ये अचरज जगमाही रे ॥ भ० ॥ क० ॥ १ ॥ बारा वर्ष छमास सजममें, करि दुक्कर करणी ॥ नर सुर तिरयच दिया परीसा, वेदना हद वरणी ॥ उपसर्ग गोसालक दिया रे ॥ उ० ॥ लोहीठाण छ मास प्रभुके, केवल माहे रह्या ॥ खुलासा सूत्र के माही रे ॥ खु० ॥ क० ॥ २ ॥ कपट प्रभावें मल्लिजिनेश्वर, वेद धरयो नारी ॥ सागरचक्री के साठ सहस्र सुत, गगा लावण धारी ॥ काठादेवीने तोड नाख्यो रे ॥ का० ॥ सबही मरण पाया इक साथें, बाकी नहीं राख्यो ॥ नृप सुण चिंता अति आई रे ॥ नृ० ॥ क० ॥ ३ ॥ सनतकुमार चक्रीके तनमें, रगतापित्ती छाई ॥ सजमले कियो मास मास तप, सातसे वर्ष ताई ॥ आठमो चक्री मान लायो रे ॥ आ० ॥ सातमो खड साधना चांडियो, करम उदय आयो ॥ मरयो सो सागरमे जाई रे ॥ म० ॥ क० ॥ ४ ॥ राम लक्ष्मण सीता सतिसगें, विपत सही वनमें ॥ सबुक सूर्य हस खड्ग साध्यो, मारयो गयो छिनमें ॥ बाप चढ आयो हरि सामे रे ॥ वा० ॥ खर दूषण त्रिशिर रण लडता, तीनू मरण पामे ॥ कुमतमति ऐसी बण आई रे ॥ कु० ॥ क० ॥ ५ ॥ साहसक्क तारासु मुरछो, निद्या मौत लीनी ॥ लकपति महायक कर्मसे, सीताहरण

कीवी ॥ रामजी लंका चढ आया रे ॥ रा० ॥ लक्ष्मणवीर महाबलवंता, दश मस्तक घाया ॥ विभीषण राजगादी पाई रे ॥ वि० ॥ क० ॥ ६ ॥ श्रीमुनिसुव्रत शिष्य आज्ञा विन, खंधकादिकजाणी ॥ पांचसे रिख गया दंडक देशमें, पीलाणा घाणी खंधकजीके आयो क्रोध भारी रे ॥ खं० ॥ डंडकी देशके बाल्यो असुर भव, विराधिक पद धारी ॥ बारमो चक्री नरक जाइ रे ॥ बा० ॥ क० ॥ ७ ॥ पांडव पांच महा बलवंता, हारी द्रौपदी नारी ॥ बारे वर्ष लग वन वन भटक्या, विपता सहि भारी ॥ कीचकको कीचो कर नाख्यो रे ॥ की० ॥ कौरवसुं कियो युद्ध जोरावर, आपणो राज राख्यो ॥ द्रौपदी लेगयो सुर आई रे ॥ द्रौ० ॥ क० ॥ ८ ॥ पांडव कृष्ण गया खंड धातकी, पद्मोत्तर आयो सामें ॥ कर्मजोग पांडव महाबलिया, रणमें हार पामे ॥ नृसिंह रूप धारयो गिरिधारी रे ॥ नृ० ॥ द्रौपदी लाया गंगा उतरिया, रुस्या है मुरारी ॥ दिसोटो दियो पांडव तांई रे ॥ दि० ॥ क० ॥ ९ ॥ कैद के मांहि जाया कृष्णजी वध्या गोकुल-गामें ॥ कंस पछाड सोरिपुर छोडी, रह्या द्वारकाठामें ॥ जरासंध मारया है महाबंका रे ॥ ज० ॥ तीन खंडमें आण मनाई, दिया जीत डंका ॥ द्विपायण रीसज भराई रे ॥ द्वि० ॥ क० ॥ १० ॥ द्वारकानगरीमें दाहज दीनो, मात पिता तांई ॥ रथमें बैठाय चल्या हरि हलधर, द्वार पड्यो आई ॥ गया चल कसंबी वन दोई रे ॥ ग० ॥ मृग भरोसे जरा कुमरकें, बाण मारयो जोई ॥ पानी विन हरि मृत्यु पाई रे ॥ पा० ॥ क० ॥ ११ ॥ नल राजा दमयंती राणी, पाई दुःख भारी ॥ हरिचंदराय तारादे नीच घर, माथेभरयो वारी॥ कूकडो चंदराजा कियो ॥ कू० ॥ रायचंद फिर वीरमती को, रणमें प्राण लियो ॥ करणी फल छूटे नहिं कांई रे ॥ क० ॥ क० ॥ १२ ॥ नागश्री धर्मरुचि मुनिकुं, कड़वो तुंबो

दीशा ॥ हुई फजीती नरक सिधाई, अनत दु'ख लियो ॥ भई सुकुमा
ि ा ऽ नारी रे ॥ भ ॥ पच भरतारी हुई कर्मसु, लियो अपयश
भारी ॥ समझो ये मतलब मनमाहीं रे ॥ स० ॥ क० ॥ १३ ॥
ःराको खाल उतारी पूरवभव, हर्ष धरयो मनमें ॥ तेरह क्रोड
२ ˉ पाठे खधकजीकी, खाल उतारी वनमें ॥ पुडरिक शेष वर्ष
स्जम पाली रे ॥ पु० ॥ डगियो तीन दिवस में मर कर, नरक
गयो चाली ॥ कर्मको ख्याल अजव भाईरे ॥ क० ॥ क० ॥ १४ ॥
महापातकी राय प्रदेशी, सच्या नरक खाता ॥ केशी
मुनि उपदेश सुणीने, श्रावक व्रत राता ॥ तपस्या
वेले वेले कीवी रे ॥ त० ॥ दिन गुणचालीस माही सुकृत कर,
सुरगति जिण लीवी ॥ विचित्रगति कर्मोकी गाई ॥ वि० ॥ क०
॥१५॥ वीरप्रभुको कुशिष्य कहिये गोसालक जाणो ॥ अष्टाग निमित्त
छे बोल प्ररूप्या, जिन ज्यों सो यु जाणो ॥वडाई करी मुखसें
भारी रे ॥ व० ॥ मरणसमें जिण कर्मजोगसु, आतमा धिक्कारी ॥
बारमे स्वर्गे उपज्यो जाई रे ॥ बा० ॥ क० ॥ १६ ॥ महावैराग्य
परिणामें सजम, लीधो उ ऽसाई ॥ क्षत्री राजकुमर जमाली,
वीरजीको जमाई ॥ करम वल कुसरधा राच्यो रे ॥ क० ॥
श्रीजिनवचन उत्थापन कर के, खोटो मत खाच्यो ॥ समझायो
सपझ्यो कछु नाई रे ॥ स० ॥ क० ॥ १७ ॥ वसुदेव सरख जो
पिता ओर, देवकी जैसी माता ॥ नेम प्रभु शिष्य गजमुनिवरके,
हरि हलधर भ्राता ॥ देख सुसराकु रीस आई रे ॥ दे० ॥ सिरपर
बाधी पाल माटीकी, खीरा दिया ठाइ ॥ भुगत्या विन छूटे कछु
नाइ रे ॥ भु० ॥ क० ॥ १८ ॥ चदनराय मलयागिरि राणी,
सायर नीर भाई ॥ चोर ज्यों छाने निकल्या घरसें, दिक्कत बहु
पाई ॥ कर्मवस चारूही विछडीया रे ॥ क० ॥ रातें चोर आय
धन हरियो, वन वन रडवडिया ॥ वणझारो ले गयो माई रे

॥ व० ॥ क० ॥ १९ ॥ जातिमदसूं मेहतरके घर, जन्म लियो जाई ॥ पुत्रपणे रह्या साहुकार घर, आठ कन्या व्याही ॥ परण्या फिर श्रेणिककी बेटी रे ॥ प० ॥ सुनार घरे मेतारज रिख शिर, बांध बांधी सेंठी ॥ वेदना पाई अधिकाई रे ॥ वे० ॥ क० ॥ २० ॥ मयणरेहा वश मोह्यो माणिरथ, छलपणो विचार्यो ॥ रण जीती आयो सुण पापी, जुगवाहु मार्यो ॥ आधिनिश निकल्यो डर आणी रे ॥ आ० ॥ सर्प डस्यो मरियो वनमांही, नरकगति ठाणी ॥ मयणरेहा जनमें पुत्र जाई रे ॥ म० ॥ क० ॥ २१ ॥ भगवंत भक्त श्रेणिक के कोणिक, पिंजरामें दीयो ॥ तालपूट खाईने मरिया, नरकवास कियो ॥ कोणिक लेणे हार हाथी तांई ॥ को० ॥ एक क्रोड ने अस्सी लाख नर, मरिया रणमांइ ॥ सार पण निकल्यो कछु नांई रे ॥ सा० ॥ क० ॥ २२ ॥ मृगापुत्र सगड़ अभंग सेण, चिलाती चोर जाण्यो ॥ दुःख अनंता पाया कर्मसुं, सूत्रमें वखाण्यो ॥ केई तो कथामांहे जहारी रे ॥ के० ॥ जिनचक्री हरि हर इंद्रादिक, कोईसुं नहिं यारी ॥ छोटा तो किशी गिणत मांई रे ॥ छो० ॥ क० ॥ २३ ॥ चार ज्ञान चउदे पूरवधर, छेलो चारित्र पाई ॥ पढ़ कर सो गया नरक अनंता कह्यो सूत्रमांहि ॥ इंद्र जीव उपजे थावर जाई रे ॥ इं ॥ ऐसी समज कर ध्रूजो कर्मसूं, शंका कछु नांही ॥ बात ये जिनवर फरमाई रे ॥ बा० ॥ क० ॥ २४ ॥ उगणीशें अड़तीस वैशाख शुदि छठ, दक्षिण देश जाणी ॥ सेका काल रह्या सिरिगाममें, भविजन हित आणी ॥ कर्मफल दृष्टांत बताया रे ॥ क० ॥ तिलोकरिख कहे तोड्या कर्म सब, सो शिवसुख पाया ॥ धर्म है सदाहि सुखदाई रे ॥ ध० ॥ क० ॥ २५ ॥

॥ अथ मूर्ख उपर लावणी ॥

॥ बालक संगत करे सो मूरख, काम विना पर घर जावे ॥ मात पितादिक वड़े जो उनके, देत गालि नहिं शरमावे ॥ विना

कामें सा वडेके सामे, वार वार इत उत फिरता ॥ विना हुकारे वात करे शठ, परकुइ दान ना करता ॥ प्रच्छन्न वात कहे त्रिया के आगे, नीच निगुणा नरसु यारी ॥ ऐसे मूरखसें दूर रहो तुम, जो चाहने शोभा सारी ॥ ए टेक ॥ १ ॥ धर्मकथामे चित्त न राखे, के ऊघे के वात करे ॥ आपसे अधिक उससें अकडाइ, नरपतिका विश्वास धरे ॥ डरके ठिकाने जावे अकेला, गुरुका अवगुण वाद कहे ॥ अपणी पहुच न देखे जराभर, वडे वडेकी होड चहे ॥ सहज वात पर हाथ चलावे, विन मतलब देवे गाली ॥ ऐ० ॥ २ ॥ विण जाणेसें करे मसकरी देन लेन घर साथ करे ॥ शुकन वर्जता जावे अगाडी, वदल जाय जब गरज सरे ॥ भरी सभामें मोसर दाखे, बिना दोष कडवु बोले ॥ परनुकसानी देखि आणदे, सत्य झूठ पक्ष नहिं ठोले ॥ अपनी वडाई करे पडित विच, भली शिक्षा लागे खारी ॥ ऐ० ॥ ३ ॥ अजीरण पर जमे रसोई, लकड फाडे जहा खडा रहे ॥ चाडि चूगल अहि सोनीका दिल, विश्वास धरि मन माहे चहे ॥ धर्मी पुरुष की करे निंदना, सजन रूस्यो नहिं मनावे ॥ पाणी पीता हसे मूढ नर, रस्ते चलता रोटी खावे ॥ लडका चेला रखे लाडमें, निरर्थक तोडे तरु डारी ॥ ऐ० ॥ ४ ॥ दान दे के मगरुरी करे और किया उपगार न माने रती ॥ हलकी बोली बोले परकु, सतापे दु खी साधु सती ॥ सुलटी कहेता उलटी माने, हासी की वात पर रीश भरे ॥ छती शक्ति उपगार करे नहिं, दया दानमें शर्म मरे ॥ विना सुहाते गायन गावे, घात करे विन विचारी ॥ ऐ० ॥ ५ ॥ विश्वास दे के वदल जावे और, झूठा झूठा सोगन खावे ॥ अपना धर्म की करे हीनता, पाप कर के दिल पोमावे ॥ दो नर वात करे जासे ठामें, कान त्रीजो नर लगावे ॥ प्रच्छन्न वात करे प्रगट परकी, त्रिया पर हाथज उठावे ॥ गाड भाडसु करे अदी और, वद परेजी करे निमारी ॥

ऐ० ॥ ६ ॥ गर्व करे तन धन जोबन का, बुद्धि भली नहिं फैलावे ॥ ज्ञान ध्यान को करे न उद्यम, विकथासें दिल रमावे ॥ तप जप करतां आलस अधिको, पाप कर्ममें अगवानी ॥ नर भव रतन फोकटमें खोवे, ये सब है मूरख प्राणी ॥ तिलोकरिख कहे सत संगतसुं, वेगें तरो भवजल पारी ॥ ऐ० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ कक्का बत्तीसी ऊपर लावणी ॥

॥ कक्का कर्मकी अजब गती है, मत करनां तुम नर नारी ॥ हंसते हंसते बांधे जीवड़ा, भुगते तब मुशकिल भारी ॥ छिनमें रावका रंक बणावे, छिनमें रंकको राय करे ॥ लक्ष चौराशी चार गतीमें, नाना विध जीव रूप धरे ॥ इंद्र चंद्र नरेंद्र सुरासुर, किस सुं नहिं रक्खे यारी ॥ क० ॥ १ ॥ खक्खा खजाना संगी धर्मका, आगेकुं सुखदायक है ॥ धर्म मूल क्षमा अगवानी, जगतपतिका वायक है ॥ गग्गा गर्व मत करो सयाना, गुरु कहेणी करो निःशंका ॥ गर्व किया राजा रावणने, खोय दीनी दम में लंका ॥ गर्व रह्या नहिं किसका जगमें, मगरूरी है दु'खकारी ॥ क० ॥ २ ॥ घघ्घा तु घर जो मानत मेरा, सो नहिं है संगी तेरा ॥ तूं परदेशी चार दिनों का, क्यों, करता मेरा मेरा ॥ नन्ना नरमाई रखनादिलमें, नरमाई जगमें प्यारी ॥ करड़ा निसरड़ा वाजे जगमें, पावे भव भव दुःख भारी ॥ एरंड वृक्ष फल उपमा उसके, धर्मी शख्स सुं नहिं यारी ॥ क० ॥ ३ ॥ चच्चा चर्चा तुम कर लो धर्मकी, कर्म भर्मकी खबर पड़े ॥ मूढसुं वात करो मत बंदे, राग द्वेष और क्लेश चढे ॥ छच्छा छिन छिन छीजे उमर सब, किसके भरोसें तूं अकड़े ॥ काल अचानक एकदम अंदर, जैसे बाज तित्तर पकड़े ॥ ऐसी समझके छोड़ दे ममता, सतगुरु कहे रख हुशियारी ॥ क० ॥ ४ ॥ जज्जा जरासी कहुं हकीगत, जरा आया जोवन जावे ॥ जोर हठे जर जोरु जमी जन, तेरे संग कोई नहिं आवे ॥ ऐसी जाण

करो जैनधर्मकु, जीवजन्ता विन है ख्वारी ॥ झझ्झा झूठ मत घोलो वदे, झूठी हे ममता माया ॥ झूठा लेणा झूठा देणा, झूठा झूठमें ललचाया ॥ आगे का डर रख कर भैया, झूठ वात दे नीवारी ॥ क० ॥ ५ ॥ नन्ना नियम व्रत कर लो पहले, जब लग बुढापा नहिं आवे ॥ रोग वदन में आवे नहिं और इन्द्रिका पूरण बल पावे ॥ टट्टा टेक तुम रखो धर्मकी, जब लग जीव रहे तनमें ॥ पापकी टेक करो मत कवहु, मिले वदनामी जगजनमें ॥ सुभूमचक्री रावण चक्री, खोटी टेक लह्यो दु:ख भारी ॥ क० ॥ ६ ॥ ठट्ठा ठाठ दुनीया का वदे, इन्द्र धनुष वादल जैसा ॥ ठग पाचोंका सग न करना, परभवका रख अंदेशा ॥ डड्डा डक मत रखो दिलमें, साफी की सुधरे करणी ॥ जिसकी बुराई जिसकु पछाडे, जाय पडेगा नर्क वैतरणी ॥ वाप मारणकी दिलमें विचारी, नादिवर्धन कुमर गयो मारी ॥ क० ॥ ७ ॥ ढड्ढा ढूढ ले सार वस्तुकु, देव निरजन जसवता ॥ गुरु निर्ग्रंथ और धर्म दयामें, तीन रत्न ये शिव कता ॥ नन्ना नमो नित अरिहत सिद्धकु, आचारज उवज्झाय सदा ॥ साधु साध्वी सजमी सरणो, लेता दु:ख नहिं आवे कदा ॥ इनसु जो रक्खे करडाई, वे दु:ख पाते गति चारी ॥ क० ॥ ८ ॥ तत्ता तत्त्व नवका करो निर्णय, त्रणकु जाणो त्रणकु छडो ॥ सवर निर्जरा मोक्ष ये तीनु, इनकु शुद्ध मनसु मडो ॥ थथ्था थिर नहिं सुर्य चद्र,अरु अस्थिर ग्रह नक्षत्र तारा ॥ थिर नहिं इद्र चद्र हरि चक्री, सकल चराचर ससारा ॥ जन्मे सो मरे फूले सो कुम्हलावे, रखो धर्मकी हुशियारी ॥ क० ॥ ९ ॥ दद्दा दया नित पालो सयाना, दान देना दिल हरखाई ॥ विषय कपाय इद्रीकु दमन कर, ये करणी है सुखदाई ॥ धध्धा धर्मका सौदा कर लो, ज्ञान ध्यान तप जप सच्चा ॥ ये करणी है स्वर्ग मोक्षकी, इस विन सब सौदा कच्चा ॥ नन्ना नाम लो प्रभुका हरदम, जो चहाते

आतमा तारी ॥ क० ॥ १० ॥ पप्पा पुण्यसें पाया नर भव, आर-जदेश उत्तम कुलमें ॥ लंबो आउखो जोग मुनिको, क्यों तुं पड़ा है जग भुलमें ॥ फफ्फा फूल मत तन धन देखी, चार रोज चटको मटको ॥ आखरमें सब जाना छोड़ के, ऐसी समझके दिल हटको ॥ बब्बा बड़ाई जिनकी खलमें, रखे धर्मकी तैय्यारी ॥ क० ॥ ११ ॥ भम्भा भलाई कर लो भैया, पुण्य पाप संग आवेगा ॥ धरा रहेगा माल खजाना, जसें अपजस रह जावेगा ॥ मम्मा मान ले मुनिवर कहेणी, मन बंदर कुं कर वशमें ॥ मान माया मोह ममत मेट दे, आयु छीजे ज्यों जल पसमें ॥ मित्रपणुं कर छःकायासुं, अभयदान है सुखकारी ॥ क० ॥ १२ ॥ यय्या याद रख चर्चा धर्मकी, या देही मुश्कल पाया ॥ ऐसी वखतमें धर्म किया नहिं, सो भव भवमें पछताया ॥ रर्रा रोष मत करो किसीकुं, रोष किया तप फल हारे ॥ खंधक द्वीपायन रोष कियासुं, अनेक कोटि प्राणी मारे ॥ जन्म मरण दुःख लहेगा जगमें, तपकरणी सो गया हारी ॥ क० ॥ १३ ॥ लल्ला लोभकी लाय बुरी है, लालच वश दुःकृत करते ॥ हत्या करे बोले मुख झूठा, थापण दाबे परधन हरते ॥ वव्वा वाणी वीतराग प्ररूपी, सचि जाणि व्रत आदरना ॥ विनय धर्मको मूल जमा कर, आठ कर्म बशमें करनां ॥ शश्शा सत्य है सार सकलमें, साचकुं आंच न लगारी ॥ क० ॥ १४ ॥ षष्षा करो षट् कायकी रक्षा, निज आतम सम सब प्राणी ॥ दुःख मरण सो कोई न चहाते, दया भगवती सुखदाणी ॥ सस्सा ये संसार समुंदर, विषय भोग कीचड़ जाणी ॥ अब थब आठ कर्मका इसमें, अनंत वर्गणाका पाणी ॥ धर्म जहाजमें बैठ सयाना, उतर जाओ भवजल पारी ॥ क० ॥ १५ ॥ हहा हाल ये सुन के हियामें, हरदम श्रीजिनकुं भजना ॥ हेत रखो छःकाय जीवसें, हाय हरामी हठ तजनां ॥ हरो क्रोध

माया मद तृष्णा, पाप करता दिलमें लजना ॥ दया दान सत्य-शील अमम, धर्म क्रिया करता गजना ॥ इण भव में तन धन जन सपति, परभव में लहो जयकारी ॥ क० ॥ १६ ॥ उगनीशें अडतीस वैशाख उज्वल पक्ष, तिथि वारस दिन बुधवारे॥ तिलोकरिख कहे कक्कावत्तीसी, सुणके भविजन अवधारे ॥ तो उनक सुमति शुद्ध आवे, मिथ्या भर्म सो भग जावे ॥ जाने अथिर ससारकी रचना, जैनधर्म शरणो चहावे ॥ कर्म भर्मको मर्म विचारी, परम पद होय अविकारी ॥ क० ॥ १७ ॥ इति ॥

॥ कैदी ऊपर भावदृष्टातनी लावणी ॥

॥ दोहा ॥

॥ इस दुनियामें जीव सो, भूल रहे भर्ममाय ॥ समझानेके वास्ते, कहु दृष्टात बणाय ॥ १ ॥ प्रथम नमु जिनराज चरणकु, ए देशीमें छे ॥ इस दुनियाके अदर भैया, कैदी खाना भयकार॥ जिसमें कैदी पडे अपार॥ एक रोजका जिक्र सुनो सब, सफील गीरी महाभार॥ कैदी कोई जागे सो उसवार॥ उसी वखतमें विजली चमकी, देखे दृष्टि पसार ॥ पहेरायत सोते नींद मझार ॥ दोहा ॥ कैदी कहे सुणो यार, अब वखत मिला श्रीकार ॥ जेज करो मत पलककी, निकलो तुरगके वहार ॥ गफलत से होवेंगे खूब खुवार, समझके निकल चलो हुशियार ॥ ए टेक ॥ १ ॥ कोई कहे तव तनक नींद ले, फेर चलेंगे यार ॥ इरादा हैगा हमारा सार ॥ लेट रहे सो रहे कैदमें, पछतावे दिल सोय ॥ गुजारे रोज सवे रोय रोय ॥ जो निकले सो पहोंचे घरकु, माने मौज अपार ॥ मिला जिनकु अपना परिवार॥ दोहा ॥ इस दृष्टातें पड रहे, मोह तुरगके माय ॥ जगतवासी सब दुःख सहे, लक्ष चौराशी माय ॥ रस्ता हे जैनधर्म सुखकार॥ स० ॥ २ ॥ मोह कर्मकी

भींत पड़े कभी, विजली दमक अवतार ॥ इसीमें चेते भवि नर नार ॥ छूटे मोहके कैद खानासे, जावे मुक्ति मझार ॥ मिले निज गुण संपत परिवार ॥ अजर अमर अविनाशी निरंजन, सिद्ध सदा जयकार ॥ जिनोंके नाम लियां निस्तार ॥ दोहा ॥ कर्म भर्म दूरे रहे, परम पद निराकार ॥ धर्मपंथ साधन किया, वरते मंगलाचार ॥ आराधो समदृष्टि नर नार ॥स० ॥ ३ ॥ विषय कषायमें मस्त रहे केई, दिलमें रखे अहंकार ॥ नहीं है हमसो कोई सरदार ॥ टेढ़ी टेढ़ी पगड़ी रखे, चले निरखतो छांय ॥ मरोड़े मूछ रहे अकड़ाय ॥ कर्मगतिका अजब तमासा, छिनकमांहि विरलाय ॥ कोटिध्वज भीख मांग कर खाय ॥ दोहा ॥ गर्व करो मत चातुरा, हरि हर चक्री राय ॥ मर कर उपजे नरकमें, पड़या पड़्या विललाय ॥ भुक्ते वे परवश जमकी मार ॥ स० ॥ ४ ॥ मेरी मेरी करे दिवाना, जर जोरु जमी परिवार ॥ संगी नहिं है कोई तेरे यार ॥ ऐसी साइत फिर मिलणी मुश्किल, उत्तम कुल अवतार ॥ कठिण है तरणां भव जल पार ॥ चेत चेत रे चेत सयाना, धर्म दया दिलधार ॥ सेवो गुरु पंच महाव्रत धार ॥ दोहा ॥ सुगुरु शीख माने हिये, सुधरे सघला काज ॥ इस भवमें शोभा लहे, परभव अविचल राज ॥ तिलोकरिख कहेता पर उपगार ॥ समझ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ लावणी मराठी भाषामां ॥

॥ येउं दे वाचे नाम देवाचे, अष्टौ प्रहरा जप जिनवर ॥ दे टाकुनि हे बंद वावुगे, फंद विषयेंची काय मजा, प्रभु नामाची लावी ध्वजा, असार हा संसार त्यजा, शांति गुणाला देवरजा, रजकर्मांची दूर भजा, भाव विमलची करी पूजा, क्षमा शांति मन धरी तजा ॥ पंच महाव्रत सुमति गुप्ति, भिक्षा मागे घर घर घर ॥ येउं दे० ॥ १ ॥ परोपकारा शरीर झिजावे, जैसा मलयागिरी

चदन, करी सज्जन चरणीं वदन, काम शत्रुचे निकदन, एह वैभव वाजी स्यदन, अशाश्वती ह्याहो धुदन, आठवी मनी सिद्धारथ नदन, तिलोक ह्मणे धर्म करुनी भविका ॥ लवकर शिव सुदर वर वर वर ॥ येउ दे वाचे० ॥ २ ॥ इति सपूर्ण ॥

॥ अथ गणधर सज्झाय प्रारभः ॥

॥ धन धन आज दिवस भलो ऊग्यो ॥ ए देशी ॥ चउदासें बावन गणधर वदो, भवदु ख दूर निकदो रे ॥ निज आतम अव गुण ते निंदो, मोहजाल मत फदो रे ॥ च० ॥ १ ॥ ऋपभ जिणदजी के पुडरीक आदि, चौराशी गणधर जाणो रे ॥ अजितनाथजी के सिंहसेन धुर, कह्यो पच्चाणु परमाणो रे ॥ च० ॥ २ ॥ एक सो दोय सभव जिनवरके, चारुजी मुख्य कहीजे रे ॥ अभिनदनजी के वज्रनामादिक, एकसो सोला लहिजे रे ॥ च० ॥ ३ ॥ सुमति प्रभुजी के, चरम नाम धुर, एक सो पूरा कहिया रे ॥ प्रद्योतन पहला पद्मप्रभुजी के, एक सो सात सब गहिया रे ॥ च० ॥ ४ ॥ विदार्भि नाम सुपारसजी के, पच्चाणु गुणवता रे ॥ दिन आदिक श्रीचदाप्रभुजी के, त्राणु थया शिवकता रे ॥ च० ॥ ५ ॥ वराहक आदि सुविधिनाथजी के, गणधर कह्या अठ्याशी रे ॥ नद आदिक शीतल जिनवर के, जाणो सर्व ह्रस्याशी रे ॥ च० ॥ ६ ॥ कच्छप्पादिक श्रेयासप्रभु के, छिहोंतर गुणराशी रे ॥ सुभूमादिक छासठ वासुपूज्य के, पाया पद अविनाशी रे ॥ च० ॥ ७ ॥ सत्तावन श्रीविमलप्रभुजी के, मदिर रिख धुर नामो रे ॥ अनतजी के पचास जस आदिक, पाया शिवपुर ठामो रे ॥ च० ॥ ८ ॥ तीन चालिश श्रीधर्मप्रभु के, अरिष्ट नाम जस धारी रे ॥ शातिजिनद के चक्रायुधादिक, छत्रिसें वरी शिवनारी रे ॥ च० ॥ ९ ॥ साब आदिक पेंतीस कुथुजिन के, आगममें दरसाया रे ॥ कुभ प्रमुख तेतीस अर प्रभु के, सर्वही मोक्ष सिधाया रे ॥ च० ॥ १० ॥ मल्लिनाथजी

के अभिक्षे आदि, अठाविश फरमाया रे॥ अठारा मुनिसुव्रतस्वामी, लि आदिक शिव पाया रे ॥ च० ॥ ११ ॥ नामिनाथजी गणधर सतरा, शुभ नामें शुभकारी रे॥ रिष्ठनेमजी वरदत्त आदि, इग्यारा सुविचारी रे॥ च० ॥ १२ ॥ आर्यदि दि श्री- प्रभु के, दस कह्या सूत्र मझारो रे॥ महावीरजी के इंद्रभूति प्रमुख, इग्यारा गणधारो र ॥ च० ॥ १३ ॥ त्रिपदी पुर्वधर सारा, सिद्ध पद्वी सहु पाई रे॥ तिलो रेख कहे न वचन तन, वंदना होजो सदाई रे ॥ च० ॥ १४ ॥ इति संपूर्ण॥

॥ अथ सौधर्म स्वामीनी सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ जमीकंद में रे जीव जाइ उपनो ॥ ए देशी ॥ वीर जिनेश्वर पट्टोधर नमुं, श्री श्री सौधर्मा स्वामी ॥ मगध देश रे राखी पुर भलो, सोहे सुरतरु आराम ॥ वी० ॥ १ ॥ पिता धा रे माता धारिणी, रूपें काम कुमार ॥ चारु बुद्धि रे धीरजता घणी, पूरण भण्या वेद चार ॥ वी० ॥ २ ॥ पुराण अढार छे वली, चउदे विद्या निधान ॥ सोमल म्हण यज्ञके कारणें, देई सन्मान ॥ वी० ॥ ३ ॥ तिण अवसरमें रे त्रशलानंदजी घनघातिक कर्म टाल ॥ केवल पाया रे आया तिणपूरें, जग ना जगपाल ॥ वी० ॥ ४ ॥ चोसठ इंद्र आया तिणपुरमें, सुर सुरि अपार ॥ रच्यो त्रिगडो रे माहि विस्तरी, पयो अहंकार ॥ वी० ॥ ५ ॥ चर्चा करवा रे गया उमंगशुं, रचना देखी सो नयण ॥ गर्वज उतर्यो रे संशय टालियो, प्रभुनां अमृत वयण ॥ वी० ॥ ६ ॥ दीक्षा धारी रे परम वैरागशुं, पंचसया परिवार॥ त्रिपदी ज्ञानें रे लब्धि उपनी, चौदे पूरव धार ॥ वी० ॥ ७ ॥ मति श्रुति अवधि रे मनःपरयव वली, उपनां ज्ञान ए चार ॥ निशिदिन उद्यम रे करे तप जप तणो, भावना भावे सो वार ॥ वी० ॥ ८ ॥ वर्ष पचासें रे रह्या गृहवासमें,

चद्न, करी सज्जन चरणीं वद्न, काम शत्रुचे निकद्न, गृह वैभव वाजी स्यद्न, अशाश्वती ह्याहो धुद्न, आठवी मनी सिद्धारथ नद्न, तिलोक ह्मणे धर्म करुनी भविका ॥ लवकर शिव सुदर वर वर वर ॥ येउ दे वाचे० ॥ २ ॥ इति सपूर्ण ॥

॥ अथ गणधर सज्झाय प्रारभः ॥

॥ धन धन आज दिवस भलो ऊग्यो ॥ ए देशी ॥ चउदासें बावन गणधर वदो, भवदु'ख दूर निकदो रे ॥ निज आतम अव गुण ते निंदो, मोहजाल मत फदो रे ॥ च० ॥ १ ॥ ऋषभ जिण-द्जी के पुडरीक आदि, चौराशी गणधर जाणो रे ॥ अजितनाथजी के सिंहसेन धुर, कह्यो पचाणु परमाणो रे ॥ च० ॥ २ ॥ एक सो दोय सभव जिनवरके, चारुजी मुख्य कहीजे रे ॥ अभिनदनजी के वज्रनामादिक, एक सो सोला लहिजे रे ॥ च० ॥ ३ ॥ सुमति-प्रभुजी के, चरम नाम धुर, एक सो पूरा कहिया रे ॥ प्रद्योतन पहला पद्मप्रभुजी के, एक सो सात सव गाहिया रे ॥ च० ॥ ४ ॥ विदर्भि नाम सुपारसजी के, पचाणु गुणवता रे ॥ दिन आदिक श्रीचदाप्रभुजी के, त्राणु थया शिवकता रे ॥ च० ॥ ५ ॥ वराहक आदि सुविधिनाथजी के, गणधर कह्या अठ्याशी रे ॥ नद आदिक शीतल जिनवर के, जाणो सर्व इक्याशी रे ॥ च० ॥ ६ ॥ कच्छप्पादिक श्रेयासप्रभु के, छिहोंतर गुणराशी रे ॥ सुभूमादिक छासठ वासुपृज्य के, पाया पद अविनाशी रे ॥ च० ॥ ७ ॥ सत्तावन श्रीविमलप्रभुजी के, मदिर रिख धुर नामो रे ॥ अनतजी के पचास जस आदिक, पाया शिवपुर ठामो रे ॥ च० ॥ ८ ॥ तीन चालिश श्रीधर्मप्रभु के, अरिष्ट नाम जस धारी रे ॥ शातिजिनद के चक्रायुधादिक, छत्रिश वरी शिवनारी रे ॥ च० ॥ ९ ॥ सान आदिक पेतीस कुथुजिन के, आगममे दरसाया रे ॥ कुभ प्रमुख तेतीस अर प्रभु के, सर्वही मोक्ष सिधाया रे ॥ च० ॥ १० ॥ मल्लिनाथजी

के अभिक्षे आदि, अठाविश फरमाया रे॥ अठारा मुनिसुव्रतस्वामी, ल्लि आदिक शिव पाया रे ॥ च० ॥ ११ ॥ नामिनाथजी गणधर सतरा, शुभ नामें शुभकारी रे ॥ रिष्टनेमजी के वरदत्त अदि, इग्यारा सुविचारी रे॥ च० ॥ १२ ॥ आर्यदिन्नादिक पार्श्व-प्रभु के, दस कह्या सूत्र मझारो रे॥ महावीरजी के इंद्रभूति प्रमुख, इग्यारा गणधारो र ॥ च० ॥ १३ ॥ त्रिपदी ज्ञान पुर्वधर सारा, सिद्ध पदवी सहु पाई रे॥ तिलो रिख कहे मन वचन तन, वंदना होजो सदाई रे ॥ च० ॥ १४ ॥ इति संपूर्ण॥

॥ अथ सौधर्म स्वामीनी सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ जमीकंद में रे जीव जाइ उपनो ॥ ए देशी ॥ वीर जिनेश्वर पट्टोधर नमुं, श्री श्री सौधर्मा स्वामी ॥ मगध देश रे को राखी पुर भलो, सोहे सुरतरु आराम ॥ वी० ॥ १ ॥ पिता धार्मिल रे माता धारिणी, रूपें काम कुमार ॥ चारु बुद्धि रे धीरजता घणी, पूरण भण्या वेद चार ॥ वी० ॥ २ ॥ पुराण अढार छे शा वली, चउदे विद्या निधान ॥ सोमल म्हण यज्ञके कारणें, बुलाया देई सन्मान ॥ वी० ॥ ३ ॥ तिण अवसरमें रे त्रशल दजी घनघातिक कर्म टाल ॥ केवल पाया रे आया तिणपूरें, जग नायक जगपाल ॥ वी० ॥ ४ ॥ चोसठ इंद्र आया तिणपुरमें, वली सुर सुरि अपार ॥ रच्यो त्रिगड़ो रे माहि विस्तरी, आण्यो अहंकार ॥ वी० ॥ ५ ॥ चर्चा करवा रे गया उमंगशुं, रचना देखी सो नयण ॥ गर्वज उतर्यो रे संशय टालियो, प्रभुनां अमृत वयण ॥ वी० ॥ ६ ॥ दीक्षा धारी रे परम वैरागशुं, पंचसया परिवार॥ त्रिपदी ज्ञानें रे लब्धि ऊपनी, चौदे पूरव धार ॥ वी० ॥ ७ ॥ मति श्रुति अवधि रे मनःपरयव वली, उपनां ज्ञान ए चार ॥ निशिदिन उद्यम रे करे तप जप तणो, भावना भावे सो बार ॥ वी० ॥ ८ ॥ वर्ष पचासें रे रह्या ग्रहवासमें,

त्रीश वर्ष लग जाण ॥ सेवा कीनी रे जगनायक तणी, प्रभु पहुता निर्वाण ॥ वी० ॥ ९ ॥ आचारज पद वारा वर्ष लगें, दीपायो जैनधर्म ॥ अपूर्व करण शुक्ल ध्यानथी, हणिया घातिक कर्म ॥ वी० ॥ १० ॥ केवल पाया रे सोहम स्वामीजी, रचना जाणी रे सर्व ॥ शिष्य थया बीजा रे जबु सारिखा, नन्याणु कोडी रे द्रव्य ॥ वी० ॥ ११ ॥ रातें परण्या रे आठ कामिनीं, पाचशें सत्तावीश लार ॥ दिन उगता रे सजम आदर्यो, धन धन तस अवतार ॥ वी० ॥ १२ ॥ आठ वर्ष लग रे केवल पद रह्या, पहोता मुगति मझार ॥ अजर अमर सुख रे पाया सासता, नामथकी निस्तार ॥ वी० ॥ १३ ॥ सवत् ऊगणीशें रे उगणचालीस का, पौष शुद्ध आठम जाण ॥ केलपिप्पल गाम में रे कीधी सज्झाय एह, दक्षिण देश वखाण ॥ वी० ॥ १४ ॥ तिलोकरिख दाखे रे पाटवी शिष्यना, चरण शरणना आधार ॥ जिम तिम करिने रे पार उतारजो, विनति ए अवधार ॥ वी० ॥ १५ ॥

॥ अथ ग्यारा गणधर की सज्झाय प्रारभ ॥

॥ पास जिनेश्वर रे सामी ॥ ए देशी ॥ गणधर समरो रे भाई ॥ दिनदिन अधिक सपत सुखदाई ॥ विघन न व्यापे रे कोइ, र्‍हीं श्री मनवछित लहे सोई ॥ ग० ॥ १ ॥ वीरप्रभु केवलरे पाया, यादकरणने अधिक उमाया ॥ भर्म निवार्यो रे स्वामी, सजम प्रभुपे लियो शिर नामी ॥ ग० ॥ २ ॥ छठ छठ तपस्या रे कीनी, तेजो लेश्या सो वश कर लीनी ॥ सव शिष्य माही रे पहिला, इद्रभूति प्रणभू अलवेला ॥ ग० ॥ ३ ॥ अग्नीभूति रे बीजा, वायुभूति प्रणमू नित्य त्रीजा ॥ ए त्रिहू सगा रे भ्राता, तोड दिया मोहनी दु:ख ताता ॥ ग० ॥ ४ ॥ वसुभूति चौथा रे जाणो, पचमा सुधर्मास्वामी वखाणो ॥ वीरजीके पाटे रे सोहे, निरग्रत भविजनना मन मोहे ॥ ग० ॥ ५ ॥ जबू जैसा चेला रे थया, कोडि नन्याणु त्याग

सोनैया ॥ रातें परण्या रे नारी, दिन उगां लियो संजम धारी ॥ ग० ॥ ६ ॥ मंडितपुत्र छट्ठा रे कहिये, मौर्यपुत्रजी जपतां सुख लहियें ॥ अकंपित आठमा रे वंदो, भव भव दुःकृत दूर निकंदो ॥ ग० ॥ ७ ॥ नवमा अचलजी रे गावो, भव भव दुःकृत दूर नसावो ॥ मेतारज दशमा रे ध्यावो, कर्म भर्म भय दूर पलावो ॥ ग० ॥ ८ ॥ प्रभासजी ग्यारमा रे सेवो, प्रात उठी नित नामज लेवो ॥ चउदे पूरव रे धारी, पूछ्या प्रश्न विविध प्रकारी ॥ ग० ॥ ९ ॥ तप कियो दुःकर रे कारी ॥ तार्या बहु भवियण नर नारी ॥ समता सागर रे पूरा, कर्मरिपुना कर्या चकचूरा ॥ ग० ॥ १० ॥ सहु जण केवल रे पाया, होय अजोगी मुक्ति सिधाया ॥ ते सव प्रणमूं रे भावे, जनम मरण भय जिम मिट जावे ॥ ग० ॥ ११ ॥ उगणीसें छत्तिस रे साल, चोमासें रह्या घोड़नदी वरसाल ॥ गणधर मुनिवर रे गाया, तिलोकरिख प्रणमे नित पाया ॥ ग० ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ देशी केरवामें ॥ गणधर ग्यारा वंदियेजी, जिनने कीनो महा उपगार ॥ भला रे मुनि कीनो० ॥ ग० ॥ १ ॥ मान धरी गया वाद करणकूं, दियो है भर्म निवार ॥ भ० ॥ दि० ॥ ग० ॥ २ ॥ इंद्रभूतिजी लियो संजम प्रभुपे, छठ छठ तप लियो धार ॥ भ० ॥ छ० ॥ ग० ॥ ३ ॥ तेजोलेश्या वश कर लीनी, भाणिया अंगप्रभु बार ॥ भ० ॥ भ० ॥ ग० ॥ ४ ॥ अग्निभूति वायुभूति त्रीजाजी, ए तीनुं बंधव विचार ॥ भ० ॥ ए० ॥ ग० ॥ ५ ॥ वसुभूति चौथा नित्य प्रणमुं, शूरवीर सरदार ॥ भ० ॥ शू० ॥ ग० ॥ ६ ॥ वीर पट्टोधर स्वामी सुधर्मा, रूप अनूप उदार ॥ भ० ॥ रू० ॥ ग० ॥ ७ ॥ मंडितपुत्रजी ने मौर्यपुत्र, अकंपित सु कार ॥ भ० ॥

अ० ॥ ग० ॥ ८ ॥ अचल वली प्रणमु मेतारज, सव गया मुक्ति मझार ॥ भ० ॥ स० ॥ ग० ॥ ९ ॥ परभासजी इग्यारमा प्रणमु, शिवसपति ना दातार ॥ भ० ॥ शि० ॥ ग० ॥ १० ॥ तिलोकरिख कहे गणधरजी कू, नित नित होज्यो नमस्कार ॥ भ० ॥ नि० ॥ ग० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ तृतीय सज्झाय प्रारभ ॥

॥ देशी प्रभाती ॥ प्रात उठि प्रणमो भवि भावें, नित नित गणधर ग्यारा ॥ ए टेक ॥ इद्रभूति अग्निभूति वदू, वायुभुति सुखकारा ॥ वसुभूति सुधर्मास्वामी, नाम लिया निस्तारा ॥ प्रा० ॥ १ ॥ मडितपुत्र मौर्यपुत्र अकपित, अचल अचल अविकारा ॥ मेतारज आरजबुद्धिवता, प्रभासजी प्राण पियारा ॥ प्रा० ॥ २ ॥ ग्यारा गणधर महा गुणसागर, चम्मालिश सें परिवारा ॥ वीरप्रभु के पासे एक दिन में, व्रत किया अगिकारा ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ चउदा पूरव धारक तारक, वारक सर्व विकारा ॥ विमल केवल कमलाधारी, करगया सो खेवा पारा ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ इण समरता सकट नासे, रहे अखूट भडारा ॥ तिलोकरिख कहे चरण शरण मुझ, कीजो भव निस्तारा ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्थ सज्झाय प्रारभ ॥

॥ देशी फागणका ख्यालमें ॥ समरो नित समरो नित, ग्याराई गणधर कू ॥ स० ॥ इद्रभूति अग्निभूति वदो, वायुभूति नदो जोडी कर कू ॥ स० ॥ १ ॥ वसुभूति सुधर्मास्वामी वदो, मडितपुत्र ज्ञानी जगहर कू ॥ स० ॥ २ ॥ मोर्यपुत्र अकपित अचलजी, मेतारजजी छोडया साते डरकू ॥ स० ॥ ३ ॥ ग्यारमा श्रीपरभासजीकू वदो, छोड दिया हे सजन घरकू ॥ स० ॥ ४ ॥ चउदाई पूरव धारक सारा, उपदेश दिया हे धर्मका परकू ॥ स० ॥ ५ ॥ ग्याराई तप सजम

शुद्ध पाली, टाल दिया आठ कर्म अरिकूं ॥ स० ॥ ६ ॥ चम्मालिशशे एकदिनमें दीक्षा धारी, ग्याराई गया शिवमंदिरकूं ॥ स० ॥ ७ ॥ उगणीशें अड्तास आंबोरी पठमें, तिलोकरिख प्रणमें सदा मुनिवरकूं ॥ स० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचम सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ दया धर्म दिलमांहीं भावे रे ॥ ए देशी ॥ वंदो नित गणधर ग्यारा रे, मिटे जिम सर्म अंधारा रे ॥ ए टेक ॥ चउदा सहस्र अणगारमें जी, ज्येष्ठ शिष्य जशवंत ॥ इंद्रभूति सुख कारणा जी, रचिया ज्यां सर्व सिद्धांत ॥ वं० ॥ १ ॥ अग्निभूति स्वामी दूसरा जी, वायुभूति त्रीजा जाण ॥ ये तीनूं सगा बंधवा जी, गौतम गोत्र वखाण ॥ वं० ॥ २ ॥ वसुभूति चौथा मुनिजी, नाम लिया निस्तार ॥ सूत्र भगवतीमें चालिया जी, परशनको अधिकार ॥ वं० ॥ ३ ॥ वीरजी रे पाटे दीपता जी, धन धन सुधर्मास्वाम ॥ श्रीजिन धर्म दीपायने जी, सारया वंछित काम ॥ वं० ॥ ४ ॥ शिष्य थया जंबू सरिखा जी, राते ते परण्या नार ॥ कोड़ि नन्याणुं त्यागिने जी, लियो संजम भार ॥ वं० ॥ ५ ॥ मंडितपुत्र मौर्यपुत्र दीपता जी, अकंपित जस धार ॥ अचलजीने जपतां थकां जी, तरियें भवजलपार ॥ वं० ॥ ६ ॥ मेतारज आरजमति जी, निज कारज किया सिद्ध ॥ वंदुं प्रभासजी ग्यारमा जी, जांका नाम लियां नवनिध्द ॥ वं० ॥ ७ ॥ ए इग्यारा गणधरू जी, चउदा पूरब धार ॥ शिष्य थया श्रीवीरना जी, चम्मालिशशे परिवार ॥ वं० ॥ ८ ॥ इण दुःखम आरा विषे जी, सूत्र तणो छे आधार ॥ ते सत्र जाणो भविजना जी, गणधरजी उपगार ॥ वं० ॥ ९ ॥ तिलोकरिख कहे जगतमें जी, श्री जिनमारग सार ॥ गणधर ग्यारा गाइये जी, नित नित जय जयकार ॥ वं० ॥ १० ॥

॥ अथ श्री दशवैकालिक सूत्र दश अध्ययन प्रत्येक उद्देशा पीठिका संयुक्त पन्नर सज्झाय प्रारभः ॥

॥ तत्र प्रथम पीठिकासज्झाय प्रारभः ॥

॥ मेरी मरी करता जन्म गयो रे ॥ ए देशी ॥ जय जिनराया, जय जिनराया, जय सतगुरु जिन ने धर्म वताया ॥ जय० ॥ १ ॥ भवजन तारक शिवसुख दाणी, प्ररूपी द्वादश अगकी वाणी ॥ जय० ॥ २ ॥ श्रुति सागर गणधरजी झेली, सूत्ररचना रची नयरस केली ॥ जय० ॥ ३ ॥ सौधर्मास्वामी पट्टोधर पहला, तस शिष्य प्रथम केवली छेहेला ॥ जय० ॥ ४ ॥ श्री श्री जवू गुणनिधि अनू, भव ताप हरण दृढ स्वच्छ सुतबू ॥ जय० ॥ ५ ॥ तस शिष्य सफल कियो नर भव जी, पर भव सुधारयो श्री प्रभव जी ॥ जय० ॥ ६ ॥ महागुण सभव सिय्यभव भारी, तस पुत्र मनक भया अणगारी ॥ जय० ॥ ७ ॥ पूर्वके मांही गणिवरजी विचारी, अवस्था थिति रही खट मासकी सारी ॥ जय० ॥ ८ ॥ तव तिणें मनमाही कियो विचारो, किणविध होयगा भव निस्तारो ॥ जय० ॥ ९ ॥ ग्रथ लघु निर्ग्रंथ महतो, मार्गसिद्धात रचनेकी करी खतो ॥ जय० ॥ १० ॥ आतम प्रवादथी धर्म पन्नत्ति उच्चारयो, कर्म प्रवादथी पिंडेषणा सारयो ॥ जय० ॥ ११ ॥ वचनसुधी सत्य प्रवादथी धारो, शेष अध्ययन सात सुविचारो ॥ जय० ॥ १२ ॥ पूर्व नवमो आचार वत्थु त्रीजी जाणो, वेयालु समे सूत्र यथा परिमाणो ॥ जय० ॥ १३ ॥ दशवैकालिक दियो नाम उच्चारो, तीन मगल इणमें सुखकारो ॥ जय० ॥ १४ ॥ आदि मगल प्रभुने नमस्कारो, निर्विघ्न शास्त्र भणी दूजी धारो ॥ जय० ॥ १५ ॥ अत मगलिकथी लहो सुख मुक्ति, शास्त्र मगल पद सुणो आगे युक्ति ॥ जय० ॥ १६ ॥ धम्मो मगल मुक्किठ आदि जाणो, नाण दसण सपन्न मध्य ठाणो ॥ जय० ॥ १७ ॥ निग्गथम्ममाणाय बुद्धवयणें, अत मगलिक सोचो दीर्घनयणें ॥

जय० ॥ १८ ॥ प्रथम अध्ययनमें धर्म प्रशंसा, द्वितीयाध्ययनें धीरज पर अंसा ॥ जय० ॥ १९ ॥ अनाचीरन को त्रीजामें विस्तारो, चौथे छकाय तणो हितकारो ॥ जय० ॥ २० ॥ पंचमें विशुद्ध भिक्षा शिक्षा आणी, छट्ठे मुनिगुण क्रिया वखाणी ॥ जय० ॥ २१ ॥ वचन शुद्धि सातमें परधानो, आठमो विचारो आचार निधानो ॥ जय० ॥ २२ ॥ नवम अध्ययने विनय मूल दाखे, दशमे अध्ययने भिक्खुगुण भाखे ॥ जय० ॥ २३ ॥ समुच्चय नाम कह्या इहां संतो, अनंत नयातम वचन महंतो ॥ जय० ॥ २४ ॥ सूत्र समुद्रपारकुण पावे, गगन शशी शिशु देख उमावे ॥ जय० ॥ २५ ॥ तैसे हूं आलसी महा अल्पबुद्धि, जिनागमकी नहिं पूरण शुद्धि ॥ जय० ॥ २६ ॥ प्रत्येक अध्ययन उद्देशा विचारो, कहुं निज भाषामें गुरु उपगारो ॥ जय० ॥ २७ ॥ पाले आराधे भाव शुद्ध आणी, तिलोकरिख कहे सो वरे शिवराणी ॥ जय० ॥ २८ ॥ इति पीठिका सज्झाय ॥

॥ अथ प्रथम दुमपुप्फियाध्ययन सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ भावपूजा नित कीजीये ॥ ए देशी ॥ धर्म मंगल उत्कृष्ट छे, शाश्वतो ए त्रिहुं कालो जी ॥ अहिंसा लक्षण धर्मनो, भाख्यो छे दीनद्यालो जी ॥ १ ॥ धर्म आराधो जी भावशुं, संजम सतरे प्रकारो जी ॥ बारे भेदें तपस्या करे, द्रव्य भाव सुविचारो जी ॥ ध० ॥ २ ॥ चार जातिका देवता, हरि हर चक्री उदारो जी ॥ धर्म विषे सदा मन रहे, तिणने नमे वारंवारो जी ॥ ध० ॥ ३ ॥ जिम तरु फूलें अलि चित्त रली, पीवे सो मकरंदो जी ॥ पीड़ा नहिं देवे कुसुमने, पोते तृप्ति आणंदो जी ॥ ध० ॥ ४ ॥ तिम मुनि लोक विषे कह्या, आरंभ परिग्रह निवारो जी ॥ भ्रमर भिक्षा एषणिक ग्रहे, जो देवे शुद्ध दातारो जी ॥ ध० ॥ ५ ॥ संजम भार निभाववा, छ कारण करे आहारो जी ॥ हर्ष शोक आणे नहिं, छंडे छ प्रकारो

जी ॥ ध० ॥ ६ ॥ दु ख नहिं देवे परप्राणीने, नव कोटी सुविचारो जी ॥ गृहस्थ करे निज कारणें, भ्रमर ज्यु ग्रहे अणगारो जी ॥ ध० ॥ ७ ॥ मुनिवर मधुकर सम कह्या, उत्तम अवसर जाणो जी ॥ दुम्मपुप्फिया अध्ययनमें, जगगुरु किया वखाणो जी ॥ ध० ॥ ८ ॥ सूत्र प्रमाणें विधि ग्रहे, शूरवीर सरदारो जी ॥ तिलोकरिख कहे नित ज भणी, प्रणमु मैं वारवारो जी ॥ ध० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय सामान्यपूर्वी अध्ययन सज्झाय प्रारभः ॥

॥ मगधाधिप श्रेणिक सुखकारी ॥ ए देशी ॥ ए ससार भयकर जाणी, अहिकचुक जिम छडो ॥ श्रीजिनधर्म परम सुखदाता, सजम सु चित मडो के ॥ सुगुणा, अनुभव ज्ञान विचारो ॥ होवे ज्यूं भव निस्तारो के ॥ सु० ॥ १ ॥ त्रिविधे त्रिविधें त्याग करीनें, कामभोग अभिलाषे ॥ पगले पगले विषवाद उपावे, सकल्प वश चित्त राखे के ॥ सु० ॥ २ ॥ वस्त्र भूषण ने भामिनी आदि, नहिं जिणने वशमाही ॥ भोगवे नहिं पण मो नहिं त्यागी, जगतारक दरसाद् के ॥ सु० ॥ ३ ॥ रिद्ध घणी जिणने वशमाही, पण ते नहि अनुरागी ॥ ते त्यागी जगदीश पयपे, जाणो महाबडभागी के ॥ सु० ॥ ४ ॥ इम साची समता करता कदाचित् निकले चित्त सजम घरथी ॥ सोचे वस्तु नहि हु एहनो, स्यों करे ममता अपरथी के ॥ सु० ॥ ५ ॥ भोग रोग दु खदायक जाणी, काया कोमल पणु छडो ॥ शीत उष्ण परिसह सब खमिया शिवसुख प्रीति मडो के ॥ सु० ॥ ६ ॥ राजमती सती रहनेमी ना, विकल वचन सुणि जपे ॥ अति जाज्वल्य धगधगतो अग्नि, सपरिताप तन कपे के ॥ सु० ॥ ७ ॥ अगधन कुल जातिनो फणिधर, जाय पडे तिणमाही ॥ वम्या जहर नहि ने वछ समझो न्याय लगाई के ॥ सु० ॥ ८ ॥ धिक्कार हो तुझ अपयश कामी, असयम जीवित चहाने ॥ वम्यो भोग वछणो नहि जुगतो, मरण भलो तुझ थाने के ॥ सु०

॥ ९ ॥ जिहां जिहां तुं देखिस त्रिया नयण, अथिर भाव तुझ थासी ॥ हडवृक्ष जिम पडे पवन प्रतापें, तिम तुझ संजम जासी के ॥ सु० ॥ १० ॥ अंकुशथी जिम गज वश थावे, जिम सती महावत जेमो ॥ ज्ञान अंकुश करीने वश लाई, उन्मत्त गज रहनेमो के ॥ सु० ॥ ११ ॥ धर्म खुंट मुनि थिर करि थाप्यो, दोनुं लह्यो शिव वासो ॥ इम जाणी मुनि मन वश करि राखे, छूटें तस गर्भवासो के ॥ सु० ॥ १२ ॥ सामान्यपुर्वि अध्ययन छे दूजो, बूझो भविजन भावें ॥ तिलोकरिख कहे सुझा जिनमारग, सो इम मन समझावे के ॥ सु० ॥ १३ ॥ इति सामान्यपूर्वि अध्ययनं ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय खुडियाराध्ययन सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ थें करज्यो शाणा धर्म त्योहार आखा तीजको ॥ अथवा ॥ आ रस सेलडी आदि जिनेश्वर कियो पारणो ॥ ए देशी ॥ संजम धारे ममत निवारे, छकाया प्रतिपाल ॥ ते बावन अनाचीरण वरजे, जिन आणा उजमाल हो ॥ थें सुणो भवि प्राणी, धन जे परमेश्वर वाणी, आदरे, आज्ञा आदरे ॥ १ ॥ आरंभ करी, कियो आहार उद्देसिक, मोल आण्यो मुनिकाज ॥ नित्य पिंड, वली साहामो आण्यो, सो नहिं ले रिखराज हो ॥ थें० ॥ २ ॥ रात्रिभोजन स्नान सुगंध तन, पहरे नहिं वली माल ॥ न करे विंजणो रात्र स्निगंध दे, गृहस्थ पातर टाल हो ॥ थें० ॥ ३ ॥ दानशाला नो अहार न लेवो, मर्दन नहिं करे तेल ॥ दांतण मिस्सी गृहस्थसें शाता, तजे चौपडादिक खेल हो ॥ थें० ॥ ४ ॥ मुख नहिं जोवे दर्पणमांही, छत्र धरे, नहिं शीश ॥ सावद्य औषधि वर्जे पगरखी, साचा जेह मुनिश हो ॥ थें० ॥ ५ ॥ तेउ आरंभ तजे आहार सिज्यातरी, बैठे न मांचे पलंग ॥ विण कारण गृहस्थ घर नहिं बेठे, टाले उवटणो अंग हो ॥ थें० ॥ ६ ॥ वैयावच्च गृहस्थकी

करे न रिखजी, जाति जणाई आहार ॥ मिश्र पाणी वली दु'ख आया, सरणो न वछे परिवार हो ॥ थें० ॥ ७ ॥ मूलो आदु खड सेलडी, कद मूल फल बीज ॥ सचलादिक पच लूण आदि दे, तजे सचेत सब चीज हो ॥ थें० ॥ ८ ॥ शोभा कारण वस्त्र धूप धोवण, वमन वस्तीकर्म जेह ॥ विरेचन अजण दत पखालण, शरीर शुश्रूषा तेह हो ॥ थें० ॥ ९ ॥ इत्यादिक अनाचीरण टाले, निर्ग्रंथ सजम धार ॥ उग्रविहारी आश्रव वर्जे, खटकाया सुख कार हो ॥ थें० ॥ १० ॥ उष्ण कालें आतापना लेवे, शीतकालें सहे ठंड ॥ चोमासे थिर तन तप धारे, जैन धर्मका मड हो ॥ थें० ॥ ११ ॥ सहे परिसह मोह हटावे, दुष्कर किरिया धार ॥ केइक पावे स्वर्ग तणां सुख, केइक मुक्ति मझार हो ॥ थें० ॥ १२ ॥ खुडियार नामाध्ययन तीसरो, दाख्यो मुनि आचार ॥ जे पाले शुद्ध तिलोकरिख तस, प्रणमे वार वार हो ॥ थें० ॥ १३ ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ छज्जीवणीयाध्ययन सज्झाय प्रारभः ॥

॥ मानव जनम, जनम रतन तैंने पायो रे ॥ ए देशी ॥ श्री जिनधर्मको सारो रे, खट काया उगारो ॥ श्री० ॥ ध्रु० ॥ पट्टोधर श्री सुधर्मास्वामी, जवु पूछे तिणसु शिर नामी रे ॥ चौथा अध्ययन मझारो, किस्यो छे अधिकारो ॥ कहो तस विस्तारो ॥ श्री० ॥ १ ॥ इम सुणी कहे जिम प्रभु फरमायो, तिम कहू तुझसु सुण वायो रे ॥ पृथवी वली पाणी, तेउ वाउ वखाणी ॥ वनस्पति तस ठाणी ॥ श्री० ॥ २ ॥ निज आतम सम कह्या छकाया, सुखवछक प्रभु दरसाया रे ॥ सब जीवणो चहावे, दु'खसु थरावे ॥ आगम दरसावे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ इम जाणी त्रिविध त्रिविध भव प्राणी, छकायरक्षा सुखदानी रे ॥ क्रोध लोभ भय हास्या, वश मत बोलो भापा ॥ सत्यव्रत सुख खासा ॥ श्री० ॥ ४ ॥ ग्राम नगर वन अल्प बहु छोटो मोटो, जाणो अदत्त सब खोटो रे ॥ सुर नर

तिरयंचो, मैथुनथकी वंचो ॥ त्यागो यह परपंचो ॥ श्री० ॥ ५ ॥
अल्पबहु छोटो मोटो सचित्तो, मिश्र वली अचित्तो रे ॥ ग्रिह
दुःखकारो, भरमावे संसारो ॥ करियें परिहारो ॥ श्री० ॥ ६ ॥
असणादिक जे क चउ आहारो, निशिभोजन रेहारो रे ॥ एह
खटव्रत सु रो, पाल्यां निस्तारो ॥ इ जाणीने धारो ॥
श्री० ॥ ७ ॥ पात्र उपगर सारा, ते पूंजो पलेवो रं रे
॥ त्रस थावर प्राणी, करो यल पहचाणी ॥ इम आगम णी ॥
श्री० ॥ ८ ॥ अजयणा सुं चाले तथा उभो रहेवे, बैठे सुवे वे
मुख केवे रे ॥ प्राणीनी हिंसा थावे, पापकर्म बंध ॥ अति कटु
पावे ॥ श्री० ॥ ९ ॥ शिष्य पूछे तब किणविध करीये, गुरु कहे
जयणा आदरीये रे ॥ पाप कर्म न लागे, रूंधे श्रव लागे ॥
अविचल सु अ ॥ श्री० ॥ १० ॥ प्रथम ज्ञान पछे दया णी,
कांई जाणे जे प अज्ञानी रे ॥ सूत्र सुण्यां बोध वि, आश्रव
छिटकावे ॥ संजम पद पावे ॥ ० ॥ ११ ॥ धारे उत्कृ
भारो, कर्म भर्म करे रो रे ॥ व पद वे, शिवपुरमें सिधावे ॥
शाश्वता सु वे ॥ श्री० ॥ १२ ॥ इम जाणी वृध्द पण
किरिया, धारी अनंताही तरिया रे ॥ छज्जीवणीया अधि , शुद्ध
पाले नर नारो ॥ तिलो रिख सोही सारो ॥ श्री० ॥ १३ ॥ इ ॥

॥ अथ पंचम पिंडेष ध्ययनस्य प्रथम उद्देश सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ सो सिंहा रेवती ॥ ए देशी ॥ शा विधि किरिया
शुद्ध आदरे, द्रव्यक्षेत्र विधि जाण रे ॥ गजगति म ति संचरे,
देखी धुसरा प्र रे ॥ १ ॥ हुं बलिहारि जाउं रिखचरणकी,
त्रस थावर प्रतिपाळ रे ॥ कोय रुं भस्मी पुंज पर,

नहिं शका निहाल रे ॥ व० ॥ २ ॥ वेश्यावासमें नहिं सचरे, नवी प्रसूत श्वाननि गाय रे ॥ उन्मत्त वेल हय गज जिहा लडे, मुनि दूर वर्जीने जाय रे ॥ व० ॥ ३ ॥ धम धम चाल चाले नहिं, हसे वोले नहिं पथ रे ॥ चाले नहिं महेल देखतो, अधारु घर ते तजत रे ॥ व० ॥ ४ ॥ दुगछनिक अप्रतीति कारीयो कुल, तिहा मुनि नहिं जाय रे ॥ पडदो किगाड आज्ञा विना, खोले नहिं रिखराय रे ॥ व० ॥ ५ ॥ दोप वयालिस टालने, सुझतो ले भिक्षु आहार रे ॥ उपरत दोप विधि पिंडनो, सुणजो काईक अधिकार रे ॥ व० ॥ ६ ॥ दो जणा सामिल आहार ते, निमत्रें एक तिन वार रे ॥ ते मुनीसर वर्जे सही, विहर जुगहामी जेवार रे ॥ व० ॥ ७ ॥ गर्भिणी अर्थे भोजन कियो, जिम्या पहिली परिहार रे ॥ उठेसरके वेरावण भणी, पूरण मास गर्भयुत नार रे ॥ व० ॥ ८ ॥ वालक धवरावती जुवती, छोडावता रोवे जे वाल रे ॥ दान पुण्य मगत अर्थे जे, कियो ए सहु दे रिख टाल रे ॥ व० ॥ ९ ॥ अल्प खाणो बहु नाखनो, मुनिजन ते वर्जत रे ॥ तृपा बुझे नहिं जिन जले, ते नहिं वहोरे मुणिवत रे ॥ व० ॥ १० ॥ उपयोग विना लेवा णो कदा, परठवे तेह एकत रे ॥ अणासक्ति स्थानकें आणनी, गृहस्थ घरे आज्ञा ग्रहत रे ॥ व० ॥ ११ ॥ विधिशुद्ध आहार करता कदा, काष्ट काकरो निकलत रे ॥ हाथमें ग्रही मूके तदा, पण मुखसु नहिं थूकत रे ॥ व० ॥ १२ ॥ जो निजस्थान आवे मुनि, निस्सही शब्द कहत रे ॥ करे काउस्सग्ग इरियावही, अतिचार सहु ते चिंतत रे ॥ व० ॥ १३ ॥ आलोवे शुद्ध विधिगुरु कने, जिणघर जिणविधि आहार रे ॥ सज्झाय करो विश्रामो लई, आमत्रें जे अणगार रे ॥ व० ॥ १४ ॥ शाक सहित रहित तथा, अरस विरस जे आहार रे ॥ मधु घृत जिम मुनि भोगवे, स्वाद न करे लगार रे ॥ व० ॥ १५ ॥ दुलहा उ मुहा दाई कहा, मुहा

जीवि इम जाण रे ॥ दोई जावे शुभ गति विषे, अनुक्रमें लहे निर्वाण रे ॥ ध० ॥ १६ ॥ पंचमुं अध्ययन पिंडषणा, प्रथम उद्देशा मझार रे ॥ तिलोकरिखजी कहे वर्णवी, पाले सो धन अणगार रे ॥ ध० ॥ १७ ॥ इति पिंडषणाध्ययन प्रथमउद्देश सज्झाय ॥

॥ अथ पंचम पिंडषणाध्ययन द्वितीयोद्देश सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ प्राणी आउखो तुट्याने, सांधो को नहीं ॥ ए देशी ॥ पात्रा विषे जे मुनि वहोरीया रे, दुर्गंध सगंध जे कांई आहार रे ॥ भोगवे जिम भुजंग बिलमें घले रे, पग परलंत्र नहिं सो लगार रे ॥ प्रभु आज्ञा आराधो मुनिवर भावशुं रे ॥ १ ॥ जो चाहो भवोदधि पार रे ॥ अलपकाल छे दुःख देहने रे, सुख अनंत अपार रे ॥ प्र० ॥ २ ॥ कालोकाल सुक्रिया विधि साचवो रे, अणमिलिया थी शोच न कोय रे ॥ चुगा जो लेवे जिहां पंखीया रे, वली भिक्षुक मांगता होय रे ॥ प्र० ॥ ३ ॥ ते देखी मुनि नहिं संचरे रे, जिहां परप्राणी नहिं दुहवाय रे ॥ जो करे गृहस्थी आदर वंदणा रे, बालि मालि तिन कर नहिं जाय रे ॥ प्र० ॥ ४ ॥ वंदे तो हर्ष आणे नहिं रे, विन वंद्यांसुं नहिं कुह्मलाय रे ॥ कठिण वचन रिख बोले नहिं रे, समता सागर मुनिराय रे ॥ प्र० ॥ ५ ॥ बिन बताया गुरुदेवने रे, भोगवे नहिं सो लगार रे ॥ किंचित छानो सो राखे नहिं रे, कपट न करे अणगार रे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ नशा सहित अहार नहिं भोगवे रे, जिणथकी संजम हाण रे ॥ परमगुरु दोष म्होटो कह्यो रे, त्याग्यांथी होय कल्याण रे ॥ प्र० ॥ ७ ॥ तप वय रूप आचार वालि भावना रे, चोर कह्या पंच प्रकार रे ॥ ते थावे किल्विषी देवता रे, कह्यो दुर्गति अवतार रे ॥ प्र० ॥ ८ ॥ एलक मूकपणे होवे तिहांती मरी रे, नरक तिरयंच गति जाय रे ॥ समकित धर्म दुर्लभ

नहिं शका निहाल रे ॥ व० ॥ २ ॥ वेश्यावासमें नहिं सचरे, नवी प्रसुत श्वाननि गाय रे ॥ उन्मत्त वेल हय गज जिहा लडे, मुनि दूर वर्जीने जाय रे ॥ व० ॥ ३ ॥ धम धम चाल चाले नहिं, हसे बोले नहिं पथ रे ॥ चाले नहिं महेल देखतो, अधारु घर ते तजत रे ॥ व० ॥ ४ ॥ दुगछनिक अप्रतीति कारीयो कुल, तिहा मुनि नहिं जाय रे ॥ पडदो किवाड आज्ञा विना, खोले नहिं रिखराय रे ॥ व० ॥ ५ ॥ दोष बयालिस टालने, सुझतो ले भिक्षु आहार रे ॥ उपरत दोष विधि पिंडनो, सुणजो काईक अधिकार रे ॥ व० ॥ ६ ॥ दो जणा सामिल आहार ते, निमत्रे एक तिन वार रे ॥ ते मुनीसर वर्जे सही, विहर जुगहामी जेवार रे ॥ व० ॥ ७ ॥ गर्भिणी अर्थे भोजन कियो, जिम्या पहिली परिहार रे ॥ उठेसरके बेरावण भणी, पूरण मास गर्भयुत नार रे ॥ व० ॥ ८ ॥ बालक धवरावती जुवती, छोडावता रोवे जे बाल रे ॥ दान पुण्य मगत अर्थे जे, कियो ए सहु देखि टाल रे ॥ व० ॥ ९ ॥ अल्प खाणो बहु, नाखनो, मुनिजन ते वर्जत रे ॥ तृपा बुझे नहिं जिन जलें, ते नहिं वहोरे मुणवत रे ॥ व० ॥ १० ॥ उपयोग विना लेवाणो कदा, परठवे तेह मुकत रे ॥ अणासात्ति स्थानकें आणनी, ग्रहस्थ घरे आज्ञा ग्रहत रे ॥ व० ॥ ११ ॥ विधिशुद्ध आहार करता कदा, काष्ट काकरो निकलत रे ॥ हाथमें ग्रही मूके तदा, पण मुखसु नहिं थूकत रे ॥ व० ॥ १२ ॥ जो निजस्थान आवे मुनि, निस्सही शब्द कहत रे ॥ करे काउस्सग्ग इरियावही, अतिचार सहु ते चिंतत रे ॥ व० ॥ १३ ॥ आलोवे शुद्ध विधिगुरु कने, जिणघर जिणविधि आहार रे ॥ सज्झाय करो विश्रामो लई, आमत्रे जे अणगार रे ॥ व० ॥ १४ ॥ शाक सहित रहित तथा, अरस विरस जे आहार रे ॥ मधु घृत जिम मुनि भोगवे, स्वाद न करे ऊगार रे ॥ व० ॥ १५ ॥ दुल्लहा उ मुहा दाई कह्या, मुहा

जीवि इम जाण रे ॥ दोई जावे शुभ गति विषे, अनुक्रमें लहे निर्वाण रे ॥ ध० ॥ १६ ॥ पंचमु अध्ययन पिंडेषणा, प्रथम उद्देशा मझार रे ॥ तिलोकरिखजी कहे वर्णवली, पाले सो धन अणगार रे ॥ ध० ॥ १७ ॥ इति पिंडेषणाध्ययन प्रथमउद्देश सज्झाय ॥

॥ अथ पंचम पिंडेषणाध्ययन द्वितीयोद्देश सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ प्राणी आउखो तुट्याने, साधो को नहीं ॥ ए देशी ॥ पात्रा विषे जे मुनि वहोरीया रे, दुर्गंध सुगंध जे कोई आहार रे ॥ भोगवे जिम भुजंग बिलमें धसे रे, पण परठवे नहिं सो लगार रे ॥ प्रभु आज्ञा आराधो मुनिवर भावशुं रे ॥ १ ॥ जो चाहो भवोदधि पार रे ॥ अल्पकाल छे दुःख देहाने रे, सुख अनंत अपार रे ॥ प्र० ॥ २ ॥ कालोकाल सुक्रिया विधि साचवो रे, अणमिलिया थी शोच न कोय रे ॥ चुगो जो लेवे जिहां पंखीया रे, वली भिक्षुक मांगता होय रे ॥ प्र० ॥ ३ ॥ ते देखी मुनि नहिं संचरे रे, जिहां परप्राणी नहिं दुहवाय रे ॥ जो करे गृहस्थी आदर वंदणा रे, वलि मालि तिन घर नहिं जाय रे ॥ प्र० ॥ ४ ॥ वंदे तो हर्ष आणे नहिं रे, बिन वंद्यांसुं नहिं कुमलाय रे ॥ कठिण वचन रिख बोले नहिं रे, समता सागर मुनिराय रे ॥ प्र० ॥ ५ ॥ बिन बताया गुरुदेवने रे, भोगवे नहिं सो लगार रे ॥ किंचित छानो सो राखे नहिं रे, कपट न करे अणगार रे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ नशा सहित अहार नहिं भोगवे रे, जिणथकी संजम हाण रे ॥ परमगुरु दोष म्होटो कह्यो रे, त्याग्यांथी होय कल्याण रे ॥ प्र० ॥ ७ ॥ तप वय रूप आचार वलि भावना रे, चोर क । पंच प्रकार रे ॥ ते थावे किल्विषी देवता रे, कह्यो दुर्गति अवतार रे ॥ प्र० ॥ ८ ॥ एलक मूकपणे होवे तिहांती मरी रे, नरक तिर्यंच गति जाय रे ॥ समकित धर्म दुर्लभ

कह्यो रे, इम जाणी छोडे मुनिराय रे ॥ प्र० ॥ ९ ॥ शिक्षा भिक्षा शुद्ध ग्रहणनी रे, दूजा उद्देशानी माय रे ॥ तिलोकरिख कहे जे व्रतें क्रिया रे, तिणाने हु वदू शीश नमाय रे ॥ प्र० ॥ १० ॥

॥ अथ षष्ठ धर्मार्थिकामाध्ययन सज्झाय प्रारभ ॥

॥ आज भलो दिन उग्यो जी, श्रीसीमधर स्वामी जिन वदस्या ॥ ए देशी ॥ ज्ञान दरसणे सपूर्ण छे हो धर्मगिरि चूरण कारणें, मुनि तप सजम वज्रधार ॥ ध्रु० ॥ एहवा गुणमणि गणिवर हो मुनिसर आइ समोसर्या, काई काइक उद्यान मझार ॥ राय प्रधान जो आवे हा उत्साव क्षत्री माहणा, काई पूछे प्रश्न विचार ॥ ज्ञा० ॥ १ ॥ जगतारक सुखकारक हो उद्धारक धर्म किस्यो कह्यो, काई सो दाखो अणगार ॥ सो मुनिसुणी इम वाले हो काई खोले हो आगम सघने, काई भिन्न भिन्न करि विस्तार ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ जे धर्मार्थ कामी हो शिवगामी वाणी सागले, मुनि वर्जे स्थानक अढार ॥ परथम थानक दाखे हो अभिलाखे जीवदया भली, मुनी सव जीवा हितकार ॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ सहु जीव जीवणो चहावे हो थरर विमरण विमासिन, काइ प्राणवध भयकार ॥ इम जाणी मुनिराया हो मन काया वचन जोगथी, त्रिकरण हिसा परिहार ॥ ज्ञा० ॥ ४ ॥ निजपर अर्थें सावद्य हा क्रोधादिक वश मृषा गिरा, काई निंदीसहू अणगार ॥ अविश्वासनु कारण झूठज हो ते ओंठ समु जाणी करी, करो अलिक भाषा परिहार ॥ ज्ञा० ॥ ५ ॥ तुप तरणादिक चोरी हो दु ख ओरी दोरी नरकनी, करे स्वर्ग सुख सहार ॥ प्रमाद तणी या हेतु हो काइ केतु अपकीर्त्ति तणी, काइ कुशील दु शील आचार ॥ ज्ञा० ॥ ६ ॥ लुण वली विगय पाची हो जाची नहिं राखे रेणमें, काइ ए आज्ञा जगतार ॥

वस्त्र पात्र धारे हो ते संजम लज्जा कारणें, रिख करे मूर्च्छा परिहार ॥ ज्ञा० ॥ ७ ॥ अहोनिश तप जे कहीये हो कांइ हिये समता भावने, कांइ एक भक्त परिहार ॥ पृथवी पाणी तेउ वाउ हो वनस्पति त्रस जाणिये, कांइ छह काया जीव उगार ॥ ज्ञा० ॥ ८ ॥ एकेकी काय नवावे हो हणाव निहां प्राणी घणा, कांइ गोचर अगोचर धार ॥ दुःख दुर्गति वधारण हो भवारण्य कारण जाणिने, कांइ हिंसा सर्व निवार ॥ ज्ञा० ॥ ९ ॥ छ व्रत वली छकाया हो पाले त्रिकरण जागतें, कांइ ए थया स्थानक वार ॥ पिंड शैय्या वस्त्र पात्रा हो चतुर मुनि लेवे सूझता, कांइ दोष न करे अंगीकार ॥ ज्ञा० ॥ १० ॥ कांस्यादिक पात्रमांहि हो नहिं भोगवे आहार पाणी कदा, कांइ भ्रष्ट थाय आचार ॥ पलंग मांचादि आसण हो सिंहासण पर बेसे नहिं, कांइ पडिलेहण दुःकरकार ॥ ज्ञा० ॥ ११ ॥ जावे गोचरी काजे हो विराजे नहिं गृहस्थी घरे, कांइ उपजे दोष अपार ॥ वृद्ध रोगी तपसी राया हो जस कायामें शक्ति नहिं, कांइ कल्पे त्रिहुं अणगार ॥ ज्ञा० ॥ १२ ॥ स्नान वर्ज्यो जिनराया हो बहु काया थाये विराधना, कांइ व्रतमें लागे अतिचार ॥ सुगंधादिक चंदन केशर हो परमेश्वर वर्ज्या साधने, कांइ दृढ कर्म बंधणहार ॥ ज्ञा० ॥ १३ ॥ जे शम दम उपशम सागर हो रतनागर रिख बहु गुण तणा, कांइ कर्म खपावण हार ॥ पापपुंज खपावे हो तन तावे तप जप साधणा, करे कपट क्रोध परिहार ॥ ज्ञा० ॥ १४ ॥ ज्ञान ध्यान रंग राता हो जगना त्राता तोडणें, कांइ शशिसम जस निर्मल धार ॥ तिलोकरिख कहे धर्मार्थे सिद्धी हो आराधी सीधी कोइ स्वर्गमें, कांइ उपजे त्रायी अणगार ॥ ज्ञा० ॥ १५ ॥ इति धर्मार्थाध्ययनं ॥

॥ अथ सप्तम वाक्यशुद्धयध्ययन सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ बंधव बोल मानो हो ॥ ए देशी ॥ चउभाषा जिनवर कही,

जाणे रिख बुध बुद्धिवता हो ॥ दो सीखे दो वार्जित करे, जे चतुर महता हो के ॥ १ ॥ मुनिवर वस बोले हो, जिहा सावद्य तिहा सत्य नहीं, इम अनुभव तोले हो क ॥ मु० ॥ २ ॥ सत्य विहार समाचरे, झूठ मिश्र टाले हो ॥ निरवद्य अकर्कश असदेह सो, बुद्धिवत गिरा झाले हो के ॥ मु० ॥ ३ ॥ अतीत अनागत वर्तमानमें, एकात नहिं ताणे हो ॥ निसदेह निश्चय तजे, जे अवसँरै जाणे हो के ॥ मु० ॥ ४ ॥ निःसदेह साची वली, जिणथी जीवणा हो ॥ ते पण रिख वर्जे सही, जिहा पाप बधावे हो के ॥ मु० ॥ ५ ॥ काणो न कहे एकनेत्रीने, पडग पडगरोगी हो ॥ चोरने चोर कहे नहिं, जे मुनि उपयोगी हो के ॥ मु० ॥ ६ ॥ मूरख गोलो कूनरो, क्रोधी कपटी भिखारी हो ॥ वर्जे इत्यादिक भाषा जे, लागे परने खारी हो के ॥ मु० ॥ ७ ॥ दादी पडदादी माता, धुया सखी चोरी ठकुराणी हो ॥ इत्यादिक शोले प्रकारनी, वर्जे रिख वाणी हो के ॥ मु० ॥ ८ ॥ नाम गोत्र जिम तेहना, तिमहीज वतळावे हो ॥ तिमही पुरुष नाता सहू, वर्जे वतलावे हो क ॥ मु० ॥ ९ ॥ मनुष्य पशु पखी अही, गाय बैल तरु खेती हो ॥ भोजनादिकये सहू, देखी बोले सो चेती हो के ॥ मु० ॥ १० ॥ रुडो विवाह किधो इणे, भली निपजी रसोई हो ॥ वारु छेद्यो शाक भला मखो, दाखे नहिं रिख जोई हो के ॥ मु० ॥ ११ ॥ भलु हराणु द्रव्य सुजीनु, भलु गयु धन एहनो हो ॥ ए कन्या सुदर स्रीरे, इम वचन न केहणो हो के ॥ मु० ॥ १२ ॥ रूडो कीधो तप परिपकशीलें, छेद्यो मोहनी तातो हो ॥ पडित मरण क्रोधादिक हरयो, भलो कह्यो तिण वातो हो के ॥ मु० ॥ १३ ॥ भलो थयो कर्म खाली थयां साधुकिरिया भलेरी हो ॥ इत्यादिक भाषा वदे वली, जिणमें बुद्धि गहरी हो के ॥ मु० ॥ १४ ॥ आवो जावो तेडी लावो, उठो बैठो खावो पीवो हो ॥ इत्यादिक मुनि

जंपे नहिं, जाके अनुभव दीवो हो के ॥ मु० ॥ १५ ॥ करजो सामायिक पडिक्कमणा, सुणजो सूत्र प्राणी हो ॥ पालो दया देवाणुप्रिया, बोलो मृदु सत्यवाणी हो के ॥ मु० ॥ १६ ॥ देव मनुष्य तिर्यंचमें, होवे क्लेश लडाई हो ॥ हार जीत अमुक तणी, चिंते नहिं मनमांई हो के ॥ मु० ॥ १७ ॥ वायु वर्षा शीत उष्णता, वंछे नहिं वृद्धि हाणी हो ॥ क्रोध लोभ भय हास्य कारिणी, रिख बोले न वाणी हो के ॥ मु० ॥ १८ ॥ सुवाक्य सूधी विचारीने, भाषा दोष निवारे हो ॥ कषाय टाले पाले दया, कर्मशत्रु प्रहारे हो के ॥ मु० ॥ १९ ॥ केवल लेइ शिवपुर लहे, सुवाक्य शुद्धि प्रभावे हो ॥ तिलोकरिख कहे आराधिक, सदा तस शीश नमावे हो के ॥ मु० ॥ २० ॥ इति सुवाक्यशुद्धिअध्ययनं ॥

॥ अथ अष्टमाचाराध्ययन सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ दया धर्म दिलमांही भावे रे ॥ ए देशी ॥ मुनिजन आज्ञा आराधो रे, निजातम कारज साधो रे ॥ ध्रु० ॥ आचार निधान ने पामीने जी, वरते जिम अणगार ॥ सुण जंबु क्रिया भली जी, जंपी परम दातार ॥ मु० ॥ १ ॥ पृथवी पाणी तेउ वायरो जी, वनस्पति त्रसकाय ॥ तीन करण तीन जोगसुं जी, हिंसा वर्जे मुनिराय ॥ मु० ॥ २ ॥ सूक्ष्म धुवर फूल कंथुवा जी, ीडी नांगरादिक उत्तंग ॥ फूलण खसखसादिक बीज सो जी, उगता अंकूरा अंग ॥ मु० ॥ ३ ॥ इंडा कीडादिकनां कह्या जी, ए अष्ट सूक्ष्म जाण ॥ दया पालो गाढा उपयोगसुं जी, पडिलेहणा परिम ॥ मु० ॥ ४ ॥ घर घर फिरे रिख गोचरी जी, देखे सुणे बहु क ॥ थिर राखे निज आतमा जी, तप संजम सावधान ॥ मु० ॥ ५ ॥ थोडो थोडो ग्रहे आहार सो जी, लूख वृत्ति अणगार ॥ ऊणोदरी आहार तृषा रहे जी, क्रोध न करे लगार ॥ मु० ॥ ६ ॥ देहें दुः

दीधा सपजे जी, महासुख कह्यो वीतराग ॥ चचल नहिं तीन जोगसु जी, निर्मल चित्त महाभाग ॥ मु० ॥ ७ ॥ अथिर जिवित जाणिने जी, धर्म धारे तजि भाग ॥ अवसर जाणि मुनीश्वरु जी, सजम माही आयोग ॥ मु० ॥ ८ ॥ जिहा लगें जरा पीडे नहिं जी, व्याधि न अग वढत ॥ इद्रिय बलहीण होवे नहिं जी, तिण पहेली धर्म चढत ॥ मु० ॥ ९ ॥ क्रोधसु नाश प्रीति तणो जी, मानथी विनय गुण जाण ॥ मायाथी नाश मित्राइनो जी, लोभें सकलगुण हाण ॥ मु० ॥ १० ॥ क्षमाथी क्रोध जावे सही जी, विनयथी मान हणाय ॥ कपटाई सरल स्वभावशु जी, लोभ सतोषथी जाय ॥ मु० ॥ ११ ॥ चउगति वृक्ष पुष्टि होवे जी, कपायको जल सिंचाय ॥ इम जाणी चारे निवारजो जी, श्री गुरुभक्त मनाय ॥ मु० ॥ १२ ॥ निंदा हास्य विकथा तजो जी, सज्झाय ध्यान धरत ॥ बहुसूत्री सेवा करो जी, गुरुविनय अधिक साधत ॥ मु० ॥ १३ ॥ निंदा करे नहिं कोइनी जी, बोले विचारी बोल ॥ द्वादश अगी खल विकदाई जी, नहिं करे हास्य कुतोल ॥ मु० ॥ १४ ॥ ज्योतिप निमित्त भाखे नही जी रहेवे निरवद्य स्थान ॥ स्त्री पशु वर्जित सहीजी, नारीकथा सुणे नहिं कान ॥ मु० ॥ १५ ॥ कुकडीका बाळ विलायशु जी, डरे जिम नारीथी सत ॥ वित्राम न देखे तेह तणु जी, ब्रह्मचारी गुणवत ॥ मु० ॥ १६ ॥ हस्त पाय कर्ण नासिका जी, छेदाणा वृद्ध नार ॥ तेहवी पण ब्रह्मचारी तजे जी, वली शोभा सरस आहार ॥ मु० ॥ १७ ॥ जिन सरधार्ये निकले जी, पाले तिम जावजीव ॥ साहसिंघ सिंह जेहवा जी, कर्मासु जूझे अतीव ॥ मु० ॥ १८ ॥ अग्निसु धमी निर्मल करे जी, रूपाने जिम सोनार ॥ तिम कर्म खार करे वेगलो जी, तपस्या अग्नि प्रचार ॥ मु० ॥ १९ ॥ केवल लइ शिवपद ग्रहे जी, चद्र ज्यु सोहे आकाश ॥ आचार निधान अध्ययनमें जी, तिलोक-

रिख कहे खुलास ॥ सु० ॥ २० ॥ इति आचाराध्ययन ॥ ८ ॥

॥ अथ नवम विनयसमाधिअध्ययनस्य
प्रथम उद्देशक सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ श्रीजिन मुझने पार उतारो ॥ ए देशी ॥ रे भाई विनय धर्म सुखदाई ॥ तिणसुं कमी रहे नहिं कांई रे भाई ॥ विन मान क्रोध छल लोभसुं प्राणी, विनयनहिं सिखे गुरु पासे ॥ ज्ञान भणे तोई विपन सवाई, फल आय वास विनासें रे भाई ॥ वि० ॥ १ ॥ मंद प्रकृति अल्पश्रुत वय छोटा, हिलणार्थ आशातना लागे ॥ आचारवंत वर श्रुतगुण सागर, तिणनांही विनय कोइ त्यागे रे भाई ॥ वि० ॥ २ ॥ तिणने जिम अग्नि भस्म करे वस्तु, तिम ज्ञानादिक गुण नासे ॥ सर्प छोटो तोइ डस्या प्राण खोवे, अविनीत दुर्गति दुःखि पासें रे भाई ॥ वि० ॥ ३ ॥ आशीविष प्राण लेवे एक भवमें, गुरु आशातना भव भवमें ॥ दुःख देवे बोधबीज नहिं आवे, जाय पडे दुःखदवमें रे भाई ॥ वि० ॥ ४ ॥ अग्निने यग करीने जो चाहे, सर्पने कोप चडावे ॥ जीवितअर्थे खावे जहेर हलाहल, पर्वत शिरथी हठावे रे भाई ॥ वि० ॥ ५ ॥ सूतो सिंह जगावे गोला कर, बरछी पर हथेली प्रहारे ॥ इण दृष्टांतें अशातना करे गुरुनी, वली मुख चित्त विचारे रे भाई ॥ वि० ॥ ६ ॥ देवजोगें जो वरते सुखदायी, अशातना फल टले नांई ॥ विनयी रखो गुरुहिलणियो, जगतारक फरमाई रे भाई ॥ वि० ॥ ७ ॥ तिण कारण शिवसुखना अर्थी, अग्नि जिम गुरु ने सरीजें ॥ धर्मपद एक शीखे जिण पासें, तिणनो पण विनय करीजें रे भाई ॥ वि० ॥ ८ ॥ लज्जा दया संजम शील ए चारु, अर्थी पुरुष शिवगामी ॥ करे गुरुभक्ति तो मर्म पुलावे, तम हरे ज्युं दिनस्वामी रे ॥ वि० ॥ ९ ॥ जिम शशी सोहे ग्रहगण मांही, तिम आचारज पण

छाजे ॥ विनीत शिष्य रत्नाकर जेहवो, मुक्तिके माही बिराजे रे भाई ॥ वि० ॥ १० ॥ विनयसमाधि प्रथम उद्देशामें, एह वर्णन कह्यो सारो ॥ तिलोकरिख कहे विनय जो आराधे, सोही लहे भवपारो रे भाई ॥ वि० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ नवम, विनयसमाधिअध्ययनस्य
द्वितीय उद्देशक सज्झाय प्रारभः॥

॥ देशी केरवामें छे ॥ जिम वृक्षने मूल खद पछे शाखा, पान फूल विस्तार ॥ भला रे ज्ञानी ॥ पा० ॥ विनयवर धर्म आराध जो काइ, जो चाहो भवनिस्तार ॥ भला रे ज्ञानी ॥ जो० ॥ विन० ॥ १ ॥ तिम धर्म तरु विनय मूल पयप्यो, जगतारक जसधार ॥ भ० ॥ ज० ॥ वि० ॥ २ ॥ क्रोधी अज्ञानी मानी दुष्ट भाषक, कपटी धूर्त नर नार ॥ भ० ॥ क० ॥ वि० ॥ ३ ॥ ससार सागरमें तणावे ऐसा दुष्टी, काठ नदीपूर मझार ॥ भ० ॥ का० ॥ वि० ॥ ४ ॥ भली शीख देता उलटी धारे ज्यू, शिरे अति दड प्रहार ॥ भ० ॥ शि० ॥ वि० ॥ ५ ॥ अविनील भवदड दु.ख पावे, सदा दारिद्र घर वार ॥ भ० ॥ स० ॥ वि० ॥ ६ ॥ विनीत नर नारीने इण भव सुखसपत, परभवमें जय जयकार ॥ भ० ॥ प० ॥ वि० ॥ ७ ॥ सुर भवपद विचार कर होवे, अविनीतपणु दु.खकार ॥ भ० ॥ अ० ॥ वि० ॥ ८ ॥ विनीत गुरु अभिप्रायनो जाणक, नमन करे वारवार ॥ भ० ॥ न० ॥ वि० ॥ ९ ॥ शीखे सूत्र अर्थ धर्म धन धारक, उतरे भवजल पार ॥ भ० ॥ उ० ॥ वि० ॥ १० ॥ तिलोकरिख कहे अध्ययन नवमामें, दूजे उद्देशें अधिकार ॥ भ० ॥ दू० ॥ वि० ॥ ११ ॥ इति द्वितीय उद्देश सज्झाय ॥

॥ अथ नवम विनय समाधि अध्ययनस्य तृतीय
उद्देशक सज्झाय प्रारभ ॥

॥ सुमति सदा दिलमें धरो ॥ ए देशी ॥ श्री गुरु आज्ञा शिर

धरो, जो गुरुपदकी चहाय ॥ विवेकी ॥ अग्निहोत्री जिम अग्निनें, सेवे तिम सतो पाय ॥ वि० ॥ श्री० ॥ १ ॥ अंगचेष्टा जाणे गुरु तणी, करो शुश्रूषा वारंवार ॥ वि० ॥ वय छोटा दीक्षा करि वडा, साधो तस विनय व्यवहार ॥ वि० ॥ श्री० ॥ २ ॥ दोष बयालीस टालने, लेवतो सुझनो आहार ॥ वि० ॥ संथारो शय्यासन भोगवो, हर्ष शोक परिहार ॥ वि० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ वचन कांटा दुर्धर कह्या, खमे मुनि समताधार ॥ वि० ॥ पर अवगुण वैरीपणुं, अप्रिय वचन परिहार ॥ वि० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ लोलुपी कौतुकी माई-पणो, वर्जे विनीत अणगार ॥ वि० ॥ चुगल नहिं दीनवृत्ति नही, निजप्रशंसा निवार ॥ वि० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ ज्ञानादिक गुणें साधु हुवे, कामाथी गुणथी असंत ॥ वि० ॥ इम जाणी गुण संग्रह करो, राग द्वेष दोइ हणंत ॥ वि० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ जिम कन्या भणी तात देवे, देखी घर वर ठाम ॥ वि० ॥ तिम गुरु सुशिष्यने भली, शिक्षा देई देवे शिवधाम ॥ वि० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ सुशिष्य माने गुरु आज्ञा, जावे मुक्तिने मांय ॥ वि० ॥ त्रीजो उद्देशो न - ध्ययननो, तिलोकरिख कहे वखाय ॥ वि० ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ नवमविनय समाधि अध्ययनस्य चतुर्थ उद्देशक सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ चार पहोरको दिन होवे रे ॥ ए देशी ॥ सौधर्मास्वामी रूडी रीतसुं रे, आर्य जंबू सुं कहे एम रे ॥ चतुर मुनि ॥ जिम श्रीजिन मुझसुं कह्यो रे, दाखूं हूं तुझथकी तेम रे ॥ च० ॥ चार समाधि चित्त धरो रे ॥ १ ॥ प्रथम विनय विचार रे ॥ च० ॥ गुरुशिक्षा सुणो खंतसूं रे, वरतो सम व्यवहार रे ॥ च० ॥ चा० ॥ २ ॥ सूत्रमें क्रिया करणी कही रे, साचवो काले काल रे ॥ च० ॥ मन अ-भिमान आणो मति रे, हुई सुविनीत विशाल रे ॥ च० ॥ १०

छाजे ॥ विनीत शिष्य रत्नाकर जेहवो, मुक्तिके माही बिराजे रे भाई ॥ वि० ॥ १० ॥ विनयसमाधि प्रथम उद्देशामें, एह वर्णन कह्यो सारो ॥ तिलोकरिख कहे विनय जो आराधे, सोही लहे भवपारो रे भाई ॥ वि० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ नवम, विनयसमाधिअध्ययनस्य
द्वितीय उद्देशक सज्झाय प्रारभः ॥

॥ देशी केरवामें छे ॥ जिम वृक्षने मूल खद पछे शाखा, पान फूल विस्तार ॥ भला रे ज्ञानी ॥ पा० ॥ विनयवर धर्म आराध जो कांइ, जो चाहो भवनिस्तार ॥ भला रे ज्ञानी ॥ जो० ॥ विन० ॥ १ ॥ तिम धर्म तरु विनय मूल पयप्यो, जगतारक जसधार ॥ भ० ॥ ज० ॥ वि० ॥ २ ॥ क्रोधी अज्ञानी मानी दुष्ट भाषक, कपटी धूर्त नर नार ॥ भ० ॥ क० ॥ वि० ॥ ३ ॥ ससार सागरमें तणावे ऐसा दुष्टी, काठ नदीपूर मझार ॥ भ० ॥ का० ॥ वि० ॥ ४ ॥ भली शीख देता उलटी धारे ज्यू, शिरे अति दड प्रहार ॥ भ० ॥ शि० ॥ वि० ॥ ५ ॥ अविनीत भवदड दु ख पावे, सदा दारिद्र घर वार ॥ भ० ॥ स० ॥ वि० ॥ ६ ॥ विनीत नर नारीने इण भव सुखसपत, परभवमें जय जयकार ॥ भ० ॥ प० ॥ वि० ॥ ७ ॥ सुर भवपद विचार कर होवे, अविनीतपणु दु खकार ॥ भ० ॥ अ० ॥ वि० ॥ ८ ॥ विनीत गुरु अभिप्रायनो जाणक, नमन करे वारवार ॥ भ० ॥ न० ॥ वि० ॥ ९ ॥ शीखे सूत्र अर्थ धर्म धन धारक, उतरे भवजल पार ॥ भ० ॥ उ० ॥ वि० ॥ १० ॥ तिलोकरिख कहे अध्ययन नवमामें, दूजे उद्देशें अधिकार ॥ भ० ॥ दू० ॥ वि० ॥ ११ ॥ इति द्वितीय उद्देश सज्झाय ॥

॥ अथ नवम विनय समाधि अध्ययनस्य तृतीय
उद्देशक सज्झाय प्रारभ ॥

॥ सुमति सदा दिलमें धरो ॥ ए देशी ॥ श्री गुरु आज्ञा शिर

धरो, जो गुरुपदकी चहाय ॥ विवेकी ॥ अग्निहोत्री जिम अग्निनें, सेवे तिम सेवो पाय ॥ वि० ॥ श्री० ॥ १ ॥ अंगचेष्टा जाणे गुरु तणी, करो शुश्रूषा वारंवार ॥ वि० ॥ वय छोटा दीक्षा करि वडो, साधो तस विनय व्यवहार ॥ वि० ॥ श्री० ॥ २ ॥ दोष वयांलीस टालने, लेवतो सुझतो आहार ॥ वि० ॥ संथारो शय्यासन भोगवो, हर्ष शोक परिहार ॥ वि० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ वचन कांटा दुर्धर कह्या, खमे मुनि सजताधार ॥ वि० ॥ पर अवगुण वैरीपणुं, अप्रिय वचन परिहार ॥ वि० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ लोलुपी कौतुकी माइं-पणो, वर्जे विनीत अणगार ॥ वि० ॥ चुगल नहिं दीनवृत्ति नही, निजप्रशंसा निवार ॥ वि० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ ज्ञानादिक गुणें साधु हुवे, कामाथी गुणथी असंत ॥ वि० ॥ इम जाणी गुण संग्रह करो, राग द्वेष दोइ हणंत ॥ वि० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ जिम कन्या भणी तात देवे, देखी घर वर ठाम ॥ वि० ॥ तिम गुरु सुशिष्यने भली, शिक्षा देई देवे शिवधाम ॥ वि० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ सुशिष्य माने गुरु आज्ञा, जावे मुक्तिने मांय ॥ वि० ॥ त्रीजो उद्देशो न अ-ध्ययननो, तिलोकरिख कहे बखाय ॥ वि० ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ नवमविनय समाधि अध्ययनस्य चतुर्थ उद्देशक सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ चार पहेरको दिन होवे रे ॥ ए देशी ॥ सौधर्मस्वामी रूडी रीतसुं रे, आर्य जंबू सुं कहे एम रे ॥ चतुर मुनि ॥ जिम श्रीजिन मुझशुं कह्यो रे, दाखूं हूं तुझथकी तेम रे ॥ च० ॥ चार समाधि चित्त धरो रे ॥ १ ॥ प्रथम विनय विचार रे ॥ च० ॥ गुरुशिक्षा सुणो खंतसूं रे, वरतो सम व्यवहार रे ॥ च० ॥ चा० ॥ २ ॥ सूत्रमें क्रिया करणी कही रे, साचवो काले काल रे ॥ च० ॥ मन अ-भिमान आणो मति रे, हुई सुविनीत विशाल रे ॥ च० ॥ चा०

॥ ३ ॥ सूत्र समाधि दूजी चिंतवे रे, जाणसु सूत्र विचार रे॥ च० ॥ सूत्र शीख्याथकी माहेरो रे, रहेशे चित्त थिरकार रे ॥ च० ॥ चा० ॥ ४ ॥ थापसु आतमा धर्ममें रे, समझावसु भवि लोक रे ॥ च० ॥ मान वरजी चिहु कारणें रे, सग्रह करे सूत्र थोक रे ॥ च० ॥ चा० ॥ ५ ॥ त्रीजी समाधि तपस्या तणी रे इह लोक लब्धि आदिक काज रे ॥ च० ॥ परलोक सुर सुख कारणें रे, नहिं करे तप मुनिराज रे ॥ च० ॥ चा० ॥ ६ ॥ सर्व दिशा कीर्त्ति भणी रे, भली मानसी घणा जन रे ॥ च० ॥ एम उवर्जी निर्जरा भणी रे, मुनि धारे तपस्या रतन रे ॥ च० ॥ चा० ॥ ७ ॥ चौथी आचार समाधि सी रे, तप कारण जे कह्या चार रे ॥ च० ॥ ते वर्जी शिवकारणे रे, पाले क्रिया आचार रे ॥ च० ॥ चा० ॥ ८ ॥ चौथो उद्देशो विनय समाधिना रे, दाख्यो वीर जिणद रे ॥ च० ॥ तिलोकरिख कहे तिम आदरे रे, पामे परमानद रे ॥ च० ॥ चा० ॥ ९ ॥ इति नवम विनय समाधि अध्ययनस्य चतुर्थोद्देशकः ॥४॥

॥ अथ दशम भिक्खुनामाध्ययन सज्झाय प्रारभ ॥

॥ कुविश्न मारगमाथे धिकधिक ॥ ए देशी ॥ तजत आश्रव घर, भजत सवर वर, श्रीजिनवाणी धार हो ॥ चित्त समाधि, नित्य आराधी, त्रिया वशमें न लगार हो ॥ १ ॥ धन ऐसा सत करुणा रस सागर, गुणरतनागर पूर हो ॥ ज्ञान उजागर नागर पडित, सजम क्रियामें शूर हो ॥ ध० ॥ २ ॥ पृथ्वी न खणे न खणावे ऋषिश्वर, पीये न पावे सचित्त नीर हो ॥ जलत जलावे, तेउ महा शस्तर, विंजणे न करे समीर हो ॥ ध० ॥ ३ ॥ छेदे न छेदावे वनस्पतिने, न करे सचित आहार हो ॥ नव कोटि शुद्ध ग्रहे रिख भिक्षा, प्रभु वाणी अवधार हो ॥ ध० ॥ ४ ॥ आतमा सम जाणे छेड्काया, पच महाव्रतवत हो ॥ आश्रव रुधे कषाय

के टाले, ध्रुवजोगी धनवत हो ॥ ध० ॥ ५ ॥ वर्जे जोग सावद्य समदृष्टि, अर्थिज्ञान तप चरण हो ॥ पाप प्रहारे थिर जोग धारे, जे मुनि तारण तरण हो ॥ ध० ॥ ६ ॥ चार आहार वासी नहिं राखे, भोगवे साधर्मिकी आमंत्र हो ॥ सज्झाय ध्यान मेली नहिं रहे नित आतमा, निज राखे स्वतंत्र हो ॥ ध० ॥ ७ ॥ विग्रहकारिणी दुःख वधारणी, न करे विकथा प्रबंध हो ॥ न करे राग द्वेष क्षमा धारक, संजम तप ध्रुव बंध हो ॥ ध० ॥ ८ ॥ पंच इंद्रीने कंटक सम लागे, अक्रोश वचन परिहार हो ॥ अट्टह हास्य शद्ब परम भयंकर, सम सुख विचार हो ॥ ध० ॥ ९ ॥ पडिमाधारक सात भय वारक, ममता नहिं तन तुष तोल हो ॥ पृथवी समान उपधान आराधे, वर्जे निथाणो कितोल हो ॥ ध० ॥ १० ॥ सहत परिसह लडत अरिसें, कुगतिसें आतम टालंत हो ॥ जनम मरण भव वर्जण कारण, संजम तपस्या साधंत हो ॥ ध० ॥ ११ ॥ हाथ पाय बांह इंद्रिय संजय, सज्झायरक्त सूत्र जाण हो ॥ भंड उपकरण मूर्च्छा हिं राखे, जे भिक्खु चाहे कल्याण हो ॥ ध० ॥ १२ ॥ अज्ञात कुलें गृहे अल्प आहार रिख, न करे विणज वेपार हो ॥ छोडे कुसंग मूर्छे नही भोजन, नहिं वंछे पूजा सत्कार हो ॥ ध० ॥ १३ ॥ कोप वशें कुभाषा न जंपे, छंडे छल अभिमान हो ॥ पुण्य पाप फल प्रत्यें विचारे, जे भिक्खुआगम जाण हो ॥ ध० ॥ १४ ॥ धर्मदेव धर्मदेशना दायक, नायक या एक जेम हो ॥ श्रीजैन धर्मने धीरे धरावे, वरजे कुशील लिंग प्रेम हो ॥ ध० ॥ १५ ॥ देहको वास अशुचि दुर्वासक, अशाश्वतो विद्युत्संज्ञावान हो ॥ ममता त्यागी अनुरागी मुक्तिका, निजपर आतम सुखदान हो ॥ ध० ॥ १६ ॥ जनम मरण रण डरण मिटाइ, चरण करण उद्धार हो ॥ चरण सरण धर तरण तारण को, केवल कमला भरतार हो ध० ॥ १७ ॥ मुक्ति महेलकी सहेल अचल पद, अजर

अविकार हो ॥अलख निरजन भविमन रजन, वरते जय जय कार हो ॥ ध० ॥ १८ ॥ दशमु अध्ययन भिक्खु मारगनु, जे कर्मभेदनहार हो ॥ आराधना करे शम दम परिणामें, पावे भव निस्तार हो ॥ ध० ॥ १९ ॥ सवत् पदरेशें एकतिस सवत्सर, उतर्यो भसमग्रह क्रूर हो ॥ श्रीजिनसासण उदे पूजा प्रगटी, समकित जोत सनूर हो ॥ ध० ॥ २० ॥ गुर्जर देश विशेष प्रसिद्धता, अहमदावाद् मज्झार हो ॥ शुद्ध श्रद्धाधारक श्रावक लुकाजी, किनो ज्ञान उपगार हो ॥ ध० ॥ २१ ॥ ततदशना सुणि एकदिनमाही, मुख्य भाणो जी वखाण हो ॥ पैंतालिस जणा सगें सजम धार्यो, चित्त दढता अति आण हो ॥ ध० ॥ २२ ॥ दु कर दु कर करणी धारी, दयाधरम थयो परकाश हो ॥ सातमे पाटे सत्तरेसें पूज, पद धारक विमास हो ॥ ध० ॥ २३ ॥ श्री श्री कहानजी रिख महाराया, दीपायो जैनधर्म हो । चालीस सहस्र ग्रथ आगम कठागर, टाल्यो अज्ञान को भर्म हो ॥ ध० ॥ २४ ॥ तत् पाटोधर पूज्य तारारिखजी, काला-रिखजी गुणरत हो ॥ वगसू रिखजी तस पाट विराज्या, शूरवीर महमत हो ॥ ध० ॥ २५ ॥ तत् अंतेवासी पूज्य धनजी, शम दम उपशम धार हो ॥ तत् शिष्य श्रीअयचता रिखजी, चरण करण दातार हो ॥ ध० ॥ २६ ॥ चरण सरण तस ग्रहण करीने, बाल ख्याल जिम जाण हो ॥ प्रत्येक अध्ययन उद्देशाकी किंचित, रची रचना हित आण हो ॥ ध० ॥ २७ ॥ हाण अधिक पद अर्थ जो दीसे, बुध जनसु अरदास हो ॥ शुद्ध करि लीजो हास्य न कीजा, जयणा शुद्ध भणजो उल्लास हो ॥ ध० ॥२८॥ सवत् उगणीशें चालीस सवत्सर, चैत्र शुक्ल बीज जाण हो ॥ वार चद्र देश दक्षिणमाही, अहमद-नगर प्रमाण हो ॥ ध० ॥ २९ ॥ तिलोकरिख कहे धन जिनागम, सर्धे जो भविक मन खत हो ॥ अनत ससार परित कर देवे, पाले सो होय शिव कत हो ॥ ध० ॥ ३० ॥ हीण अधिक जे आज्ञानी

हिर, जो कोइ जोडाणो होय हो ॥ देव गुरु धर्म आतमा साखे, मिच्छामि दुक्कड् मोय हो ॥ ध० ॥ ३१ ॥ अरिहंत सिद्ध धर्म ए चारी, होजो सदा शरण चार हो ॥ रिद्धि सिद्धि सुख संपत अविचल, दीजो परम दातार हो ॥ ध० ॥ ३२ ॥ कलश ॥ जिनराज वाणी, सुखदाणी, भविक प्राणी, सुन्व आणी ॥ सत भंगी, कही चंगी, भविक रंगी, रुचि घणी॥जे पाले भावे, कर्म धावे, केवल पावे, सार ए ॥तिलो रिख इम, सीख गुरुगम, ए रची सज्झाय, सुखकार ए ॥ ध० ॥ ३३॥ इति भिक्खुअध्ययनम् ॥ इति दशवैकालिकसूत्रजी की पीठिका सहित अध्ययन उद्देशा प्रत्येक पन्नर सज्झाय संपूर्ण ॥ सर्व गाथा ॥२३२॥

॥ अथ गुरुगुण सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ देशी करवामें छे ॥ प्रणमुं गुरु गुणवंत नगीना, रिद्ध सिद्ध द ार ॥ भला रे ज्ञानी ॥ रिद्ध० ॥ गुरुगुण हिरदे वस रह्या, म्हारे जीवन प्राण आधार ॥ गु० ॥ १ ॥ गुरुगुण सागर परम उजा: गर, नागर नवल व्रतधार ॥ भ० ॥ ना० ॥ गु० ॥ २ ॥ ज्ञान को अंजण दे मनरंजण, भंजण भर्म अंधार ॥ भ० ॥ भं० ॥ गु० ॥ ३ ॥ धीरज मंदिर सोम ज्युं चंद्र धरम धुरंधर धार ॥ भ० ॥ ध० ॥ गु० ॥ ४ ॥ कर्मके गंजन अलख निरंजन, शिवपदके दातार ॥ भ० ॥ शि० ॥ गु० ॥ ५ ॥ आप तरे पर तारण हारा, राग द्वेष परिहार ॥ भ० ॥ रा० ॥ गु० ॥ ६ ॥ मात तात सुत भ्रात कामिनी, सगपण सर्व असार ॥ भ० ॥ स० ॥ गु० ॥ ७ ॥ गुरु सम नहिं को हित कारक छे, विपत विडारणहार ॥ भ० ॥ वि० ॥ गु० ॥ ८ ॥ चित्रवेल चिंतामणी पारस, इण भवमें सुखकार ॥ भ० ॥ इ० ॥ गु० ॥ ९ ॥ सतगुरु इणभव परभवमांही, दे सुखसंपत सार ॥ भ० ॥ दे० ॥ गु ॥ १० ॥ मोतिसा भलीने खांडसा ख्यारा, आतमा समअपियार ॥ भ० ॥ आ० ॥ गु० ॥ ११ ॥ गुरु पासें रायसंजेती, लीयो संजम भार ॥ भ० ॥ ली० ॥ गु० ॥ १२ ॥

पापी पूरो परदेशी राजा, दीयो सुर अवतार ॥ भ० ॥ दी० ॥ गु० ॥ १३ ॥ चार हत्या करी दृढ प्रहारी, पायो मोक्ष द्वार ॥ भ० ॥ पा० ॥ गु० ॥ १४ ॥ गुरु विण जुगत मुक्ति नहिं पावे, गुरु विन घोर अधार ॥ भ० ॥ गु० ॥ गु० ॥ १५ ॥ इत्यादिक अनत-हि तरिया, कियो सतुगुरु उपगार ॥ भ० ॥ कि० ॥ गु० ॥ १६ ॥ पुज्य कहानजी रिखजी वरतायो, दयाधरम विस्तार ॥ भ० ॥ द० ॥ गु० ॥ १७ ॥ पूज्यतारा रिखजी तस पाटे, कालाजी रिख गुणधार ॥ भ० ॥ का० ॥ गु० ॥ १८ ॥ तस पाटे श्रीविगसू रिखजी, धन-जी रिख हितकार ॥ भ० ॥ ध० ॥ गु० ॥ १९ ॥ तस शिष्य श्री-अयवता रिखजी, वाल जति ब्रह्मचार ॥ भ० ॥ वा० ॥ गु० ॥ २० ॥ श्रीगुरु मुझ पर परम मया कर, दीनो सजम भार ॥ भ० ॥ दि० ॥ गु० ॥ २१ ॥ तिलोकरिख गुरुगुणकी महिमा, सरस्वती पावे नहिं पार ॥ भ० ॥ स० ॥ गु० ॥ २२ ॥ गुरुगुण गावे मन शुद्ध करिने, वरते मगल चार ॥ भ० ॥ व० ॥ गु० ॥ २३ ॥

॥ अथ वार भावनागर्भित उपदेशछत्रीशी सज्झाय प्रारभ ॥

॥ प्राणी कर्म समो नहिं कोइ ॥ ए देशी ॥ रे प्राणी जगमाया सव काची ॥ थें किम करी मानी छे साची रे ॥ प्राणी० ॥ ए टेक ॥ श्रीजगदीश के शीश नमाइ, कहु उपदेशी रसालो ॥ भवि प्राणी सुणो थिर चित्त करिने, मिथ्या भर्म थें टालो रे ॥ प्रा० ॥ १ ॥ गढ मढ मदिर हाट हवेली, वाग वगीचा निवाणो ॥ दुपद चउपद वस्तर गहेणा, हिरण्य सुवर्णादिक नाणो रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ देहसु नेह करे किम विरथा, पुद्गल शोभा छे सारी ॥ पर वस्तु विना लागे भयकर, देखो ज्ञान विचारी रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ मात पिता सुत नारी सहोदर, स्वजन कौटुंविक सारा ॥ अनत वार सगपण सब जोड्या, तोड्या अनतही वारा रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ दुश्मन मर कर सज्जन होवे, सज्जन दुश्मन थावे ॥ राग द्वेष

मा ` बंधण, क्यों निज माल गमावे रे ॥ ०॥ ५ ॥
रोग दुः आवे जो तनमें, शरणागत नहिं कोइ ॥ तेरो सहायक जैन धर्म है, इण भव पर भव जोइ रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ प्रभु सरणा बिना चउगति भटक्यो, पायो दुःख अनंता ॥ ते वेदना निज आतमा जाणे, के जाणे भगवंता रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ जन्म लियो जब कोइ न साथी, मरतां पण नहिं लारी ॥ बंधी मुठीयें जन्मज लीनो, ज वे हाथ पसारी रे ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ जायो जायो कहे जनमतां, बाहर पडियो रोवे ॥ जन्मतांही अपशकुन जो लीधा, रेणो किस विध होवे रे ॥ प्रा० ॥ ९ ॥ सुख दुः ।
आतमा जाणो, भुगते आप अकेलो ॥ इम जाणी दुःकृत परिहरि-ये, सुकृत क्रिया सो झेलो रे ॥ प्रा० ॥ १० ॥ धन कुटुंब रिद्ध संपत पाइ, सो निज पुण्य प्रभावें ॥ जिण समे पुण्यको छे ` आवे, देखतमें विरलावे रे ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ जिम तरुवर पर वे पंखरु, निज निज स्वारथ कामें ॥ पान झड़े पंखी उड़ जावे, बैठे हरया वृक्षठामें रे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ बाजीगर जब ख्याल रचावे, लोक होवे बहु भेला ॥ बाजी भयासुं सब भग जावे, ` जीव अकेला रे ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ ग्वालके संगें गाय ` टोलो, कहे धेनु सब री ॥ जब आवे सो अपने घरमें, रहे अकेलो दंडधारी रे ॥ प्रा० ॥ १४ ॥ देह अपावन परम घिनापन, मल मूत्रकी क्यारी ॥ अशुचि आहार करी ए तन निपज्यो, चर्मकी शोभा ` जहारी रे ॥ प्रा० ॥ १५ ॥ सागर जल करी जो नित धोवे, तो शुचि नहिं थावे ॥ हाड़ करंडिया भंड मट्टीकी, इणिपर क्यों पोमावे रे ॥ प्रा० ॥ १६ ॥ सहस्र दिनारको एक क ` लेवो, जीमे एम सदाही ॥ तो पण दे दगो एक पलमें, ढे जी ` साही रे ॥ प्रा० ॥ १७ ॥ रोग सोग भय दुःख उच्चाटण, जनम मरण काया ॥ क्रोड जतन करतां पण जावे, इण पर क्यों तुं लोभाया रे ॥

प्रा० ॥ १८ ॥ दिन दिन चलनो नेडोज आवे, शका नहिं छे लगारो ॥ श्वासोश्वासें ए तन छीजे, अतमें होसी या छारो रे ॥ प्रा० ॥ ॥ १९ ॥ उडी उडी नींव लगावे, उची मजला चढावे ॥ साडा तीन कर है घर तेरो, क्यों तु पाप कमावे रे ॥ प्रा० ॥ २० ॥ हरि हर इद्र सुर असुर नर, जे जगमें देह धारी ॥ काल व्याल सबी ने गटकावे, चेतो चेतो नर नारी रे ॥ प्रा० ॥ २१ ॥ कुरग पतग भ्रमर मत्स्य मरे, एक इद्रिय वशें प्राणी ॥ जे पाचु इद्रिय वश पडिया, तेणें दुर्गति खाणी रे ॥ प्रा० ॥ २२ ॥ ए तन पाय महा तप कीजें, लीजें श्रीजिन नामो ॥ दीजें अभय दान सकलने, सीझे वछित कामो रे ॥ प्रा० ॥ २३ ॥ भोग हलाहल जहरसु जादा, फल किंपाक समानो ॥ भोगवता लागे मन गमता, पाछें महा दु:ख दानो रे ॥ प्रा० ॥ २४ ॥ सवर मारग तारक साचो, नवा कर्म सब टाले ॥ हाट कपाट समान ए जाणो, आगम साख देखाले रे ॥ प्रा० ॥ २५ ॥ गया कालमें कर्मज कीना, तेह हठावण कामें ॥ तपस्या द्वादश भेद करीजें, राखी सम परिणामें रे ॥ प्रा० ॥ ॥ २६ ॥ अनत अनत मेरु परिमाणें, मिश्रीदिक वस्तु सारी ॥ अनत वार इण भक्षण कीनी, दीजें ममत सब मारी रे ॥ प्रा० ॥ २७ ॥ जननी दूध पियो इण चेतन, सब सागर जल वारी ॥ तो पण तृष्णा रच न बुझी, समझो सुगुणा नर नारी रे ॥ प्रा० ॥ २८ ॥ लोक स्वरूप सठाण विचारो, पुण्य पाप फल देखो ॥ करमवशें पडिया सब जगमें, ज्ञानी बतायो छे लेखो रे ॥ प्रा० ॥ २९ ॥ देव निरजन गुरु निर्लोभी, धर्म दयामाहि जाणो ॥ ए तीनु तत्व सार पदारथ, निश्चल श्रद्धा ठाणो रे ॥ प्रा० ॥ ३० ॥ जिहा लगे नहिं आवे वृद्धपणु तन, रोग सोग नहिं आवे ॥ इद्रिय पच सो हाणी न होवे, उद्यम पहेली सरावे रे ॥ प्रा० ॥ ३१ ॥ धरम ध्यान करो एक चित्तें, कीजो सफल जमारो ॥ इण विन चउगतिमें

दुःख पायो, आगममें विस्तारो रे ॥ प्रा० ॥ ३२ ॥ रत्न चिंतामणी नरभव पायो, उत्तम कुळ अवतारो ॥ तप जप सुकृत उद्य कर लो, बाटी साठे मत हारो रे ॥ प्रा० ॥ ३३ ॥ अनंत जीव तरया धर्म प्रभावें, वली अनंताही तरसी ॥ इम जाणी प्रभु आज्ञा आराधे, सो शिव सुंदर वरसी रे ॥ प्रा० ॥ ३४ ॥ सत्गुरु तो कहेणेका है गरजी, परउपगारी थें जानो ॥ जो नहिं मानो तो मरजी तुम्हारी, ये घोड़ा ये मैदानो रे ॥ प्रा० ॥ ३५ ॥ उगणीशें अड़तिश जेठ शुद्ध सातम, गाम खरोंडीके मांही ॥ तिलोकरिख उपदेश छत्तीसी, भावना शुद्ध बणाइ रे ॥ प्रा० ॥ ३६ ॥ इति ॥

॥ अथ अनित्य भावना सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ संत चरणारी जाउं बलिहारी ॥ ए देशी ॥ ए संसार अनित्य भयकारी, नित्य जैनधर्म लो धारी ॥ ए० ॥ ए टेक ॥ गढ़ मढ़ मंदिर हाट हवेली, जाली झरोंका तिबारी ॥ जो बंध्या सो सकल ढल जावे, महेल गवाक्ष अटारी ॥ आरंभ मत करजो लगारी ॥ ए० ॥ १ ॥ पाट पीतांबर शाल दुशाला, हीर चीर जर तारी ॥ जो बणिया सो सकल विनाशक, रेशमी थान किनारी ॥ करो कोई जत्न हजारी ॥ ए० ॥ २ ॥ बाजुबंद भुजदंड चोकड़ा, हार कडा पेंची भारी ॥ घडिया मढ़िया जड़िया सुवर्णसें, हीरा रत्न झलकारी ॥ संग नहिं आवेगा थारी ॥ ए० ॥ ३ ॥ हरि हर इंद्र चंद्र सुर मानव, बाल तरुण जराधारी ॥ राव रंक नीरोगी सरोगी, अथिर सकल संसारी ॥ देखो भवि दृष्टि पसारी ॥ ए० ॥ ४ ॥ कुवा बावडी बाग बगीचा, वृक्ष विचित्र मनोहारी ॥ न रहे वस्तु न रहे करता, करतां क्रोड प्रकारी ॥ बात ए जगमांहे जहारी ॥ ए० ॥ ५ ॥ जग पैदल दल रथ तुरगम, सेना चार प्रकारी ॥ म्याना पालखी अस्तर शस्तर, रहवे नही तस धारी ॥ चराचर है गतचारी ॥ ए० ॥ ६ ॥ मात पिता बंधव अरु भगिनी, काका

काकी सुत नारी ॥ न्याती गोती सज्जन सनेही, सचल सकल परि वारी ॥ मरे जिणे देही जो धारी ॥ ए० ॥ ७ ॥ धरति अकन कुवारी सदाही वर किया अनत अपारी ॥ भूमि भुजग जो सबी गिलजावे, तो पण कहे रिद्ध म्हारी ॥ देखो ये अचरिज भारी ॥ ए० ॥ ८ ॥ नित्य श्री जैनधर्म निरतर, दृढमन लो इम धारी ॥ भरत नरिंद्र ज्यु केवल कमला, पावोगा नर नारी ॥ तिलोकरिख कहे सुविचारो ॥ ए० ॥ ९ ॥इति

॥ अथ असरण भावना अधिकार सज्झाय प्रारभ ॥

॥ स्वामी सुणे और सुदरी भाखे ॥ ए देशी ॥ सरणागत नहिं कोई इण जगमें, मात पिता सुत नारी रे ॥ न्याती गोती मित्र सनेही, है सब स्वार्थकी यारी रे ॥ स० ॥ १ ॥ हीरा माणक माल खजाना, रथ पेदल गज घोडा रे ॥ काल रिपु जब आवे चलाई, धरया रहे सब तोडा रे ॥ स० ॥ २ ॥ असख्य कोटि सुर नायक इद्र, रत्न जडित घर जाणा रे ॥ आतमरक्षक सुर सेवे निरतर, तो पण जम करे घाणो रे ॥ स० ॥ ३ ॥ लक्ष चौरासी हय गय रथ जस, पायदल छन्नवे कोडी रे ॥ नवनिधि चउदे रतन घर पण तस, काल ले जावे दोडी रे ॥ स० ॥ ४ ॥ द्वारकानाथ श्रीकृष्ण कहाया, छप्पन कोडी परिवारो रे ॥ दु.ख आया कोइ आडो नहिं आयो, अतर्ज्ञान विचारो रे ॥ स० ॥ ५ ॥ वज्र कोट डोट परकोटो, कगुरे कोटि सिपाई रे ॥ सात भुयरामें राखे तोही पण, काल ले जावे सोदी रे ॥ स० ॥ ६ ॥ दो दो तरकम्म तीर जो बाधे, चाल चले अति अकडी रे ॥ जाणे मै न मरशु कदा पण, काल लेजावे जकडी रे ॥ स० ॥७ ॥ धन कुटुब सज्जन जे जगमें, शरणागत मत मानो रे॥ मृगतृष्णा जिम सत्य न होवे, भाखी है त्रिजगभानो रे॥ स० ॥ ८ ॥ को नवि सरण को नवि सरण, रिख

अनाथी इम जाणी रे ॥ रिख तिलोक कहे धर्म शरण कर, पाया पद निर्वाणी रे ॥ स० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ संसार भावना सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ सिद्धचक्रजी ने पूजो रे भविका ॥ ए देशी ॥ ए संसार चलाचल इणमें, भमियो चउगति प्राणी ॥ चोविश दंडक लक्ष चौरासी, पायो दुःख अज्ञाणी ॥ संसार महादुःख खाणी रे, भवि !, धर्म सदा सुखदाणी ॥ ए टेक ॥ १ ॥ नरक विषे गयो वार अनंती, क्षेत्रवेदना जिहां भारी ॥ परमाधामी महानिर्दयी, मारे विविध प्रकारी रे ॥ भ० ॥ २ ॥ पल सागर थिति भोगवे परवश, आरत अधिकी आणे ॥ के तो तिगरो जीविज वेदे, के परमेश्वर जाणे रे ॥ भ० ॥ ३ ॥ तिहांथी मरी तिरयंच गतिमें, निगोदपणामें रियो ॥ साडी पैंसठ हजार छत्तिस भव, मुहूर्त्त एकमें मरीयो रे ॥ ॥ भ० ॥ ४ ॥ सत्त्वविकलेंद्री संज्ञी असंज्ञी, भमतां नरभव पायो ॥ देश अनारज नीच उंच कुल, दुःखमें जन्म गमायो रे ॥ भ० ॥ ५ ॥ अज्ञान कष्ट अकाम निर्जरासुं, सुरगतिमें अवतरीयो ॥ नाटक करकें रीझाया अपरनें, मरण समे दुःख धरीयो रे ॥ भ० ॥ ६ ॥ औदारिक वैक्रिय तैजस कार्मण, सास उसास मन भा ॥ पुद्गल परावर्त सातुंहिं कीधा, अनंत वार इम आखा रे ॥ भ० ॥ ७ ॥ द्रव्य क्षेत्र काल भाव ए चारुं, सूक्ष्म बादर कहीयें ॥ ए वार अनंतही जाणो, सूत्र वचन सद्दहीयें रे ॥ भ० ॥ ८ ॥ रोग सोग संजोग विजोग वली, सुख दुःख अनुभव्या सारा ॥ न सब जोड्या वार अनंती, पण रह्या धर्मसें न्यारा रे ॥ भ० ॥ ९ ॥ खाया पीया पहेरया ओढ्या. सब सणगारज कीना ॥ ठांकर र पद सब पायो, मुनि दरसण नहिं भीना रे ॥ भ० ॥ १० ॥ प सूत्र सब भणीयां सो भिन्न भिन्न, कर्म ध्यान सब धाया ॥ पाप

दान पण दीया घणेरा सुपात्र दान नहिं चहाया रे ॥ भ० ॥ ११ ॥ तीन वेद पण अनुभविया सारा, सर्व जातिमाही जायो ॥ सर्व पाखडमें मरणज कीना, जैनधर्म नहिं धाया र ॥ भ० ॥ १२ ॥ जन्म समे गुल दे वालकने, ते गुल मेरु अनता ॥ भक्षण कीया एक एक प्राणी, भाखे श्री भगवता रे ॥ भ० ॥ १३ ॥ जैनधर्म विना सघ्रवं करिया, भटक्यो सब कुल कोडी ॥ शालाग्रमात्र भूमि नहिं राखी, मिथ्या सगति जोडी रे ॥ भ० ॥ १४ ॥ धन्ना शालिभद्र भद्र पणासु, मनमाही ऐसी विचारी ॥ तिलोकरिख कहे जग छटकाई, वेगें वरी शिवनारी रे ॥ भ० ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ एकत्वभावना सज्झाय प्रारभ. ॥

॥ जमीकदमें रे जीव जाई उपनो ॥ ए देशी ॥ रे चेतन तु रे जगमें एकलो, अनुभव दृष्टि विचार ॥ काया माया रे ममता कारमी, कारमो सब परिवार ॥ रे० ॥ १ ॥ वर्णज पाचु रे गध दोई वली, आठ फरस रस पाच ॥ जोगज तीनु रे आठु करम तिका, जगमें नचावे रे नाच ॥ रे० ॥ २ ॥ कर्मावश कर फस रह्यो प्राणीयो, मोहणी भर्म विशेष ॥ ममता प्रभावे रे चउगतिने विषे, पायो अधिक किलेश ॥ रे० ॥ ३ ॥ जिहा जिहा जायो रे तिहा तिहा एकलो, एकलो परभव जाय ॥ हरि हर इन्द्र सुर असुर सहु, मरण समे पछताय ॥ रे० ॥ ४ ॥ रिद्धि नहिं जावे रे साथे प्राणीने, जावे हाथ पसार ॥ निज निज करणी रे फल सब भोगवे, शका नहिं रे लगार ॥ रे० ॥ ५ ॥ जिम बाजीगर बाजी करे तदा, आवे बहु नर नार ॥ ख्याल भयासू रे जावे दह दिशें, तिम सहु पुण्य परिवार ॥ रे० ॥ ६ ॥ जिम तरुवर पर आवे पखीया, निज निज स्वारथ काम ॥ फल फूल झडीया रे सा सब पखेरु, जावे हरे नरु ठाम ॥ रे० ॥ ७ ॥ पाणी विना जिम माछलो दुख लहे, धर्म विना

तिम जीव ॥ लक्ष चोरासी रे जीवा योनिमें, दुःख यों पायो अतीव ॥ रे० ॥ ८ ॥ इणविध हो लोची रे नेमी रायजी, छंडी राज भंडार ॥ तिलोकरिख दाखे रे संजम आदरी, पाया भवजल पार ॥ रे० ॥ ९ ॥

॥ अथ अन्यत्व भावना सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ पास जिनेश्वर रे स्वामी ॥ ए देशी ॥ निज गुण ओलख रे प्राणी, मान मान श्रीजिनजीकी बाणी ॥ निजपणो निजमें रे आणो, परद्रव्य सो अपणो मत जाणो ॥ नि० ॥ १ ॥ सिद्ध स्वरूपज रे तेरो, आंख मीच क्यों करत अंधेरो ॥ कस्तूरी मृगमें रे पावे, दोड़ दोड़ निज प्राण गमावे ॥ नि० ॥ २ ॥ तिम मत होवो रे भाई, तुं निरंजन निराकार सदाई ॥ कर्मसुं काया रे बंधी, श्रीजिन आगममें कही संधी ॥ नि० ॥ ३ ॥ क्यों करे तनने रे ˋ, झूठो खोटो ए तन नातो ॥ इणसुं ममता रे टालो, अनुभव करी आतम अजुवालो ॥ नि० ॥ ४ ॥ ए तन तेरो रे नांहिं, या तो जड़ तुं चेतन सांई ॥ इणमें शंका रे नांइ, ममत कियासुं अधिक दु˙ दाई ॥ नि० ॥ ५ ॥ नित नित भाड़ो रे दीजें, नित नित सार संभाल करीजें ॥ तोही न होवे रे या तेरी, क्यों कहे निरर्थक मेरी या मेरी ॥ नि० ॥ ६ ॥ एकपखी प्रीती रे झूठी, या तो तुझ पर भव भव रूठी ॥ कायासुं ममता रे करणे, क्यों तुं दुःख देवे जीव अपरणे ॥ नि० ॥ ७ ॥ जो जाणे मुझ तणी रे काया, सो तो मूढ़ गंवार कहाया ॥ इणसुं भवे भवे रे बीती, दुश्मन प्रीति अंत फजीती ॥ नि० ॥ ८ ॥ मृगापुत्र एह विध रे जाणी, संजम ले गया पद निर्वाणी ॥ तिलोकरिख दाखे रे जाची, ज्ञान दर्शन किरिया सदा साची ॥

॥ अथ अशुचि भावना सज्झाय प्रारंभः

॥ साधुजी सदाहि सुहामणा ॥ ए देशी ॥ देहसुं नेह न कीजीयें, देह अशुचिनुं गेह हो ॥ भवियण ॥ मल मूत्र रुधिर भरी,

राचे मूरख जेह हो ॥ भ० ॥ दे० ॥ १ ॥ माता रुधिर पिता शुक्रनो, कीधो प्रथम आहार हो ॥ भ० ॥ गर्भवेदना सही आकरी, ते जाणे किरतार हो ॥ भ० ॥ दे० ॥ २ ॥ मास सवा नव झूलीयो, उधे मुख गर्भवास हो ॥ भ० ॥ जन्म थयो दु ख वीसर्यो, भुलि गयो दु ख राश हो ॥ भ० ॥ दे० ॥ ३ ॥ दिन दिन तन मोटो थयो, करे शुश्रूषा अपार हो ॥ भ० ॥ दुगच्छा आणे अपर तणा, निज उत्पत्ती तो सभार हो ॥ भ० ॥ दे० ॥ ४ ॥ सात धातु इण देहीमें, सात कही उपधात हो ॥ भ० ॥ सातु मिल निशिदिन झरे, तन ऊपर त्वचा कही सात हो ॥ भ० ॥ दे० ॥ ५ ॥ सातसें सर इणमें सही, तीनसें हाड करड हो ॥ भ० ॥ वात पित्त कफ दोष जा, अधिक घिनापन भड हो ॥ भ० ॥ दे० ॥ ६ ॥ सागरजलसु पखालीयें, तोहि विमल नहिं थाय हो ॥ भ० ॥ मान करणे किण कारणें, चर्मकी शोभा देखाय हो ॥ भ० ॥ दे० ॥ ७ ॥ काचा कुभ तणी ऊपमा, सझा फूलवो जेम हो ॥ भ० ॥ इद्र धनुष जल मोतिको, नास होणेको नहिं नेम हो ॥ भ० ॥ दे० ॥ ८ ॥ आहार आधार ए रहे, रोग तणो भडार हो ॥ भ० ॥ तप जप रत्न सग्रह करो, इणमें एहीज सार हो ॥ भ० ॥ दे० ॥ ९ ॥ जो जाणे शुचि कायने, ते तो मूढ गवार हो ॥ भ० ॥ चिंतामणि भवहारणो, खावे नरकमाही मार हो ॥ भ० ॥ दे० ॥ १० ॥ चक्री सनतकुमार जी, जाणी काया असार हो ॥ भ० ॥ तिलोकरिख कहे तप करी, पाया भवजल पार हो ॥ भ० ॥ दे० ॥११ ॥

॥ अथ आश्रव भावना सज्झाय प्रारभ' ॥

॥ वधव बोल मानो हो ॥ ए देशी ॥ आश्रव करमाको बध छे, जगजीवने जाणो हो ॥ शुभ अशुभ नय भेद दो, सिद्धात पहचाणो हो के ॥ सुगुणा आश्रव टालो हो ॥ १ ॥ ए टेक ॥

जिम जलधर सरोवर भरे, तिम कर्मज आवे हो ॥ अथवा नावा छिद्रमें, जल भरीयां डूबावे हो के ॥ सु० ॥ २ ॥ अधिक आश्रव कर्मबंधसुं, नरकगति जावे हो ॥ दीर्घस्थितिसु निगोदमें, अनंतकाल गमावे हो के ॥ सु० ॥ ३ ॥ इंद्रिय कषाय अव्रत वली, तीन जोग कहीजे हो ॥ पच्चीश क्रिया भेद जोड़तां, बयालिस लहीजें हो के ॥ सु० ॥ ४ ॥ श्रुतइंद्री वशें मृगला, बनमें मृत्यु पावे हो ॥ नयन वश पतंग सो, निज अंग दजावे हो के ॥ सु० ॥ ५ ॥ घ्राण अली रस माछलो, वश प्राण गमावे हो ॥ स्पर्श वश कुंजर मरे, मन माहिष हणावे हो के ॥ सु० ॥ ६ ॥ एक एक इंद्री वश मरया, जगजीव अनंता हो ॥ जे छेही वशमें पड्या, भवभवमें मरंता हो के ॥ सु० ॥ ७ ॥ होतो सात लव आउखो, तो मोक्ष सिधाता हो ॥ अनुत्तरवासी अव्रतवशें, फिर भव दुःख पाता हो के ॥ सु० ॥ ८ ॥ शुभ आश्रव शुभ जोगथी, पुण्य बंधन जाणो हो ॥ पुण्यानुबंधी पुण्यसो, सुकृत सुख दाणो हो के ॥ सु० ॥ ९ ॥ समुद्रपाल इम जाणीने, छंडी जगमाया हो के ॥ तिलोकरिख कहे धन सो भवि, आश्रव छिटकाया हो के ॥ सु० ॥ १० ॥इति॥

॥ अथ संवरभावना सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ सोवन सिंहासन रेवती ॥ ए देशी ॥ सार संवर क्रिया आदरो, दादरो ए शिववाट रे ॥ हाट कपाट सम जाणीयें, आश्रव रज देवे दाट रे ॥ सा० ॥ १ ॥ त्याग करी आश्रव नालाने, रोकियें मन वच काय रे ॥ कर्म जाल सो कीये तप करी, धोकियें श्रीजिन राय रे ॥ सा० ॥ २ ॥ अष्ट प्रवचन सत आदरो, जीतो परिसह बावीश रे ॥ धर्म दश विध साधु तणे, भावना बारे जगीश रे ॥ सा० ॥ ३ ॥ पंच चारित्र समाचरो, भेद सत्तावन एह रे ॥ अनुभव ज्ञान दिशा करी, जाण संवर सुख

गह रे ॥ सा० ॥ ४ ॥ सवर अवर ओडियें, मोधीयें भवदु:ख ताप रे ॥ विषय रूप शीत सो लागे नहिं, चिपके नही आश्रव आप रे ॥ सा० ॥ ५ ॥ जी॰ तलाव जलकर्म ते, आश्रव जाला करो वध र ॥ अध होवो ॰ज मोहमें, ए जिन आगम सध रे ॥ सा० ॥ ६ ॥ वश करो चार कपायनें, छोडदो पच प्रमाद रे ॥ आदरो शुध्द समकित क्रिया, मेटजो भर्म अनाद रे ॥ सा० ॥ ७ ॥ श्रीजिन आज्ञा आराधियें, पालीयें सजम भार रे ॥ जन्म मरण विपता टले, उतरो भवजल पार रे ॥ सा० ॥ ८ ॥ ऐसी भावना मनमें ग्रही, धन हरिकेशी अणगार रे ॥ रिख तिलोक कहे धन जिका धारे सवर सुखकार रे ॥ सा० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ निर्जराभावना सज्झाय प्रारभ • ॥

॥ सुरीजन साभलिजो सव कोय ॥ ए देशी ॥ श्रीजिन मारग ओलखो, काई निर्जरा भाव विचार ॥ शुके सर जल तापथी, काइ तिम छिजे कर्मको वार ॥ चतुर नर ॥ अनुभव दृष्टि निहार ॥ ए टेक ॥ १ ॥ देही भाजन जीव घृत छे, काइ कर्म ते छाछ समान ॥ तप हुताशन भिन्न करे, काइ हेम कीट इम जाण ॥ च० ॥ २ ॥ ते तप बारे प्रकारनु, काई अणसण ऊणोदरी नाम ॥ भिक्षाचरी रस त्यागणो, काई जाणी निर्जरा ठाम ॥ च० ॥ ३ ॥ काय क्लेश सलीनता, काई बाह्य तप खट प्रकार ॥ प्रथम प्रायश्चित तप कह्यो, काई विनय वेयावच्च धार ॥ च० ॥ ४ ॥ सज्झाय ध्यान काउसग्ग भलो, काई ए अभ्यतर सुविचार ॥ इह लोक पर-लोक किर्ति विना, काई सो निर्जरा तप सार ॥ च० ॥ ५ ॥ कर्म पहाड भेदण भणी काई करणी या वज्र समान ॥ पुद्गल ममता त्यागीयें, काई शुद्ध भाव सुख दान ॥ च० ॥ ॰ ॥ क्षण अगनि क्षण नीरमें लुहार साणसी जेम ॥ पुण्य पाप

फल भोगवे, कांई दोनुई बंधन तेम ॥ च० ॥ ७ ॥ जिहां लगें मोक्ष न सर्वथा, कांई तिहां लगें निर्जरा जाण ॥ सर्वथा निर्जरा होय तदा, कांई लहीयें पद निर्वाण ॥ च० ॥ ८ ॥ इम जाणी शम दम भावसुं, कांई करी अर्जुन अणगार ॥ तिलोकरिख कहे छमा में, कांई पाया भवजलपार ॥ च० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ लोक स्वभाव तथा लोक संठाण

भावना सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ सुमति सदाई दिलमें धरो ॥ ए देशी ॥ लोक स्वरूप विचारीयें, मूल भेद कह्या तीन ॥ सुग्यानी ॥ ऊर्द्ध अधो तिर्यग् सही, व्यवहार नयें इम चीन ॥ सु० ॥ लो० ॥ १ ॥ ऊर्द्ध शनीचर उपरें, मृदंगके संठाण ॥ सु० ॥ कांईक कम सात राजुनो, दाखीयो त्रिजगभाण ॥ सु० ॥ लो० ॥ २ ॥ तिणमें कल्प द्वादश क I, नव लोकांतिक जाण ॥ सु० ॥ नवग्रिवेक तिण उपरें, पंच छे अनुत्तर विमाण ॥ सु० ॥ लो० ॥ ३ ॥ तीन किल्विषी वली तेहमें, बासठ प्रतर ठाण ॥ सु० ॥ लक्ष चौरासीके उपरें, सत्ताणुं सहस्त्र विमाण ॥ सु० ॥ लो० ॥ ४ ॥ तवीजा वली अधिका कह्या, रत्न जड़ित झलकंत ॥ सु० ॥ तप संजम जिणें आदर्यो, सो सुरगति उपजंत ॥ सु० ॥ लो० ॥ ५ ॥ सर्वार्थसिद्ध विमाणसुं, बारा योजन प्रमाण ॥ सु० ॥ सिद्ध शिला चित्ता छत्र ज्यों, पूरण चंद्र संठाण ॥ सु० ॥ लो० ॥ ॥ ६ ॥ पैंतालिस लक्ष योजन कहीं, लंबी पहोली सो जाण ॥ सु० ॥ अष्ट योजन जाडी विचें, अर्जुन सुवर्णमय वखाण ॥ सु० ॥ लो० ॥ ७ ॥ योजन भाग चोविशमों, उपरें सिद्ध अनंत ॥ सु० ॥ अनंतसुखां मांही झिल रह्या, अष्ट कर्म करी अंत ॥ सु० ॥ लो० ॥ ८ ॥ नीचें शनिचरें विमाणसुं, अठारेसें योजन जाण ॥ सु० ॥ तिर्छो लोक श्री जिन कह्यो.

झलरीके सठाण ॥ सु० ॥ लो० ॥ ९ ॥ समय क्षेत्र अछे सासतो, लक्ष पैतालीश माय ॥ सु० ॥ दीप अढाइ समुद्रसों, भाख्या श्रीजिनराय ॥ सु० ॥ लो० ॥ १० ॥ पंच महाविदेह माही शाश्वता, जघन्यपदें जिन वीश ॥ सु० ॥ दोय कोडी केवली कह्या, दोय कोडी सहस्र मुनीश ॥ सु० ॥ लो० ॥ ११ ॥ ते सब प्रणमु भावसु, थापे तीरथ चार ॥ सु० ॥ भरत इरवत दश क्षेत्रमें, छ आरानो व्यवहार ॥ सु० ॥ लो० ॥ १२ ॥ अकर्मभूमिना वली, क्षेत्र कह्या प्रभु त्रीश ॥ सु० ॥ अतर द्वीप छप्पन अछे, भोगवे पुण्य जगीश ॥ सु० ॥ लो० ॥ १३ ॥ द्वीप असख्याता बाहिरे, सागर पण सुविचार ॥ सु० ॥ जबूद्वीप पूर्ण चद्रसो, अवर सो वलयाकार ॥ सु० ॥ लो० ॥ १४ ॥ अधोलोक व्यतर तलें, वेत्रासन सात राज ॥ सु० ॥ सात नरक दु ख दोहिलु, पाप तणो एह साज ॥ सु० ॥ लो० ॥ १५ ॥ ओगणपचास छे पाथडा, सातुही नरक मिलाय ॥ सु० ॥ नरकवास गिणता थका, लाख चौराशी सो थाय ॥ सु० ॥ लो० ॥ १६ ॥ परथम नरक बारे अतरा, खाली छे उपरला दोय ॥ सु० ॥ दशमाहे दश भवनपति शका मत राखजो कोय ॥ सु० ॥ लो० ॥ १७ ॥ सात क्रोड भवन तेहमें, अधिक बोहोंत्तर लाख ॥ सु० ॥ देव असख्याता छ तेहमें छे सूत्र तणी साख ॥ सु० ॥ लो० ॥ १८ ॥ धर्माधर्म आकाशास्ति, पुद्गल जीव अने काल ॥ सु० ॥ ए खट द्रव्य सदा लोकमे, दाखी दीनदयाल ॥ सु० ॥ लो० ॥ १९ ॥ जिण सुकृत करणी करी, ते उपन्या शुभठाम ॥ सु० ॥ जिणें दुःकृतपणु आदरयु, ते पाया दु ख धाम ॥ सु० ॥ लो० ॥ २० ॥ शिवराज रखि इम भावना, भेटया श्रीवर्द्धमान ॥ सु० ॥ तिलोकरिख कहे ध्येयध्यानसु, लहीयें शिव पुर थान ॥ सु० ॥ लोक सरूप विचारीये ॥ इति लोक स्वभाव तथा लोक सठाण भावना सज्झाय ॥

॥ अथ बोधबीज भावना सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ सीमंधर साहिब, दिल वसो ॥ ए देशी ॥ समकित रत्न चिंतामणि, वंछित सुखनी दातारो जी ॥ जतन करी अति रा. जो, टालो पंच अतिचारो जी ॥ स० ॥ १ ॥ पुण्यजोगें मानव भव लह्यो, उत्तम कुलमें अवतारो जी ॥ समकित सरधा छे दोहेली, कोथले भरणो वायरो जी ॥ स० ॥ २ ॥ अनंतानुबंधि की चोकड़ी, मोहणी तीन प्रकारो जी ॥ सातुं प्रकृति उपशमे तदा, उपशम समकित धारो जी ॥ स० ॥ ३ ॥ कांइक क्षय कांइक उपशमे, क्षयोपशम कहे जगभाणो जी ॥ सास्वादन पड़ताथकांकी, वेदे सो वेदक जाणो जी ॥ स० ॥ ४ ॥ सातुं क्षयथी क्षायिक होवे, दाखी श्रीजिनराया जी ॥ क्षायिक आइ जावे नहीं, आगम भेद बताया जी ॥ स० ॥ ५ ॥ ए निश्चें समकित तीका, ते तो केवली जाणे जी ॥ छद्मस्थ तो व्यवहारथी, द्रव्य क्रियासुं पहचाणें जी ॥ स० ॥ ६ ॥ देव अरिहंत निर्ग्रंथ गुरु, धर्मजिन आज्ञा प्रमाणो जी ॥ ए तिहुं तत्त्व समाचरे, सो व्यवहार बखाणो जी ॥ स० ॥ ७ ॥ छे आवलिका प्रमाणही, फरसे समकित प्राणी जी ॥ अर्ध पुद्गलमें सो शिव लहे, भांखी केवल नाणी जी ॥ स० ॥ ८ ॥ समकित समकित सब कहे, कठिन छे समकित भावो जी ॥ नि य व्यवहार ने ओलखे, तारक भवजल नावो जी ॥ स० ॥ ९ ॥ तप संजम किरिया करे, जो समकित बिना कोई जी ॥ छार उपर जिम लीपणुं, अंक बिना शून्य होई जी ॥ स० ॥ १० ॥ इण कारण सुणो बुध जना, समकित दृढ़ करी राखो जी ॥ मिथ्या भर्म निवारियें, जो शिवसुख अभिलाखो जी ॥ स० ॥ ११ ॥ मास मास तपस्या करे. कुस अगर जल आहारो जी ॥ समकित सहित नोकारसी, तुल्य न आवे लगारो जी ॥ स० ॥ १२ ॥ श्रेणिक

कृष्ण नरेश्वर, ऋषभ जिनदजीका नदो जी ॥ समकित विशुद्ध प्रभ रना टाल्या भवदुःख फदा जी ॥ स० ॥ १३ ॥ समकित क्रिया विना जगतमे, नहिं कोई तारणहारी जी ॥ तिलोकरिख कहे इम सद्गे, जे सुगुणा नर नारी जी ॥ स० ॥ १४ ॥ इति ॥

॥ अथ धर्म भावना सज्झाय प्रारंभ ॥

॥ देशी कडखाम ॥ सेव नित्यमेव, जैनधर्म सुरतरु सदा, धीरजकी धरणी, सनोष पाणी ॥ ज्ञानको बीज, तस मूल समकित क्रिया, कद विनय खद, दया बखाणी ॥ से० ॥ १ ॥ सत्य शाखा महा, भेद प्रतिशाख तस, मधुर वचन दल, अधिक सोहे ॥ कुसुम शुभध्यानके, कीर्त्तिसौरभ्य अति, मोक्ष फल मधुर सुख, स्वाद मांहे ॥ से० ॥ २ ॥ चिदानद पथी, सुखानद छायमें, निजानद पणेथिर, भाव सेरी ॥ कषाय भव ताप, सताप दूरें हठे, बलिहारी ए कल्पतरु, धर्म केरी ॥ से० ॥ ३ ॥ एह ससारमें, धर्म आधारथी, रिद्ध सिद्ध सपदा, अनत पाया ॥ बापडा जीव केइ, भर्म कर्मावशें, कल्पवृक्ष छोडी, बाबुल लोभाया ॥ से० ॥ ४ ॥ केइ हिंसा करे, पाप पिंडज भरे, दयाधर्म उपरें, द्वेष राखे ॥ भर्मिष्ठ कुगुरु तणा, कर्म बाधे घणा, गज परें निजशिरें धूल नाखे ॥ से० ॥ ५ ॥ हार नर भव करे, छार चिंतामणि, सो सहे परवशें, खड्ग धारा ॥ विभ्रमे चउगति, जीव जे दुर्मति, धारे नहि धर्मके, धिट्ट गिमारा ॥ से० ॥ ६ ॥ धर्म बिन सरण नहिं धर्म बिन तरण नाहि, धर्म बिना नहिं कछु, सुखदाता ॥ मात पिता सुत, भ्रात धन धान वित्त, मरण वेदनी समे, नाँहि है त्राता ॥ से० ॥ ७ ॥ दौड रे दौड जैनधर्म तरु ग्रहणकु, छोड रे छोड, भवताप ताई ॥ पोढ रे पोढ तु, उपशम छायमे, ठोड र ठोड ए सुख दाई ॥ से० ॥ ८ ॥ झटक दे झटक दे, कर्मकी रेणुका, पटक दे पटक दे, पाप भागे ॥

हटक दे हटक दे, जोग विपरीत पण, गटक ले धर्म, अमूल आहारो ॥ से० ॥ ९ ॥ गाल र गाल, अष्टमद त्रिहुंगर्वने, टाल रे टाल, प्रमाद घांटी ॥ पाल रे पाल, छकाय प्रतिपाल तू, बाल रे बाल कूमर्म टाटी ॥ से० ॥ १० ॥ दया उपरांत नहिं, धर्म कोई जगत में, ग्यानको सार, एहीज बखार्णा ॥ दया रुचि बिना, सर्व किरिया वृथा, कंत बिन कारा ज्यों, देह्यु घाणी ॥ से० ॥ ११ ॥ साठ नामें करी, सूत्रमें वर्णवी, दया भगवती आंनि, सुख दाणी ॥ धर्म रुची मुनि, देह ममता तजी, किडियां परें करुणा सो, अधिक आणी ॥ से० ॥ १२ ॥ कडुवा तुंबा तणो, आहार अमृत समो, कर लियो सम, परिणामें स्वामी ॥ तीक्षण वेदना, खेद नहिं आण मना, सर्वार्थ सिद्ध लही, मोक्ष पामी ॥ से० ॥ १३ ॥ मात मरुदेवी, सेवी जिन धर्मके, भाव चारित्र करी, कर्म घाया ॥ ध्यान शुकल धरयो, ज्ञान केवल वरयो, होय अजोगी, मुक्ति सिधाया ॥ से० ॥ १४ ॥ धर्म परभावना, जो कोई धावेगा, पावेगा सो शिव, गढ निःशंका ॥ रिखतिलोक कहे, धर्म परभावथी, इह भवें परभवें, जीत डंका ॥ से० ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ तेरे काठियानी सज्झाय लिख्यते ॥

॥ श्रीजिनमारग पाईजी कमाई कीजो धर्मनी, कांई तेरे काठीया टाल ॥ ए आंकणी ॥ प्रथम आलस जाणोजी दारिद्र मूल पिछाणियें, कांई धरम करणकी जेज ॥ हाल बखत छे नाहिं जी सामायिक पोसा वखाणकी, कांइ काल गमावे सेज ॥ श्री० ॥ १ ॥ मात पिता सुत भाईजी कायाने माया कारमी, कांइ भांखी छे जिनराय ॥ तिणसुं ममता बांधिजी नहीं साधे आतम काजनें, कांइ मोह काठियो दुःखदाय ॥ श्री० ॥ २ ॥ देव गुरु धर्म सांईजी करडाइ राखे जीवडा, कांइ लोक वडाई रीत ॥ तडके तोड बोलेजी नहिं

कृष्ण नरेश्वर, ऋषभ जिनदजीका नदो जी ॥ समकित विशुद्ध प्रभ रना टाल्या भवदु ख फदा जी ॥ स० ॥ १३ ॥ समकित क्रिया विना जगनमें, नहिं कोई तारणहारी जी ॥ तिलोकरिख कहे इम मद्भ्ग, जे सुगुणा नर नारी जी ॥ स० ॥ १४ ॥ इति ॥

॥ अथ धर्म भावना सज्झाय प्रारभ ॥

॥ देशी कडखाम ॥ सेव्र नित्यमेव, जैनधर्म सुरतरु सदा, धीरजकी धरणी, सतोष पाणी ॥ ज्ञानको वीज, तस मूल समकित क्रिया, कद विनय खद, दया बखाणी ॥ से० ॥ १ ॥ सत्य शाखा महा, भेद प्रतिशाख तस, मधुर वचन दल, अधिक सोहे ॥ कुसुम शुभध्यानके, कीर्त्तिसौरभ्य अति, मोक्ष फल मधुर सुख, स्वाद मांहे ॥ से० ॥ २ ॥ चिदानद पथी, सुखानद छायमें, निजानद पणेथिर, भाव सेरी ॥ कषाय भव ताप, सताप दूरें हठे, बलिहारी ए कल्पतरु, धर्म केरी ॥ से० ॥ ३ ॥ एह ससारमें, धर्म आधारथी, रिद्ध सिद्ध सपदा, अनत पाया ॥ बापडा जीव केइ, भर्म कर्मावशें, कल्पवृक्ष छोडी, बाबुल लोभाया ॥ से० ॥ ४ ॥ केइ हिंसा करे, पाप पिंडज भरे, दयाधर्म उपरें, द्वेष राखे ॥ धर्मिष्ठ कुगुरु तणा, कर्म बाधे घणा, गज परें निजशिरें धूल नाखे ॥ से० ॥ ५ ॥ हार नर भव करे, छार चिंतामणि, सो सहे परवशें, खड्ग धारा ॥ विभ्रमे चउगति, जीव जे दुर्मति, धारे नहि धर्मके, धिद्द गिमारा ॥ से० ॥ ६ ॥ धर्म विन सरण नहिं धर्म विन तरण नहि, धर्म विना नहिं कछु, सुखदाता ॥ मात पिता सुत, भ्रात धन धान वित्त, मरण वेदनी समे, नहिं है त्राता ॥ से० ॥ ७ ॥ दौड रे दौड जैनधर्म तरु ग्रहणकु, छोड रे छोड, भवताप ताई ॥ पोढ रे पोढ तु, उपशम छायमें, ठोड र ठोड ए सुख दाई ॥ से० ॥ ८ ॥ झटक दे झटक दे, कर्मकी रेणुका, पटक दे पटक दे, पाप भागे ॥

हटक दे हटक दे, जोग विपरीत पण, गटक ले धर्म, असुन आहारो ॥ से० ॥ ९ ॥ गाल र गाल, अष्टमद त्रिहुंगर्वले, टाल रे टाल, प्रमाद्घांटी ॥ पाल रे पाल, छक्काय प्रतिपाल तू, बाल रे बाल कुमर्म टाटी ॥ से० ॥ १० ॥ दया उपरांत नहिं, धर्म कोई जगत में, ग्यानको सार, पहीज बखाणी ॥ दया रुचि विना, सर्व किरिया वृथा, कंत विन कामा ज्यौं, देह प्राणी ॥ से० ॥ ११ ॥ साठ नामें करी, सूत्रमें वर्णवी, दया भगवती आन, सुख दाणी ॥ धर्म रुची मुनि, देह ममता तजी, किडियां परें करुणा सो, अधिक आणी ॥ से० ॥ १२ ॥ कडुवा तुंबा तणो, आहार अमृत समो; कर लियो सम, परिणामें स्वामी ॥ तीक्षण वेदना, खेद नहिं आण मना, सर्वार्थ सिद्ध लही, मोक्ष पामी ॥ से० ॥ १३ ॥ मात मरुदेवी, सेवी जिन धर्मके, भाव चारित्र करी, कर्म घाया ॥ ध्यान शुकल धरयो, ज्ञान केवल वरयो, होय अजोगी, मुक्ति सिधाया ॥ से० ॥ १४ ॥ धर्म परभावना, जो कोई धावेगा. पावेगा सो शिव, गढ निःशंका ॥ रिखतिलोक कहे, धर्म परभावथी, इह भवें परभवें, जीत डंका ॥ से० ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ तेरे काठियानी सज्झाय लिख्यते ॥

॥ श्रीजिनमारग पाईजी कमाई कीजो धर्मनी, कांई तेरे काठीया टाल ॥ ए आंकणी ॥ प्रथम आलस जाणोजी दारिद्र मूल पिछाणियें, कांई धरम करणकी जेज ॥ हाल बखत छे नाहिं जी सामायिक पोसा वखाणकी, कांइ काल गमावे सेज ॥ श्री० ॥ १ ॥ मात पिता सुन भाईजी कायाने माया कारमी, कांइ भांखी छे जिनराय ॥ तिणसुं ममता बांधेजी नहीं साधे आतम काजनें, कांइ मोह काठियो दुःखदाय ॥ श्री० ॥ २ ॥ देव गुरु धर्म मांईजी करडाइ राखे जीवड़ा, कांइ लोक वडाई रीत ॥ तडके तोड़ बोलेजी

तोले हिरदे न्यावने, काइ अविनय विपरीत ॥ श्री० ॥ ३ ॥ जाणे मै हु शाहाणो जी अकल वलरूपें जातिमें, काइ सघलामें शिरदार ॥ परनी करे बुराईजी वडाई करे आपनी, काइ राखे मन अहकार ॥ श्री० ॥ ४ ॥ कोइक देवे तुकारोजी देवे शिक्षाधर्मनी, काइ आणे अधिको क्रोध ॥ लालनेत्र करी बोले जी वली बोले मर्मज पारका, काइ होवे धर्मविरोध ॥ श्री० ॥ ५ ॥ प्रमाद घणो अग छावे जी नहिं भावे धर्मनी वातडी, काइ समरे नहिं नवकार ॥ नरभव एल गमावे जी नहिं चहावे जप तप साधना, काइ धिक तिणरो अवतार ॥ श्री० ॥ ६ ॥ पाप करी धन जोडे जी जीव दोडे देश प्रदेशमें, काइ तृष्णा अपरपार ॥ घर छोड्यो नहिं जावे जी किम थावे धर्म निण जीवसु, काइ लोभ महादु खकार ॥ श्री० ॥ ७ ॥ सिह सर्प सुर देणो जी वली घरको खर्च निभावणो, काइ डर आणे मनमाय ॥ धर्म किसविध थाये जी नहि लावे धरिजता हिये, काइ सोचो ज्ञान लगाय ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इष्ट तणो नजोगो जी विजोगज होवे इष्टनो काइ रोगादिक तनमाय ॥ शोक घणेरो लावे जी घवरावे निशदिन प्राणियो, काइ पामे धर्म अतराय ॥ श्री० ॥ ९ ॥ जीव अजीव नहिं जाणे जी वली समझे नहि पुण्यपापमें, काइ लीनो श्रीजिनधर्म ॥ अज्ञान पणामें राचे जी वली साच खोटी रूढीने, काइ अधिका वाधे कर्म ॥ श्री० ॥ १० ॥ विकथा करे पराई जी कमाइ टोटा खरचकी, काइ काम भोग अधिकार ॥ हाथ काइ नहि आवे जी गमावे निजगुण जीवडा, काइ भटक अनत ससार ॥ श्री० ॥ ११ ॥ देखे ख्याल तमाशाजी वली वोले भाषा हासीनी, काइ करे कुतूहल वात ॥ लागिणी घडी सोनेजी निगोवे भव चिंतामणि, काइ होवे धर्मकी घात ॥ श्री० ॥ १२ ॥ निशिदिन निशिदिन खाणोजी वजाणो ताणो खेलणो, काइ नहाणो धोणो अग ॥ तिणमें काल गमावेजी

नहिं ध्यावे श्री जगदीशनें, कांइ होय धर्ममें भंग ॥ श्री० ॥ १३ ॥ काठीया ए दुःखदायी जी लागा छे संग अनादिका, कांइ धर्म रतनका चोर ॥ इणसुं बहु दुःख पायो जी नहिं आयो नेडो धर्मने, कांइ कीधो कर्म कठोर ॥ श्री० ॥ १४ ॥ उगणीसें गुण चालिशजी वदि माल आसाढतिथि चोथमें, कांइ पूना शहेर मझार ॥ तिलोकरिख कहे टालो जी ए काठिया तेरे भावशुं, कांइ उतरो भवजल पार ॥ श्री० ॥ १५ ॥ संपूर्ण ॥

॥ अथ ग्रंथानुसारसें एकसोबत्रीशबोल अथवा कर्मविपाक माला सज्झाय प्रारंभः॥

॥ देशी चलत चालमें ॥ चिंतामणि सम नर भव पाइ, निरर्थक जनम गमावेगा ॥ नानाविध जीव करम करीने, नानाविध दुःख ठावेगा ॥ सुण भाइ रे उदे भयां पछतावेगा ॥ सुण भाइरे तेरा किया तुंही पावेगा ॥ १ ॥ फूलबीजके बिंद बिंदकें, गजराहार बणावेगा ॥ इण करणीथी परभवमांइ, एक नेत्र नहिं पावेगा ॥ सु० ॥ २ ॥ त्रस थावर प्राणीने जो तुं, जलके मांही डुबावेगा ॥ इण करतबसें परभवमांइ, जनम अंधपण आवेगा ॥ सु० ॥ ३ ॥ माखी मालका छांता तोडे, धूवे करीने घबरावेगा ॥ इण पातकसूं ते परभवसें, आंधा बहेरा थावेगा ॥ सु० ॥ ४ ॥ रूप रंग देखी तिरियाको, खोटी दृष्टि लगावेगा ॥ सतगुरु देखी होवे दुमणो, जलमल तो तास देखावेगा ॥ सु० ॥ ५ ॥ एकेंद्रिय जीवांको करे जो चूरण, सलिया धान्य पिसावेगा ॥ इण अनर्थसूं परभवमांइ, कूवडापणो सो पावेगा ॥ सु० ॥ ६ ॥ बैल घोडादिक चौपद उपर, अधिको भार भरावेगा ॥ चांदी पडिया पण नहिं छोडे, गडगुंबड अंग आवेगा ॥ सु० ॥ ७ ॥ पंखेरूकी पांख उखाडे वृक्षकी डाल कटावेगा ॥ इण करणीसूं परभवमांही, टूटा पग हो जावेगा ॥ सु०

तोले हिरदे ल्यावने, काइ अविनय विपरीत ॥ श्री० ॥ ३ ॥ जाणे मै हु शाहाणो जी अकल वलरूपें जातिमें, काइ सघलामें शिरदार ॥ परनी करे बुराईजी बडाई करे आपनी, काइ राखे मन अहङ्कार ॥ श्री० ॥ ४ ॥ कोइक देवे तुकारोजी देवे शिक्षाधर्मनी, काइ आणे अधिको क्रोध ॥ लालनेत्र करी बोले जी वली बोले मर्मज पारका, काइ होवे धर्मविरोध ॥ श्री० ॥ ५ ॥ प्रमाद घणो अग छावे जी नहिं भावे धर्मनी वातडी, काइ समरे नहिं नवकार ॥ नरभव एल गमावे जी नहिं चहावे जप तप साधना, काइ धिक तिणरो अवतार ॥ श्री० ॥ ६ ॥ पाप करी धन जोडे जी जवि दोडे देश प्रदेशमें, काइ तृष्णा अपरपार ॥ घर छोड्यो नहिं जावे जी किम थावे धर्म तिण जीवसु, काइ लोभ महादु खकार ॥ श्री० ॥ ७ ॥ सिंह सर्प सुर देणो जी वली घरको खर्च निभावणो, काइ डर आणे मनमाय ॥ धर्म किसविध थाये जी नहिं लावे धरिजता हिये, काइ सोचो ज्ञान लगाय ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इष्ट तणो सजोगो जी विजोगज होवे इष्टनो, काइ रोगादिक तनमाय ॥ शोक घणेरो लावे जी घबरावे निशदिन प्राणियो, काइ पामे धर्म अतराय ॥ श्री० ॥ ९ ॥ जीव अजीव नहिं जाणे जी वली समझे नहिं पुण्यपापमें, काइ लीनो श्रीजिनधर्म ॥ अज्ञान पणामें राचे जी वली खाच खोटी रूढीने, काइ अधिका बाधे कर्म ॥ श्री० ॥ १० ॥ विकथा करे पराई जी कमाइ टोटा खरचकी, काइ काम भोग अधिकार ॥ हाथ काइ नहि आवे जी गमावे निजगुण जीरडा, काइ भटक अनत ससार ॥ श्री० ॥ ११ ॥ देखे ख्याल तमाशाजी वली बोले भाषा हासीनी, काइ करे कुतूहल वात ॥ लागिणी घडी खोवेजी विगोवे भव चिताभणे, काइ होवे धर्मकी घात ॥ श्री० ॥ १२ ॥ निशिदिन निशिदिन खाणोजो वजाणो ताणा खेलणो, काइ नहाणो धोणो अग ॥ तिणमें काल गमावेजी

नहिं ध्यावे श्री जगदीशनें, कांइ होय धर्ममे भंग ॥ श्री० ॥ १३ ॥ काठीया ए दुःखदायी जी लागा छे संग अनादिका, कांइ धर्म रतनका चोर ॥ इणसुं बहु दुःख पायो जी नहिं आयो नेडो धर्मने, कांइ कीधो कर्म कठोर ॥ श्री० ॥ १४ ॥ उगणीसें गुण चालिशजी वदि मास आसा।दितिथि चोथमें, कांइ पूना शहेर मझार ॥ तिलोकरिख कहे टालो जी ए काठिया तेरे भावशुं, कांइ उतरो भवजल पार ॥ श्री० ॥ १५ ॥ संपूर्ण ॥

॥ अथ ग्रंथानुसारसें एकसोवत्रीशबोल अथवा कर्मविपाक माला सज्झाय प्रारंभः॥

॥ देशी चलत चालमें ॥ चिंतामणि सम नर भव पाइ, निरर्थक जनम गमावेगा ॥ नानाविध जीव करम करीने, नानाविध दुःख ठावेगा ॥ सुण भाइ रे उदे भयां पछतावेगा ॥ सुण भाइरे तेरा किया तुंही पावेगा ॥ १ ॥ फूलबीजके बिंद बिंदकें, गजराहार वणावेगा ॥ इण करणीथी परभवमांइ, एक नेत्र नहिं पावेगा ॥ सु० ॥ २ ॥ त्रस थावर प्राणीने जो तुं, जलके मांही डुबावेगा ॥ इण करतबसें परभवमांइ, जनम अंधपण आवेगा ॥ सु० ॥ ३ ॥ माखी मालका छांता तोडे, धूंवे करीने घबरावेगा ॥ इण पातक सूं ते परभवमें, आंधा बहेरा थावेगा ॥ सु० ॥ ४ ॥ रूप रंग देखी तिरियाको, खोटी दृष्टि लगावेगा ॥ सतगुरु देखी होवे दुमणो, जलमल तो तास देखावेगा ॥ सु० ॥ ५ ॥ एकेंद्रिय जीवांको करे जो चूरण, सलिया धान्य पिसावेगा ॥ इण अनर्थसूं परभवमांइ, कूवडा पणो सो पावेगा ॥ सु० ॥ ६ ॥ बैल घोडादिक चोपद उपर, अधिको भार भरावेगा ॥ चांदी पडिया पण नहिं छोडे, गडगुंबड अंग आवेगा ॥ सु० ॥ ७ ॥ पंखेरूकी पांख उखाडे वृक्षकी डाल कटावेगा ॥ इण करणीसूं परभवमांही, टूटा पग हो जावेगा ॥ सु०

॥ ८ ॥ एकेंद्रियकी जड उखाडे, पशुजीव सतावेगा ॥ छते मारग लीलोतरी चापे, पगुला पग हो जावेगा ॥ सु० ॥ ९ ॥ सजमी शीलवत जन केरी, निंदा कर हरखावेगा ॥ इण करणीसू परभव माही, गूगो बोबडो थावेगा ॥ सु० ॥ १० ॥ करे वैदक औषध मात्रा, हिंसा करि निपजावेगा ॥ इणकरणीसू परभवमाइ, खोजापण सो पावेगा ॥ सु० ॥ ११ ॥ वनस्पतिको छेदन भेदन, हाथसू कर पोमावेगा ॥ इण करणीसू परभव प्राणी, वहेरो पागुलो थावेगा ॥ सु० ॥ १२ ॥ साधु साधवी श्रावक श्राविका, जिनका अव गुण गावेगा ॥ इण करणीसू परभव माइ, गुगो वहेरो हो जावेगा ॥ सु० ॥ १३ ॥ हिरण्य सुवर्णादिक धातु जे, जिनका आगर खोदावेगा ॥ इण अनरथसू परभवमाही, गलत कोढ अग आवेगा ॥ सु० ॥ १४ ॥ सावद्य ओषध भेखज केरो, अधिको सजोग मिलावेगा ॥ तिणसू जस करता पर उपर, अपजस कमावेगा ॥ सु० ॥ १५ ॥ खारी लूणका आगर खोदावे, लूणको विणज कमावेगा ॥ इण करणीसू परभवमाहे, आख वावणी थावेगा ॥ सु० ॥ १६ ॥ लोच सुदर नेन जे परना, द्वेषथी मद कर देवेगा ॥ तिनकरणीसू परभवमाहिं, आख माजरी रहवेगा ॥ सु० ॥ १७ ॥ म्होटी काया देखि आपणी, अहकार मन लावेगा ॥ इण करणी सू परभवमाही, वावनी काया पावेगा ॥ सु० ॥ १८ ॥ डड आखरो करे औरकू, अधिको त्रास वतावगा ॥ इण करणीसू परभव माही, रूढ मुढ अग थावेगा ॥ सु० ॥ १९ ॥ पचेंद्रिय जीव हणे निज हाथें, मुखसू अधिक मगावेगा ॥ तिणकरणीसें परभवमाही, रोग भगदर थावेगा ॥ सु० ॥ २० ॥ दलाक धन आता देखी, बीच अतराय लगावेगा ॥ तिण कने धन इच्छा राखे, पण लक्ष्मी नहिं पावेगा ॥ सु० ॥ २१ ॥ तीनभार्ये मैथुन सेव्या, पथरीका रोगज आवेगा ॥ काटाने विंधि माछला मारे, कठमाल रोग थावेगा

॥ सु० ॥ २२ ॥ धूमी घाली जीव संतावे, हरस रोग दुःख आवेगा ॥ जुवारा बोव वेलडी तोडे, वाल बहू पड़जावेगा ॥ सु० ॥ २३ ॥ लांच लेइने झूटुं बोले, सच्चाकूं घबरावेगा ॥ तिणसूं रोग घणो दुःख अंगमें, लोकक नहिं देखावेगा ॥ सु० ॥ २४ ॥ कृतघ्न पणुं कपट घणेरो, मित्रसू छलपणुं लावेगा ॥ तिणसूं सुख संजोग मिलावे, विजाग आय पड़ जावेगा ॥ सु० ॥ २५ ॥ फल तोडी दोरामें प्रोइ, अधिको रूप दिखावेगा ॥ इण करणीसें परभवमांहि, खोटो वर्णज पावेगा ॥ सु० ॥ २६ ॥ कूवा बावडी सरवर ज़ल का, बणावे पाल फोड़ावेगा ॥ इण करतव्यसें परभवमांइ, रोग पाठाको आवेगा ॥ सु० ॥ २७ ॥ कोटवालको करम करे कोइ, बहोत प्राणी डर पावेगा ॥ तिणसूं डरपगपणो घणो अंगमें, भार घणेरी पावेगा ॥ सु० ॥ २८ ॥ जूं सांकड़ादिक त्रेंद्रिय प्राणी, तावड़े नाखीने धावेगा ॥ तिणसूं खाज फूरणी अंगमें, पीड़ा अधिकी थावेगा ॥ सु० ॥ २९ ॥ क्रोध घणेरो करे और पर, झूठा आल लगावेगा ॥ तिणसूं मिथ्या सरधा करके, झूठी बात जमावेगा ॥ सु० ॥ ३० ॥ घृत तेल मधु आदिकका वासण, उघाड़ा राखे रखावेगा ॥ सूत्र भणाने करे वेयावच्च, उलटा सो अवगुण गावेगा ॥ सु० ॥ ३१ ॥ कपट करिने परधन लेवे, मांगे तब नट जावेगा ॥ तिण करणीसूं परभवमांहे, स्त्री नपुंसक थावेगा ॥ सु० ॥ ३२ ॥ पृथवीको करे खांडण पीसण, आरंभ अधिक करावेगा ॥ तिण करणीसूं होवे कोढीयो, भव भव गोता खावेगा ॥ सु० ॥ ३३ ॥ माछलाको करे आहार घणेरो, जुवा अधिक संतावेगा ॥ तप जप मद करे तिण करमें, तप अंतरायज आवेगा ॥ सु० ॥ ३४ ॥ अविश्वासी कृतघन दुष्टी, मित्रद्रोही पणो लावेगा ॥ ज्ञान ध्यान तप जप करे बहुलां, पण परने नहिं सुवावेगा ॥ सु० ३५ ॥ वचन कला मधुरता बोली, जिणको गर्भज लावेगा

॥ तिणसें परभवमांही श्रवन सो, परकू नहिं सुहावेगा ॥ सु० ॥ ३६ ॥ रूपको मद करे मनमाही, रूप भयकर पावेगा ॥ कूडो कलक देवे परजनकू, खोटा आलज आवेगा ॥ सु० ॥ ३७ ॥ भाइ भोजाइ देराणी जेठाणी, सासूकी इर्ष्या लावेगा ॥ तिण करणी सें परभव माहे, अणकिधो अपजस आवेगा ॥ सु० ॥ ३८ ॥ आपणी थापे परकी उथापे,बे भरोसो मन लावेगा ॥ तिण करमें जिह्वा बेठे रहेवे, अणआदर पणुं आवेगा ॥ सु० ॥ ३९ ॥ लालच लोभ जो राखे घणेरो, क्रोध हिये नहिं मावेगा ॥ परका लाभमें धक्को देवे, अलाभपणो तस थावेगा ॥ सु० ॥ ४० ॥ मुडो मुदी फासी देवे, परप्राणीने धावेगा ॥ हीणो शब्द अटकती बोली बोलता अति घबरावेगा ॥ सु० ॥ ४१ ॥ सुस्वर कठको गर्व किया सें, कराइ कररावेगा ॥ निर्वेद मीठी वाणी बोल्याथी, सुस्वर शब्द सुहावेगा ॥ सु० ॥ ४२ ॥ तीव्रभावें मास भक्षणथी, इंद्रिय वलहीण पावेगा ॥ तीव्रभावें मद्य पीयाथी, निंद्रा घणी सतावेगा ॥ सु० ॥ ४३ ॥ सजोगतणो विजोग पाड्याथी, वछित वस्तु न पावेगा ॥ कूक्कडादिक मास भक्षणसेंती, तनशक्ति घट जावेगा ॥ सु० ॥ ४४ ॥ भाखसीमाही रूधी प्राणी, उपर खार भुरकावेगा ॥ इण करणीसू परभवमाही मुको बोलो थावेगा ॥ सु० ॥ ४५ ॥ अनतकाय कद मूल भक्षणथी, रोणो घणोज आवेगा ॥ असन्नी पचेंद्रिय जीव हण्याथी, हासी नहिं समावेगा ॥ सु० ॥ ४६ ॥ तरुण पचेंद्रिय मनुष्य घातसें, साधुने नहिं सुहावेगा ॥ विकलेंद्रियकी विराधना कीधा, सज्जनने नहिं सुहावेगा ॥ सु० ॥ ४७ ॥ प्रेम धरीने भोग भोगव्या, जोवनमें नार मर जावेगा ॥ स्त्री पुरुष सजोग मिलाया, नारी पुरुष मर जावेगा ॥ सु० ॥ ४८ ॥ दारु पियाथी दुर्गंध प्रसवे, कुडी साख भरावेगा ॥ काम करे सत चित्त लगाई, परने प्रतीत न आवेगा ॥ सु० ॥ ४९ ॥ दान पुण्य

दया नहिं पाले, दारिद्रपणो तस आवेगा ॥ देव गुरु धर्म खोटा सरध्या, प्रिय कुटुंब मरजावेगा ॥ सु० ॥ ५० ॥ गुणसीत्तर कोड़ा कोड़ी सागर, मोहणी थिति क्षय जावेगा ॥ तब इण चेतनकूं अंतसमे, धर्म करण मन थावेगा ॥ सु० ॥ ५१ ॥ एक कोड़ी सागर उपर, मोहणी थिति बढ़ जावेगा ॥ तब उण प्राणीने धर्म ध्यानकी, किंचित्त रुचि नहिं आवेगा ॥ सु० ॥ ५२ ॥ तीव्रभावें कुशील सेवावे, मनमें अधिक हर्षावेगा ॥ तिणसूं परधन संपति देखी, निःश्वास नाखि मरजावेगा ॥ सु० ॥ ५३ ॥ निलिका कुंड करावे तिण कर्मे, छमोछम थानकमें जावेगा ॥ शिलावट कर्म तिणकर्मे, रक्तपित्त कीड़ा पड़ जावेगा ॥ सु० ॥ ५४ ॥ खेत्र खेड़ावे हल हंकावे, क्षुधा घणी उपजावेगा ॥ लीला झाड़की डाली कटायां, आंगुलि ओछी पावेगा ॥ सु० ॥ ५५ ॥ रंगरेज पणाका कर्म कियांथी, बोलतां जीभ अटक जावेगा ॥ लुहार कर्म वली तीव्र रोषसूं, मृगीको झोलो आवेगा ॥ सु० ॥ ५६ ॥ गोबर सड़ावे उकरडी बंधावे, छाणां थापे थपावेगा ॥ थूक लाल चुवे मुखसेंती, मुख दुर्गंध भभकावेगा ॥ सु० ॥ ५७ ॥ मात्रामांही करे मातरो, पायखानामें दिसा जावेगा ॥ तिणसूं नदी समुद्रमांही, अचक नाव डूब जावेगा ॥ सु० ॥ ५८ ॥ पायखानां झाड़े तिण कर्मे, बाल मरण मन चावेगा ॥ निवाण सुकावे तिणसूं नाकको, खेल मुंढामें आवेगा ॥ सु० ॥ ५९ ॥ शुल्या धान्य सेकावे भिंजावे, लिपणे रोगी थावेगा ॥ झूठा सोगन खाया पृथवीमें, ओछे आउखे जावेगा ॥ सु० ॥ ६० ॥ हांसीमें झूठो वचन बोले, झूठोइज आल लगावेगा ओछे आउखे प्राणीमांही, उपजी बहु दुःख पावेगा ॥ सु० ॥ ६१ ॥ वनकाटी जे करावे प्राणी, कृत नपुंसक थावेगा ॥ कपास लोढावे घाणी करावे, सो वेश्याभव पावेगा ॥ सु० ॥ ६२ ॥ नरम वनस्पति फल फूलादिक, जो कोइ चूंटे

चूटावेगा ॥ जोवन में धोला केसज आवे दात दाढ झट जावेगा ॥ सु० ॥ ६३ ॥ फलचोरि मशाली भगिमाइ भडनींगल गुबडा थावेगा ॥घणा दिवसकी लूणी तपावे, दासी भवमाही सिधावेगा ॥ सु० ॥ ६४ ॥ कसाइपणा कर्म कियाथी नासुर तन पड जावेगा ॥ रसोइदार का पाप प्रभाव, भलु करता वराइ थावेगा ॥ सु० ॥ ६५ ॥ धोद्यो अपराधी नर छे तिण पर, खार लूण भुरकावेगा ॥ कीडोनागरा उपजे तिण करमें, अधिक दु ख घवरावेगा ॥ सु० ॥ ६६ ॥ बाग वाडी वगीचा बणाइ फल फुलादिक तोडावेगा ॥ स्त्रीपणाका भवके माहि, योनिशूल अग थावेगा ॥ सु० ॥ ६७ ॥ फल चीरीने करे अथाणो, फूलण जीव सतावेगा ॥ तपस्या करे घणी दु कर कारी, लोक प्रतीत न लावेगा ॥ सु० ॥ ६८ ॥ हरिया फल मगाइने छेदे, दया घटमें नहिं लावेगा ॥ तिणसू वस्तु चोरीने दूजो, उण उपर आल लगावेगा ॥ सु० ॥ ६९ ॥ साठा पिलावे नगरने वाले, सोला रोग समकाल आवेगा ॥ कसाइ कर्मका हासल लेवे, सो गर्भमें आडे कटावेगा ॥ ॥ सु० ॥ ७० ॥ झूठो आल देवे साधु ने, असूजतो आहार बहोरावेगा ॥ ओछे आउखे नरभव पाइ, गर्भमाही गल जावेगा ॥ सु० ॥ ७१ ॥ आखी रातको मात्रो भेलो, करिने फेर ढोलावेगा ॥ तिणसू छोडपणे नारीकूखमें, बारा वर्ष रह जावेगा ॥ सु० ॥ ७२ ॥ फुलमाला करावे कोइ, अगपर मर्दन करावेगा ॥ तपत रोग उपजे तिण कर्मे, बलन बलन उठ जावेगा ॥ सु० ॥ ७३ ॥ किंचित् पुण्यकी करणी धारे, सोसाका आगर करावेगा ॥ धनवतके घर जनम पायकें, भीख माग कर खावेगा ॥ सु० ॥ ७४ ॥ तीव्र भाव मैथुन सेवे, दुजाने साह्य लगावेगा ॥ छोडे मर्गी ने छोडमें उपजे चालीस वर्ष दु ख पावेगा ॥ सु० ॥ ७५ ॥ नानाविधका फूल तोडयाथी, वझा नारी थावेगा ॥ उगता अकुरा जो

कोइ चूंटे, मनवंझा सो कहावेगा ॥ सु० ॥ ७६ ॥ बीजकी मिंजी कढ़ाइ शेके, निर्बीज पुरुष सो थावेगा ॥ हलालखोरका कर्म किया सूं, चोर जूगारी थावेगा ॥ सु० ॥ ७७ ॥ वनस्पतिको सिरको करावे, आप पिया पर पावेगा ॥ अनेक स्त्री परणें तो पण, सकल बंझा रहजावेगा ॥ सु० ॥ ७८ ॥ बकरा भैंसादिक चौपद मारे, गलफांसी सो पावेगा ॥ तरुण वनस्पति छेदन कियां, जन्म मरण दोइ साथें आवेगा ॥ सु० ॥ ७९ ॥ उगती कूंपल तोड़े तोड़ावे, मुखसूं अधिक सरावेगा ॥ तिणपानकर्थी बालपणामें, मात पिता मरजावेगा ॥ सु० ॥ ८० ॥ दान तणी अंतराय जे देवे, मरमकी बात दरसावेगा ॥ मुनि पड़िलाभणकी घणी इच्छा, अंतराय रहे जावेगा ॥ सु० ॥ ८१ ॥ सोनारकी धमण धमावे तिणसूं, रोग जलोदर थावेगा ॥ गर्भ पाड़िने छानो रा , गेब धसकें मरजावेगा ॥ सु० ॥ ८२ ॥ अनंतकाय कंद मूलको छेदी, जिणका चूरण करावेगा ॥ धन संपत पाइने ते नर, चोरंगीयो हुइ जावेगा ॥ सु० ॥ ८३ ॥ उलट परिणामें दान देइने, फिर पाछें पछतावेगा ॥ धन संपत्तको लाभ घणेरो, भोग अंतराय बंध जावेगा ॥ सु० ॥ ८४ ॥ हिंसा करे झूठ मुख बोले, मुनिका अवगुण गावेगा ॥ लंबो आउखो रहे दरिद्री, झूर झूरने मर जावेगा ॥ सु० ॥ ८५ ॥ देव गुरु धर्मशास्त्र उथापे, निंदा कर हरखावेगा ॥ सो किल्विषी हुइ होयगा बकर, जैनधर्म नाहिं पावेगा ॥ सु० ॥ ८६ ॥ ज्ञानको वैरी निंदक, द्वेषी, आशातना अंतराय लगावेगा ॥ तिणसूं ज्ञानावरणी बंधना, ज्ञान कबहु नहीं आवेगा ॥ सु० ॥ ८७ ॥ दर्शनवंत वैरी निंदक, न्याय अन्याय वेगा ॥ दर्शनावरणी बंधने ी, नव प्रकृति उपजावेगा ॥ सु० ॥ ८८ ॥ दान शियल तप भाव मा गुण, परजीवने शाता उपजावेगा ॥ तिणसूं इणभव परभवमांइ, शाता वेदनी पावेगा ॥ सु० ॥ ८९ ॥ धाड़ा पाड़े परनिंदा,

परप्राणी सतावेगा ॥ तिणसू इणभव परभव माही, अशाता वेदनी आवेगा ॥ सु० ॥ ९० ॥ देव गुरु सघ सूत्र धरमकी, निंदा कर हरखावेगा ॥ दर्शनमोहनी बधे जिणसें, जैनधर्म नहिं पावेगा ॥ सु० ॥ ९१ ॥ तीव्रकषाय हिंसादिक कर्तव्य, पोतें करिने सो करावेगा ॥ चारित्र मोहणी बध पडयाथी, सजम पद धसकावेगा ॥ सु० ॥ ९२ ॥ पचेंद्रिय घात करे आहार मासको, आरभ परिग्रह बढावेगा ॥ ए च्यारों बोल धारीयाथी चेतन, नरकगति दुःख पावेगा ॥ सु० ॥ ९३ ॥ माया गुड माया मृषावाणी, तोला मापा खोटा चलावेगा ॥ ए चारी बोले सो परभवमें, तिर्यंच गति दु ख आवेगा ॥ सु० ॥ ९४ ॥ भद्रिक परिणामी सरल स्वभाविक, विनीतपणे दया लावेगा ॥ ए चारी बोले मनुष्यमें उपज, पुण्यथकी रिद्ध पावेगा ॥ सु० ॥ ९५ ॥ अज्ञान कष्ट अकाम निर्जरा, साधु श्रावकपणो ठावेगा ॥ ए चारी बोले पुण्य सचके, देवगति में जावेगा ॥ सु० ॥ ९६ ॥ जिनमारग रागी दया परीणामी, शिवपुर पदवी चहावेगा ॥ ए लिहू बोले नाम कर्मसु, बधणथी सुख पावेगा ॥ सु० ॥ ९७ ॥ मिथ्या उपदेशें दान न देवे, धर्म दाय नही आवेगा ॥ इत्यादिक अनुभव परिणामें, अशुभ नाम वध जावेगा ॥ सु० ॥ ९८ ॥ जाति कुलादिक आठ मद किया, नीचवस्तु सो पावेगा ॥ मद त्यागयाथी ऊच गोत्रको बधण ऊच सो थावेगा ॥ सु० ॥ ९९ ॥ दान लाभ अतराय पाचसो, दियाथी अतराय रह जावेगा ॥ अतराय तोडया वस्तु मिले सो, सुख सपत्त रिद्ध आवेगा ॥ सु० ॥ १०० ॥ भद्रिक भाव वली अल्पआरभी, माइतकी भक्ति मनावेगा ॥ तिण करमसू सो नर मरिने युगलीया मनुष्यमें जावेगा ॥ सु० ॥ १०१ ॥ देव गुरु शुद्ध धर्म आराधी, उत्कृष्ट भाव चढ जावेगा ॥ गोत्र तीर्थंकर वध पडियासू, त्रिजग पूजनिक सो थावेगा ॥ सु० ॥ १०२ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्तर तपस्या, करकें

घनघातिक थावेगा ॥ केवलज्ञान ने केवल दरिसण, सब जग जाणक थावेगा ॥ सु० ॥ १०३ ॥ मन वचन काया त्रिजोग रोकके, शैलेशी परिणाम चढ़ावेगा ॥ अजर अमर अविकार, निरंजन सिद्धकी पदवी आवेगा ॥ सु० ॥ १०४ ॥ जैसा जैसा कर्म करेगा, तैसा तैसा पावेगा ॥ मात पिता धन कुटुंब कबीला, पांत कोइ न पड़ावेगा ॥ सु० ॥ १०५ ॥ हलूकर्मी भवि प्राणी जिन के, जिणवाणी हिए सुहावेगा ॥ भारीकर्मी अनंत संसारी, हांसीमें बात उड़ावेगा ॥ सु० ॥ १०६ ॥ कर्मविपाक सुण सरधे कोइ, पाप कर्म घटावेगा ॥ तिलोकरिख कहे सो भवि प्राणी, अजर अमर पद पावेगा ॥ सु० ॥ १०७ ॥ कलश ॥ उगणीशें गुण चालीशवर्षे माघशुकल त्रयोदशी ॥ देश दक्षिण पेठ मनचर, सूत्रवाणी शशितम वसी ॥ एकसो बत्तीस बोले नीरणो, करी तिलोकरिख कहे ॥ धन जिनागम आराधतो लहे, शिवसिरी न्हिँ श्री लहे ॥ १ ॥ इति कर्म विपाकमाला सज्झाय संपूर्ण ॥

॥ अथ उपदेश सवैया, गाम उपर लिख्यते ॥

अमदानगर पाई, करज गाम जावे मती, कूड़गाम वसियासुं, तले गाम जावेगा ॥ रस्तापुर वासी तुं तो, हियड़ामें सोच कर, सो नई विचारेगा तो बेलापुर पावेगा ॥ कांगुणीके काज तुं तो, फिरत लाखण गाम, पुना बिना कोरे गाम, छडा होय जावेगा ॥ कहत तिलोक तुं तो, सदरको पंथ धार, वाकी कीजो वाट, लिया धुले गाम आवेगा ॥ १ ॥ राय गाम ˋडे मती, लाम गाम डर राख, जाम गाम लिया विना, घुमरी लगावेगा ॥ देव गढ चहाय करो, छोड़ दे बावल वाड़ो, भाण गाम सोध कर, निराले सिधावेगा ॥ मनवाड़ कर ले तो, कोल गाम वास मिले, घाटसरस मिल्यो तोय, जाते पछतावेगा ॥ कहत है तिलोकरिख, सांइ ˋ डो ध्यान कर, कुंदेवाड़ी छोड़ कर, रामपुरी पावेगा ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ चउद नियम सज्झाय प्रारभः ॥

श्रीसिद्धचक्रजीने पूजो रे, जिनमारग जाणो ॥ सुधो ज्ञान बिचारो, जासू जनम सुधारो ॥ चउदे नियम चितारो, सत्ररमारग धारो रे भविका, चउद नियम चितारो ॥ ए आकणी ॥ १ ॥ श्रीजिनमारग तारक जगमें, अनुभवज्ञान विचारो ॥ जो सयमपदकी नहीं शक्ति, तो निरर्थक पाप निवारो रे भविका ॥ च० ॥ स० ॥ २ ॥ लूण पाणी हरि बीजादिक वस्तु, सचित्त होवे जो कोइ ॥ तिनरी मर्यादा सख्या करी लीजें, तृष्णा रोक्या सुख होइ रे ॥ भ० ॥ च० ॥ स० ॥ ३ ॥ स्वाद वले सो अलग द्रव्य लेखो, रोटी पुरीदिक जाणो ॥ सचित्त अचित्त दोइ अणगणतीमें उपरातर पच्चक्खाणो रे ॥ भ० ॥ च० ॥ स० ॥ ४ ॥ दुध दही घी तेल गोल सक्कर, पाच विगय परमाणो ॥ धार विगय खद दो भेद इणमें, इच्छा रोक व्रत ठाणो रे ॥ भ० ॥ च० ॥ स० ॥ ५ ॥ पगरखी मोजा पागडी आदिक, नीकी मरजादा कीजें ॥ आपकी परकी गणती करीजें, अधिकी नही पहेरीजे रे ॥ भ० ॥ च० ॥ स० ॥ ६ ॥ लुग इलाइची पान सुपारी खावे मुख शोधन काजे ॥ तेल तबोलकी सख्या करीजे, उपरात नहीं खाजे रे ॥ भ० ॥ च० ॥ स० ॥ ७ ॥ पहरण ओढन कारण वस्त्र, शिरपाव सख्या करीजे ॥ कारण विशेषें जो सगटो लागे, सोचिने त्याग करीजे रे ॥ भ० ॥ च० ॥ स० ॥ ८ ॥ जाइ जुइ आदिक फुलसुगधी, अत्तर विविध प्रकारो ॥ इच्छा उपरातका त्याग करीजे, भागा कारण विचारो रे ॥ भ० ॥ च० ॥ स० ॥ ९ ॥ वैल घोडा रथ दती पालखी, इत्यादिक वाहन काइ ॥ गिणती सख्या करो स्ववश, धारजो व्रतविध जोइ रे ॥ भ० ॥ च० ॥ स० ॥ १० ॥ खाट पाट पाटला चौकी, सुवो बैठो बीछावो ॥ ते सेज्यानी सख्या करवी मनमें, अधिका ते न लगावो रे ॥ भ० ॥ च० ॥ स० ॥११॥ केशर चदन कुकु आदिक जे, विलेपणमें गणाइ ॥ गिनती कीजें मन

तृष्णाकों, विरथा अवर टालो रे ॥ भ० ॥ च० ॥ ं० ॥ १२ ॥ दिवं तथां निशिपिरकी संख्या, त्यागो शील नर नारी ॥ औरदिन त्याग करी मन भाखे, विरथा पाप टालो रे ॥ भ० ॥ च० ॥ ं० ॥ १३ ॥ उंची नीची तिरछीदिशि करी, कर परिमाण सीयाणो ॥ पांच आश्रव त्यागं कर लीजो, पालो श्रीजिन आणो रे ॥ भ० ॥ च० ॥ सं० ॥ १४ ॥ हाथ पांव मुख धोवणसो, देश स्नान कहावे ॥ बस्नान रव अंगधोवण, त्याग करी सु होइ रे ॥ भ० ॥ च० ॥ ं० ॥ १५ ॥ भोजन पाणीका वजनकी संख्या, उनमानसुं त्याग करिये ॥ शुद्ध रा ो निर्मल पालो, अविरातिशुं अति डरीये रे ॥ भ० ॥ च० ॥ ं० ॥ १६ ॥ इणविध नित सांज सवेरे, आदि करो नित्य त्यागो ॥ नाम नेम प्रमाद छोडीने, मोहनिंद्राथकी जागो रे ॥ भ० ॥ च० ॥ ं० ॥ १७ ॥ उगणीसें गुणचालीश फागण, शुकल पख छठ जाणो ॥ तिलोकरिख कहे जिन आण आराधो, लेशो पद निर्वाणो रे ॥ भ० ॥ चं० ॥ सं० ॥ १८ ॥ इति ॥

॥ अथ धर्मपर्व तथा लौकिक पर्व तथा अध्यात्म स्वाध्याय लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम ॥

॥ पर्युसणपर्व स्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ सिद्ध चक्रने पूजो ॥ ए देशी ॥ पर्वपजूसण कीजो रे भविका, नर भव सफल करीजें ॥ ए टेक ॥ पजूसण सम परव नहिं दूजो, जैन ध थंभ साचो ॥ इणने जो कोई साधे भावशुं, मिटे कषाय की आंचो रे ॥ भ० ॥ प० ॥ १ ॥ आठ करमदल वरण कारण, आठ मदके सब छोडो ॥ अष्ट प्रवचन रचन अष्टसिद्धि, अष्ट गुणातम जोडो रे ॥ भ० ॥ प० ॥ २ ॥ अष्ट दिवस अष्ट जाम निरंतर, धर्मध्यान चित्त ध्यावो ॥ वैर विरोध जो होवे अपरशुं, उपतिने

जाय खमावो रे ॥ भ० ॥ प० ॥ ३ ॥ क्रोध क्लेश विकथा सव वरजो, डरजो आश्रव करणी ॥ अष्टम तप तो अवश्य करीजे, दु ख टल जाये वेतरणी रे ॥ भ० ॥ प० ॥ ४ ॥ इण दिन त्रस थावर केरी जतना, चार खध शुद्ध पालो ॥ आश्रव टालि इद्रिय पच जीतो, पच प्रमादके टालो रे ॥ भ० ॥ प० ॥ ५ ॥ विणज व्यापार करो मत तृष्णा, अपर गामें नहीं जाजे ॥ स्नान मजण हजामत नहिं कीजें, सुकृतमें चित्त लगाजे रे ॥ भ० ॥ प० ॥ ॥ ६ ॥ पर्व निमित्तें लीपण छावण, न्हावण धोवण वरजो ॥ खाडण पीसण राधण सीधण, हिंसा करतव सु डरजो रे ॥ भ० ॥ प० ॥ ७ ॥ सामायिक पडिक्कमणो, वखत, वखत नित्य साधो ॥ देव गुरु धर्म तत्त्व ए तीनु, भाव भगातिशु आँराधो रे ॥ भ० ॥ प० ॥ ८ ॥ सहलकाम ससारका छोडो, गुरुमुख सुत्र सुणीजे ॥ हिरदा में धारजो एक मने शुद्ध, उघ आलस सो तजीजे रे ॥ भ० ॥ प० ॥ ॥ ९ ॥ सार पासा चोपड मत खेलो, खेलो धर्म वागमाही ॥ म्वत्सरीको उपवास म छोडो, प्राण रहे जव ताई रे ॥भ० ॥ प० ॥ १० ॥ इण विध करणी करजो उछगे, जिन आगममें जो वरणी ॥ तिलोकरिख कहे सुगुणा जनसेंती भवजल तरणो करणी रे ॥ भ० ॥ प० ॥ ११ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीयअध्यात्मपर्व दशहरा स्वाध्याय प्रारभ ॥

॥ लावणीकी चालमें, ॥ विजय दशमी दिन विजय करो तुम, ज्ञानदृष्टि करनारी ॥ धर्म दशहरा कर लो उमगसें, मिथ्यामोह रावण मारी ॥ ए टेक ॥ ए ससार सागरके अदर, कर्मरूप अव थव पानी ॥ भर्म रूप पडे भरतइर इसीमें, डूव जाता जहा जग प्राणी ॥ तीन दड त्रीकूट द्वीप है, लालच लक वक, बणी ॥ महामोह रत्नश्रवा नामक, राक्षस राजा इसमें

धणी ॥ क्लेश केकसी राणी है उसकी, अकलदार स जो हारी ॥ धर्म० ॥ १ ॥ मिथ्यामोहनी उसका फर्जंद, दश मिथ्या दश आनन है ॥ बीस आश्रवकी भुजा है उसके, कपट विद्या की निन है ॥ सम्यकत्व मोहनी बिभीषण दूजा, नंदन सो कुछ है न्यायी ॥ मिश्रमोहनी कुंभकर्ण ए, लचपिच वातमें अधिकाई ॥ महामोहके ए तिहं नंदन, समझो सुगुणा नर नारी ॥ धर्म० ॥ २ ॥ परपंच नाम मंदोदरी नामें, मिथ्यामोह रावन राणी ॥ [illegible] य इंद्रजीत अहं मेघवाहन, मिथ्या रावणके सुखदाणी ॥ कुमति नाम चंद्रनखा बहन है, कठिन क्रोध खरके व्याही ॥ दूषण दूषण तीन शल्य त्रिशिरा, ए दोनुंहि उसके भाई ॥ संज्वलतिक चंद्रनखा संबुक, कछु एक आयो हुशियारी ॥ धर्म० ॥ ३ ॥ ज्ञानरूप सूर्यहंस झकूं, साधनकी दिलमें आइ ॥ मात पिताका हुक्म न माना, रह्या वो उपशम रणमांइ ॥ उसी बखतमें राय राजगृहि, दश लक्षण दशरथ राया ॥ संवर भावना राणी कौशल्या, धर्मराम पुत्र जाया ॥ समकित सुमित्रा राणी दूसरी, सत लक्ष्मणकी महतारी ॥ धर्म० ॥ ४ ॥ सुमति सीतासे धर्मरामका, बहोत ठाठसें विवाह भया ॥ एक दिवस वो पिता हुकुमसें, तिनुंही संजम बनमें गया ॥ सत लक्ष्मण वो खड्ग पकड़ कर, संजल संबुकका शिर घाया ॥ कुमति चंद्रनखा कही पतिसुं, खर दूषण त्रिशिरा धाया ॥ तलक्ष-मण तब चढे सामने, उन तीनुंकु लिया मारी ॥ धर्म० ॥ ५ ॥ मिथ्यामोह रावणके पास वो, सुमति सीता की बड़ाइ ॥ करी बहोत तब लालच वश वहां, चल आया लंका सांई ॥ छ विद्याका नाद सुना कर, सुमति सीताकी किवि है चोरी ॥ राम लक्ष्मण जब जाना भेद ए, सोचें अब लानी है दोरी ॥ झूठ साहीसक्त दृष्टि है उसकी, सतलक्ष्मणनें करी खुवारी ॥ धर्म० ॥ ६ ॥ संतोषसुग्रीव जब भया पक्षपर, बहोत भूप उसकी संगें ॥ जाम जांबुवाहन नी

नलादिक, सुमन नाम हनुमत अगें ॥ खबर लाया वो सुमति सीताकी, बहुत जोरावर दुनियामें ॥ दान शीयल तप भावकी सेना, ले के गया लका ठामें ॥ मिथ्यारावण सुनी बात ए, किवी आपकी हुशियारी ॥ धर्म० ॥ ७ ॥ चार कषाय राक्षस दल भारी, कुभ्यान धजाके फरावे ॥ अपकीर्त्तिका बजे नगारा, विकथाका कडखा गावे ॥ कुशील रथमें बैठा हुशियारी, सात व्यसन शस्तर धारे ॥ राग द्वेष उमराव जोरावर, सहेज सुभटसें नहिं हारे ॥ नय नेजा सझाय घोष दे, राम आय चढ तिनवारी ॥ धर्म० ॥ ८ ॥ सत लक्ष्मण तब धीरज धनुष ले, बैठे शीलरथके माइ ॥ अरू वरू जब मिले आन कर, मिथ्यारावणकू रीश आइ ॥ अज्ञानचक्र मेला लक्ष्मण पर, जोर चला नहिं लीगारे ॥ ज्ञानचक्र जब मेला हरि ने, एकदम में रावण मारे ॥ राम लक्ष्मणकी जीत भइ जब, जगमें भया जय जय भारी ॥ धर्म० ॥ ९ ॥ सुमति सीताकु ले कर आये, मुक्ति अयोध्या राज करे ॥ जन्म मरण भय दुःख मिटे जिह्ना, राम राजा सो जगमें खरे ॥ सवत उगणीसें साल अडातिसका, पेठ आबोरी दक्षिणमाइ ॥ विजयदशमी दिन कीवि लावणी समझदारके दिल भाइ ॥ तिलोकरिख कहे सत्यरामायण, धर्म पर्व यों सुखकारी ॥ धर्म० ॥ १० ॥ इति ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय धनतेरश अध्यात्मस्वाध्याय प्रारभः ॥

॥ मुख देख्यो हम पारसको ॥ ए देशी ॥ देशी केरवामें छे ॥ ऐसी धनतेरश कर लीजो, जो चाहो थें धनको भडार रे ॥ भला रे ज्ञानी ॥ चा० ॥ ऐ० ॥ ए टेक ॥ १ ॥ कातक कहे थें कातक रहिया, धन तेरस सुविचार ॥ भला रे ज्ञानी, धनतेरश सुविचार रे ॥ ऐ० ॥ ॥ २ ॥ अहिंसा सत्य दत्त ब्रम्ह अममत्व, पच माहाव्रत सार ॥ भ० ॥ ए० ॥ ऐ० ॥ ३ ॥ ईर्जा भाषा एषणा आदिक, समिति छे पच प्रकार

॥ भ० ॥ स० ॥ ऐ० ॥ ४ ॥ मन वचन या तीन गुप्ति, ए तेरस सु कार ॥ भ० ॥ ए० ॥ ऐ० ॥ ५ ॥ खंति मुत्ति अज्जव मद्दव, त्रीजे अंगे कह्या द्वार ॥ भ० ॥ त्री० ॥ ऐ० ॥ ६ ॥ ए चउ द्वार खुला शिवमंदिर शिवलक्ष्मी है तैयार ॥ भ० ॥ शि० ॥ ऐ० ॥ ७ ॥ पाप कीयासुं लक्ष्मी जावे, शंका नहिं है लगार ॥ भ० ॥ शं० ॥ ऐ० ॥ ८ ॥ तिलोकरिख कहे शिवधन थिर है, खरचतां आवे नहिं पार ॥ भ० ॥ ख० ॥ ऐ० ॥ ९ ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ रूपचउदश अध्यात्मस्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ धन धन आज दिवस भले उग्यो, पर्व दीवाली केरो रे ॥ ए देशी ॥ ऐसी रूपचउदश नित नित कीजें, निजरूप प्रगट करीजें रे ॥ इंद्रिय मन मुंडन करी लीजें, जप तप स्नान करीजें रे ॥ ऐ० ॥१॥ पकों मैल प लन कीजें, सुमन सा गाजें रे ॥ धीरज धोती सुव्रत वाघो, संवरपाग शिर छाजे रे ॥ ऐ० ॥ २ ॥ दया दुप्पटो किरियाको अत्तर, धर्मध्यान सोला भेदो रे ॥ ए सोला शिणगार सजणकी, चित्तमें रा उमेदो रे ॥ ऐ० ॥ ३ ॥ सत्यवचन तंबो सुहावे, तत्त्वको तिलक करीजें रे ॥ ज्ञानको दीपक धर्मकी बाती, कर्मको तेल पूरीजें रे ॥ ऐ० ॥ ४ ॥ उगणीसें अड़तिश रूपचउदश दिन, एह सज्झाय बणाई रे ॥ तिलोकरि कहे रूप जो चाहो, तो इम करो भाई बाई रे ॥ ऐ० ॥ ५ ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम दीपमालिका अध्यात्म स्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ मानवजन्म मानवजन्म रे रतन तैने पायो रे ॥ ए देशी ॥ दीपमाला दीपमाला परव ऐसो करीयें रे, सिद्ध लक्ष्मी वरीयें रे ॥ दी० ॥ ए टे ॥ द्रव्यातम घर निर्मल करियें, कषायकी धूल परहरियें रे ॥ आ ब खाड पूरावो, त्याग लींपण लींपावो, गुण रंग लगावो रे ॥ दी० ॥ १ ॥ पुण्य पापको लेखो लगावो, पापको खातो घटावो रे ॥ सुमति

गादी बिछावो, गुप्ति तकिया बैठावो, शल्य धूल उडावो रे॥ दी० ॥ २ ॥ करुणाको दीपक भर्मकी वाती, समकित ज्योति सुहाती रे॥ कर्मतेल पूरावो, मिथ्यातम सो नसावो, सुज्ञान दीपावो रे ॥ दी० ॥ ३ ॥ सत्यको कुकु विनयकी पिंगाणी, किरियाकी केसर घसाणी रे ॥ पूजो वही जिन वाणी, शुद्ध न्याय चताणी, भविजन सुखदाणी रे ॥ दी० ॥ ४ ॥ क्षमाका खाजा ने प्रेम पतासी, समता का गुजा विमासी रे ॥ सवर सेरणी वनावो, आश्रव मैल छटावो, अति रुचि करि खावो रे॥ दी० ॥ ५ ॥ तत्त्वको तिलक लिलाडें लगावो, सजमका शिरपाव वणाजो रे ॥ तप शयिलको गेणो, पान मधुगिरा लेणो, मानो सतगुरु केणो रे॥ दी० ॥ ६ ॥ उगणीसें अड़तीस साल वखाणो, दीपमालिका दिन जाणो रे ॥ तिलोकरिख दरसावे, भविजन मन भावे, दया धर्म दिढावरे॥ दी० ॥७॥ इति ॥५॥

॥ अथ पचम दीपमालिका द्वितीय अध्यात्मस्वाध्याय प्रारभ ॥

॥ देशी प्रभाती ॥ मगलमाला पर्व दीवाली, भविजन भावें करजो रे ॥ मगलमाला० ॥ ए टेक ॥ मोहणीजाला कर्मको कचरो, सवर बूहारीसु हरजो रे ॥ भर्मकी खाड मिटावो आगमसु, शुद्ध उत्तर ठस भरजो रे ॥ म० ॥ १ ॥ शुक्ललेश्या खडी भावना भींतके, चित्त लगाई औसरजो रे ॥ पच आचारका रग लगावो, ज्ञानको दीपक करजो रे ॥ म० ॥ २ ॥ कर्मको तेल कुध्यानकी वाटी, समकित ज्योतिसु सरजो रे ॥ समताको ढक्कण भावना फाणस, तृष्णां वायुके वरजो रे ॥ म० ॥ ३ ॥ क्षमाकी गादी सुमतिका तकीया, गुप्ति मिठाई आचरजो रे ॥ धर्मको नाणो जीव कोथली, मिथ्यां चोरसुं डरजो रे ॥ म० ॥ ४ ॥ सतरा सजम पूजा रचावो, मेंटो पापको कॅरजो रे ॥मोक्षनगरकी हुडी चलावो, सदा सरापी गरजो रे ॥ मं० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे सुगुणा नरने, पापदीवाली बरजो रे

॥ धर्मदीवाली शिवसुखदाता, सो नित नित आदरजो रे ॥ मं० ॥ ६ ॥ इति ॥ ५

॥ अथ षष्ठ अनुभव संक्रांतिपर्व स्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ ख्यालदेकी देशीमें ॥ पर्व संक्रांति मनावियें जी २ कांइ, अनुभव दृष्टि लगाय ॥ जिम संघति लहे शाश्वती जी २ कांइ, कमी रहे नहिं कांय ॥ प० ॥ १ ॥ ज्ञानरवि वृद्धि होवे जी २ कांइ, कुमति रयणी घटंत ॥ समकित किरण पसरे घणी जी २ कांइ, मिथ्या है मालो गलंत ॥ प० ॥ २ ॥ तृष्णाजलहानी होवे जी २ कांइ, संतोष भूमि देखाय ॥ धर्मदिवस म्होटो हुवे जी २ कांइ, भविजनने सुखदाय ॥ प० ॥ ३ ॥ तपस्यातिल संग्रह करो जी २ कांइ, समता सक्कर मिलाय ॥ प्रेमकी पापड़ी बणावजो जी २ कांइ, धीरजकी थाली बनाय ॥ प० ॥ ४ ॥ क्षमाको खीच बनावजोजी २ कांइ, दयारूपी दूध बनायं ॥ मेवो मिलावो शुभ मन तणो जी २ कांइ, हिरदे हांडीके मांय ॥ प० ॥ ५ ॥ तत्त्वका तंदुल शुद्ध करो जी २ कांइ, इंद्रिय मनरूपी दाल ॥ खिचड़ी इण विध रांधजो जी २ कांइ, धर्मरुचि घृत डाल ॥ प० ॥ ६ ॥ दान अभय नित दीजीये जी २ कांइ, पालो शीयल अखंड ॥ बारेई भावना भावजो जी २ कांइ, छोड़ो मिथ्या अफंड ॥ प० ॥ ७ ॥ उगणीसें गुणचालीसकी जी २ कांइ, पौष शुध्द पंचमी जाण ॥ तिलोकरिख कहे पूना शहरमें जी २ कांइ, धर्म संक्रांति बखाण ॥ प० ॥ ८ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तम बसंतपंचमी अध्यात्म स्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ देशी वसंतमें छे ॥ सदा बसंतपंचमी ऐसी कर रे ॥ स० ॥ ए टेक ॥ काया नगर मनसहेलके मांही, भावनाचित्र अंदर रे ॥ केवल भूप सुमति पट्टराणी, धर्म नामें मंत्रीसर रे ॥ स० ॥ १ ॥ चोकस चपरासी दान हलकारो, समकित कर तलवार रे ॥ साधु साधवी श्रावक श्राविका, तीर्थसभा रही भर रे ॥ स० ॥ २॥ मन मादल

शुक्लध्यानकी भेरी, सुगुण वाजा विचित्र रे ॥ पच सज्झायं सूत्र अनुरागें, धर्मकथासु उच्चर रे॥ स० ॥ ३॥ सवर अबके ज्ञान मजरी ले, सत्यवचन पत्तर रे॥ वदरमाल कर त्याग डोरमें, बाधले अपने घर रे ॥ स० ॥ ४ ॥ शील शिरपाव शरमको भूषण, सुजस गुलाल प्रवर रे ॥ हिरदेको हौद सतोषको पाणी, शुभ लेश्या रग भर रे ॥ स० ॥ ५ ॥ साधर्मी अग रग छिटकावो, दीजें अति आदर रें॥ इण भवें शोभा परभव सपत, हिंसापर्व परिहर रे ॥ स० ॥ ६ ॥ उगणीसें अडतीस बसत पचमी दिन, अहमद नाम नगर रे ॥ तिलोकरिख कहे ऐसी करे जो पचमी, सो बसतपचमी गत नरें रे ॥ स० ॥ ७ ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ अथ अष्टम अध्यात्म स्वाध्यायफाग प्रारभः ॥

॥ देशी फागकी छे॥ ऐसो खेलजो हारे ॥ भविका ॥ ऐ० ॥ फाग सदा सुख पावो॥ ऐसो खेलजो०॥ ए टेक॥ धर्म बाग फूली समकित सरध्दा, विरति कोयलनाद करे॥ ऐ० ॥ १॥ कुमति होलिका ने दीजो मगलायने, कर्मकी धूल उडावो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ २ ॥ समता सरोवरमें स्नान करो सुगुणा, पापको मैल पखालो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ ३ ॥ धीरजको धोतियो थें पहेरो घणा प्रेमसु, जयणा को जामो थें पहेरो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ ४ ॥ परमारथ पागडी अपोगकी उपरणी, शीलको शिरपेच थें बाधो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ ५॥ क्षमारूप छोगो मेली धाटो बाधो साचको, तप रूपी तुर्रो झूकावो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ ६ ॥ करुणाका कुडल चोकसीका चोकडा, भक्तिकी भमरकडी पहेरो ॥भ०॥ ऐ० ॥७॥ दशविध धर्मको हार हिये पहेरजो, दान माल कडा हाथ पहेरो ॥भ०॥ऐ०॥८॥ वयावच्च विंटी दश आगुलीमें पहेर लो, किरियाको कदोरो थें पहेरो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ ९ ॥ भावकी भागकु थें घोंट घोंट पीवजो, सतोषकी सक्कर मिलावो ॥

॥ भ० ॥ ऐ० ॥ १० ॥ धरम कुटुंब संग सुमति सोहागण, हिल मिल गेर खूब खेलो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ ११ ॥ सज्झायको ढफ लो ने झांझ लो भजनकी, प्रभुगुणि ख्याल खूब गावो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ १२ ॥ लोभरूप इलोजी महा निर्लज जगतें, जिणके थें खुब निरसावो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ १३ ॥ जिनवाणी पाणी वैराग रंग घोलजो, उपदेशकी पिचरकी भर मारो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ १४ ॥ शुक्ललेश्याकी झोली गुलाल शुभध्यानकी, भर भर मुट्ठा उडावो ॥भ० ऐ० ॥ १५ ॥ विनय विवेकका थें बाजा रे बजावजो, नेमका निसाण थें फरावो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ १६ ॥ संवरकी सूखडीने गोठ करो ज्ञानकी, गेर काढो चार तीरथ ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ १७ ॥ तेरे क्रियाको थें न्हावण करजो, दयाकी दुकान मांड बेठो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ ॥ १८ ॥ ऐसो फाग रमो साल दर साल थें, सिद्धपुर पाटणमें वसो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ १९ ॥ भारी करमा जाके दाय नहिं आवसी, हलुकरमी सो हरखावे ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ २० ॥ जो नहिं सो तो आगे पछतावसो, सतगुरु ज्ञान बतायो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ २१ ॥ उगणीशें संतीस फागण वदिमें, बीज बुधवार दिन आयो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ २२ ॥ तिलोकरिख कहे सिरज गालमें, धर्म फाग सरसायो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ २३ ॥ इति ॥ ८ ॥

॥ अथ नवम शीलासप्तमी अध्यात्म स्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ भावपूजा नित्य कीजीयें ॥ ए देशी ॥ पूजो जिनवाणी माता शीतला, शीतल चित्त करो भावें जी ॥ संसार दावानल उपशमे, भविजन सुणी उलसावे जी ॥ पू० ॥ १ ॥ चतुराई चूलो थापजो, कर्म इंधन करो भावे जी ॥ तप अग्नि सें धूंकजो, काया कडाई चढावो जी ॥ पू० ॥ २ ॥ करुणारस घृत पूरजो, निर्ममता करो मेंदो जी ॥ क्षमारूप खाजा करो, सुगुण गुंजा उमेदो जी ॥ पू० ॥ ३ ॥ परमारथ पूडी करो, पुण्य पापड खीच जाणो जी ॥ संतोष

रूप करो लापसी, समता सक्कर बखाणो जी ॥ पू० ॥ ४ ॥ धर्म मोदना मोदक करो, जयणा जलेबी वणावो जी ॥ प्रतीति रूप पेडा करो, प्रेमका घेवर आणो जी ॥ पू० ॥ ५ ॥ दयाको दूध ओटाव जो, दानको दहि जमावो जी ॥ सुबुद्धिरूप बरफी भली, अपोग का ओला वणावो जी ॥ पू० ॥ ६ ॥ बडा करो विज्ञानका, गुलगुला गुप्ति रसालो जी ॥ भावना रूप भुजीया करो, हेतु दृष्टांत मसालो जी ॥ पू० ॥ ७ ॥ गुरुसेवा रूप सेवा सीरे, तत्त्वको तेवन ठावो जी ॥ भजन पकोडी चरपरी, सुकथा कचोरी सरावो जी ॥ पू० ॥ ८ ॥ चोकसी चोखा आणीने, रूप रुचराई करीजो जी ॥ घाट राब करबो करो, हिरदे हाडीमें धरजो जी ॥ पू० ॥ ९ ॥ स्नान करो उपशम जलें, पापको मैल पखालो जी ॥ शीलशणगार सजो शिरें, कषाय अग्निके टालो जी ॥ पू० ॥ १० ॥ सुगुरु केण कलशा विषे, ज्ञानको जल भर लेवो जी ॥ मेंदी म्रहो अनुमोदना, सुमति सोपारी सो ठेवो जी ॥ पू० ॥ ११ ॥ थिरपरिणाम थाली करो, विवेकको बाटकी जाणो जी ॥ विनय पिंगाणी वणावजो, सत्यको कुकु घोलाणो जी ॥ पू० ॥ १२ ॥ अक्षय गुण आखा चढाईयें, प्रश्नका पान विचारो जी ॥ कीर्तिफूल शुभ वासना, ध्यानकी धूप उदारो जी ॥ पू० ॥ १३ ॥ शुक्ल लेश्याकी रुइ करो, नेम को नैवेद्य लीजो जी ॥ अन्नतरज परिटालवा, त्यागको गरणो ढांकीजो जी ॥ पू० ॥ १४ ॥ परमेष्ठी गुण शुद्ध दाखिया, गावजो गीत रसालो जी ॥ पूजा करो इम सासती, सकल करम होय टालो जी ॥ पू० ॥१५॥ धर्म पुत्र चोखो रहे, रिद्धसिद्ध बहु थावे जी ॥ शिवरमणी वरे सासती, दुःख कदे नहिं आवे जी ॥ पू० ॥ १६ ॥ उगणीसें अडातिस शीतला दिने, किधी एह सज्झायो जी ॥ तिलोकरिख कहे अध्यातमपणो, भविजन के मन भायो जी ॥ पू० ॥ १७ ॥ इति ॥ ९ ॥

॥ अथ दशम अध्यात्मगिणगोर स्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ देशी तीजकीसें छे ॥ शिवरमणीका साहेबा, थें तो देखोने एह गिणगोर ॥ सुगतिका साहेबा थें तो, राचो ने एह गिणगोर ए टेक ॥ धीरजको करो सरावलो जी कांई, क्षमामिटी अनुभव नीर ॥ सत्य ` `ज थें बोवजो कांइ, सुख अंकुरा वृद्धि थीर ॥ शि० ॥ १ ॥ केवलज्ञान सरोवर तणो जी कांई, जल हिरदे कलश मांय ॥ श्रद्धा नारी सोहागणी कांइ, तिण सिर दीजो चढाय ॥ शि० ॥ २ ॥ भावना नार सोहासिणी कांइ, भूषण सुअध्य ाय ॥ गीत गुणी गुण गावणां कांइ,सुजसका बाजा बजाय ॥ शि० ॥ ३ ॥ इम काढो कलशा भणी कांई, नित नित अधि आणंद ॥ धर्म तत्त्व तीज तिथि दिने कांइ, तीज शणगारो गुणिवृंद ॥शि०॥४॥ सुमति विरति गोर बणाय लो कांइ, द्वादश अंग शरीर ॥ उपांग बारेइ दीपता कांइ, शीलको ओढावो थें चीर ॥ शि० ॥ ५ ॥ लज्जाको लेंगो पेरावजो कांइ, किरियाकी कंचुकी पहेराय ॥ महमद मारद माथा तणो जी कांइ, राखड़ी रुचिकी बणाय ॥ शि० ॥ ६ ॥ समझकी बिंदी शिरें कही कांइ, अपोगका ओगन्यां कान ॥ पु ` पानड़ी झगमगे कांइ, तपस्याको तिलक वखाण ॥ शि० ॥ ७ ॥ विनय को बोर विचारजो कांइ, तत्त्वकी टोटी ने झाल ॥ झुमरा पहेरावो विवेक का कांइ, झेलो जयणाको रसाल ॥ शि० ॥ ८ ॥ चोंप वो चोखा वचनकी कांइ, मिष्ट वचन मसी जान ॥ निरवद्य सत्य वचन तणां कांइ, मुख तंबोल वखाण ॥ शि० ॥ ९ ॥ शरमको काजल आंजवो कांई, नेमकी नथ सुखकार ॥ ज्ञानकी गलसीरी `ठ में कांइ, दशविध धर्मको हार ॥ शि० ॥ १० ॥ ठु ` संतोषकी जाणजो कांइ, तेड्यो परतीतको जाण ॥ तिमणयो देव गुरु धर्म ` कांइ, चेतना चंपकली ठाण ॥ शि० ॥ ११ ॥ चंद्रहार `म्यता पणो

काई, बाजूबध विवेक ॥ लुवा फूदा तरगका काइ, जवल्यो करो शतटेक ॥ शि० ॥ १२ ॥ करमदी करो शुभ करणकी काइ, सुकला ककण सार ॥ चूडो बत्तीस जोग सग्रहको जी काइ, मणगठा सुमन विचार ॥ शि० ॥ १३ ॥ वेयावच्च वींटी पहेरावजो काइ, अनुमोद्‌ना मेंदी लाल ॥ सुनय साकला पायमें काइ, साहस कडा सुविशाल ॥ शि० ॥ १४ ॥ तोडा सज्झायका वाजणा काइ, नीति नेउर झणकार ॥ हथपान पगपान प्रेमका काइ, विद्याका विंछिया सार ॥ शि० ॥ १५ ॥ ईर्याका अणवट सासता काइ, प्रीतिकी पोलरी जाण ॥ भग तरगकी साकलो काइ, घुघरी प्रश्न वखाण ॥ शि० ॥ १६ ॥ चेतनजो ईश्वर दीपता जी काइ, चार तीरथ परिवार ॥ धर्मबाग माही सचरो काइ, स्तवन गीत उच्चार ॥ शि० ॥ ॥ १७ ॥ विज्ञानका वाजोठ पर थापिने काइ, ज्ञानादिक चार प्रकार ॥ फेरा फेरावो तेहगु काइ, होमजो कर्मविकार ॥ शि० ॥ ॥ १८ ॥ ध्यानकी धूप लगावजो काइ, प्रीतिका फूल चढाय ॥ सुकृत नैवेद्य चढावजो काइ, थापो शिवमदिर माय ॥ शि० ॥ १९ ॥ ऐसी तीज मनावसी काइ, जे भवियण नर नार ॥ ते सुख पावे सासता काइ, शका नहिं छे लगार ॥ शि० ॥ २० ॥ पाप तहेवार मनावता काइ, कर्मको बधन थाय ॥ रूले चउगतिमें जीवड़ा काइ, विप ए महा दुखदाय ॥ शि० ॥ २१ ॥ अनुभव ज्ञान लगावजो काइ सुगणा मनावा तहेवार ॥ तिलोकरिख कहे सुख पावशो काइ, वर्त्तसी जय जयकार ॥ शि० ॥ २२ ॥ इति ॥१० ॥

॥अथ एकादश आखात्रीज अध्यात्म स्वाध्याय प्रारभः ॥

॥ या रस सलगी, आदि जिनेश्वर कियो पारणो ॥ ए देशी ॥ थें कर लो स्याणा, धर्म तहेवार आखातीजको ॥ थें० ॥ ए टेक ॥ आखातीज तहेवार भलेरा, कर ला धर्मविचार ॥ इण

ओ हैं और जगतमें, बारा मासको सार रे ॥ थें० ॥ १ ॥ दान पुण्य सु तकी करणी, करजो मनशुद्ध चहाय ॥ सदा तृप्त रहो भू न लागे, मिलसी सुख सवाय रे ॥ थें० ॥ २ ॥ अक्षय गुणको आखा लीजें, ऊखल धीरज धार ॥ मूसल लीजें ज्ञानको सो कांइ, मोहणी तुष निवार हो ॥ थें० ॥ ३ ॥ शुद्धभाव सूपड़ो करिने, झटको पापरज दूर ॥ क्षमा चूलो संतोषकी हांडी, कर्म इंधन भरपूर हो ॥ थें० ॥ ४ ॥ तपकी अगनि सलगावजो जी कांइ, विनयको जल सुविचार ॥ ऊरो आखा खीच बणावो, सम स रस सार हो ॥ थें० ॥ ५ ॥ करुणा छुडछी थिरमन थाली, जीमो सुगुणा लोक ॥ सदा तृपत रहो सुख अनंता, मिल री थोक हो ॥ थें० ॥ ६ ॥ ज्ञान दरिसण चारित्र निजगुण, अखे आशा तनमांय ॥ इनमें शंका रंच न आणो, शोधो श्री जिन य हो ॥ थें० ॥ ७ ॥ उगणीसें अड़तिस आखातीज दिन, री गामके मांय ॥ तिलोकरिख कहे सुगुणा नरने, ऐसो पर्व सुखदाय हो ॥ थें० ॥ ८ ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ अथ द्वादश राखीपर्व अध्यात्म स्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ मेरी मेरी करतां जनम गयो रे ॥ ए देशी ॥ राखी तहेवार करो धर्म राखी, मिथ्यादुर्मति थो दूर नाखी ॥ रा० ॥ १ ॥ सत रूपी बंधन महासुखकारी सुबुद्धी नाम बहन गुणधारी ॥ रा० ॥ २ ॥ भावकी डोर रक्षा हीर जाणो, मन गुप्तिको ल्यो मोतिको दाणो ॥ रा० ॥ ३ ॥ भावको मोडल लेश्या शुभरंगी, धर्मरिद्धिकी राखी शुभ चंगी ॥ रा० ॥ ४ ॥ त्यागकी गांठ दे कर मांही बांधो, समताको सेवा भली विध रांधो ॥ रा० ॥ ५ ॥ करुणा कंसार करो भलि भातें, समताको श्रीफल देवणो हाथे ॥ रा० ॥ ६ ॥ ध्यानको नाणो सो रोकड़ो दीजें, किरियाकी कंचुकीको ड दीजें ॥

रा० ॥ ७ ॥ समकित कुकुम ज्ञानको पाणी, घोलो विवेक सु विनय पिंगाणी ॥ रा० ॥ ८ ॥ तपको तिलक चोकस गुण चोखा, ऐसा तहेवारसु सुख अनोखा ॥ रा० ॥ ९ ॥ तिलोकरिख कहे राखी पर्व करियें, सुखें सुखें भवजल निधि तरियें ॥रा०॥१०॥इति॥ १२॥

॥ अथ त्रयोदश बारमासनी सज्झाय प्रारभ ॥

देशी माचका दोहाकी ॥ चैत कहे तु चेत चतुर नर, पायो अवसर सार ॥ सुकृत करणी भवजलतरणी, वरणी शिवदातार रे ॥ या बारे मासकी, शिक्षा थें लीजो हिरदे धारिने ॥ ध्रु० ॥ १ ॥ वैशाख कहे वे साख सुधारो, सूत्र चारितर जाण ॥ दोइ साख जो जासी हातसु, रेसी मन पछताण रे ॥ या० ॥ २ ॥ ज्येष्ठ कहे करो ज्येष्ठ जो करणी, तो पावो पद ज्येष्ट॥ ज्येष्ट थान पर वास मिलेगा, अजर अमर सुखश्रेष्ठ रे ॥ या० ॥ ३ ॥ आषाढ कहे नसाड पापने, करलो श्रीजिनधर्म ॥ तप जप खप कर पावो केवल, तोडो आठों कर्म रे ॥ या० ॥ ४ ॥ श्रावण कहे सुणो सूत्र श्रवणसें, उघ आलस परिहार ॥ मिथ्या भर्म टले हिरदाको, प्रगटे समकित सार रे ॥ या० ॥ ५ ॥ भाद्रव कहे भाद्रवकी चर्चा, निरणो करो नर नार ॥ निजगुण ओलख परगुण छोडो, तो उतरो भवपार रे ॥ या० ॥ ६ ॥ आसोज कहे नासोज पारका, अवगुण तु मनमांय ॥ निजगुण खोज सोज ज्ञान उर, कमी रहे नहि काय रे ॥ या० ॥ ७ ॥ कातिक कहे थें कहा तक राहिया, धर्म रतन ले सग ॥ अनत काल गयो तकता तकता, सह्या कष्ट अभग रे ॥ या० ॥ ८ ॥ मृगशीर कहे जो मृग शिर उपर, सिंह तणो भय जाण ॥ तुझ शिरपर ज्यों काल जोरावर, परभवको डर आण रे ॥ या० ॥ ९ ॥ पोप कहे तु पोप छे काया, तन निज प्राण पोपाय ॥ इनमें शका रच न कीजें, श्रीजिन गया फरमाय रे ॥ या० ॥ १० ॥

माहा कहे महा शत्रु कर्म है, इनमें फरक न कोय ॥ धर्म राजा है निपट जोरावर, सरणासुं सुख होय रे ॥ या० ॥ ११ ॥ फागण कहे थें खेलजो फागण, कुमति होलिका बाल ॥ कर्म धूल उडाय दीजीयें, गावो धर्मका ख्याल रे ॥ या० ॥ १२ ॥ बारे कहे बारे अव्रत, छोडो सुगुणां लोक ॥ बारे भेदें तप बारे भावना, धारयासुं शिवथोक रे ॥ या० ॥ १३ ॥ मधुमास उगणीसें अडाति पूनमतिथि गुरुवार ॥ तिलोकरिख कहे परउपगारें, पेठ आंबोरी मझार रे ॥ या० ॥ १४ ॥ बारे मास इम सुन कर सरधे, भविजन मन उल्लास ॥ कर्मभर्म सब दूर निवारी, पासी शिवपुर वास रे ॥ या० ॥ १५ ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ अथ चतुर्दश पन्नर तिथि अध्यात्म स्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ देशी माचका दोहाकी ॥ पड़वा कहे एक निश्चें राखो, धर्मथकी सु होय ॥ छै आवलिका फरस्यां सुगति, अर्ध पुद्गलके मांय हो ॥ १ ॥ इम पंद्रा तिथिको, अनुभव थें विचारो सूत्र न्यावसुं ॥ ध्रु० ॥ दूज कहे दो विध है बंधन, राग द्वेष दुःखकार ॥ जप करिने काटो इणने, पामो भवजलपार रे ॥ इ० ॥ २ ॥ तीज हे तीन तत्त्व आराधो, साधो गुप्ति तीन ॥ तीन शल्य तीन दंड तजीने, अनंत प्राणी शिव लीन रे ॥ इ० ॥ ३ ॥ चौथ कहे चौभेद मुगतका, आराधो भविलोक ॥ चार कषायकी य बुझाई, लहो अविचल शिवथोक रे ॥ इ० ॥ ४ ॥ पंचमी कहे पंचमीगति इच्छा, तो पंच महा पाल ॥ पंच स ति शुद्ध भाव आराधो, पंच प्रमाद् द्यो टाल रे ॥ इ० ॥ ५ ॥ छठ कहे छकाय वंचावे, छे व्रत लीजो धार ॥ बाह्य अभ्यंतर छे छे तप , उतरो भवजल पार रे ॥ इ० ॥ ६ ॥ सातम कहे नित सात वार थे, स व्यसन दो छोड ॥ सात भय सब दूर निवारो, गो अविचल ठोर रे ॥ इ० ॥

॥ ७ ॥ आठम कहे छोडो आठु मदके, आठु प्रवचन आराध ॥ आठु कर्म सब दूर निवारी, राखो चित्त समाध रे ॥ इ० ॥ ८ ॥ नौमी कहे नव तत्त्वनिरणो, करजो भिन्नभिन्न शोध ॥ नवनियाणा दूर करीजें, नव समकित करो बोध रे ॥ इ० ॥ ९ ॥ दशमी कहे दश भेद धर्मका, पालजो आणी प्रेम ॥ दश प्रकारें मुंड थयासू, पासो अविचल खेम रे ॥ इ० ॥ १० ॥ इग्यारस कहे इग्यारे बोलको, जाणपणो करो सार ॥ ग्यारे पडिमा शुध्द आराधो, सीखो अग इग्यार रे ॥ इ० ॥ ११ ॥ बारस कहे बारा व्रत पालो, भावना भावो बार ॥ बारा प्रकारें तप करीने, करो करमकी छार रे ॥ इ० ॥ १२ ॥ तेरस कहे तेरे किरियाको, निरणो करो नर नार ॥ छोडवा जोग सो छोड दीजियें, पामो केवल सार रे ॥ इ० ॥ १३ ॥ चउदस कहे चउदे गुणठाणा, राखो चढता भाव ॥ चउदा भेद कह्या जीवका प्रभुजी, तिणको करो बचाव रे ॥ इ० ॥ १४ ॥ पूनम कहे पूनम ज्यु निर्मल, पन्ना भेद सिद्ध जाण ॥ जिणने करो नित नित उठ वदन, पावो पद निर्वाण रे ॥ इ० ॥ १५ ॥ अमावस्या कहे कर्मराहुसु, जे वश पडिया जीव ॥ पन्ना परमाधामी जिणने, देवे दु.ख अतीव रे ॥ इ० ॥ १६ ॥ पन्ना तिथिको ज्ञान विचारी, जो कोइ होय हुसियार ॥ इणभवमें पासी सुख सपत, परभव जय जयकार रे ॥ इ० ॥ १७ ॥ मधुमास उगणीसें अठ-तिस, पेठ आवोरी मझार ॥ तिरोकरिख ए जोडी जुगतिसु, करवा परउपगार रे ॥ इ० ॥ १८ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ पचदश सातवार अध्यात्म स्वाध्याय प्रारभः ॥

॥ देशी माचका दोहाकी ॥ रविवार कहे ज्ञान रवि जिम, जगमें परगट भाण ॥ मिथ्या भर्म हरणनो कारक, सीखो हितगुण जाण रे ॥ शुद्ध सात वारकी, कहेणी परमाणे सुगुणा चालजो ॥ १ ॥

चंद्रवार कहे चंद्र ज्यों शीतल, राखो सम परिणाम ॥ चार कषाय को ताप निवारो, लहेशो शिवसुख धाम रें ॥ शु० ॥ २॥ मंगलवार कहे मंगल चारू, उत्तम सरणा चार ॥ धर्मको मंगल हिरदे धारो, जिम होवे भवपार रे ॥ शु० ३ ॥ बुधवार कहे बुद्धि पाय के, खरचो धर्म मझार ॥ पाप घटावो पुण्य वधावो, बुद्धिको एहिज सार रे ॥ शु० ॥ ४ ॥ गुरुवार कहे गुरुपद सेवो, जो गुरुपदकी चहाय ॥ गुरुविन जुगति मुगति न पावे, सेवो श्रीगुरु पाय रे ॥ शु० ॥ ५ ॥ शुक्रवार कहे सुकृत कर ले, ज्ञान ध्यान मनरंग ॥ तप जप साधो धर्म आराधो, करो कर्मसुं जंग रे ॥ शु० ॥ ६ ॥ स्थावर कहे थिर मन तन करिने, थापो समकित नीव ॥ पाप पराल ढाल दे छिनमें, लहेशो सुख अतीव रे ॥ शु० ॥ ७ ॥ सातुंवार वार वार चेतावे, वारेई सब कर्म ॥ वार वार नहिं आवे जगतमें, ए जिन आगम ° रे ॥ शु० ॥ ८ ॥ उगणिसें अडति चैतकी पूनम, पेठ आंबोरीमांय ॥ तिलोकरिख कहे गुरुसुपसायें, आसी भविजन दाय रे ॥ शु० ॥ ९ ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ अथ षोडश अध्यात्मवाग स्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ देशी केरबामें छे ॥ बाग बगीचा देखण किम भटके, कर्मबंधण दुःखकार ॥ भलां रे ज्ञानी ॥ क० ॥१॥ धर्म बाग बनाय ले , तेरी कायामें गुलजार ॥ भ० ॥ ते० ॥ ध० ॥ २ ॥ मनका रे माली कर ले स्याणा, उपशम सरोवर सार ॥ भ० ॥ उ० ॥ ध० ॥ ३ ॥ ज्ञानको पाणी निर्मल शीतल, धीरजकी धरती सुधार ॥ भ० ॥ धी० ॥ ध० ॥ ४ ॥ कपट लोभकी ड बूर दे, पावडी सं समार ॥ भ० ॥ पा० ॥ ध० ॥ ५ ॥ ठूंड उड़ा दो क्रोध मानका, क्षमा कुदाली करो त्यार ॥ भ० ॥ क्ष० ॥ ध० ॥ ६ ॥ किरियाकी क्यारी सात क्रोधका, समझकी धोरण धार ॥ भ० ॥ स० ॥ ध० ॥ ७ ॥

निश्चय व्यवहार का बैल जोत दे, उपदेश चडस भर वार ॥ भ० ॥ उ० ॥ ध० ॥ ८ ॥ थिर भावको थालो बाधी, जतन सुपुण्यकी पाल सुधार ॥ भ० ॥ ज० ॥ ध० ॥ ९ ॥ सवरको वगलो करो मनमोहन, सातू नय खिडकी विचार ॥ भ० ॥ सा० ॥ ध० ॥ १० ॥ करुणाकी खुरची मेज मयाका, शुभ मन पखो कर डार ॥ भ० ॥ शु० ॥ ध० ॥ ११ ॥ सरलभावकी सडक बणाय लो, विनयकी वेलू तु संचार रे ॥ भ० ॥ वि० ॥ ध०॥ १२ ॥ वाडका कोट विवेककी फाटक, प्रेमकी महेंदी परचार ॥ भ० ॥ प्रे० ॥ ध० ॥ १३ ॥ शीयलकी केलि सतोष सीताफल, जयणाका जाम विचार ॥ भ० ॥ ज० ॥ ध० ॥ १४ ॥ दृष्टात लिंबू चोज आमली, दानको वड विस्तार ॥ भ० ॥ दा० ॥ ध० ॥ १५ ॥ आनम अनुभव करो अवराई, गुण गुल विविध प्रकार ॥ भ० ॥ गु० ॥ ध० ॥ १६ ॥ विनयकी वनराई छाई घटमें, सुकृत फल श्रेयकार ॥ भ० ॥ सु० ॥ ध० ॥ १७ ॥ कीर्त्ति सुगध अधिक महकावे, भविजन भ्रमर गुजार ॥ भ० ॥ भ० ॥ ध० ॥ १८ ॥ उगणिसें अडतिस चैत शुक्ल पक्ष, पचमी तिथि रविवार ॥ भ० ॥ प० ॥ ध० ॥ १९ ॥ अहमदनगरसु विहार करी आया, सिद्धेश्वर वाग मझार ॥ भ० ॥ सि० ॥ ध० ॥ २० ॥ तिलोकरिख कहे धर्म वागमे, खेलजो भवि नर नार ॥ भ० ॥ खे० ॥ ध० ॥ २१ ॥ ज्ञानकी गोठ ने सुखडी तप जप, चार तीरथ परिवार ॥ भ० ॥ चा० ॥ ध० ॥ २२ ॥ इणभव रोग सोग नहि आवे, परभव जय जय कार ॥ भ० ॥ प० ॥ ध० ॥ २३ ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ मनदग अनुभव सु नशग्या स्वाध्याय प्रारभ ॥

॥ देशी गिणगोरका गीतकी॥ऐसी सुखसेजमे सोवजो, मानो मानो रे चतुर आतम ज्ञानी ॥ ज्ञान शीयल तप भावना, ए चारु पाया चग ज्ञानी ॥ उपशम सवर ऊपला काइ, तप जपकी डस रग ज्ञानी ॥ ऐ०

॥ १ ॥ वाण बणावजो ज्ञानको जी कांइ, संतोष सेज रसाल ज्ञानी ॥ संजम दुलाई तुम पाथरो कांइ, विनय उसीसो लाल ज्ञानी ॥ ऐ० ॥ २ ॥ समकित गालमशुरीया जी कांइ, विंजणो ल्यो व्रत बारे ज्ञानी ॥ क्षमाको खाट पछेवड़ो कांइ, लेश्या उज्ज्वल सुविचार ज्ञानी ॥ ऐ० ॥ ३ ॥ धरम सरिख भली ओढजो जी कांइ, पड़पाया शुभध्यान ज्ञानी ॥ दश पच्चक्खाणकी दावणी जी कांइ, सरधानां बंधणां जाण ज्ञानी ॥ ऐ० ॥ ४ ॥ ज्ञान दीपक रुचि चंद्रवो जी कांइ, किरिया कसीदो कढ़ावो ज्ञानी ॥ मच्छरदानी धीरज तणी जी कांइ, मिथ्या मच्छर भगावो ज्ञानी ॥ ऐ० ॥ ५ ॥ काया नगर मनमहेलमें जी कांइ, ऐसी सेज बिछावो ज्ञानी ॥ विरति किवाड़ लगावजो जी कांइ, जिनशिक्षा सांकल लगावो ज्ञानी ॥ ऐ० ॥ ६ ॥ समता नींदमें सोवजो जी कांइ, कुमति नार भगावो ज्ञानी ॥ जो चाहो निशदिन संपदा जी कांइ सुमति सुहागण चहावो ज्ञानी ॥ ऐ० ॥ ७ ॥ ऐसी सुखसेजमें पोढिनेजी कांइ, पाया छे सुख अनंत ज्ञानी ॥ तिलोकरिख कहे ते सही जी कांइ, सो होसी भगवंत ज्ञानी ॥ ऐ० ॥ ८ ॥ इति ॥ १७ ॥

॥ श्री अध्यात्मभवानी स्वध्याय प्रारंभः ॥

॥ देशी भेरूजीका गीतरी ॥ या दया भवानी माता रे, देवे श्री संघने शाता रे ॥ या समता देवल छाजे रे, या विनय सिंहासण राजे ॥ १ ॥ यो सीयलको लेंगो जाणो रे, लज्जाको चीर वखाणो ॥ या क्रियाकंचुकी सोहे रे, शिर तत्वतिलक मन मोहे ॥ २ ॥ करुणाका कुंडल झलके रे, संवर सुख अधिको मलके ॥ तीन गुप्ति त्रिशूल ज्युं सोवे रे, या शत्रु सर्व नमावे ॥ ३ ॥ मूलथानक श्रीजिन पासें रे, स्थापना निजहिरदे भासे रे ॥ जात्री चउ तीरथ आवे रे, सो निरख निरख हरखावे ॥ ४ ॥ नियमव्रत नैवेद्य सो चढ़ावे रे,

तो जात्रा सफल कहावे ॥ रिद्ध सिद्ध सुख सपत देवे रे, जो इणविध माता सेवे ॥ ५ ॥ उगणीशें अडतिस जाणो रे, वैशाख पूनम परमाणो ॥ गाम वामणी दक्षिणमाइ रे, तिलोकारिख दयामाई गाइ ॥ ६ ॥

॥ अथ श्रीदसोट्टण कविता लिख्यते ॥

॥ श्रीवर्द्धमान जिनेश्वर केरो, कहु दसोटण भाव भलेरो ॥ सिद्धारथ नृपकुलमें आया, त्रिशलादे राणीजी जाया ॥ १ ॥ चैत्र शुदि तेरस तिथि जाया, छप्पनकुमारी मगल गाया ॥ इंद्र मिल कर मोच्छव कीयो, वीर जिनेश्वर नामज दीयो ॥ २ ॥ दिन उगा नृप मोच्छव कीना, जाचकलोक अजाचक कीना ॥ त्रीजे दिन चद्र सूरज दिखावे, छठ्ठे दिन सो रात जगावे ॥ ३ ॥ ग्यारमे दिन अशुचि टाले, बारमे दिन भोजन उजमाले ॥ भोजनशाला अधिक विशाला, चित्रविचित्र सुरग रसाला ॥ ४ ॥ जरी जरतार चद्रवा सोहे, मुक्ताफल जुमणु मन मोहे ॥ वनात कनात मखमलकी चगी, सोहत सुदर नव नव रगी ॥ ५ ॥ बाजोठ चौकी पाट मगाया, थाल सुवर्ण रूपाकी लाया ॥ रतनकटोरा बाटकी छाल्या, माहे भोजन बहुविध घाल्या ॥ ६ ॥ आया क्षत्री राजा ताजा, अति आडबर बाजा गाजा ॥ केइक हाथी केइक घोडे, पालखी आगल पैदल दोडे ॥ ॥ ७ ॥ केइ दुदाला झाक झमाली, दीसे केश भमरा जिम काली ॥ जिमणने आवे उजमाला, केइक सुसरा ने केइक साला ॥ ८ ॥ केइ जमाई माहाजोधाला, नव नव भूषण रूप रसाला ॥ केईक भाई साढू भासा, मामा दोयती व्याही खासा ॥ ९ ॥ छत्तिस कुलका नोत्या क्षत्री, बुलवाया देइ मगलपत्री ॥ वर्जी मानने अणनोत्या आवे, तेडया तो कहो क्यू नहिं आवे ॥ १० ॥ जीमण खारो किणनें लागे, ले लोटीने आगे भागे ॥ सरसा भोजन आदर सारो, कोण निर्भागी करे नकारो ॥ ११ ॥ जीमण आया अधिक उमाया,

पंक्तिबंध बैठा सब डाह्या ॥ गंगोदक कंचनकी झारी, बैठा जिमण सब हुशियारी ॥ १२ ॥ जब लग भोजन होवे त्यारी, मेवा परोसे सुंदर नारी ॥ पहली किसमिस द्राख मनुक्का, केला कतली देश कोकनका ॥ १३ ॥ पिंडखजूर गुठली करी न्यारी, काजू कली बदाम सुप्यारी ॥ चिरोंजी अंजीर पिस्ता भलेरा, अंगूर दाड़ि ोपरा गहेरा ॥ १४ ॥ चटका करके सक्कर मिलाइ, भर भर सुड़ा मेले उमाइ ॥ रूपपाट सोवनकी थाली, पकान्नकी मनवारां चाली ॥ १५ ॥ लाडु सिंह केसरिया नीका, मोतिचूर चोगणीका नी ॥ चुंटिया चूरमा लाडु दालका, मगद मनोहर राय सालका ॥ १६ ॥ बेसण और बाटीका जाणो, मूंग दालका सरस बखाणो ॥ क्कर चासणी उड़द दालका, जुवार मक्की सो ततकालका ॥ १७ ॥ कंसार किटीयां जुवार धाणीका, बत्तीसा संधाणा साणीका ॥ चावल और ओलाका भारी, राजठारा तिल्लिका जहारी ॥ १८ ॥ सूंठ गुंदका और पिस्ताई, बदाम चिरोंजी सक्कर मिलाई ॥ इ दि बावन्न प्रकारा, कब लग नाम कहुं में न्यारा ॥ १९ ॥ दूधपेड़ा दाका ताजा, घी सुकोमल खांड ने ाजा ॥ चरपरा गांठिया सक्कर पारा, दुध राबड़ी मांही छुहारा ॥ २० ॥ बरफी केसरिया पिस्ताई, कीनी मेवा अधिक मिलाई ॥ सरस जलेबी गरमा गरमी, छोड़े नहिं कोइ शरमा शरमी ॥ २१ ॥ कलाकंदमें मेवा झाजा, होय खुशी देखी सब राजा ॥ असल चिरोंजी सेव सिंगोड़ा, छ ां भर भर मेली गोड़ां ॥ २२ ॥ सूत्तरफेणी और चिरोंजी दाणा, सांपसाई की अधिक रसाना ॥ अकबरी और अदरकभाणा, नुक्तिदाणा मध्य दरसाणा ॥ २३ ॥ घेवर सुरसा खांडका फीका, मुरकी पतासा पेठा नी ॥ दहिंथड़ा और सूंठ ने खुर्मा, घी स मेवाका चुर्मा ॥ २४ ॥ दराबो दोठा पूरी कचोरी, मालपु और सेवड़ी सोरी

तो जात्रा सफल कहावे ॥ रिद्ध सिद्ध सुख सपत देवे रे, जो इणविध माता सेवे ॥ ५ ॥ उगणीशें अडतिस जाणो रे, वैशाख पूनम परमाणो ॥ गाम वामणी दक्षिणमाइ रे, तिलोकरिख दयामाई गाइ ॥ ६ ॥

॥ अथ श्रीदसोट्टण कविता लिख्यते ॥

॥ श्रीवर्द्धमान जिनेश्वर केरो, कहु दसोटण भाव भलेरो ॥ सिद्धारथ नृपकुलमें आया, त्रिशलादे राणीजी जाया ॥ १ ॥ चैत्र शुदि तेरस तिथि जाया, छप्पनकुमारी मगल गाया ॥ इंद्र मिल कर मोच्छव कीयो, वीर जिनेश्वर नामज दीयो ॥ २ ॥ दिन उगा नृप मोच्छव कीना, जाचकलोक अजाचक चीना ॥ त्रीजे दिन चद्र सूरज दिखावे, छठ्ठे दिन सो रात जगावे ॥ ३ ॥ ग्यारमे दिन अशुचि टाले, बारमे दिन भोजन उजमाले ॥ भोजनशाला अधिक विशाला, चित्रविचित्र सुरग रसाला ॥ ४ ॥ जरी जरतार चद्रवा सोहे, मुक्ताफल जुमणु मन मोहे ॥ वनात कनात मखमलकी चगी, सोहत सुदर नव नव रगी ॥ ५ ॥ बाजोठ चौकी पाट मगाया, थाल सुवर्ण रूपाकी लाया ॥ रतनकटोरा बाटकी छाल्या, माहे भोजन बहुविध घाल्या ॥ ६ ॥ आया क्षत्री राजा ताजा, अति आडबर बाजा गाजा ॥ केइक हाथी केइक घोडे, पालखी आगल पैदल दोडे ॥ ॥ ७ ॥ केइ बुदाला झाक झमाली, दीसे केश भमरा जिम काली ॥ जिमणने आवे उजमाला, केइक सुसरा ने केइक साला ॥ ८ ॥ केइ जमाई माहाजोधाला, नव नव भूषण रूप रसाला ॥ केईक भाई साढू भासा, मामा दोयती ब्याही खासा ॥ ९ ॥ छत्तिस कुलका नोत्या क्षत्री, बुलवाया देइ मगलपत्री ॥ वर्जी मानने अणनोत्या आवे, तेडथा तो कहो क्यू नहिं आवे ॥ १० ॥ जीमण खारो किणनें लागे, ले लोटीने आगे भागे ॥ सरसा भोजन आदर सारो, कोण निर्भागी करे नकारो ॥ ११ ॥ जीमण आया अधिक उमाया,

पंक्तिबंध बैठा सब डाह्या ॥ गंगोदक ˙चनकी झारी, बैठा जिम सब हुशियारी ॥ १२ ॥ जब लग भोजन होवे त्यारी, मेवा परोसे सुंदर नारी ॥ पहली किसमिस द्राख मनुक्का, केला कतली देश कोकनका ॥ १३ ॥ पिंडखजूर गुठली करी न्यारी, काजू कली बदाम सुप्यारी ॥ चिरोंजी अंजीर पिस्ता भलेरा, अंगूर दाडि खोपरा गहेरा ॥ १४ ॥ चटका करकें सक्कर मिलाइ, भर भर मुट्ठा मेले उमाइ ॥ रूपपाट सोवनकी थाली, पकान्नकी मनवारां चाली ॥ १५ ॥ लाडु सिंह केसरिया नीका, मोतिचूर चोगणीका नी ॥ चुंटिया चूरमा लाडु दालका, मगद मनोहर राय लका ॥ १६ ॥ बेसण और बाटीका जाणो, मूंग दालका सरस बखाणो ॥ क्कर चासणी उड़द दालका, जुवार मक्की सो ततकालका ॥ १७ ॥ कंसार किटीयां जुवार धाणीका, बत्तीसा संधाणा साणीका ॥ चावल और ओलाका भारी, राजठारा तिल्लिका जहारी ॥ १८ ॥ सूंठ गुंदका और पिस्ताई, बदाम चिरोंजी सक्कर मिलाई ॥ इ दि बावन्न प्रकारा, कब लग नाम कहुं में न्यारा ॥ १९ ॥ दूधपेड़ा ˙दाका ताजा, घी सुकोमल खांड ने जा ॥ चरपरा गांठिया सक्कर पारा, दुध राबड़ी मांही छुहारा ॥ २० ॥ बरफी केसरिया पिस्ताई, कीनी मेवा अधिक मिलाई ॥ सरस जलेबी गरमा गरमी, छोड़े नहिं कोइ शरमा शरमी ॥ २१ ॥ कलाकंदमें मेवा झाजा, होय खुशी देखी सब राजा ॥ असल चिरोंजी सेव सिंगोडा, छ ां भर भर मेली गोड़ां ॥ २२ ॥ सूत्तरफेणी और चिरोंजी दाणा, सांपसाई की अधिक रसाना ॥ अकबरी और अदरकभाणा, मुक्तिदाणा मध्य दरसाणा ॥ २३ ॥ घेवर सुरसा खांडका फीका, मुरकी पतासा पेठा नीका ॥ दहिंथड़ा और सूंठ ने खुर्मा, घी स मेवाका चुर्मा ॥ २४ ॥ दराबो दोठा पूरी कचोरी, मालपु और सेवड़ी सोरी

॥ सीरो साबुणी मीठी सुवाली, तिलकी पापडी सक्कर घाली ॥ ॥ २५ ॥ कुंडला पुडला और घणाई, कहेता ढाल अधिक वधि जाई ॥ मुगफलीका लोट भलेरा, मोण देइने कीना गहेरा ॥ २६ ॥ अद्रसा गुजा गणी धामे, लूची लापसी चाद्सइच्छामें ॥ गुलधाणी गुद्पाक अमका, दूध ओटाई मेल्या थका ॥ २७ ॥ खारी सेत्र और वक्का दाली, गुलगुला वडा भुजिया सुविशाली ॥ दहीकी जावणी मेली आई, खाटा मीठाको मेल सदाई ॥ २८ ॥ आव फलवती साख आमकी, जाबु निंबु कलली जामकी ॥ सीताफल रामफल खडबूजा, एरडकाकडी और तर्बूजा ॥ २९ ॥ खिरणी चकोत अरु देशी केली, जबीर बिजोरा अकरोट मेली ॥ फूट काचरा काचरी न्यारी, फणस रतालु तलमा त्यारी ॥ ३० ॥ कालो पोऽाकी साकी गाठा, काट छील कर मेल्या साठा ॥ टिंबरू करोंदा पाका अलेली, सरस खजूर धामण्या मेली ॥ ३१ ॥ कत्रीट आबली पेमली बोरा, श्रीफल काचा मीठा घणेरा ॥ गुदा फुदा रायण आदी, नानाविध फलवात जाखादी ॥ ३२ ॥ अब भोजन की भई तय्यारी, कछु एक नाम सुणो नर नारी ॥ अतलस गादी बाजोठ सुरगी, थाल सुवर्ण हीरा जडी चंगी ॥ ३३ ॥ रतन कचोला नानी कटोरी, माजि धोय पूछी करि कोरी ॥ गहु मेंदाकी रोटी धोली, मीठी रोटी पूरणपोली ॥ ३४ ॥ काठी कनककी रो ़ी छोटी, दुपडी सतपुडी साठाकी मोटी ॥ वाटी वाफला फलका गोला, रेलमालुचा दशमी औला ॥ ३५ ॥ चरपरी पूरण रोटी खीरकी, गुदकी रोटी विना नीरकी ॥ पोटा वामा कोरमाको पूडी, मुग मोठ हरवरा की रूडी ॥ ३६ ॥ लूण मिरच भर गरम मसाला, खाखरा तालमा रोटी रसाला ॥ फीका मीठा चोखा सुगधी, भात केसरिया अधिक सुगधी ॥ ३७ ॥ राम खीचडी मेवाकी साधी, मुग तुवर मिलवा केई राधी ॥ दुधरावडी थूली ढीली, काठी थूली जावरीगी

ढीली ॥ ३८ ॥ घृतगायको नवो नपाई, घिलोडी मुख आडि नमाई ॥ ल्यो ल्यो करता मुंढा थाके, कुण जोरावर जो फिर हांके ॥३९॥ सक्कर बूरो गोल न मिशरी, काकव मेलन रंचज बिसरी ॥ सेव खीच और खीर बणाई, खिचडो घुघरी राब सवाई ॥ ४० ॥ खीचीया पापड मुंग उड़द्का, चणा बटला रुयर विधविधका ॥ सेक्या तालिया पतला मोटा, थालीपीठ बाजरी मोटा ॥ ४१ ॥ मक्की मालक गुनी जब जाणी, रालोबरटी कुलथ बखाणी ॥ जालरो तिवड़ो सामो जाणो, कोदरा बरटी रोट बखाणो ॥४२॥ कर चतुराई भरया मसाला, धान्य चोवीसकी जिनस रसाला ॥ रसोइदार केइ देश देशका, अनेक रसोइ बहोत भेदका ॥४३॥ मिरची पकोड़ी चरपरी भावे, तलण वड़ी बद्दा अरबि आवे ॥ दाल मुंग और मोठ मसुरकी, उड़द् चणा बटला बिध तुवरकी ॥ ४४ ॥ पतली काठी सीस बांतलीया, मसाला नानाविध भेलिया ॥ कढी छाछ अमचूरकी जाणो, आंवला भाजीकी पण मानो ॥ ४५ ॥ बेलां डबका रेलमाचूरकी, अमटी अमरस्यो भाजी मुरकी ॥ बड़ी झोलकी और कोरडी, निपजायो अति चतुर गोरडी ॥ ४६ ॥ द्राख बड़ी भाजीको रायतो, अमल-पाणी बघार चायतो ॥ ऊंनी छाछ वघारी भारी, लूण मिरच राई छमकारी ॥ ४७ ॥ दहिको सीखरण मेथी दाणा, सक्कर सामल अमल बाणा ॥ खारावड़ी छाछवड़ी भलेरी, पेडा वड़ी और चिणी बहुतेरी ॥ ४८ ॥ पापड़वड़ी खीचावड़ी जाणो, पतला पतोड़की अधिक रसाणो ॥ पाठवड़ी पतोड़ कुड़लाई, रसो ठावो दक्षिण मांही ॥ ४९ ॥ अमृत्यो रसको छमकार्यो, मुरंबो अंबाको सूधार्यो ॥ करपटा नीला चणा करेला, टींडोरी और काचा केला ॥ ५० ॥ नीलां बेर केर खरबूजा, फूट काकड़ी फोग तरबूजा ॥ कलिंगड़ा और गिलकी तरोई, बंगा काचरी सुहिमातोई ॥ ५१ ॥ भिंडा झिंडा कोठकी कोडा, खेलरा टिंडसी करमदा औडा ॥ कोलां

चकीआल तुबडा, सूरजणा काचरा और झूमडा ॥ ५२ ॥ वालोल फळी चवलाकी भारी, गवारफली सागरी छमकारी ॥ कमलगट्टा बैंगण रताळु, सकरकद् मूला पिंडाळु ॥ ५३ ॥ सुवो वाथलो खाटी भाजी, मेथी चणा वथुवाकी ताजी ॥ अमलमूला और चंदलोई, पालको ढिमरो पोचो जोई ॥ ५४ ॥ अवाडी करडी अजमाकी, रालरो लुण्यो पुवाड समाकी ॥ घोड्या घोल पोकली जाणो, चिपाडी ठाक चुका करिमाणो ॥ ५५ ॥ फादिसेंपा और परजणकी, सरूखरुडवा और सिंधवणकी ॥ चिलरी राई राजगरारी, करजरो और हेसरवारी ॥ ५६ ॥ चणा छोल वाहिगकी भाजी, जीमे लोक झडा झड राजी ॥ कूबी सूबी और घणेरी, कहा लग नाम कहु में हेरी ॥ ५७ ॥ लोंजी आव आवली केरी, गरम मसाले घुगारी गहेरी ॥ चटणी कोथमीरकी जाणो, कविट आमकी अधिक रसाणो ॥ ५८ ॥ श्रीफल तिल्ली लूण मिरचकी, हवडीरोड मासरसुचिंचकी ॥ गरम मसालाकी केइ चटणी, भात भातकी वटणी छठणी ॥ ५९ ॥ अथाणो वली आम वखाणो, लिंबु मिरची आदी जाणो ॥ वासोढा और भिंडी तरोइ, गिलकी वालोल फलीकी जोई ॥ ६० ॥ चवला घटला मेथी दाणाको, करमदा खारक कैर चणाको ॥ गवारफली सुरजणाकी जाणो, भात चौरासी अधिक रसाणो ॥ ६१ ॥ पुडिया भर भर नगे मेले, जिमणवाला लेता ठेले ॥ बालक बूढा तरुणा रोगी, घणी रसाइ सो सबजोगी ॥ ६२ ॥ नाम न आवे पूरा जिणसू, थोडिक रचना कहि में तिणसू ॥ जीमे सघला होंसें होंसें, किंचित मात्र कोई न रोसे ॥ ६३ ॥ हम न पीरसी कोई न बोले, रह्यो नहिं कोई भाले भोले ॥ जीमता जीमता थाक्या पूरा, एक कवो लेवण नहिं सूरा ॥ ६४ ॥ सघला बोले नाजी नांजी, कोई न बोले मेलो हांजी ॥ पीरसणवाला अधिक मनावे, जीमण

वाला करडा थावे ॥ ६५ ॥ मेले शुभ सुगंधिक पाणी, हाथ धोया सब हट अधिकाणी ॥ हलवे हलवे पूंठे पूंठे, गोड़े हाथ देईने ऊठे ॥ ६६ ॥ पेट भराणां तंग मतंगा, सहु अघाणा छोड उमंगा ॥ सघला हलवे हलवे चाले, उतावला फिर कोइ न हाले ॥ ६७ ॥ बोले धीरे धीरे चालो, भोजन जिम तिन बैठा थालो ॥ एसी रीतें चल कर आया, जाजम गादी तकिया बिछाया ॥ ६८ ॥ तीन अहारको क्रियो बखाणो, मुखशोधन मुखवास सुहाणो ॥ जायपत्री और लौंग सुपारी, दालचिणी इलायची प्यारी ॥ ६९ ॥ काली मिरच सूंठ सवादी, कबाबचीणी पीपर हरे व्याधि ॥ कपूर सुवासिक कत्थो चूनो, नागरवलीको दल दूनो ॥ ७० ॥ बीड़ो वाल कें देवे आई, लेवे सघला चित्त हरखाई ॥ लिंडीपीपर सरसो अजमो, चूरण सवादी आहार हजमो ॥ ७१ ॥ पहेराई फूलनकी माला, देवे पचरंगी जरी दुसाला ॥ केइने दुपट्टावर जोड़ी, केइने चीरा पाग पिछोड़ी ॥ ७२ ॥ पंच पोशाक पेरावे चंगी, जामो अंगरखी वर पचरंगी ॥ दीवि मंदिल बालाबंदी, देखत तन मन होय आणंदी ॥ ७३ ॥ केइने कंठी हारज दीना, केइने कुंडल अधिक नवीना ॥ बाजुबंध अंगूठी चंगी, सिर सिरपेच दीवी मनरंगी ॥ ७४ ॥ हाथी घोड़ा रथ पालखी, केइने दीना गाम मालकी ॥ यथायोग सबने सन्माने, द्वादशमे दिन महोत्सव ठाने ॥ ७५ ॥ सिद्धा-रथ नृप सहुने बोले, कुंवर नाम थापणने खोले ॥ जिण दिन राणी कूखें आया, तिण दिनथी दल बल सवाया ॥ ७६ ॥ दिन दिन वृद्धि कारण नो, वर्द्धमान कुंवर इम ठाणो ॥ सहु सुणी हरखाणा गोती, नाम यथागुण कुंडल मोती ॥ ७७ ॥ घर घर मंगलमाल बंधावे, गोरडियां मिल मंगल गावे ॥ तिड़ाकिड़ तिड़ाकिड़ त्रांसां बाजे, धिं धिं धिं धिं नौबत गाजे ॥ ७८ ॥ दों दों धप मप मादल रंगी, कुण कुण कुण कुण करे सारंगी ॥ झालर बाजे झण झण झण झण,

घुघरी घमके खग खण खण खण ॥ ७९ ॥ तुतुनो करे तुन तुन तुन तुन, करतालो करे छुन छुन छुन छुन ॥ घणणण घटानाद उच्चारे, नरसिंगो धु धु धु धुकारे ॥ ८० ॥ धनिकट धनिकट धजे नगारा, इत्यादिक गुणपच्चास प्रकारा ॥ नाचे पातर सभा मझारी, दियो दसोट्टण हर्ष अपारी ॥ ८१ ॥ तिलोकरिख कहे प्रभु पुण्य भारी, नाम लिया हरखे नर नारी ॥ जो कोइ दसोट्टण को गावे, खावे नहिं तो मन हरखावे ॥ ८२ ॥ श्रीजिनराज की कथा विस्तारे, करे अनुमोदन प्रेम अपारे ॥ तो पण निर्जरा पुण्य है भारी, इम जाणी सुणजो नर नारी ॥ ८३ ॥ सवत उगणीसें सेंतिस सालें, अहमदनगर दाक्षिण वरसाले ॥ भाद्रव कृष्ण चवदस तिथि जाणो, वार शुक्र शिवजोग वखाणो ॥ ८४ ॥ श्रीवर्द्धमान दसोट्टण केरी, कीनी कविता एह भलेरी ॥ श्रीजिन पुण्य प्रशसा जाणो, सुण कर आरभ नहिं बधाणो ॥ ८५ ॥ एसा भोजन वार अनती, कीना पण तृष्णा न बुझती ॥ इणमे शका रच न मानो, केवलज्ञानी कहि है वाणो ॥ ८६ ॥ इम जाणी तप जप आदरजो, चितमें समता भवकी करजो ॥ अनुभव ज्ञानी दिशारस आसो, सदा तृप्त रहेशो पद पासो ॥ ८७ ॥ अधिको ओछो जोड्यो कोइ, मिच्छामि दुक्कड तस होइ ॥ सूत्र बचन प्रमाण सदाइ, पाळे सो धन धन जगमाहीं ॥ ८८ ॥ इति श्री माहावीर स्वामीनी दसोट्टणनी स्वाध्याय समाप्त ॥

॥ अथ माहावीर स्वामिनु चोढालियु लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ सासणनायक सुरतरु, वर्द्धमान सुखकद ॥ प्रणमी कहु तिणनीचरी, सुणता परमानद ॥ १ ॥ समकित आई जिहाथकी, भव सत्तावीश मूळ ॥ पच कल्याणिक वरणवु, आगम वयण कबूल ॥ २ ॥

॥ ढाल पहली ॥

॥ धर्म पावे कोइ पुण्यवंत पावे ॥ ए देशी ॥ जय जय शासण स्वामी दयाला, परमपति उपगारी जी ॥ नयसार प्रथम भवमांही, उपशम समकितधारी जी ॥ ज० ॥ १ ॥ तिहांथी सुरभव थिति य करिने, थया भरतजीका नंदा जी ॥ मिरिच नाम कहाणो तिण भव, संजम मंद स्वछंदो जी ॥ ज० ॥ २ ॥ तापस व्रत पाली भव चौथे, लीनो सुर अवतारो जी ॥ तिहांथी ता निर्जरभव, वली तापस व्रतधारो जी ॥ ज० ॥ ३ ॥ तिहांथी अंबर तापस किरिया, वली गया देव विमाणे जी ॥ तिहांथी स सुरपद पाया, तापसनाकने ठाणे जी ॥ ज० ॥ ४ ॥ ए ोला भव म्होटा करीने, रुलीयो बहुसंसारो जी ॥ विश्वभूति भवें करे नियाणो, तिहांथी सुर अवतारो जी ॥ ज० ॥ ५ ॥ उगणीशमे भवें हरिपद पाया, नाम त्रिपृष्ठ कहाणो जी ॥ तमी पृथवी निकली तिहांथो, सिंह तणो भव जाणो जी ॥ ज० ॥ ६ ॥ नरक गया तिहांथी कर्मावश, चक्रवर्त्ति पद पाया जी ॥ संजम पाल्यो डि वरस लग, अंते अणसण ठाया जी ॥ ज० ॥ ७ ॥ तिहांथी सातमे स्वर्ग सिधाया, चोविशमा भवमांय जी ॥ हांथी पचिशमा भवमांइ, हुवा नंद महाराय जी ॥ ज० ॥ ८ ॥ संजम ले कर तप आदरियो, मास मास तप ठाया जी ॥ - सठ सहस्र ने लाख इग्यारा, दोसें अधिक दरसाया जी ॥ ० ॥ ९ ॥ वीश बोल सेवन कर वांध्यो, गोत्र तीर्थंकर मो जी ॥ तिहांथी दशमे स्वर्ग सिधाया, वीश सागराथिति ठामो जी ॥ ० ॥ १० ॥ तिहांथी भवथिति क्षय करी स्वामी, मास आषाढ मझारो जी ॥ शुकलपक्ष छठ मध्यनिशामें, फाल्गुणी उत्तरा विचारो जी ॥ ज० ॥ ११ ॥ खत्रीकुंड सिद्धारथ राजा, त्रिशलादे सुजाणो जी ॥ चउदे स्वपना देइने उपना, पुण्य तणे ।

जी ॥ ज० ॥ १२ ॥ चैतशुद्ध तेरश अध रयणी, जनम्या अतरयामी जी ॥ चोसठ इद्र मिल महोत्सव करकें, मेल गया शिर नामी जी ॥ ज० ॥ १३ ॥ सिद्धारथ नृप महोत्सव कीधो, निज सहु जाति जमाई जी ॥ नाम दियो वर्द्धमान कुमर जी, दिनदिन अधिक वडाइ जी ॥ ज० ॥ १४ ॥ त्रीस वरस ग्रहवासमें बसिया, पुत्री एकज जाणो जी ॥ मात पिता पहोता सुरलोके, अभिग्रह ताम पूराणो जी ॥ ज० ॥ १५ ॥ वरसीदान दियो नित्य साहिब, भाव सजमका आया जी ॥ तिलोकरिख कहे पहेली ढालमें, भव सत्ताविश दरसाया जी ॥ ज० ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मागशिरवदि दशमी तिथि, छठ तपस्या प्रभु धार ॥ एकाकी साहसपणे लीनो सजमभार ॥ १ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ देशी हमीरियाकी ॥ धन धन त्रिशलानद जी, सिद्धारथ कुलचद ॥ जिनेश्वर ॥ तप तप्या प्रभु आकरो, तोडया कर्मना वृद ॥ जि० ॥ ध० ॥ १ ॥ नव चोमासी तप कीयो एक करी छ मास ॥ जि० ॥ अभिग्रह दूजी छमासीमें, तेरा बोल विमास ॥ जि० ॥ ध० ॥ २ ॥ एकसो पचोतेर दिवशमें, चदनबाला हाथ ॥ जि० ॥ जोग मिल्यो कोसबीमें, पारणो कियो जगनाथ ॥ जि० ॥ ध० ॥ ३ ॥ मास खमण द्वादश कीया, पक्ष बहोंतेर कीध ॥ जि० ॥ आसण त्रिविध प्रकारना, सूत्तरमें सहु विध ॥ जि० ॥ ध० ॥ ४ ॥ अढाइमासी तीनमासी दोय, दोयमासी खट जाण ॥ जि० ॥ देढ मासी वली दो करी, दोसे गुणतीस बेला मान ॥ जि० ॥ ध० ॥ ५ ॥ भद्र माहाभद्र शिवभद्र तपे, सोला दिन इम जोय ॥ जि० ॥ भिक्खुपडिमा अष्टम तणी, कीनी द्वादश सोय ॥ जि० ॥ ध० ॥ ६ ॥ साडी ग्यारा वर्षनी उपरें, पचीस दिन तप धार ॥ जि० ॥

एकं कम साडातीनसें, पारणे तास्था दा र ॥ जि० ॥ ध० ॥ ७ ॥ देश ३ ारज विचारिया, सह्या परिसह कठोर ॥ जि० ॥ कुत्ता लगाया डरामणां, वध बंधण कह्या चोर ॥ जि० ॥ ध० ॥ ८ ॥ श्रवणे खीला खोभीया, पग पर रांधी खीर ॥ जि० ॥ डंक दीयो चंडकोशीये, रह्या अचलगिरि धीर ॥ जि० ॥ ध० ॥ ९ ॥ अभव्यसंग देवता, आंणी दुष्ट परिणाम ॥ जि० ॥ छमास लगें दुः दीयो, राखी ता स्वाम ॥ जि० ॥ ध० ॥ १० ॥ नर सुर तिर्यंचना सहु, सह्या परिसह सर्व ॥ जि० ॥ शम दम उपशम भावशुं, रंच न आण्यो गर्व ॥ जि० ॥ ध० ॥ ११ ॥ चउविहार तपस्या सहु, निद्रा मुहूरत ए ॥ जि० ॥ तिणमांही स्वपनां दश लह्या, गोदूज आसण टेक ॥ जि० ॥ ध० ॥ १२ ॥ धन धीरज प्रभुजी तणी, धन करणी रतूत ॥ जि० ॥ धन कुल जिहां प्रभु जनमिया, धन जाया एहवा पूत ॥ जि० ॥ ध० ॥ १३ ॥ मावडी यो एहवो, दूजो नहिं संसार ॥ जि० ॥ क्षमाशूरा अरिहंतजी, उप सूत्र मझार ॥ जि० ॥ ध० ॥ १४ ॥ करम भरम चकचूरिया, दूजी ढालमझार ॥ जि० ॥ तिलोकरिख कहे धन प्रभु, प्रणमुं वार वार ॥ जि० ॥ ध० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शुक्लदशमी वैशाखनी, दिन ऊगत परमाण ॥ र जिनेमिया, निर्मल केवल ज्ञान ॥ १ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ कर्मसमो नहिं कोइ ॥ ए देशी ॥ जाणी लोककी रचना, खटद्रव्य गुणपरजायो ॥ चौतिस अतिशय पेंतिस वाणी, जग तारक जिनरायो रे ॥ भविका ॥ श्रीजिन पर उपगारी ॥ रवा बहु नर नारी रे ॥ भ० ॥ १ ॥ चौसठ इंद्र आया तिण अवसर, त्रिगडो रच्यो ति वारें ॥ स्फटिक सिंहासन उपर बिराजे, अमृतवेण उच्चारे रे ॥ भ० ॥ २ ॥ मध्य पापापुरिमें तिणवेला, यज्ञ रचाणो छे भारी ॥ बहु पंडित

नो थयो समागम, जावे सुर गगन विहारी रे ॥ भ० ॥ ३ ॥ महिमा देखी मानविशेषें, पचसया परिवारें ॥ इद्रभूति चल आया प्रभुपें, सशय गर्व निवारी रे ॥ भ० ॥ ४ ॥ सजम ले गणधर पद लीनो, अग्निभूति चल आवे ॥ ते पण सशय दुर भयासु, सजमसु चित्त लावे रे ॥ भ० ॥ ५ ॥ इम इग्यारा गणधर रचना, चम्मालिशसें सख्या जाणो ॥ एकण दिनमें लीनी ज्या दीक्षा, गुण रत्नागर खाणो रे ॥ भ० ॥ ६ ॥ तीनसें चौदा पुरवधारक, तेरशें रिख ओहिनाणी ॥ पाचशे मन परयव मुनि जाणो, बोले यथातथ वाणी रे ॥ भ० ॥ ७ ॥ सातशे वैक्रिय लब्धिना धारक, चारसें चर्चावादी ॥ आठशें अनुत्तरविमानें विराज्या, सातसे रिख शिव साधी रे ॥ भ० ॥ ८ ॥ चउदा सहस्र रिख सपदा सारी, ज्येष्ट गौतम गणधारी ॥ चदनबालादिक सहस्र छत्तिसी, थइ रमणी सुविचारी रे ॥ भ० ॥ ९ ॥ एक लाख गुणसठ सहस्र श्रावक, आणदादिक व्रतधारी ॥ अठारा सहस्र तीन लाख श्राविका, सुलसादिक अधिकारी रे ॥ भ० ॥ १० ॥ विचरथा गाम नगर पुर पाटण, तारथा बहु नर नारी ॥ प्रथम चोमासो अस्थिग्राममें, दूजो प्रष्टचपा मझारी रे ॥ भ० ॥ ११ ॥ त्रीजो चपा चतुर्थ सावत्थी, विशाला वाणिय कह्या बारा ॥ चउदा चोमासा राजगृहीमे, मथुरामें खट सारा रे ॥ ॥ भ० ॥ १२ ॥ भद्दलपुरीमें दोय दिपाया आठतीस एम जाणो ॥ एक आलविका एक सावत्थी, एक अनारज थाणो रे ॥ भ० ॥ १३ ॥ तारथा बहु भवियण नर नारी, विचरता श्रीजिनराया ॥ अनुक्रमें आया पावापुरीमें, हस्तिपाल जिहा राया रे ॥ भ० ॥ १४ ॥ कर जोडी प्रभुसु करे अरजी, रथशालाने मझारो ॥ अबके चोमासो इहा करो प्रभुजी, विनति ए अवधारो रे ॥ भ० ॥ १५ ॥ क्षेत्र फरसना जाणी दयानिधि, कीनो चरम चोमासो ॥ धरम दिवाकर धर्म दीपायो, पूरी भविजन आशो रे ॥ भ० ॥ १६ ॥ तिलोकरिख

कहे त्रीजी ढालें, धन धन अंतरयामी ॥ गुण रतन र पर उजागर, वंदुं नित शिर नामी रे ॥ भ० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चोथो मास वरसातनो, पक्ष सातमो ठाण ॥ तेरश धी रातसुं, अणसण धारयो जाण ॥१॥देश अढारना भूपति, छठ पौषध कीध ॥ सोला प्रहर लग देशना, स्वामी निरंतर दीध ॥ ॥ २ ॥ सूत्र विपाकज उचरयो, उत्तराध्ययन तिस ॥ भविजीवां हितकारणें, पूरी एह जगीश ॥ ३ ॥ गौतम हेणी टालवा, जोई अवसर सार ॥ पर उपगारी परमगुरु, शिवसु ना दातार ॥ ॥ ४ ॥ कार्त्तिक वदि अमावस्या, कहे गौतम सुं स्वाम ॥ देवशर्मा विप्र बोधवा, जावो तिणने ठाम ॥ ५ ॥ तहत्ति करी तिहां संचर , पीछें दीन दयाल ॥ जाय त्रिराज्या मोक्षमें, भवफेरा दिया टाल ॥ ६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ क्ष वंत जोय भगवंतनो रे ज्ञान ॥ ए देशी ॥ श्रीजिन शिवपुर संचरया जी, थयो जगमें अंधकार ॥ गौतमस्वामी जाणीयो जी, आरत आइ अपार ॥ जिनेश्वर ॥ हवे मुज कवण आधार ॥ १ ॥ ए टेक ॥ धसकी पड्या धरणी तदा जी, शुद्धि न रही लगार ॥ धिक धिक मोहनी कर्मने जी, देखो कर्मविकार ॥ जि० ॥ ह० ॥ ॥ २ ॥ एक महूरतने आंतरे जी, आइ चेतना ताम ॥ मोहवशें करे झूरणा जी, छोड़ी गया केम स्वाम ॥ जि० ॥ ह० ॥ ३ ॥ अंतेवासी हुं आपको जी, रहेतो जिम तन छाय ॥ समे कियो आंतरोजी, ए तुम जुगतुं नाथ ॥ जि० ॥ ह० ॥४॥ हुं प नहिं जी, जातां मोक्ष मझार ॥ जागा पण नहिं रोकतो जी, किम आयो तुम र ॥ जि० ॥ ह० ॥ ५ ॥ वाल ज्यों आडो न मांडतो जी, भाग न मांगतो ज्ञान ॥ अणख न करतो आपशुं जी, लागो मशुं ६ ॥ जि० ॥ ह० ॥ ६ ॥ कारमो राग होतो नहिं जी, तुमशुं माहरो नाथ

॥ तुम सम माहरे दुसरी जी, होती नहीं कोई आथ ॥ जि० ॥ ह० ॥७॥ एकपखी जे प्रीतडी जी, पार पडे नहिं तेह ॥ आज जाणी में परतिखे जी, इणमें नहिं संदेह ॥ जि० ॥ ह० ॥ ८ ॥ गोयम गोयम नाम ले जी, कुण बोलावसी मोय ॥ कुणकने लेशु आज्ञा जी, चिंता मुझने सोय ॥ जि० ॥ ह० ॥ ९ ॥ जो मुझ मन शंका होती जी, पूछतो सहु तत्काल ॥ भर्म सहु तुमें टालता जी, प्रत्यक्ष दीन दयाल ॥ जि० ॥ ह० ॥१०॥ तुम दरिसण अविलोकता जी, रोमरोम हुलसंत ॥ हवे दरिसण किहा आपना, जी, भयभंजण भगवंत ॥ ॥ जि० ॥ ह० ॥ ११ ॥ तुम वाणी अमृत समी जी, साकर दूध सवाय ॥ हवे किणनी सुणशु गिरा जी, जगतारक जिनराय ॥ जि० ॥ ह० ॥ १२ ॥ वली मनमाही चिंतवे जी, धिक धिक मोहनी कर्म ॥ धन धन श्रीजिनरायने जी, साध्यो आतमधर्म ॥ जि० ॥ ह० ॥१३॥ तुष कर्म परभावथी जी, रुलियो चउगतिमाय ॥ एकाकी तिहु काल में जी, ए जिनशासन राय ॥ जि० ॥ ह० ॥ १४ ॥ वीतराग प्रभुनी दिशा जी, शंका नहिं लगार ॥ तु किम भूल्यो भर्ममें जी, शम दम उपशम धार ॥ जि० ॥ ह० ॥ १५ ॥ ध्यान शुक्ल तिहा ध्याइयो जी, दीना कर्म खपाय ॥ केवलज्ञान प्रगट थयो जी, आरत रहि नहिं काय ॥ जि० ॥ ह० ॥ १६ ॥ केवल महोत्सव सुरपति कीयो जी, निर्वाण पण तिण ठाम ॥ चार तीर्थ मली थापीया जी, पाटें सुधर्मा स्वाम ॥ जि० ॥ ह० ॥ १७ ॥ शिष्य थया जंबु जिसा जी, राते परणीया नार ॥ कोडि नन्याणु त्यागिने जी, दिन ऊगा व्रत धार ॥ जि०॥ ह० ॥१८॥ तीन पाट थया केवली जी, श्रीजिन आगम वयण ॥ जे धारे भवि प्राणीया जी, उघडे अंतर नयण ॥ जि० ॥ ह० ॥ १९ ॥ दिपायो जिन धर्मने जी, पूरव वर्ष हजार ॥ हवे तो सूत्र व्यवहार छे जी, हवणा परम आधार ॥ जिनेश्वर ॥ हवे प्रवचन आधार ॥ ए टेक ॥ २० ॥ इण परमाणे चालसी जी, टालसी आतमदोष ॥ तो भवि प्राणी

जीवड़ा जी, अनुक्रमें जासी मोक्ष ॥ जि० ॥ ह० ॥ २१ व्रत उगणीशें जाणीयें जी, संतिस वर्ष मझार ॥ दीपमाला दिने ए कथ्यो जी, तिलोकरिख सुविचार ॥ जि० ॥ ह० ॥ २२ ॥ अहमदनगर देश दाक्षिणें जी, सुखें रहिया चोमास ॥ भणशे गुणशे भावशुं जी, लहेशे शिवसुख वास ॥ जि० ॥ ह० ॥ २३ ॥ कलश ॥ समकित पाया, भव घटाया, सत्ताविश थुल, जाणिया ॥ तेह वरणव, भवि कहे ते, चार ढाल, बखाणीया ॥ शासण नायक, सुखदायक, प्रणमुं वारं वार ए ॥ तिलोकरिख कहे, नाथ अरजी, करजो भव, निस्तार ए ॥ प्रभु दीजो जय जय कार ए ॥ १ ॥ इति श्रीवर्द्धमान जिनेश्वर नुं चौढालीयुं संपूर्ण ॥ सर्वगाथा ॥ ८२ ॥

॥ अथ खंधकजी को चोढालीयो लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रणमुं जगनायक सदा, भयभंजण भगवंत ॥ आचारज उवज्झाय जी, गौतमादिक सब संत ॥ १ ॥ श्रीगुरुचरणांबुज नमुं समरुं सरस्वति माय ॥ खंधक मुनिगुण गावशुं, सुणजो चित्त लगाय ॥ २ ॥

॥ ढाल पहली ॥

॥ रे प्राणी कर्म समो नहिं कोइ ॥ ए देशी ॥ सावत्थि नामें नगरी भलेरी, गढ मठ पोल प्रकारो ॥ हाट हवेली महेल सालीयां, शोभा विविध प्रकारो रे ॥ प्राणी धर्म सदा सुखदायी ॥ १ ॥ कनककेतु तिहां भूपति जाणो, धर्मकेतु गुणवंतो ॥ शूरवीर महीमंडल मांही, प्रजा जनक जसवंतो रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ मलया राणी पति सुखदाणी, वाणी मधुर गजगमणी ॥ चंद्रवदन मृगनयणी शाणी, शीलरूप गुणरमणी रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ तस नंदन सुखकद सकलने, खंधक नामें कुमारो ॥ गुण तस बंदक चंद ज्यों शीतल, शूरवीर शिरदारो रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ बोहोंतेर कलामांही अधिक विचक्षण, दिन दिन कीर्त्ति सवाई ॥ मात पिताकी भक्ति कारक,

भद्रक भाव सदाइ रे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ तिण अवसर मुनि विजयसेण रिख, गुणरतनाकर भारी ॥ परम वैरागी आश्रवत्यागी, धर्म रागी तपधारी र ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ श्रीसघ मडण भर्म विहडण, बहु शिष्यने परिवारें ॥ ग्राम नगर पुर पाटण विचरे, भवि प्राणी बहु तारे रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ अनुक्रमें आया तिण पुरमाही, उतर्या बाग मझारो ॥ श्रावक सुणके अधिक आनद, वदण गया अणगारो रे ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ भूपति निजसपनि सब लेइ, मुनिवदन परवरिया ॥ अवसर देखी देशना देवे, ज्ञानगुणका सो दरिया रे ॥ प्रा० ॥ ॥ ९ ॥ ए ससार सुपनवत माया, देखतमें विरलावे ॥ धन सपत सव कारमी जाणे, ज्यों बादलदल छावे रे ॥ प्रा० ॥ १० ॥ नीट नीट एह नरभव पायो, रोटी साटे मति हारो ॥ धर्मरतन राखो अतिजतने, परभव ग्वरचि या लारो रे ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ कर्म निवारो धर्मज धारो, वारो विषय विकारो ॥ केवल पावो मुक्ति सिधावो, उतरो भवजल पारो रे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ इत्यादिक उपदेशना दीनी, प्रथम ढालके माही ॥ तिलोकरिख कहे भविजन प्राणी, सुणके हरख्या घणाइ रे ॥ प्रा० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ खदक कुमर तब वीनवे, जोडी दोनुइ हाथ ॥ सत्यवाणी प्रभु ताहरी, धर्म बोळावु साथ ॥ १ ॥ आथ नहिं इण सारखी, मैं जाणी निर्धार ॥ मात पिता आज्ञा लेई, लेशु हु सजमभार ॥ २ ॥ मुनिवर कहे जिम सुख होवे, तेम करो ततकाळ ॥ धर्में ढील न कीजियें, भाखी ए दीन दयाल ॥ ३ ॥ मुनि वदी घर आविया, खधक नाम कुमार ॥ किणविध मागे आज्ञा, ते सुणजो अधिकार ॥ ४ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ नदन जसधारी, हुवा छे देवकी मायना ॥ अथवा माचका दोहामें देशी छे ॥ कुमर कहे करजोडिने सो काइ, यह ससार असार ॥

संपत ब कारमी स कांइ, शंका नही लगार हो ॥ माताजी मोरां, आज्ञा दे ` संजम आदरुं ॥ १ ॥ ए टेक ॥ वचन सुणी इम पुत्र कांइ, मूर्छाणी तत्काल ॥ शुद्ध बुद्ध सघली वीसरी इ, मोहकी म्होटी झाल हो ॥ मा० ॥ २ ॥ शीतल नीर समीर प्रभावें, कांइक थई हुसियार ॥ करुणा स्वरें नयणां जल वरसे, ज्युं श्रावण जलधार हो ॥ मा० ॥ ३ ॥ तुं मुझ नंद एकाकी कुलमें, जीवन प्राण आधार ॥ उंबर फूल सम दरिसण थारो, मत ले संजमभार हो ॥ सुण नंद हमारा, जोबन ढलिया सुं लीजें जोगने ॥ ए टेक ॥ ४ ॥ विनय करीने कुमर पयंपे, काल व्याल विकराल ॥ हरि हर इंद्र चंद्र नाहिं छोडे, छिनमें करे बेहाल हो ॥ मा० ॥ ५ ॥ जिणने हेत होय कालरिपुसें, भाग जाणे की पहोंच ॥ अथवा जाणे हुं कदी न मरशुं, उणके तो नहिं ` च हो ॥ मा० ॥ ६ ॥ राजलक्ष्मी संपत बहुली, हय गय दल बल पूर ॥ ए भोगव फिर संजम लीजे, मान केणी जरूर हो ॥ सु० ॥ ७ ॥ धन दौलत ओर माल खजीना, ज्यों बिजली झबकार ॥ चोर अग्नि सज्जन भय धनमें, नरकगति दातार हो ॥ मा० ॥ ८ ॥ कोमल काया कंचन वरणी, तरुणीसुं सुख भोग ॥ वृद्धपणो जब आवे तनमें, तब आदरजे जोग हो ॥ सु० ॥ ९ ॥ या माया बाद्ल या, मल मूत्र भंडार ॥ रोग शोकरो भाजन इणमें, तप जप संजम सार हो ॥ मा० ॥ १० ॥ भोग हलाहल जहेरसुं जादा, फल किंपाक समान ॥ अल्प सुखसुं दुःख अनंता, सेहतछुरी जिम जाण हो ॥ मा० ॥ ११ ॥ रतन पिंजरे शुक नाहिं राजो, तिम हुं इण संसार ॥ जनम मरण दुःख मोहनो बंधण, कहेतां न आवे पार हो ॥ मा० ॥ १२ ॥ मोह ताता वश माता बोले, तुं वत्स अति सुकुमाल ॥ पंच महाव्रत मेरु समाना, तोड़णो `ह जंजाल हो ॥ सुण पुत्र पियारा, संजम लेणो जी

दुक्करकार छे ॥ ए टेक ॥ १३ ॥ पग अणवाणे चालणो स काइ, लोचन साच अपार ॥ बाविश परिसह जीतणा स काइ, चलणो खाडाधार हो ॥ सु० ॥ १४ ॥ घर घर भिक्षा मागणी स काइ, दोप बयालीस टाल ॥ कोइक देशे उलट प्रणामें, कोइक देशे गाल हो ॥ सु० ॥ ॥ १५ ॥ वाय भरेवो कोथलो स काइ, दुक्कर छे अगमाय ॥ शिला अलूणी चाटणी स काइ, दीक्षा अति दु खदाय हो ॥ सु० ॥ १६ ॥ कुत्रर पयपे सत्य कही सब, कायर नरने जाण ॥ शूरवीरने सहेज छे सजम, शका रच न आण हो ॥ मा० ॥ १७ ॥ निलोकरिख कहे दूजी ढालें, लीनी दृढता धार ॥ मात पिता थाका समजाता; आज्ञा दी तिणवार हो ॥ सु० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कियो महोत्सव दीक्षा तणो, सूत्रमाहे विस्तार ॥ पच महाव्रत आदरया, धन खधक अणगार ॥ १ ॥ मात पिता मोहनी वशें, पचसया परिवार ॥ रारूया रक्षा कारणें, सुभट बडा हुसियार ॥ २ ॥ जिहा जिहा मुनिवर सचरे, तिहा तिहा रहे सो लार ॥ नृप चुकावे नोकरी, जाणे नहिं अणगार ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ आज आणद घण जोगीसर आया ॥ ए देशी ॥ खधकमुनि गुणवदक जगमें, पचमहाव्रत पाले रे लो ॥ पाच समिति तीन गुप्ति आराधे, पच प्रमाद मद टाले रे लो ॥ ख० ॥ १ ॥ छे काया प्रतिपाल दयानिधि, पाचु क्रिया परिहारी रे लो ॥ सतरा भेदे सजम पाले, द्वादश तपस्याधारी रे लो ॥ ख० ॥ २ ॥ चाकर ठाकर शत्रु सज्जन, सम जाणे रिखराया रे लो ॥ क्षमासागर गुणरत्नागर; त्यागी जगतकी माया रे लो ॥ ख० ॥ ३ ॥ सहे परिसह शूर परिणामें, चार कपाय निवारी रे लो ॥ मास मास तप करत निरंतर, शम दम उपशमधारी रे लो ॥ ख० ॥ ४ ॥ ज्ञान प्रबल

नि ध्यानमें शूरा, एकाकी पडिमा विहारी रे लो ॥ नगर पुर पाटण विचर, तारे बहु नर नारी रे लो ॥ खं० ॥ ५ ॥ एकदा मासखमण तप करतां, कुंति नगरीमें आया रे लो ॥ सुभट विचारे इहां मुनिवरनां, बहेन बनेवी राया रे लो ॥ खं० ॥ ६ ॥ इहां डर कारण नहिं जरा भर, उतरथा बाग मझारो रे लो ॥ लागा सहु भोजन करवाने, ते मुनिवर तिणवारो रे लो ॥ खं० ॥ ७ ॥ प्रथम पहेरमें सूत्र चितारे, दुजीमें ध्यानज ठाया रे लो ॥ त्रीजी पहेरसी पारणा कारण, मुनि गोचरीयें सिधाया रे लो ॥ खं० ॥ ८ ॥ कोमल काया पग अणुत्राणे, परसेवे भींज्यो शरीरो रे लो ॥ खड़ खड़ वाजे हाड़ मुनिनां, चाल चले अति धीरो रे लो ॥ खं० ॥ ९ ॥ चल आवे नृप महेलनी पासें, राजाजी तिणवारो रे लो ॥ राणीसंघातें चोपड़ खेले, हर्षवदन हुसियारो रे लो ॥ खं० ॥ १० ॥ राणीकी दृष्टि पडी रिख उपर, मनमें ताम विचारी रे लो ॥ मुझ बंधव पण सजम लीधा, सहेतो होसी दुःख भारी रे लो ॥ खं० ॥ ११ ॥ ऊणारत आणी अति राणी, आंसु ततक्षण आया रे लो ॥ नृप पूछे सो कांइ न बोली, नीचें देख्यो तब राया रे लो ॥ ख० ॥ १२ ॥ मुनिवर देखी वेरज जाग्यो, अधिको क्रोध भराणो रे लो ॥ ए मोडो इण पंथें क्यों आयो, चाकरसुं कहेवाणो रे लो ॥ खं० ॥ १३ ॥ पकड़ ले जावो जंगलमांही, सब तन खाल उतारो रे लो ॥ छोड़ो मत एह कोइ प्रकारें, मानो हुकम ए माहरो रे लो ॥ खं० ॥ १४ ॥ आघी पाछी कांइ न सोची, पुरव वैर प्रभावें रे लो ॥ तिलोकरिख कहे त्रीजी ढालें, राय हुकम फरमावे रे लो ॥ खं० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुभट आया तत्क्षण तदा, ते मुनिवरनी पास ॥ ग्रहवा लाग्या भणी, तब पूछे मुनि तास ॥ १ ॥ सो कहे आज्ञा रायनी

खाल उतारण काज ॥ ल जावा श्मशानमें, तव बोल्या रिख राज ॥ २ ॥ हाथ ग्रहो मत माहारा, हु आवु तुम लार ॥ मुनि पहुता श्मशानमें, मनमें साहस धार ॥ ३ ॥

॥ ढाल चौथी ॥

॥ बलती द्वारिका देखिने रे ॥ ए देशी ॥ खधकमुनि श्मशान में रे, आलोयणा शुद्ध कीध ॥ नमोत्थुण सिद्धने दियो, दुजो अरिहतान दीध रे ॥ धन धन मुनिराय ॥ १ ॥ पाप अठारा त्यागीया रे, जावजीव चोविहार ॥ काया माया ममता तजी कीयो, पादोपगमन सथार रे ॥ ध० ॥ २ ॥ उभा मुनि निश्चलपणे रे, ज्यों पाव्यो छाले सतार ॥ राय सुभट लीया पाछणां भाइ, तीखी छ तिणरी धार रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ खाल उतारी देहनी रे, चरड चरड तिण वार ॥ तरड तरड रुधिर वहे भाइ, दया न आणी लगार रे ॥ ध० ॥ ४ ॥ शिरसू लगाइ पग लगें रे, छोली मुनिवर खाल ॥ नाकें सल लाया नहिं भाइ, मेटी क्रोधकी जाल रे ॥ ध० ॥ ५ ॥ उजली वेदना ऊपनी रे, कहेता न आवे पार ॥ के दु.ख जाणे आतमा भाइ, के जाणे किरतार रे ॥ ध० ॥ ६ ॥ मुनिवर मनमें चिंतवे रे, उदे थया तुझ कर्म ॥ समपरिणाम राख्या थकां भाइ, निपजसी आतम धर्म र ॥ ध० ॥ ७ ॥ अज्ञानपणे अति हरखसु रे, बाध्या निकाचित पाप ॥ भुगत्या विण छूटे नहिं भाइ, भोगवे आपो आप रे ॥ ध० ॥ ८ ॥ तु पुद्गलसु भिन्नछे रे, अजर अमर अविकार ॥ नाश नहिं त्रिहु कालमें भाइ मनमाही साहसधार रे ॥ ध० ॥ ९ ॥ मुनिवरु रे, ध्यायो शुक्लज ध्यान ॥ अतगडकेवल पायने, भाई, पाया पद निर्वाण रे ॥ ध० ॥ १० ॥ धन जननी जिणें जनमिया रे, धन धन ते अणगार ॥ पाछें देही पडी भू परें भाइ, पहेली लह्यो भवपार रे ॥ ध० ॥ ११ ॥ हवे वीतक सुणो पाछल्ल रे, सुभट जे मुनिवर लार ॥ देख्या नहिं रिख नयणसु

भाइ, शोधे नगर मझार रे ॥ ध० ॥ १२ ॥ तिण मे दासी रावली रे, ` ि या अस र ॥ पूछयुं कारण तिणे दाखीयुं भाइ, राणीथी कह्या समाचार रे ॥ ध० ॥ १३ ॥ राणी कहयुं निज थसुं रे, सुण राजा मुरझाय ॥ वीतक वात कही तदा भाइ, राणी प मूर्च्छाय रे ॥ ध० ॥ १४ ॥ फिट फिट कंता शुं कियो रे, म्होटो एह अ ज ॥ मुझवीरो हीरो गुण तणो भाइ, महा म्होटो रि राज रे ॥ ध० ॥ १५ ॥ क्षण एक तो धरणी ढले रे, क्षण एक नाखे निसास ॥ क्षणएक दे ओलंभडा भाइ, रुदन करे अति त्रास रे ॥ ध० ॥ १६ ॥ रोवे राणी रावली रे, निं सुणी नहिं जाय ॥ रोतां सहु रोवाडीयां भाइ, हाहाकार पु ंय रे ॥ ध० ॥ १७ ॥ झूरे सुनंदा वेनडी रे, झूरे पुरिससेण राय ॥ म्होटुं अकारज ए थयुं भाइ, घात करी मुनिराय रे ॥ ध० ॥ १८ ॥ तिणसमे केवल धारणा रे, मे र मुनिराय ॥ य ग ` वंदण भणी भाइ, पूछे शीश न ाय रे ॥ ध० ॥ १९ ॥ नि राधी महामुनि रे, किम उपनो ु द्वेष ॥ पूरव वैर कांइ हुतो भाइ, ते दाखो कर्म रेख रे ॥ ध० ॥ २० ॥ मुनिवर कहे सुण भूपति रे, पूरव भव मझार ॥ काचरानो जीव तुं ह ` भाइ, नृपनंद दकु र रे ॥ ध० ॥ २१ ॥ ॥ ल री हर शुं रे, आणंद अग न मांय ॥ कीधी सराव तिण तिह भाइ, र वार वाय रे ॥ ध० ॥ २२ ॥ कर्म निकाचित बांधियो रे, तेरे ड़ भव मांय ॥ काचरानो जीव थयो इ, ते तो थयो मुनिराय रे ॥ ध० ॥ २३ ॥ वैर ग्यो रिख दे ` ` रे, न छोडे कोय ॥ जिन चक्री हरि हर भणी भाइ, हिरदे विमासी जोय रे ॥ ध० ॥ २४ ॥ कर्म समो शत्रु नहिं रे, कर्म करो कोय ॥ रखवाला पांचशें सुभट था भाइ, आडो न आयो कोय रे ॥ ध० ॥ २५ ॥ राणी राय अने सुभटां रे, सांभली ए अधिकार, संजम लेइ मुक्तें गया भाइ, वरत्यो जयजयकार रे ॥ ध०

॥ २६ ॥ सवत उगणीशें गुणचालिशनें रे, ज्येष्टशुक्ल दूज जाण॥ लश्कर घोडनदी विषे भाइ, गुणि गुण कीया वखाण रे ॥ ध० ॥ २७ ॥ खदक जिम क्षमा करो रे, तो उतरो भवपार ॥ तिलोकरिख कहे चौथी ढाऌमें भाइ, धर्म सदा श्रीकार रे॥ध०॥२८॥इति॥

॥ अथ मेतारज मुनिनु चोढालियु लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीजिन समरु भावशु, सतगुरु लागु पाय ॥ कथा अनुसारें गावशु, मेतारज मुनिराय ॥ १ ॥ पूरवभव दो मित्र था, ब्राम्हण केरी जात ॥ देशना सुणि रिखराजकी, सजम लियो सघात ॥ २ ॥ सजम पाले भावशु, तपस्या करे करूर ॥ एक दिन मनमें चिंतवे, पूरवपाप अकूर ॥ ३ ॥ जैनधर्म श्रीकार छे, शका नहिं लगार ॥ स्नान नहिं इण मार्गमें, एतो कहि आचार ॥ ४ ॥ कुलमद दुगछा भावथी, नीच कुलवधन कीन ॥ आलोयणा विण सोचवी, सुरगति दोनु लीन ॥ ५ ॥ दोय मित्र तिहा देवता, बोले आपसमाय ॥ जो पहेलो नरभव लहे, घालीजें धर्ममाय ॥ ६ ॥ सजम लेवाणो तिण भणी, करि कोइ दाय उपाय ॥ इम सकेत कीधो उभे, सुरभव आपस माय ॥ ७ ॥ कुलमद जिन कीनो हुतो, ते पहेलो चव्यो तेथ ॥ मातगकुलमें अवतरयो, उदय कर्मके हेत ॥ ८ ॥ शेष पुण्यप्रतापथी, पायो सपति सार ॥ किणविध तिण सजम लियो, ते सुणजो अधिकार ॥ ९ ॥

एकदा गर्भ रह्यो तेहने, चिंतवे ते मनमांय रे ॥ जीवे नहिं बाल माहरे, धन रखवालक नांय रे ॥ स० ॥ ३ ॥ जिम संतति रहे कुल विषे, तिम करुं कोइ उपाय रे ॥ एटले आवी मातंगणी, गर्भवती सा देखाय रे ॥ स० ॥ ४ ॥ तिणने एकांतें लेई करी, दीयो घणो सन्मान रे ॥ संपति छे मुझ घर घणी, जीवे नहिं मुझनी संतान रे ॥ स० ॥ ५ ॥ जो तुझ होवे नंदन कदा, गुप्तपणे घर मोय रे ॥ मेलजे तुं निशिने समे, ठीक पड़े नहिं कोय रे ॥ स० ॥ ६ ॥ द्रव्य देशुं तुझ सामटुं, होसी सुखी तुझ पूत रे ॥ प्रेम हुं राखशुं अतिघणो, रहेसी मुझ घरतणो सूत रे ॥ स० ॥ ७ ॥ राजी थइ तिणे मानीयो, जनमीयो नंद जिणवार रे ॥ प्रच्छन्नपणे तिणें मोकल्यो, ठीक नहिं पुर नर नार रे ॥ स० ॥ ८ ॥ जनम महोत्सव सघडी कियो, दिवस थया जब बार रे ॥ दीयो दशोट्ठण जातमें, वरतिया मंगल चार रे ॥ स० ॥ ९ ॥ नाम मेतारज थापीयुं, प्रतिपालण करे पंचय रे ॥ पूरव पुण्य प्रभावथी, रूपगुणें अधिकाय रे ॥ स० ॥१०॥ लमद कियो तिण कर्मथी, महेतर घर अवतार रे ॥ बीज शशी परें दिन दिने, वधे तस जश विस्तार रे ॥ स० ॥ ११ ॥ बहोंतर कलामें पंडित थयो, आवियो यौवन मांय रे ॥ तिलोकरि कहे पहेली ढालमें, पुण्यथी सुख सवाय रे ॥ स० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ यौवन वय जाणी करी, कन्या परणाइ सात ॥ पंच इंद्रिय सुख भोगवे, आणंदमें दिन रात ॥ १ ॥ हवे तिण अवसरने विषे, पूर्वे कीनो करार ॥ ते सुर आई उपदिशें, ले तुं संजम भार ॥२॥ तलालीन ते भोगवे, मान नहिं लगार ॥ कीनी सगाइ वली तिणें, ते सुणजो अधिकार ॥ ३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ इण सरवरीयारी पाल, उभी दोय रावली ॥ माहारा लाल उ०॥

एअ.क णे ॥ आठमी कन्या तेह, परणवा उम्माह्या ॥ माहारालाल परण ॥० ' कोनी सझाइ जान, जानी भेला थया ॥ मा० ॥ जा०॥ कश रीयो जामा पहर, मुकुट शिरपर धर्यो ॥ मा० ॥ मु० ॥ माथे बाध्यो मो ', वींदनो वश कर्यो ॥ मा० ॥ वीं० ॥ १ ॥ शिरपर शिरपेच जडाव, तुरा झगझगे सही ॥ मा० ॥ तु० ॥ कलगी तिण उपर जाण, अधिक भ.की रही ॥ मा० ॥ अ० ॥ झगमगे कुडल कान, हार झगझग करे ॥ मा० ॥ हा० ॥ बाजुबद मुजदड, पोंची कडा कर सिरे ॥ मा० ॥ पों० ॥ २ ॥ मुद्री अगुलीके माय, झलके हीरातणी ॥ मा० ॥ झ० ॥ कमर कदोरो जडाव, सुवर्णकी विंखणी ॥ मा० ॥ सु० ॥ अत्तर अग लगाय, तिलक भालें कर्यो ॥ मा० ॥ ति० ॥ कियो उत्तरासण तेण, सुरथकी सो नहिं डर्यो ॥ मा० ॥ सु० ॥ ३ ॥ बेठा होय असवार, लाडो बण्यो सो सही ॥ मा० ॥ ला० ॥ गावे मगल नार, अधिक उच्छावही ॥ मा० ॥ अ० ॥ धप मप मादल नाद, के साद सुहामणो ॥ मा० ॥ के० ॥ धडिंदा धडिंदा ढोल, तिड किड त्रासा तणो ॥ मा० ॥ ति० ॥ ४ ॥ चाल्या अधिक उत्साह, व्याह करवा भणी ॥ मा० ॥ व्या० ॥ आय मध्य बजार, बणी शोभा घणी ॥ मा० ॥ व० ॥ तिणसमे सो सुर कीध, बात कौतुक तणी ॥ मा० ॥ वा० ॥ मातग मन दियो फेर, हेर अवसर अणी, ॥ मा० ॥ हे० ॥ ५ ॥ लीनो हाथमें लठ्ठ, धठ धींठो घणो ॥ मा० ॥ ध० ॥ आयो जानकेमाय, धरी कुलठ पणो ॥ मा० ॥ ध० ॥ माने नहिं कछु शक, बक एको जणो ॥ मा० ॥ ब० ॥ आयो सो वींद हजूर, काम नहिं दूर तणो ॥ मा० ॥ का० ॥ ६ ॥ सघलाही रह्या देख, बोले सुणो नदना ॥ मा० ॥ बो० ॥ हु छु सगो तुझ बाप, जाणे मत फदना ॥ मा० ॥ जा० ॥ सात कन्या व्याहि वणिक, परणाउ एक माहरी ॥ मा० ॥ प० ॥ पकडी अश्व लगाम, कोई नहिं बाहरी ॥ मा० ॥ को० ॥ ७ ॥ बदलायो चित्त

लोक, धोको बने पड्यो ॥ मा० ॥ धो० ॥ साची दीसे ए बात, जोग इसड़ो घड्यो ॥ मा० ॥ जो० ॥ लोक गया सब ठाम, बींद रह्यो एकलो ॥ मा० ॥ बीं० ॥ अधिक खीसियाणो होय, देखे सो भूंई तलो ॥ मा० ॥ दे० ॥ ८ ॥ तिणसमे सो सुर वेण, कहे शरत्रण विषे ॥ मा० ॥ क० ॥ ले हवे संजम ताम, कहे सो भूंडी दीसे ॥ मा० ॥ क० हवे पाछो होय सुजस, परणुं कन्या वणिकनी ॥ मा० ॥ प० ॥ नवमी परणुं भूप, धूया श्रेणिकनी ॥ मा० ॥ धू० ॥ ९ ॥ बारा वर्ष गृहवास, रहुं तदनंतरें ॥ मा० ॥ र० ॥ लेशुं पछे संजम भार, वचन ए नहिं फिरे ॥ मा० ॥ व० ॥ एम सुणी सुर वेण, सेण मन फेरियो ॥ मा० ॥ से० ॥ झूठी मातंगनी बात, बींद वली हेरियो ॥ मा० ॥ बीं० ॥ १० ॥ हुइ सजाइ सर्व, तिहां वली व्याहनी ॥ मा० ॥ ति० ॥ आया सोही बजार, वात थइ न्यातनी ॥ मा० ॥ बा० ॥ महेतर आयो सो चाल, जानमांही दोड़िने ॥ मा० ॥ जा० ॥ उण मांदिरा पीध, बोले कर जोड़िने ॥ मा० ॥ बो० ॥ ११ ॥ ए नहिं माहरो नंद, खोटो हुं बोलियो ॥ मा० ॥ खो० ॥ माफ करो अपराध, कह्यो बे तोलीयो ॥ मा० ॥ क० ॥ भर्म टल्यो सहु लोक, कन्या परणी सही ॥ मा० ॥ क० ॥ तिलोकरिख हे दुजी ढाल, दुग्धा राखी नही ॥ मा० ॥ दु० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राजसुता परणावणी, सुर सोचीने तास ॥ दीनी बकरी रूयडी, उगले रतन उजास ॥ १ ॥ रत्नराशि झगमग करे, देखे बहु नर नार ॥ पुरमें पसरी वारता, मेतारज पुण्य सार ॥ २ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ वेदर्भीशुं मन वस्यो ॥ ए देशी ॥ राय सुणी इम वारता, मनमें विस्मय थाय हो लाल ॥ बकरी लावो वगशुं, जज करों

मति काय हो लाल ॥ रा० ॥ १ ॥ सुभट सुणी चल आविया, युगधर ने गेह हो लाल ॥ मागे बकरी शेठथी, उगले रतन जेह हो लाल ॥ रा० ॥ २ ॥ शेठ वदे सुभटा भणी, मैं नहिं मालक तास हो लाल ॥ मेतारजने पूछिने, लेइ जावो थे उल्लास हो लाल ॥ रा० ॥ ३ ॥ कुमर कने जाची तिका, सो बोले तिण वार हो लाल ॥ बकरी जीवन प्राण छे, रतपुज दातार हो लाल ॥ रा० ॥ ४ ॥ सुभट गया फिर रायर्पे, दाख्या सहु समाचार हो लाल ॥ सुणि क्रोधातुर बोलियो, जेज न करो लगार हो लाल ॥ रा० ॥ ५ ॥ हलकारथा सुभटा भणी, धसमस करता जाय हो लाल ॥ छाली लाया छोडिने, पूछ्यो तिणसु नाय हो लाल ॥ रा० ॥ ६ ॥ राय कचेरी लाविया, क्षणअतरनी माय हो लाल ॥ बकरी छेरा तिण सने, दुर्गंध रहि फेलाय हो लाल ॥ रा० ॥ ७ सभा सहु व्याकुल थइ, उठि चाल्या सहु लोक हो लाल ॥ पूछे भूप कारण किस्यु, वात थइ ते फोक हो लाल ॥ रा० ॥ ८ ॥ सुभट कहे झूठो नहिं, एही रत्न दातार हो लाल ॥ पृछे कारण कुमरशु, सुभट गया तिण वार हो लाल ॥ रा० ॥ ९ ॥ पुछ्यो कारण कुमरथी, किण कारण दुर्गंध हो लाल ॥ उगले नहि किम रत्न ते, दाखो तेह प्रवध हो लाल ॥ रा० ॥ १० ॥ सो कहे मुझ राजी करे, रत्न उगळे श्रीकार हो लाल ॥ नहिं तो ए छे रे बुरी, शका नहिं लगार हो लाल ॥ रा० ॥ ११ ॥ राय कहे जे छालिका, देवे रत्न श्री मोथ हो लाल ॥ मुख मागी वस्तु तिका, देशु हु खुशी होय हो लाल ॥ रा० ॥ १२ ॥ सो कहे कन्या तुम तणी, द्यो मुझने परणाय हो लाल ॥ रत्न उगलसी ए भला, हाम भरी तव राय हो लाल ॥ रा० ॥ १३ ॥ गुणमजरी कन्या भली, कीधो व्याह उत्साह हो लाल ॥ तिलोकरिख कहे त्रीजी ढालमें, कुमरनो पुरयो उमाह हो लाल ॥ रा० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नव कन्या परणी भली, नवनिधि पति जिम तेह ॥ भोगवे सुख संसारनां, दिन दिन वधते नेह ॥ १ ॥ बारा वर्ष इम वीतिया, सो सुर आयो चाल ॥ कहे ले हवे तुं वेगशुं, संजम चि उजमाल ॥ २ ॥ नहिं तो देउं सकट घणो, इणमें फेर न फार ॥ सियालरें श्रीवीरें, लीधो संजमभार ॥ ३ ॥ मनमें ताम विचारीयो, धिक धिक कामविकार ॥ पायो हीनता लोकमें, महेतर घर अवतार ॥ ४ ॥ हवे करणी दुःकर करुं, कर्म करुं सव छार ॥ मास मास तप धारीयो, नीरंतर चोविहार ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ जमिकंदमें रे जीव जाइ उपनो ॥ देशी ॥ नित नित प्रणमुं रे मेतारज मुनि, तारण तरण जहाज ॥ परम वैरागी रे रागी धर्मना, साधे आतमकाज ॥ नि० ॥ १ ॥ थिविरांपासें रे शीख्या थिर मनें, नव पूरवको रे ज्ञान ॥ ग्राम नगर पुर पाटण विचरतो, ध्यावे निर्मल ध्यान ॥ नि० ॥ २ ॥ कोइसमे आया रे राजगृही वली, पारणो आयो रे ताम ॥ प्रभुआज्ञा लेइ गोचरी पांगुरया, भिक्षा निरवद्य काम ॥ नि० ॥ ३ ॥ मारग जातां रे सुवर्णकार कें, ओलखिया रिखराय ॥ एह जमाइ रे थाय श्रेणिक तणा, गोचरी कारण जाय ॥ नि० ॥ ४ ॥ आवो पधारो रे अम घर साधु जी, कृपा करो मुनिराय ॥ वहोरो सूझतो आहार छे माहरे, बोले ते एम उमाय ॥ नि० ॥ ५ ॥ इम सुणि मुनिवर तिहां वहोरण गया, उभा रहिया रे बार ॥ सोनी घरमें रे आयो वेगसुं, वहोरावण भणी आहार ॥ नि० ॥ ६ ॥ सुवर्ण जव था रे राय श्रेणिकना, कुकुट आयो रे चाल ॥ सो जव चुगिने रे गयो ते शीघ्रशुं, मुनिवर रहिया रे भाल ॥ नि० ॥ ७ ॥ बाहिर आयो रे आहार वहेरायने, जव नहिं दीठा रे नयण ॥ कहो किण लीधा रे कुण आयो इहां, कहे रोषें भरयो वयण ॥

नि० ॥ ८॥ मुनिवर सोचे रे देखिया ना कहु, झूठज लागे रे मोय ॥ कुर्कुट चुगिया रे इम उच्चारता, हिंसा पातक होय ॥ नि० ॥ ९ ॥ देख्या अदेख्यो रे काइ न बोलणो, निश्चय कियो अणगार ॥ मौनज पकडी रे आण अराधवा, धन्य सो करुणा भडार ॥ नि० ॥ १० ॥ मौनज जाणी रे सुवर्णकार ते, आइ रीस अपार ॥ इणना भेदमें थइ चोरी सही, पूछे वार वार ॥ नि० ॥ ११ ॥ मार चपेटा रे कहे वलि चोर तु, किम नहिं बोले रे साच ॥ मुनिवर क्षमा रे धारी तन मनें, बोले नहिं मुख वाच ॥ नि० ॥ १२ ॥ तिम तिम अधिको रे सो क्रोधें भरयो, सोचे ए अतिधीठ ॥ कूच्या विण रस ए देवे नहिं, मूरख चोल मजीठ ॥ नि० ॥ १३ ॥ मुनि कर पकडी रे ले गयो वाडामें, शिरपर आलो रे चर्म ॥ खेंचीने बाध्या रे तावडे राखिया, वेदना उपनी परम ॥ नि० ॥ १४ ॥ लोचन छटकीरे बाहिर नीकल्या, नड तड तूटी रे नाड ॥ मुनिवर थिर मन दृढ करी राखियु, जेम सुदर्शन पहाड ॥ नि० ॥ १५ ॥ केवल पाई रे मुगत सिधाविया, अजर अमर अविकार ॥ देव बजावे रे दुदुभि गगनमें, बोले जयजयकार ॥ नि० ॥ १६ ॥ तिणसमे भोली रे एक कठियारडे, नाखी धमकसू ताम ॥ बींटज कीनी रे कुर्कुट भयवशें, जव पडिया तिण ठाम ॥ नि० ॥ १७ ॥ सोनी देखी रे थर थर धूजीयो, कीधो महोटो अकाज ॥ मैं मूढभावें रे निरअपराधिया, घात करी रिखराज ॥ नि० ॥ १८ ॥ राजा श्रेणिक भेद ए जाणशे, करशे कुटुब सहार ॥ एम जाणीने रे सहु श्रीवीरपें, लीधो सजम भार ॥ नि० ॥ १९ ॥ तप जप करणी रे कीधी सहु जणा, पाया सुर अवतार ॥ अनुक्रमें जासी रे कर्म खपाइने, सहु ते मोक्ष मझार ॥ नि० ॥ २० ॥ नव कोटी धन नव कन्या तजी, नव विध ब्रह्मचर्य धार ॥ नव पूरवधर नव सवर करी, पाया भवजल पार ॥ नि० ॥ २१ ॥ एहवा मुनिवर क्षमासागरु, तस गुण

गाया उमाय ॥ तिलोकरिख दाखे रे चोथी ढाल ए, सुणतां पातक जाय ॥ नि० ॥ २२ ॥ संवत उगणीशें रे गुणचालीशमें, आषाढ वदि पडवा व ाण ॥ दक्षिणदेशें रे पूना शहेरमें, नानाकी पेठ में जाण ॥ नि० ॥ २३ ॥ जोड जमाश्री रे विपरीत जो कथ्यो, मिच्छामिदु ड मोय ॥ भणशे गुणशे रे विधि शुद्धभावशुं, तस घर मंगल होय ॥ नि० ॥ २४ ॥ इति मेतराजमुनिनुं चोढालीयुं पूर्ण ॥

॥ अथ आणंदजी श्रावकनुं चोढालीयुं लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

प्रणमुं परमातम प्रभु, शासनपति वर्धमान ॥ तास ज्येष्ठ श्रावक भला, आणंद आणंदधाम ॥ १ ॥ नाम ठाम शुभ काम जिण, कीना व्रत अंगीकार ॥ सप्तमे अंगें वर्णव्या, ते सुणजो विस्तार ॥ २ ॥

॥ ल पहेली ॥

॥ देशी न्यालदेमें ॥ तिण कालें तिण अवसरें जी २ कांइ, वाणिय गाम मझार ॥ राय जितशत्रु जाणीयें जी २ कांइ, प्रजा भणी हितकार ॥ १ ॥ सुणो अधिकार सुहामणो जी २ कांइ, सूत्र तणे अनुसार, समकित व्रत होवे निर्मलो जी २ कांइ, होवे ज्युं भवनिस्तार ॥सु०॥२॥ तिणपुर आणंद नामथी जी२कांइ, गाथापति धनवान॥ बारे कोडी सुनैयाजी २ कांइ, कह्युं तस धन परिमाण ॥ सु० ॥ ३ ॥ दश सहस्र गायां तणो जी२कांइ, एक गोकुल इम चार ॥ धेनुवर्ग वखाणीयें जी२कांइ, शिवानंदा तस नार ॥सु०॥४॥ पंच विषय सु भोगवे जी २ कांइ, माने बहुजन वाय॥इम करतां बहुज दिन गयाजी २ कांइ, कोइक अवसर मांय ॥सु०॥५॥ द्युतिपलाश नामें भलो जी२ कांइ, चैत्य मनोहर जाण ॥ समोसर्या जगगुरु तिहांजी २ कांइ, जगनायक जगभाण ॥ सु० ॥ ६ ॥ भूप सुणी वंदण गयो जी २ कांइ, आणंद श्रावक ताम ॥ पाय विहारें संचर्या जी, २ कांइ, भेट्या त्रिभुवन स्वाम ॥ सु० ॥ ॥ ७ ॥ प्रभुजी दी उपदेशना जी २ कांइ, यो संसार असार ॥ तन धन

जोबन कारिमो जी २ काइ, कारिमो सहु परिवार ॥ सु० ॥ ८ ॥ ए जीव आयो एकलो जी, २ काइ, परभव एकलो जाय ॥ धर्मरत्न सग्रह करो जी २ काइ, जो शिवसुखतणी चहाय ॥ सु०॥९॥ इत्यादिक उपदेशना जी २ काइ, प्रथम ढाल मझार ॥ तिलोकरिख कहे आगलें जी २ काइ, सुणजो श्रेय अधिकार ॥ सु० ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे आणद सुणि देशना, बोले वयण विचार ॥ सत्य कहेणी प्रभु ताहरी, यह ससार असार ॥१॥ धन्य जे राजराजेश्वरु, लेवे सजम भार ॥ मुझ शक्ति ए छे नहीं, आदरशु व्रत बार ॥ २ ॥ प्रभु कहे जिम सुखें तिम करो, जेज न करो लगार ॥ हवे व्रतकरणी साभलो, सूत्र तणे अनुसार ॥ ३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ था रस शेलडी, आदिजिणद कियो पारणो ॥ ए देशी ॥ प्रथम व्रतमें धारीयो जी काइ, त्रस प्राणी जगमाय ॥ जाणी प्रीछी निर अपराधी, सो सब हणवा नाय हो ॥ जगतारक पासें, श्रावक आणदजी व्रत आदरे ॥ १ ॥ दूजो व्रत थूल मृषावादको, भू कन्या पशु काज ॥ झूठ न बोलु ओलु न थापण, नहिं लु भोले व्याज हो ॥ ज० ॥ २ ॥ त्रीजो थूल अदत्त निवारु, खात्र खणी गाठ छोड ॥ पडकूची देइ न करु चोरी, त्यागु विरुद्ध जे खोड हो ॥ ज० ॥ ३ ॥ चोथो थूल मेहुण व्रतमें, सेवानदा निज नार ॥ वर्जीने त्यागी सकल काइ, ममता दीनी मार हो ॥ ज० ॥ ४ ॥ व्रत पचमो इच्छा परि-माणे, चार क्रोड भूमाय ॥ चार कोडि घरवखरी राखी, एतोही व्याज कहाय हो ॥ ज० ॥ ५ ॥ गोकुल चार धेनुका राख्या, खेतू वत्थू जाण ॥ पाचसें हलकी सख्या धरणी, गाडा गाडी सहस्र प्रमाण हो ॥ ज० ॥ ६ ॥ चार म्होटी चार छोटी जहाजा, राख्या

वाहण आठ ॥ उपभोग परिभोग व्रतकी विधि, हुं जिम सूः पाठ हो ॥ ज० ॥ ७ ॥ स्नान कीया पीछें अंग लूवणनो, र वस्त्र जाण ॥ दातण कारण आलुं जेठीमध, अवरवीरा आमलफ ठाण हो ॥ ज० ॥ ८ ॥ शतपाक हजार औषधको, तेलमर्दन ने काज ॥ सुगंध सहित गोधूमकी पीठी, ए उवट्टणां साज हो ॥ ज० ॥ ९ ॥ आठ लोटी प्रमाण घडो एक, स्नान करणने नीर ॥ क्षौमयुगल कपासको निपनो, राख्यो ओढण चीर हो ॥ ज० ॥ ॥ १० ॥ अगर कुंकुम बावनाचंदन, विलेपन मरजाद ॥ धोलो कमल मालती कुसुम, सुंघणो नहिं तस द हो ॥ ० ॥ ॥ ११ ॥ कुंडल अने नामाकृत मुद्रा, राख्या आभरण दोय ॥ अगर शेलारस धूपादिक सो, राखे इच्छा जोय हो ॥ ज० ॥ १२ ॥ घृत तेल तल्या तंदूल पहुवा, दूधकी राबडी जाण ॥ पेज विधि परिमाण कह्यो ए, उपरंतका पचक्खाण हो ॥ ज० ॥ १३ ॥ घृत पूरित घेवर मन गमता, खांड खाजा आगार ॥ कमल सांले तंदुल उपरंत सब, ओदनको परिहार हो ॥ ज० ॥ १४ ॥ मूंग उडद मसूर ए तीनुं, उपरंत त्यागी दाल ॥ नितको निपज्यो घृत शरद ऋ ते, प्रातसम्याको काल हो ॥ ज० ॥ १५ ॥ तिण वेला घृत जिण राख्यो, उपरांत को कियो त्याग ॥ अगथीयो स्वास्तिक रायडोडी, और नहिं खाणो साग हो ॥ ज० ॥ १६ ॥ आमलारस युत पालक सालणो, अवर तणो सब त्याग ॥ मूंग दाल बड़ा कचोरी, उपरंत नहिं अनुराग हो ॥ ज० ॥ १७ ॥ टांकाको नीर सो पीणो राख्यो, झेल्यो जेह आकाश ॥ कंकोल जायफल लविंग एलायची, कपूर ए पंच मुखवास हो ॥ ज० ॥ १८ ॥ चार अनरथा दंडका सोगन, इम अठम व्रत धार ॥ शक्ति मुजब शिक्षा व्रत चारुं, हरि हर देव परिहार हो ॥ ज० ॥ १९ ॥ ज्ञानका चौदे पंच समाकितका, पंच्योत्तर व्रत बार ॥ पांच संलेषणा ए सवि टाळुं, नन्याणुं अतिचार हो ॥ ज० ॥ २० ॥

पार्श्वसतानीया गोशालकर्में, जिम ते मिलीया जाय ॥ तिम अन्य तीर्थी ग्रहिया साधु, तिणने हु वदु नाय हो ॥ ज० ॥२१ ॥ बतलाउ नहिं पहेलां उपति, धर्मबुद्धि सुविचार ॥ चार आहार नहिं देउ तिणने, छ छडी आगार हो ॥ ज० ॥ २२ ॥ समण निर्ग्रंथने देउ सुझतो, चउदे प्रकारनु दान ॥ इम व्रतधारी प्रभुने वदी, आव्या ते निज थान हो ॥ ज० ॥ २३ ॥ निजपत्नीसु कहे प्रभु पासें, में धारया व्रत बार ॥ तुमें पण जाइ करो प्रभु वदण, सफल करो अवतार हो ॥ ज० ॥ २४ ॥ कत वचन सुणी रथमें बेठी, वाद्या श्री जगदीश ॥ तिण पण श्रावक व्रतज धार्यु, पूरी मन जगीश हो ॥ ज० ॥ २५ ॥ छे छे पोसा करे मासमे, नव तत्त्व का जाण ॥ तिलोकरिख कहे ढाल दूसरी, श्रावक करणी वखाण हो ॥ ज० ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ बारे व्रत पाले भला, चउदा नियम विचार ॥ तीन मनोरथ चिंतवे, धारे शरणा चार ॥ १ ॥ निश्चल समकित दृढधर्मी, एक विश गुणका धार ॥ चउदे वर्ष एम वीतिया, करता धर्म उदार ॥ २ ॥ पदरमु वर्ष वर्तता, एक दिन आधी रात ॥ जागरणा करे धर्मकी, ते सुणजो विख्यात ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ आज भलो दिन उग्योजी, सीमधर स्वामीने वदसा ॥ ए देशी ॥ आणदजी विचारी हो सुखकारी किरिया धर्मनी, कांइ भवजल तारण हार ॥ वाणिय ग्रामपुरमाइ हो प्रभुताइ ठावी माहरी, काइ बहु नरने आधार ॥ मुझ पर ममत सवाइ हो समरथाइ नाइ माहरी, काइ दु कर सजस भार ॥ आ० ॥ १ ॥ जब थावे दिन उगाइ हो निपजाइ चारी आहारने, काइ बुलाइ निज परिवार ॥ सयण सज्जन जीमाइ हो समलाइ कामज घर तणा, काइ धारणी पडिमा ग्यार ॥ आ० ॥ २ ॥ थइ दिनकर उगाई हो कराई सहु विध

चिंतवी, कांइ ज्येष्टपुत्र घरभार ॥ सोंपी सीधाइ आया हो, कांइ कोलागनाम संनिवेशें, कांइ वाणिय पुरने वार ॥ आ० ॥ ३ ॥ कोलाग संनिवेशने मांइ हो जिहां मित्र घणा कुलघर घणां, रहे पोषधशाला मझार ॥ तिणशालाने प्रतिलेखी हो, कांइ देखी परठवण भूमिका, वली कीनो दर्भसथार ॥ आ० ॥ ४ ॥ केवली भाख्यो धर्मज हो ते पाले परम आणंदशुं, कांइ प्रथम पडिमा मझार ॥ समकित निर्मल पाले हो कांइ वंदे नहिं कोइ अन्य भणी, कांइ छे छंडि परिहार ॥ आ० ॥ ५ ॥ दूजी पडिमामांइ हो अधिकाइ बारा व्रतमें, कांइ पाले निरअतिचार ॥ त्रिजीमें शुद्ध सामायिक हो चित्त लाई पाले शुद्धपणे, कांइ बत्तिस दोष निवार ॥ आ० ॥ ६ ॥ चोथी पडिमामांइ हो चउदश ने आठम पूर्णिमा, कांइ अमावस्या तिथि धार ॥ मास मास खट पोसा हो धारे ते शुद्ध निश्चलपणे, कांइ वर्जित दोष अढार ॥ आ० ॥ ७ ॥ पंचमी पडिमा पाले हो ते टाले स्नान शोभा वली, कांइ दिवसें अब्रह्म निवार ॥ जे भाणे भोजन आवे हो नहिं खावे आप मंगायने, करे काउस्सग्ग पोषा मझार ॥ आ० ॥ ८ ॥ छठी पडिमा लेवे हो नहिं सेवे ते कुशीलने, कांइ नारीकथा परिहार ॥ सातमी पडिमा जाणो हो प्रासुक ते खाणो मोकलो, कांइ नहिं करे सचित्त आहार ॥ आ० ॥ ९ ॥ आठमीमें आरंभ छंडे हो ते मडे प्रीति छे कायसूं, कांइ तेविशके भांगे विचार ॥ नवमीमें इम भांखे हो नहिं राखे दासी दासने, कांइ पोते काम विचार ॥ आ० ॥ १० ॥ दशमी दुःकरकारी हो निज अर्थे भोजन जे कर्यो, कांइ ते वरजे निरधार ॥ शिरपर मुंड करावे हो पयंपे भाषा दो भली, कांइ सत्य अने व्यवहार ॥ आ० ॥ ११ ॥ इग्यारमी पडिमा लेवे हो नहिं सेवे आश्रवद्वारने, कांइ वरते जिम अणगार ॥ मस्तक लोच करावे हो फरमावे हुं साधू नहिं, कांइ भेख मुनिनो धार ॥ आ० ॥

१२ ॥ पहेले मास एकातर हो कांइ दुजी पडिमा दो मासनी, काइ छट छट तपस्या धार ॥ त्रीजी तीन मासमें तेला हो चोथी ते चारज मासनी, काइ चोले चोले आहार ॥ आ० ॥ १३ एक एक मास वधावे हो बढावे तप इम एमही, काइ इम पडिमा इग्यार ॥ करता सुके भुक्खे हो लूखो अग पडियो तदा, काइ तन थयो पिंजराकार ॥ आ० ॥ १४ ॥ श्रावक सो विचारे हो नाहें सारे माहरी देहडी, काइ शक्ति नहि लगार ॥ आलोवि निंदी आतम हो निःशल्य थया शूरापणे, काइ प्रणमी जगकिरतार ॥ आ० ॥ १५ ॥ पाप अठारा त्यागे हो काइ वली जागे मोहनी नींदसें, काइ थागे सवरद्वार ॥ धर्मध्यान चित्त ध्याव हो काइ त्यागे चारी आहारनें, काइ जावजीव सुविचार ॥ आ० ॥ १६ ॥ इम निश्चल मन थापी हो तिण कापी ममता जालने, काइ धारयो अणसण सार ॥ तिलोकरिख कहे साची हो नहिं काची जाची भावमें, काइ सफल कियो अवतार ॥ आ० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तिण अवसर आणदजी, विशुद्ध लेश्या शुभध्यान ॥ ज्ञानावरणी क्षयोपशमे, उपन्यु अवधिज्ञान ॥ १ ॥ पूरव लवण समुद्रमें, पचसें योजन जाण ॥ एतोही दाक्षिण पाश्चमें, उत्तर हिमवत प्रमाण ॥ २ ॥ जाणे देखे ऊपरें, पम्थम स्वर्ग विचार ॥ नीचें जाणे रत्नप्रभा, स्थित चोरासी हजार ॥ ३ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ कीधा रे कर्म न छूटीयें ॥ ए देशी ॥ न्यायमारग जिनराज नो, भव दुख भजणहार लाल रे ॥ रिपुगजण दृग अजणो, शिव पदनो दातार लाल रे ॥ न्या० ॥ १ ॥ तिणकालें तिण अवसरें, समोसरया जगदीश लाल रे ॥ गोतम छठतप पारणो, प्रभुने नमायो शीश लाल रे ॥ न्या० ॥ २ ॥ कहे मुझ छटतप पारणो,

जो तुम आज्ञा थाय लाल रे ॥ वाणियगाम नगर विषे, गोचरी जाऊं चलाय लाल रे ॥ न्या० ॥ ३ ॥ अहासुहं प्रभुजी कह्यो, गौतम जी तिण वार लाल रे ॥ आज्ञा लेइने संचर्या, जोवतां ईर्याविहार लाल रे ॥ न्या० ॥ ४ ॥ गोचरी करतां सांभल्यो, आणंद अण लीध लाल रे ॥ चिंतवे हुं देखुं जई, इम निश्चे मन कीध लाल रे ॥ न्या० ॥ ५ ॥ पोषधशाला तिहां आविया, देखी आणंद सोय लाल रे ॥ रोम रोम हर्षित थया, बोले अवसर जोय लाल रे ॥ न्या० ॥ ६ ॥ शक्ति नहिं प्रभु माहरी, आवणरी तुम पास लाल रे ॥ उरहा पधारो नाथजी, मानो मुझ अरदास लाल रे ॥ न्या० ॥ ७ ॥ चरणवें शीश नमाइने, प्रणम्या तीनज वार लाल रे ॥ पूछे उपजे के नहिं, अवधि गृहवास मझार लाल रे ॥ न्या० ॥ ८ ॥ गौतम सुणि हामी भणी, तब सो कहे सुविचार लाल रे ॥ मुझ पण अवधि उपनो, कह्यो छए दिशि विस्तार लाल रे ॥ न्या० ॥ ९ ॥ इम निसुणी गोयम वदे, ओहि उपजे गृहवास लाल रे ॥ पण एतो दीर्घ न उपजे, ए निश्चे वात विमास लाल रे ॥ न्या० ॥ १० ॥ ए स्थानक तुमें आलवो, ल्यो तप प्रायश्चित्त अंगीकार लाल रे ॥ तब आणंद वलता कहे, प्रभु सांभलो मुझ समाचार लाल रे ॥ न्या० ॥ ११ ॥ सत्य छतां यथाभाव ते, कहेतां नहिं दोष लगार लाल रे ॥ ए स्थानक तुमें आलवो, सुणि शंका पडी तिण लाल रे ॥ न्या० ॥ १२ ॥ आई पूछे प्रभुशुं तदा, आणंद कह्यो जे विचार रे ॥ नाथ कहे ते साची कहे, थें लो श्चित्त तप सार लाल रे ॥ न्या० ॥ १३ ॥ जाय मावो तिण प्रत्यें, इम सांभली गौतम वाय लाल रे ॥ यश्चित्त लीनो प्रभु कने, माव गया उ य ल रे ॥ न्या० ॥ १४ ॥ वीश वर्ष वक ो, भारी पडिमा अग्यार लाल रे ॥ एक मास अणसण कह्यो, ल्प मझार लाल रे ॥ न्या० ॥ १५ ॥ सौधर्मावतं क ि थी,

कृण ईशाणने मांय लाल रे ॥ अरुणविमानमें ऊपना, चार पल्योपम आय लाल रे ॥ न्या० ॥ १६ ॥ सुख भोगवी त्याथकी चवी, महाविदेहक्षेत्र मझार लाल रे ॥ सजम ले करणी करी, कर्म करी सहु छार लाल रे ॥ न्या० ॥ १७ ॥ केवलज्ञान लेई करी, जावसी मुक्तिनी माय लाल रे ॥ अजर अमर सुख शाश्वता, लेसी सुख सवाय लाल रे ॥ न्या० ॥ १८ ॥ सवत उगणीशें गुणचालीसे, पौष कृष्ण बुधवार लाल रे ॥ त्रीज तिथि दिन रूयडो, दाक्षिणदेश विचार लाल रे ॥ न्या० ॥ १९ ॥ शहर सतारो प्रशिद्ध छे, पेठ भवानी वखाण लाल रे ॥ जोडयो चोढालियो चूपसु, सातमाअग प्रमाण लाल रे ॥ न्या० ॥ २० ॥ अधिको ओछो जोडयो हुवे, ते मिच्छामि दुक्कड मोय लाल रे ॥ तिलोकारिख कहे सुणि धारसी, तस शिव सपत होय लाल रे ॥ न्या ॥ २१ ॥ इति आणदजी श्रावकनु चोढालीयु समाप्त ॥

॥ अथ कामदेवजीश्रावकनु चोढालीयु प्रारभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ अरिहत सिद्ध आचार्यजी, उवज्झाया मुनिराज ॥ प्रणमु सतगुरु देवजी, पूरे वछितकाज ॥ १ ॥ सातमे अगें जाणीयें, दुजा अध्ययन मझार ॥ कामदेव श्रावक तणो, दाख्यो छे अधिकार ॥ २ ॥ तस अनुसारें वर्णवु, किंचित तास समास ॥ सुणो श्रोता शुद्धभावशु, समकित रत्न उजास ॥ ३ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ घोडा देश कमोदना ॥ ए देशी ॥ तिण कालें तिण अवसरें, चपानगरी मझारो जी ॥ जितशत्रु तिहा राजवी, प्रजा भणी सुखकारो जी ॥ १ ॥ धन्य श्रावक ज शुभमति कामदेव गाथापति जाणो जी ॥ छकोडी द्रव्य धरणी विषे, छकोडी व्याज वखाणो जी ॥ ध० ॥ २ ॥ छकोडी घर वखरी अछे, छ गोकुल वर्ग छे तासो जी ॥

भद्रा घरणी जाणीये, भोगवे भोग उल्लासो जी ॥ ध० ॥ ३ ॥ अवररिद्धि आणंद परें, दाखी छे सूत्रके मांइ जी ॥ तिण काले ति अवसरें, जगगुरु जगसुखदाय जी ॥ ध्र० ॥ ४ ॥ ग्राम नगर पुर विचरता, चंपानगरी मझारो जी ॥ वीरजिणंद समोसरया, परउपगारो जी ॥ ध० ॥ ५ ॥ राजादिक गया वंदवा, मदेव पाय विहारो जी ॥ वंदी बैठा प्रभु आगलें, मनमें हर्ष अपारो जी ॥ ॥ ध० ॥ ६ ॥ प्रभु दीनी उपदेशना, धर्म सदा सुखकारो जी ॥ जो आराधे भावशुं, उतरे भवजलपारो जी ॥ ध० ॥ ७ ॥ मदेव सुणि हरखीया, कहे सत्य वेण छे थारो जी ॥ संयमनी शक्ति नहिं, धरावो व्रत बारो जी ॥ ध० ॥ ८ ॥ आणंदनी पेरें जाणीयें, धन उपरंत पच्चक्खाणो जी ॥ त्याग करया शुद्ध भावशुं, बारा परिमाणो जी॥ध०॥९॥ सेवानंदा तिम भद्रायें, धारया व्रत र लो जी ॥ तिलोकरिख कहे सुणो आगलें, ए थइ प्रथम ढालो जी ॥ ध० ॥१०॥

॥ दोहा ॥

॥ कामदेव श्रावक भला, टाले व्रत अतिचार ॥ चउद वर्ष इम वीतिया, पन्नरमा वर्ष मझार ॥ १ ॥ जागरणा आणंद जि , ज्येष्ठ पुत्र घरभार ॥ देईने धारी तदा, पड़िमा शुद्ध इग्यार ॥ २ ॥ एक दिन पोषधशालमें, पोषध लीनो भाव ॥ धर्मध्यान ध्याई रह्या, तिण अवसर प्रस्ताव ॥ ३ ॥ शक्रेंद्र सौधर्मपति, बैठा मझार ॥ अवधिज्ञान करी जोइयो, कामदेव गुणधार ॥ ४ ॥ मुख जयणा करी बोलीयो, भरतक्षेत्रनी मांय ॥ धर्मिपुरुष निश्चल ते, कामदेव अधिकाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ धिक तेरा जीवड़ा न करता धरमकुं ॥ ए देशी ॥ निश्चल श्रद्धा समकित व्रतमांइ, इण अवसर कामदेव अधिकाइ ॥ नि० ॥ १ ॥ देव दानव असुर सुर जाइ, तिणने कोइ न सके

चलाइ ॥ नि० ॥ २ ॥ समदृष्टि सुर दीयो धनकारो, धन तिण नरनो सफल जमारो ॥ नि० ॥ ३ ॥ माहामिथ्यादृष्टि सुर तिणवारें, सुण कर सो मनमाइ विचारे ॥ नि० ॥ ४ ॥ अन्नको कीडो जीवे अन्न खाइ, तिणने एक छिनमें देउ चलाइ ॥ नि० ॥ ॥ ५ ॥ ऐसो विचार कियो मनमाइ, शीघ्रपणे तिहा आयो चलाइ ॥ नि० ॥ ६ ॥ महत पिशाचको रूप बणायो, महा विद्रूप भयकर कायो ॥ नि० ॥ ७ ॥ टोपला सरखो शशि बनायो, शूकर सरिखा केश जमायो ॥ नि० ॥ ८ ॥ कढायला सरखो कीयो कपालो, तालीकी पूछ ज्यु भ्रमु विकरालो ॥ नि० ॥ ९ ॥ बाहिर छटक्या नेत्र का डोला, सूपडा सारिखा कान कुडोला ॥ नि० ॥ १० ॥ गाडर जिम चपटी तस नासा, फालीया सरखा दतस त्रासा ॥ नि० ॥ ॥ ११ ॥ लटके उट सा होठ कुरगी, जिह्वा कनरणी जेम विभगी ॥ नि० ॥ १२ ॥ खध करया मृदग आकारो, पुरपोल किमाड ज्यों हियो भयकारो ॥ नि० ॥ १३ ॥ भुजा बीभत्स शिल्ला सी हथेली, खल बतासी अगुलीकु भेली ॥ नि० ॥ १४ ॥ सीपपुडसा तस नख विस्तारो, नाइ पेटी समथण भयभारो ॥ नि० ॥ १५ ॥ ढीलो छे सधी बध शरीरो, देखता कायर होत अधीरो ॥ नि० ॥ १६ ॥ काकींडा उदराकी तनमाला, कुडल नोलका अति विकराला ॥ नि० ॥ १७ ॥ उत्तरासण भुजगको अग धरतो, अट्टाट्टहास गर्जारव करतो ॥ नि० ॥ १८ ॥ अति तीक्ष्ण खाडो कर सायो, पोषधशाला तिहा चल आयो ॥ नि० ॥ १९ ॥ बोले वचन जिम कोपियो कालो, तिलोकरिख कहे दूसरी ढालो ॥ नि० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हभो कामदेव श्राद्ध तु, मृत्युनो वच्छणहार॥खोटा लक्षण ताहरा, हिरि सिरि वर्जणहार ॥१॥ धर्म पुण्य स्वर्ग मोक्षनो, तु अछे वछणहार॥ कल्पे नहिं तुझ खडवा, शीलादिक व्रत चार ॥२॥पण हु आज भजावशु,

पोषधादिक व्रत जेह ॥ नहिं तो येही खड्गशुं, खंड खंड करुं देह ॥ ३ ॥ आरत रौद्र ध्यानवश, मरसी आज जरूर ॥ ए दोय तीन वार ते, बोले वेण करूर ॥ ४ ॥ वयण सुणी इम तेहनां, डरिया नहीं लगार ॥ धर्म ध्यान ध्यावे हिये, देव तदा तिण वार ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ सूरिजन सांभलजो सब कोय ॥ ए देशी ॥ क्रोधातुर मिस मिस थको कांइ, त्रिशूल लिलाडें चड़ाय ॥ तीक्षण पाछणा धार सो कांइ, खड्गशुं खंडे काय ॥ भविकजन धन धन साहस धीर ॥ १ ॥ उजली वेदना ऊपनी कांइ, कहेतां न आवे पार ॥ के तो जाणे आतमा कांइ, के तो जाणे किरतार ॥ भ० ॥ २ ॥ त्रास नहिं एक रोममें कांइ, राख्या सम परिणाम ॥ कामदेव सोचे तदा कांइ, मिथ्यात्वी सुरकाम ॥ भ० ॥ ३ ॥ ए खंडे मुझ ायने कांइ, मुझ समकित व्रतबार ॥ खंडवा समरथ छे नहिं कांइ, जो आवे देव हजार ॥ भ० ॥ ४ ॥ थाक्यो देव तिण अवसरें कांइ, जोर न चाल्युं लगार ॥ पोषधशालाथी नीकली कांइ, पिशाचको रूप निवार ॥ भ० ॥ ५ सम अंग लागे धरणीशुं कांइ, धार्यो तिण गजरूप ॥ अंजनगिरिनी ऊपमा कांइ, दीसे महा विद्रूप ॥ भ० ॥ ६ ॥ पोषधशालामें आइने कांइ, तीन वार वली जेह ॥ बोल्यो व न पहेली तणा कांइ, रंच डरया नहिं नेह ॥ भ० ॥ ७ ॥ क्रोधातुर ग्रह्या शुंढमें कांइ, पोषधशालानी बहार ॥ उछाल्या आकाशमें कांइ, तीक्षण दंत मझार ॥ भ० ॥ ८ ॥ झालीने निज पगतले कांइ, लोलव्या तीनज वार ॥ महावेदना तिणें अनुभवी कांइ, चलिया नहीं लगार ॥ भ० ॥ ९ ॥ हस्तिरूप छोडी, करी कांइ सर्प बण्यो भयंकार ॥ लाल नेत्र मशीपुंज सो कांइ, करतो फूंफूंकार ॥ भ० ॥ १० ॥ पूर्वपरें वचन कह्या कांइ, अणबोल्या रह्या सोय ॥ निश्चलपणुं जाणी करी कांइ, क्रोधातुर अति होय ॥ भ० ॥ ११ ॥

तीन वींटा दिया कठमें कांइ, विष सहित हिया माय ॥ डक कियो अतिजोरसु कांइ, तो पण चलिया नाय ॥ भ० ॥ १२ ॥ थाको ते वेदनी देवता काइ, जाण्या दृढ परिणाम ॥ तिलोकरिख कहे त्रीजी ढालमें काइ, सुर कीधा वेदनी काम ॥ भ० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सर्परूप छोडी करी, निजरूप दिव्य ते धार ॥ कानें कुडल झगमगे, सजि शोला शिणगार ॥ १ ॥ दश दिश प्रभा करतो थको, कटिघूघर घमकार ॥ हाथ जोडिने वीनवे, लुल लुल वार वार ॥ २ ॥ धन्य पुण्य कृत लक्षणा, सफल तुझ अवतार ॥ इंद्रें करी प्रशसना, सौधर्मसभा मझार ॥ ३ ॥ मैं मिथ्यात्वतणे वशें, सत्य न मानी वाय ॥ धर्म डिगावण कारणें, दीयो परिसह आय ॥ ४ ॥ खमजो मुझ अपराध थें, नहिं करु दूजी वार ॥ इम लघुता करी देव ते, सचरयो स्वर्ग मझार ॥ ५ ॥

॥ ढाळ चोथी ॥

॥ मोने वाळो लागे विंछीयो ॥ ए देशी ॥ हारे लाला तिणकालें तिण अवसरें, समोसरया वीर जिणद रे लाला ॥ कामदेव सुणि धारीयो, पारणो करु प्रभु पेली वद रे लाला ॥ १ ॥ कामदेव श्रावक सिरें, जिर्णे पहेरया सहु शिणगार रे लाला ॥ प्रभु प्रणम्या शुद्ध भावशु, हियडे अति हर्ष अपार रे लाला ॥ का० ॥ २ ॥ प्रभु दीनी उपदेशना, द्वादश परिषदाने मझार रे लाला ॥ कहे कामदेव थकी तदा, आजे आधी रात मझार रे लाला ॥ का० ॥ ३ ॥ तीन उपसर्ग देवें दीया, ते खमीया समपरिणाम रे लाला ॥ एह अर्थ समरथ छे के नहिं, सो दाखे हता छे स्वाम रे लाला ॥ का० ॥ ४ ॥ गौतमादिक साधु साधवी, आमत्रिने कहे जिनराय रे लाला ॥ गृहस्थाश्रमें परिसह सह्या, तुमें तो थया मुनिराय रे लाला ॥ का० ॥ ५ ॥ द्वादश अग भणीया तुमे, परिसह सहेवा जोग रे लाला ॥ तह्त्ति

वचन रिया हु, श्र णादिक राखी उपयोग रे लाला ॥ १० ॥ ६ ॥
श्र उत्तर भगवंतने, पूछी सहु गया निजगेह रे ला ॥ आणंद
जि पडिमा वही, अंते ठायो अणसण तेह रे लाला ॥ १० ॥ ७ ॥
एक संलेषणा, प्रथम स्वर्ग मझार रे लाला ॥ अरुणाभ विमानें
, थिति दाखी पल्योपम चार रे लाला ॥ का० ॥ ८ ॥ वेंत्रे
विदेहमें जावसी, तिहां लेसी नर अवतार रे लाला ॥
ले करणी करी, ते जावसी मुक्ति मझार रे लाला ॥ १० ॥ ९ ॥
संवत उगणीशें गुणचालीशमें, पोषवदि चौथ तिथि जाण रे लाला ॥
देश दक्षिण कोकन विषे, शहर सातारो वखाण रे लाला ॥ का० ॥१० ॥
तिलोकरिख कहे सूत्रन्यायशुं, चोढालीयुं रच्युं सुखकार रे लाला ॥
भणसी गुणसी शुद्ध धसी, तस होवसी वा पार रे ला ॥
० ॥ ११ ॥ इति कामदेवजी वकनुं चोढालीयुं समाप्त ॥

॥ अथ एषणासमितिनुं चोढालीयुं प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥

॥ धर्म मंगल उत्कृष्ट छे, संयम तपस्या मांय ॥ मे सुर नर
जेहने, सदा धर्म चित्त चहाय ॥ १ ॥ जिम मधुकर कुसुम भणी, दुः
हिं देवे लगार ॥ रस ले तृप्त करे आत्मा, तिम जाणो अणगार ॥ २ ॥
संजम प्रतिपालवा, भाड़ो देत शरीर ॥ दोष बइय सि
टालिने, हार लहे गुणधीर ॥ ३ ॥ भिन भिन वर्णन त णे,
कहुं सूत्र अणुसार ॥ ते सुणजो भवियण तुमें, आलस उंघ निवार ॥४॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ निर्मल सुद्धसमकित जिणे पाइ ॥ ए देशी ॥ श्रीजी समिति
एषणा में, भांखी श्री जिनराया ॥ पाले मुनिवर शुद्ध रीतिसें
शिवसु गरजी डाह्या ॥ भोला श्रावक दे ल वे, मुनिवर जाणे
जावे ॥ १ ॥ ए टेक ॥ समुचय साधू कारण कीनो, असणादिक
चउ आहारो ॥ आधाकर्मी आहार सो कहीयें, महोटो दोष विचारो

॥ भोला० ॥ २ ॥ एक साधुको नाम थापीने, करे सो उद्देशिक जाणो ॥ सुजतामाही सीत मिले सो, पूईकरम वखाणो ॥ भोला० ॥ ३ ॥ ग्रहस्थी साधू दोइ अरथें, भेलो करि निपजावे ॥ मिश्रदोष कह्यो जगदीशें, कर्मबंध दरसावे ॥ भोला० ॥ ४ ॥ अवराने अतराय देइने, थापे मुनिवर काजें ॥ पाहुणा आधा पाछाने ते, सरस आहारी रिख साजे ॥ भोला० ॥ ५ ॥ अंधाराथी करे उजवालो, वली वेचातो लावे ॥ उधारो मागीने देवे, बदलो कर पलटावे ॥ भोला० ॥ ६ ॥ रिखजी काजें घरथी आणे, छादो उघाडी देवे ॥ अबके ठामें चढीने आपे, चढे ठाम तले ठेवे ॥ भोला० ॥ ७ ॥ निबला पासथी सबलो खोसे, अच्छिज्झ दोष ते कहींयें ॥ सबकी पातीमें एकज देवे, अणिशिठ दोष ते लहायें ॥ भोला० ॥ ८ ॥ आधणमाही अधिको उरे, वहिरावणने कामें ॥ उदगमन ए सोला कहीयें, ग्रहस्थी को छदो हे जामें ॥ भोला० ॥ ९ ॥ असुझतो आहार वेरावे जो कोइ, ओछो आउखो पावे ॥ सूत्र भगवती तथा ठाणागें, श्रीजिनवर दरसावे ॥ भोला० ॥१० ॥ देवावालो जहेरको दाता, तिणसु अधिको जाणो ॥ तिलोकरिख कहे सूझतो देवो, पावो पद निर्वाणो ॥ भोला० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सोला दोष दातारना, रिख टाली ले आहार ॥
भिन्न भिन्न वर्णन करु, सुणजो सब नर नार ॥१॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देशी ॥ बाल रमावे चित्र बतावे, आहार कारण जिम धाय जी ॥ समाचार कहे सगा सयणना, दूतिकर्म सो कहाय जी ॥ १ ॥ सोला दोष गुणांजन टाले पाले एषणा शुद्ध जी ॥ बुद्धिनिर्मल होय सजम साधो, पावो वास विशुद्ध जी ॥सो०॥२॥ जात जणावे गोत बतावे, आहार लेवणने काजजी॥

विण मिळीयां मुखडो कुम्हलावे, जिम राजानो गयो राजजी ॥ सो० ॥३॥ दीन दयामणो होय हियामें, बोले भिखारी जेम जी ॥ विणिमग दोष कह्यो जगदीशें, आहार मिल्या चितक्षेम जी ॥ सो० ॥४॥ ओषध भेषज केरें पड़िगणा, आहार खुशामत काज जी ॥ तिगिच्छा दे कह्यो जगदीशें, निपजे महाटो अकाज जी सो० ॥ ॥ ५ ॥ क्रोधें भरयो कहे रे रे कृपण, जो नहिं देवे हम आहार जी ॥ होशे हाणी तन धन जननी, माया नहिं आसी तुझ लार जी ॥ सो० ॥ ६ ॥ तुम दातार उदार भलेरा, और नहिं तुम तोल जी ॥ थें नहिं देशो तो कुण देशे, मान चढ़ावे इम बोल जी ॥ सो० ॥ ७ ॥ दूध दहीदिक वंछना मनमें, मुखसुं मांगे छाछ जी ॥ दाखे सीरादि पातरामांही, भाषा बदल कहे वाच जी ॥ सो० ॥ ८ ॥ आहार सरस अधिको ते वहोरे, लाभ जणावे दातार जी ॥ दान दियासुं अधिको मिलशे, लोभ दोष ए जहार जी ॥ सो० ॥ ९ ॥ वहोरतां पहेली अथवा पाछो, वड़ाइ दोष दातार जी ॥ अथवा दोष लगावे कोइक, इणविध वहोरे आहार जी ॥ सो० ॥ १० ॥ विद्या शिख आहार खुशामत, मंत्र जंत्र करि लेह जी ॥ चूर्ण वशीकरण जड़ी बुटी, आहारकाजें करे जेह जी ॥ सो० ॥ ११ ॥ ज्योतिष शु न शास्त्र प्रयुंजी, दाखे सुख दुःख जोग जी ॥ सुपनादिक फल आहारलोभथी, मोहे इणविध लोक जी ॥ सो० ॥ १२ ॥ विध कारण गर्भ गलावे, मूलकरम एह दोष जी ॥ आहार लोलुपी करम करे इम, पाप तणो करे पोष जी ॥ सो० ॥ १३ ॥ ए दोषसो लागे साधुथी, संजमनो होय नाश जी ॥ तिलो रिख कहे दोष निवारयां, लहीयें अविचल वास जी ॥ सो० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सोला उत्पातन तणा, दोष कह्या जगदीश ॥ जे शिवसाधन ऊठिया, टाले विशवा वीश ॥ १ ॥ गृहस्थिघरे गोचरी गया, दश वली

टाले सत ॥ ते सुणजो आलस तजी, भाख्यो श्रीभगवत ॥ २ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ भावपुजा नित कीजीयें ॥ ए देशी ॥ शोला दोष उदगमन ना, एताही उतपातो जी ॥ और कोइ दूषण तणी, शका पडे कोइ वातो जी ॥ १ ॥ तो मुनिवर वेहरे नहीं ॥ ए टेक ॥ जे अवसरका जाणो जी ॥ आप तथा दातारने, शका अभिप्राय पिछाणो जी ॥ तो० ॥ २ ॥ हाथरेखा आली होवे, अगुठादिक ठामो जी ॥ चोटी पटा डाढी मूछमें, आलो रहे कोइ जामो जी ॥ तो० ॥ ३ ॥ सचित्त द्रव्य नीचें धरयो, उपर द्रव्य अचेतो जी ॥ अचेत उपर सचित्त धरयो, गृहस्थी सो द्रव्य देतो जी ॥ तो० ॥४ ॥ लूण खडी जल सचित्तशु, ठाम जो खरडियो होवे जी ॥ तिणमें सो लावे आहारने, एहवो भाजन जोवे जी ॥ तो० ॥ ५ ॥ दातार अधो ने पांगुलो, अथवा कपण वाधी जी ॥ चालणकी शक्ति नही, अथवा कपण उपाधी जी ॥ तो० ॥ ६ ॥ पूरो शस्त्र नहिं परगम्यो, अधकाचो रह्यो जेहो जी ॥ होलाउबी पुखडा आद दे, गृहस्थि वेहरावे तेहो जी ॥ तो० ॥ ७ ॥ तुरतको लीप्यो आगणो, टपका पाडतो लावे जी ॥ एषणाना दश दोष ए, श्रीजिनवर फरमावे जी ॥ तो० ॥ ८ ॥ ए दश दूषण न जेहमें, वेहरावे दातारो जी ॥ तिलोकरिख कहे त्रीजी ढालमें, दोषण तेणो विचारो जी ॥९॥

॥ दोहा ॥

॥ दोष बइयालीस टालीने, आहार लावे अणगार ॥ पच मांडला उपरें, दोष करे परिहार ॥ १ ॥ ते सुणजो सुगुणा रखी, रसना वश करि राख ॥ तो सुख लहिशो शाश्वता, सर्व सिद्धातकी साख ॥२॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ पास जिनेश्वर रे स्वामी ॥ ए देशी ॥ एह रिख मारग रे नाइ, स्वाद करण करे आहार उमाही ॥ राजी गमतो रे आया,

अणगमतो करे सोच सवाया ॥ ए० ॥ १ ॥ ताकी ताकी रे जावे, ताजा ताजा मालज लावे ॥ नीरसने वहोरे रे नांइ, वण रह्या दो लाल सदाइ ॥ ए० ॥ २ ॥ जीमण देखीरे धावे, रसलंपटने लाज न आवे ॥ मिलियाशुं शोभा रे करतो, अ ीया पर निंदा उ रतो ॥ ए० ॥ ३ ॥ भांड ज्युं कहीयें रे तेहने, परभव टको रंच न जेहने ॥ दूधज आयो रे फीको, सक्कर आयां ाग ी नीको ॥ ए० ॥ ४ ॥ दाल अलूणी रे आइ, लूण बिनाते स्वाद न कांइ ॥ चटणी पापड रे लावे, नानाविध संजोग मिलावे ॥ ए० ॥ ५ ॥ गम आहारज रे आवे, दाबी चांपीने अधि वे ॥ जिनजी आज्ञा रे भंगे, वली आशाता अति उपजत अंगे ॥ ए० ॥ ६ ॥ भोजन आयो रे भातो, देखी मनमें अति हर तो ॥ सबड़का लेइने रे खावे, चटपट चटपट मुंढो बजावे ॥ ए० ॥ ७ ॥ गरम म लो रे भारी, वघारी धुंगारी रूड़ी त री ॥ चतुरणी नारीरे दीसे, उण घरे जावणो विशवाविशें ॥ ए० ॥ ८ ॥ प्रशंसा रे कर , दिन उग्यांथी सांज लगे चरतो ॥ चारि दाहज रे लागे, अंगारा सम ओपमा सागे ॥ ए० ॥ ९ ॥ आहा नीरसो रे देखी, चित्तमें आरत आणे विशेषी ॥ मिरचां लूणज रे नांइ, वडनारी ए नहिं छमकाइ ॥ ए० ॥ १० ॥ बोले मु शुं रे टो, पाड़े धनको टोटो ॥ रणाबिना आहारज रे वे, पंचमो दोष ए स्वामि सुणावे ॥ ए० ॥ ११ ॥ मंडलदूषण रे पांची, तिलोकरि कहे सुणजो साची ॥ उगणीसें छत्तिस रे लें, म सोनइ दक्षिण सुविशालें ॥ ए० ॥ १२ ॥ आहारनां दूषण रे णो, चोथी ढाल र ल व ाणो ॥ जे मुनि दूषण रे , ते भवजल मांहीज रेवे ॥ ए० ॥ १३ ॥ छन्नुं दूषण रे रा, टाले सो धनधन अणगार॥ इण भव शोभा रे भारी, आगे अजर अ सु स्वारी ॥ ए० ॥ १४ ॥ इति एषणासमितिनुं चोढालीयुं र्ण ॥

॥ अथ विनयआराधनानु चोढालीयु प्रारभ. ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीजिनराज प्ररूपीयो, विनयमूल जिनधर्म ॥ इम जाणी भवि आदरो, तूटे आठ्‌ कर्म ॥ १ ॥ विनय बिना शोभा नहिं, नाक बिना जिम नूर ॥ जीवविना जिम देहडी, शस्त्र बिना जिम शूर ॥ २ ॥ नमसी सो सुख आपने, इणमें शक न कोय ॥ घालि तराजु तोलीयें, नमे सो भारी होय ॥ ३ ॥ आब आबली जबुदिक, उत्तम वृक्ष नमत ॥ तिम सुगुणी जन जाणीयें, मध्यम तरु अकडत ॥ ४ ॥ मात पितार्थी अधिकता, गुरु उपगार अपार ॥ टालो अशातना सर्वथें, जो तरणो ससार ॥ ५ ॥ धर्मगुरु मत बीसरो, पल पल गुण करो याद्‌ ॥ सुगुणा जन सुणजो तुमें, गुरु गुण अगम अनाद्‌ ॥ ६ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ पास जिनेश्वर रे स्वामी ॥ ए देशी ॥ गुरुगुण समरो रे भावें, मोक्षमार्ग गुरु बिना नहिं पावे ॥ गुरु गुण सागर रे दरिया, चरण करण रत्नागर भरिया ॥ गु० ॥ १ ॥ मोति जैसा मैला ने कहीयें, सक्कर सरिखा खारा मनइयें ॥ सुमेरु ज्यु समजो रे न्हाना, अण गमता निज प्राण समाना ॥ गु० ॥ २ ॥ अधीरज कुजर रे जेहवा, केसरीसिंह जेम कायर कहेवा ॥ गुणधर जेहवा रे विराधि, भारड पखी जिम परमादी ॥ गु० ॥ ३ ॥ सुरगुरु जेहवा रे अभणीया, वैश्रमण जेहवा मूजि सो थुणीया ॥ क्रोधी पूरा रे दीसे, टले नहिं जे कर्म शत्रु अरिसें ॥ गु० ॥ ४ ॥ शशिसम उष्णता रे जाणो, अप्रतापी जिम दिनकर मानो ॥ सुरतरु जेहवा रे अदाता, श्रीजिन जेहवा लोभी विख्याता ॥ गु० ॥ ५ ॥ शम दम उपशम रे करणी, करे गुरुदेव सदा भवतरणी ॥ भवजल तारक रे वाणी, दे उपदेश

सदा सुखदाणी ॥ गु० ॥ ६ ॥ मोहनी कर्म रे अंधो, करतो नीच अकारज धंधो ॥ दुर्गति पड़तो रे राखे, निरवद्य वेण धुर सत्य भांखे ॥ गु० ॥ ७ ॥ सतगुरु करुणा रे कीनी, बोधबीज स - कित घट दीनी ॥ भर्म मिटायो रे भारी, सतगुरु सम नहिं इ उपगारी ॥ गु० ॥ ८ ॥ महिपति संजती रे नामें, पहुंतो वन ग मारण कामे ॥ गर्दभाली मुनिवर रे तारयो, संजम लेइ निज रज सारयो ॥ गु० ॥ ९ ॥ परदेशी हत्या रे करतो, पाप करण सो रंच न डरतो ॥ केशी गुरु तारयो रे सोइ, गुणचालीश दिनमें सुर होइ ॥ गु० ॥ १० ॥ दृढप्रहारी रे नामें, चार हत्या करी जातो परगामें ॥ सतगुरु बोधज रे दीनो, संजम देइ शिववासी सो कीनो ॥ गु० ॥ ११ ॥ एम अनंता रे प्राणी, तारिया सतगुरुकी सुणि णी ॥ सेवा करसी रे भावें, सो नर भव भव में सुख पावे ॥ गु० ॥ १२ ॥ जिणें गुरु आज्ञा रे धारी, सो जिन आज्ञामें नर नारी ॥ गुरुकी तो महिमा रे भारी, तिलोकरिख कहे नित बलिहारी ॥ गु० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गुरु कारीगर सारिखा, टांकी वचन उच्चार ॥ पत्थरकी प्रति करे, जिम सतगुरु उपगार ॥ १ ॥ मूल तेतीस आशातना, उत्तर अनेक प्रकार ॥ गुरुनी टालो आशातना, जो तरणो संसार ॥ २ ॥ राग द्वेष पक्ष छोड़जो, मत करजो मन रीस ॥ टाल्यांथी सु पावसो, भाख्यो श्रीजगदीश ॥ ३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ निर्मल शुद्ध समकित जिण पाइ ॥ ए देशी ॥ अड़ आगें पाछे बरोबर, उठे बेठे चाले ॥ एक एकमें तीन गणीजें, ए नवभेद दीखाले ॥ १ ॥ जाणी करे आसातना प्राणी ॥ जिणने आगें नरक निसाणी ॥ ए आंकणी ॥ गुरुसंगाते थंडिल पहुंता, शुचि करे पहेली चेलो ॥ कोइक वंदवा आवे तेहने, बतलावे गुरु पहेलो

॥ जा० ॥ २ ॥ गुरु शिष्य आवे साथें उपाश्रय, पहेली ईर्या ठावे ॥ अवराने आगल आलोवे, आहार पाणी जे लावे ॥ जा० ॥ ३ ॥ गुरु पहेली बतावे परने, देवणकी मनवारो ॥ गुरुने बिण पूछा पर सोपें, सोलमी ये अवधारो ॥ जा० ॥ ४ ॥ लूखो सूखो निरसो विरसो, गुरुने दीनो चहावे ॥ सरस आहार मनगमतो देखी, आप लेइ हरखावे ॥ जा० ॥ ५ ॥ रात्रे सूतो गुरुजी पूछे, कुण सुतो कुण जागे ॥ सुण कर उत्तर दे नहिं जाणी, कामज करणो लागे ॥ जा० ॥ ६ ॥ गुरु बतलावे कारण पडिया, उत्तर दे आसण बेठो ॥ उठण केरो आलस अगें, काम करणमे धिठो ॥ जा० ॥ ७ ॥ गुरु बतलायो कोइक कारण, सुणीयो करे अणसुणीयो ॥ जाणे कोइक काम बतासी, राखे मन अणमणियो ॥ जा० ॥ ८ ॥ गुरु बतलायो बेठो बेठो, शु कह्यो शु कहो बोले॥ तहत्त वाणी मथेण वदामि, सो तो कहे न भोले ॥ जा० ॥ ९ ॥ गुरु गरढा तपसीनी वेयावच्च, करता निर्जरा भारी॥ एम सुणी सो कहे अपुठो, तुमने शु नहि प्यारी ॥ जा० ॥ १० ॥ गुरु देवे हित शिक्षा आणी, ज्ञान दीपक उजवालो ॥ कहे अपुठो गुरुशु मूरख, पोतें क्यों नहिं चालो ॥ जा० ॥ ११ ॥ तु तुकारो देवे गुरुने, ऐसो मूरख प्राणी ॥ गुरु उपदेश देवे भविजनने, आणे चित्त अकुलाणी ॥ जा० ॥ १२ ॥ गोचरी वेला हुइ झाझेरी, दिन चढियो नहिं दीसे ॥ वखाण थोभे नहिं भूखज लागी, बोले भरियो रीसे ॥ जा० ॥ १३ ॥ गुरुजी अर्थ कहे भविजनने, विचविचमाही बोले ॥ कहे थाने शुद्ध अर्थ न आवे, वर्थ निकाल्या भोले ॥ जा० ॥ १४ ॥ गुरुजी कहेता शिष्य पयपे, याद पुरी नहिं थाने ॥ मे कहु सावत वात वणाइ, गुरु कथा छेदी वखाणे ॥ जा० ॥ १५ ॥ गुरु वखाण करे तिणमाही, कोइक काम बताइ ॥ पर्षदामाही भेदज पाडे, मूरख समझे नाइ ॥ जा० ॥ १६ ॥ गुरु वखाण करीने ऊठे, तिणहीज सभा मझारो ॥

॥ सोहीज श्ा सोहीज गाथा, करे अरथ विस्तारो ॥ जा० ॥
॥ १७ ॥ हीणता जणावे निजगुरु केरी, पंडितपणो बतावे ॥
लोकसरावण सुण कर मूरख, मनमें अति अकडावे ॥ जा० ॥ १८ ॥
गुरु ' आसण ओघो पुंजणी, पगसुं ठोकर देवे ॥ गुरुने आ णे
सुवे बेसे, उंचो आसण ठेवे ॥ जा० ॥ १९ ॥ गुरुनी प्रशंसा
करे न पोतें, सुण कर अति मुरझावे ॥ तेत्तिस आशातना
कही नो, जड़ामूलसुं ढावे ॥ जा० ॥ २० ॥ गुरुने आगें वस्तर
केरी, लठी वाली बेसे ॥ कर बांधे किर ण जु भोलो, टे
विशेषें ॥ जा० ॥ २१ ॥ पाय पसारी आलस मोड़े, पग पर पग
चड़ावे ॥ विकथा मांडे कड़का मोड़, गुरुने नहिं मनावे ॥ जा०
॥ २२ ॥ हड़हड़ हसे शरम नहिं राखे, जिम तिम बोले णी
॥ करे गुरुने ण पूछ्यां, बिच बिच बात ले ताणी ॥जा०॥
॥ २३ ॥ गुरुजी इक जिनस मंगावे, जावणको मन नांही ॥
उत्तर ले चोज लगाइ, ते सुणजो चित्त लाइ ॥ जा० ॥ २४ ॥
हाल व त नही गोचरी केरी, अथवा नर नहि घरमें ॥ दीया
होसी वाड़ बारणें, ले न इण अवसरमें ॥ जा० ॥२५॥ वेहेरा-
वणरा भाव न दीसे, अथवा जिणरे नांई ॥ असुजता सूता
होसी, वस्तु न मिलसी ठाइ ॥ जा० ॥ २६ ॥ अबार हुं आ र
खुं, लिखसुं पानो पूरो ॥ पलेवणो तथा थंडिल जाणो, अथवा
घर छे दूरो ॥ जा० ॥ २७ ॥ सो तो कंजूस तथा मिथ्यात्वी,
मुझने नहिं पीछाणे ॥ शरम आवे मुझ भीख मांगता, उं
अजाणे ॥ जा० ॥ २८ ॥ मुझने थंड वाय नहीं सोसे, तड़को
चढीयां जासुं ॥ कहे उन्हालो पांव बले मुझ, दिन ढलीयाथी घासुं
॥ जा० ॥ २९ ॥ चो से कहे कीचड़ बहुलो, पग लपसे छे
महारा ॥ भूख लागी थकेलो चड़ियो, पग अकड्या छे सारा ॥ जा०
॥ ३० ॥ महारा शरीरमें अड़चण दीसे, चालण शक्ति नांइ ॥

एक वार मैं आणी दीधो, अब भेजो परनाइ ॥ जा० ॥ ३१ ॥ एक काम करावे तिणमें, जाणी ढील लगावे ॥ जाणे जलदी करसु कारज, फेर मुझ और बतावे ॥ जा० ॥ ३२ ॥ विनयवदणा करे न पहेली, कहे मुझ ज्ञान सीखावो ॥ पाछे करजो काम तुह्मारो, पहेला बोल बतावो ॥ जा० ॥ ३३ ॥ सयम लीधो मैं तुम पासे, एता दिनके माइ ॥ काम काममें काल वितावो, ज्ञान सीखावो नाइ ॥ जा० ॥ ३४ ॥ अवगुण आपणा देखे नाइ, बात करण को तसियो ॥ पेट भरीने नींद्ज लेवे, विकथा सुणवा रसियो ॥ जा० ॥ ३५ ॥ समीसाजथी पाय पसारे, भणियो सो न चितारे ॥ टेके वेठ। अक्षर शीखे, भली शीख नही धारे ॥ जा० ॥ ३६ ॥ गुरुकी कहेणी करे वेठ जु, अवगुण ताके परका ॥ सुअर भ्रष्टा खावे खीर तज, ए लक्षण तिण नरका ॥ जा० ॥ ३७ ॥ अभिमानी अरु क्रोध घणेरो, चाले आपणे छदे ॥ आप करे गुरुछानो कारज, परना अवगुण निंदे ॥ जा० ॥ ३८ ॥ गुरु देखीने अक्षर घोके, दीसे घणो सियाणो ॥ पीठ फेरीया छादे चाले, जाणे जग को राणो ॥ जा० ॥ ३९ ॥ आपणे हाथे कामज विगडे, परने माथे नाखे ॥ गुरु पूछ्या घुरावे श्वान ज्यु, रच न साचु भाखे ॥ जा० ॥ ४० ॥ और आशातना भेद घणेरा, पूरा कह्या न जावे ॥ तिलोकरिख कहे ढाल दूसरी, भविक सुणी हरखावे ॥ जा० ॥ ४१॥

॥ दोहा ॥

॥ जे अविनयथी डरे नहीं, करे आशातना कोय ॥ ते दु.ख किण परें भोगवे, साभलजो भविलोय ॥ १ ॥ सडया कानकी कूतरी, जिणघरे जावे चाल ॥ नीकाले दुर दुर करे, इणविध होय हवाल ॥ २ ॥ परभव किल्विश देवमे, उपजे सो अविनीत ॥ तिहाथी मरी चउगतिमे, होवे पूरी फजीत ॥ ३ ॥ गुरु

बालक वृद्ध अणसमया, ते पण अविनय टाल ॥ अग्नि जेम सेवन किया, शाता लहे विशाल ॥ ४ ॥ सुतो सिंह जगावणो, खर अंगारे पाय ॥ गिरि खणवो जेम नखथकी, पोतें अशाता थाय ॥ ५ ॥ करतल मारे शक्तिपर, विष हलाहल खाय ॥ मिरचां आंजे आंखमे, पोतें अशाता थाय ॥ ६ ॥ एतो देवप्रभावथी, विघन करे नहिं कांय, आशातना फल नां टले, करतां कोइ उपाय ॥ ७ ॥ एक वचन ज्ञानीतणुं; जो धारे नर नार ॥ तास अविनय तजवो कह्यो, दशवैकालिक मांय ॥ ८ ॥ जिणपासे धारणकियो, संजम शिवदातार ॥ तेहनी करे आशातना, सो मूरख शिरदार ॥ ९ ॥ नीतिशास्त्र पुण दाखीयो, सात वार होय श्वान ॥ सौ भव लहे चांडालना, आगें लहे दुखःस्थान ॥ १० ॥ गुरुनी निंदा जे करे, महापापी कहेवाय ॥ सर्वशास्त्रें दरसावियो, मुक्ति कदहीं न जाय ॥ ११ ॥ के वेहेरा के बोबड़ा, के दुर्बल के दीण ॥ जिनमारग पावे नहीं, जो करे गुरुकी हीण ॥ १२ ॥ इम जाणी भवि णिया, करो विनय गुरुदेव ॥ ते सुणजो सुगुणा तमें, किणविध करीयें सेव ॥ १३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ सोइ सयाणो अवसर साधे, अवसर साधे ने स्वामी अराधे ॥ ए देशी ॥ विनय करीजें भाइ विनय करीजें, विनय करीने शिवरमणी वरीजें ॥ ए टेक ॥ श्रीगुरुसेव करो मन रंगे ॥ मोह कलप कुमति सब भंगे ॥ संजम किरिया गुरुमुख धारो, लुल लुल नमन करी गुरु ठावो ॥ वि० ॥ १ ॥ गुरु वतलाया तहेत्त उच्चारो, क्रोध मान मद दूर निवारो ॥ कठिण सुणी श्रीगुरुजीकी वाणी, रीश करो मत हेत पिछाणी ॥ वि० ॥ २ ॥ फरमावे गुरु काम जो कोइ, जेज न करणी अवसर जोइ ॥ गुरु मुझ उपर कृपा कीनी, निर्जरारूप प्रसादी दीनी ॥ वि० ॥ ३ ॥ अंगचेष्टा

श्रीगुरुकी देखी, सो कारज करणो सुविसेखी ॥ वैय्यावच्च करता आलस छोडो, भक्ति किया पहेली मत पोडो, ॥ वि० ॥ ४ ॥ प्रश्न पूछंता हाथज जोडो, शीश नमावो मानज मोडो ॥ मधुर वचन प्रशसा करके, ज्ञान शीखो अति आणद धरके ॥ वि० ॥ ५ ॥ छोटा मोटासु हिलमिल रहीजें, अधिक भण्याको गर्व न कीजें ॥ खार इसको किणसु राखणो नाइ, महारो थारो करो मत काइ ॥ वि० ॥ ६ ॥ वाद विवाद झोड मत माडो, विकथा वात तणो रस छाडो ॥ वचन कहो माँत कोइ मर्मनो, मनमें सदा डर राखो कर्मनो ॥ वि० ॥ ७ ॥ रीशवसें पातरा मत पटको, इजको खाइ दुजापर तटको ॥ जेम तेम बड बड पण नहिं करीयें, लोक व्यवहारसु अधिको डरीयें ॥ वि० ॥ ८ ॥ उचे शब्दें करो मत हुला, सुण कर लोक होजावे ज्यु भेला ॥ जैनमार्गकी लघुता आवे, सासारिक सगा सुणी दु ख पावे ॥ वि० ॥ ९ ॥ प्रियधर्मीकी आस्ता छूटे, क्रोधरिपु सजमधन लूटे ॥ ऐसो काम करो मत शाणा, इणभवे निंदा आगे दु ख पाणा ॥ वि० ॥ १० ॥ रिद्धि छोडी जिणरो गर्व न कीजें, अधिकगुणी पर नजर जो दीजें ॥ आगलका अवगुण मत देखो, अपणा अवगुणको करो लेखो ॥ वि० ॥ ११ ॥ बाल तरुण वृद्ध जो जो नर नारी, सबथी जीकारे बोलो विचारी ॥ तु तु तुकारो ओछी बोली, करीयें नहीं कछु थट्टा रोली ॥ वि० ॥ १२ ॥ नीचें देखी धीरे पग मेलो, न्याय प्रमाण सुणी मत ठेलो ॥ सजम काममें निर्जरा जाणो, उज्ज्वलभाव शका मत आणो ॥ वि० ॥ १३ ॥ पच व्यवहार प्रमाण करीजे, निश्चे व्यवहारकी नय समजीजें ॥ उत्सर्ग अरु अपवाद पीछाणो, सतगुरु वयण करो परमाणो ॥ वि० ॥ १४ ॥ इणविध करणी भवजल तरणी, दु ख दुर्गति आपद भयहरणी ॥ त्रीजी ढालें विनयरीत वरणी, तिलोकरिख कहे शिवसुख वरणी ॥ वि० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मान बडाइ ईरष्या, क्रोध कपट दे टाल ॥ महारो थारो छोड़के, ले रूडी चाल ॥ १ ॥ विनय करे गुरुदेवको, करे आज्ञा पा ण ॥ तिणने महागुण नीपजे, ते सुणजो भवियाण ॥ २ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ रे भाइ सेवो साध सयाणा ॥ ए देशी ॥ रे विन ां फल मीठा, हलु ां सुणकर हरखावे ॥ रज्ञावे नर धिठा रे भाई विनय तणा फल ठा ॥ ए टेक ॥ प्रगमे भलो ज्ञान विर्न शिष्यने, ज्ञान थकी भ्रम भाजे ॥ भर्म गयासुं सम पुष्टि, सम त व्रत जे रे ॥ भा० ॥ १ ॥ व्रत पाल्यासुं धन धन , आदर अधि थावे ॥ मा मा करे नर नारी, मनग ती वित्त रे ॥ भा० ॥ २ ॥ विनयवंत शिष्यने सीख चोखी, होवे शा कारी ॥ इण भव मांही रिद्ध सिद्ध संपत, पर में री रे ॥ भा० ॥ ३ ॥ होय आराधक सुरपद पावे, महेल नोहर भारी ॥ रतनजड़ीत पचरंग मनोहर, वास सुम छबि प्यारी रे ॥ भा० ॥ ४ ॥ कंकर, कंटक पंक रजादिक, नीच अ न नांइ ॥ जाली झरो झ ग दीपे, सुगंध रही महकाइ रे ॥ भा० ॥ ५ ॥ बत्तिस नाटक पड़े निस दिन जठे, राग छत्रिसें पे ॥ धप मप धप मप जे मृदंगा, सु ां श्रवण नहिं धापे रे ॥ भा० ॥ ६ ॥ नाना र हार ज्यां लटके, तोरण छे पंच प्रकारें ॥ आथडतां होय नाद मनोहर, जाणे कोइ देवी उ रे रे ॥ भा० ॥ ७ ॥ दोय सहस्र वर्ष छोटा नाटकमें, मोटामें दश हजारो ॥ एक महूरतको काल ज्युं बीते, विनयकरणी फल भारो रे ॥ ॥ भा० ॥ ८ ॥ पल सागराथिति एम निकाली, तिहांथी चवी नर थावे ॥ संजमधारी करम निवारी, ज्ञान केवल सोहि पावे रे ॥

भा० ॥ ९ ॥ होय अयोगी मुक्ति सिधावे, शाश्वता सुख जाणो ॥ विनय करण फल पार न पावे, शास्त्रको भेद पहिचाणो रे ॥ भा० ॥ १० ॥ सुणता तो आणद बढावे, गुणता बुद्धि प्रकाशो ॥ पालता तो शिवना फल लहीयें, राखो चित्त विश्वासो रे ॥ भा० ॥ ११ ॥ सवत उगणीसें छत्तिश सालें, तेरशवदि वैशाखें ॥ विनय फल ढाल कही वर चोथी, सर्व सिद्धातकी साखें रे ॥ भा० ॥ १२ ॥ देश दाक्षिण विचरता आया, खानरा हिवडा मझारो ॥ तिलोकरिख कहे मूल धरमको, करवा पर उपगारो रे ॥ भा० ॥ १३ ॥ सुण कर राग द्वेष मत करजो, समुचय दियो उपदेशो ॥ नही मानो तो मरजी तुम्हारी, निजकरणी फल लहेशो रे ॥ भा० ॥ १४ ॥ दान शीयल तप भावना भावो, ए जगमें तत सारो ॥ पालो अराधो विनय यथारथ, उतरया चाहो भव पारो रे ॥ भा० ॥ १५ ॥ कलश ॥ विनय करणी, दु:खहरणी, सुख निसरणी, जाणीयें ॥ इणलोक सोभा, आगें शुभगति, सिद्धात न्याय वखाणीये, ॥ धरम मूलसो, विनय दाख्यो, सींचे तो फल पाइयें ॥ कहे रिख, तिलोक भविका, आराध्या शिव जाइयें ॥ १ ॥ सर्व गाथा ॥ ११० ॥ इति विनयआराधनालु चौढालीयु सपूर्णम् ॥

॥ ॐ अर्हं ॥

॥ अथ श्री गजसुकुमारकी लावणी प्रारभ. ॥

परम पति परमेश्वर समरो नेम जिनेश्वर उपकारी ॥ दे उपदेश भला हितकारक धार तिरे नर और नारी ॥ टेर ॥ खडे खडे तेलेकी तपस्या समरा वेसमण भडारी ॥ कचनके गढ कोट वनाए देव पुरीसी छव प्यारी ॥ जरासधकु मार चक्रसे तीन खडका राज्य लिया ॥ परजाको फरजदसी पाले वैरीका सब नाश किया ॥ अजर अमर खुशवखती शहरमे राज्य करत है मुरारी ॥ प० ॥ १ ॥ एक रोजका

जिक्र सुनो सब नेम प्रभूजी जहां आए ॥ छे साधूजी आज्ञा लेकर नगरी के अंदर आए ॥ दो आए देवकीके घरमें मोदक लेकर सिधाए ॥ दो आए फिर उसी दममे आहार देके फिर पहुंचाए ॥ दो आए फिर उनको वेराकर भरम भयो दिल विचारी ॥ प० ॥ २ ॥ कहे देवकी सुनो साधुजी स्वर्गपुरीके अनुहारे ॥ बड़े बड़े धनवंत वसे यहां श्रावक हैगा दातारे ॥ कहो जी क्या नहीं मिले आहार वहां फिर फिर उस घरमें जाना ॥ कल्पे नहीं हम सुनी श्रवणसे नेम प्रभूका फरमाना ॥ हाथ जोडकर करे यों अरजी साधुक्रिया जाननहारी ॥ प० ॥ ३ ॥ देवकीका सवाल सुना यह समझ लिया मुद्दा सारा ॥ कहे साधुजी सुनरे देवकी भद्दलपुर रहने हारा ॥ नाग गाथापति पिता हमारे सुलसाके अंगज प्यारे ॥ छहों भाइ हम एक सरीखे रंग रूप वय उणिहारे ॥ मात पिताके बहुत लाडके बहोत्र कलामें हुसियारी ॥ प० ॥ ४ ॥ जवान उमर में जब हम आये मात पिता खुशबख्तीसे ॥ सुंदर लडकी इभ-पतियोंकी शादी किवी संग बत्तीसे ॥ बत्तीस क्रोड रुपैये आये अशरफी इतनी जानो ॥ एकसो बानव बोल दायजो अलग अलग छहुंके मानो ॥ और साहेबी थी बहुतेरी नहीं थे जन्मके भिखारी ॥ प० ॥ ५ ॥ बहोत रोज यों गुजरे भोगमें पडे नाटकके धुंकारे ॥ एक रोज हम भाग्य उदयसे नेम जिनेश्वर पधारे ॥ बहोत थाठसे गये वंदवा दिया उपदेश भला हमकू ॥ दुनियादारी जान अथिर हम जोग लिया है उस दमकू ॥ उसी रोज आज्ञा ले प्रभुकी छठ छठ तपस्या हम धारी ॥ प० ॥ ६ ॥ जनम मरणका डर हम रखके करें तपस्या सुन बाई ॥ तनको भाडा देन काज यहां चल ये मंदिर माई ॥ पेट भरणके काम फकीरी हमने नहीं लीनी स्यानी ॥ पहले आये सो और जान तू हम दुजे यों ले मानी ॥ इतना जवाब देकरके सो फिर आये ठिकाने अनगारी ॥ प० ॥ ७ ॥

सुन जवाब देवकी सोचे जब मैं फिरती लडक पनमें ॥ कहा एवतारिखजी मुझसे आठ पुत्र सुदर तनमें ॥ जन्मेगा तू सुनरे देवकी और न जनेगी भरतखडमें ॥ सो कहेनी तो झूठ भई सब आज देखे छहों परचडमें ॥ नेम प्रभूके पास जायकर बहम मेरा मैं दू टारी ॥ प० ॥ ८ ॥ उसी वक्त रथमाहे बैठ गई भ्रमभजन पासे चलके ॥ जाते पहले हाल सुनाया वे थे धारक केवलके ॥ भद्दलपुरमें नाग गाथापति सुलसा उसकी थी नारी ॥ मृतवध्या यों कही नैमित्तिक जब वो फिरती कौंवारी ॥ उसने सुन एक हिरनगवेषी मूरत कर पूजन धारी ॥ प० ॥ ९ ॥ किसी रोज पर प्रसन्न भया वह गर्भयोग समतोल करे ॥ जन्म समयकी वक्त बरोबर करके करमें लेके धरे ॥ तेरे फरजद उसके पास रख पास रखे उसके तेरे ॥ छे लडके इस माफिक समझ ले बिन तकदीर कैसे ठहरे ॥ छहों फरजद ये तेरे मान तू तू है छहुकी महतारी ॥ प० ॥ १० ॥ सुनके सो गइ छहुके पास चल खडे खडे निरखन लागी ॥ हरख भराना बहुत बदनमें मोहदशा मनमें जागी ॥ अगियाकी कस तूट गइ और दूध भराना है स्तनमें ॥ करके ककण तग भए हैं खुशीके आसु भरे नैननमें ॥ वदना करके आइ महलमें दिलमें सोच करे भारी ॥ प० ॥ ११ ॥ मेरे फरजद सात हुये पन नहीं खिलाया एकही मैं ॥ नहीं न्हलाया जीमाया मैं काजल पन आजा नहीं मैं ॥ चटा पटा चुसनी घुघरा नहीं बसाइ झूमर मैं ॥ नहीं पहिराया गहना कपडा थडी न कराइ उमर में ॥ डूब रही है फिकर समदर नहीं मेरेसे दुखियारी ॥ प० ॥ १२ ॥ गदगली पाड हसाया नहीं मैं झगा टोपी बनवाया ॥ घाघू कहकर नहीं डराया पकड हाथ नहीं चलाया ॥ काजल दामना दिया न गालपर चाद सूरज माड्या नहीं मैं ॥ कना चावके दिया

न मुँहमें जनवेकी दिक्कत सही में ॥ उस सायतमें पैर पडनकू चल आये वहां मुरारि ॥ प० ॥ १३ ॥ कहे कन्हेया सुनोजी मैया क्यों दिलगिरी हैं तुझकू ॥ फिक्र छोड कहो जिक्र सभी सच तव दिलगीरी मिटे मुझकू ॥ सो कहे लात जाये तुझ सरिखे खूब- सूरत और श्यामवरन ॥ छह तो परघर बधे चैनमें जोग लिया उन भर जोबन ॥ आये थे घर आहार लेनेकू देखे नैननसे जहारी ॥ प० ॥ १४ ॥ सातवाँ सोला वर्ष गोकुलमें नाम अहिर थे धराया ॥ भाग्य उदयसे पाया राज्य अब सब दुश्मनकू हटाया ॥ छे छे महिने पैर पडनकू तू पन आता है चलके ॥ इसी वासते मैं दिलगिरी नैनन बुंद पडे जलके ॥ कहे मुरारि सुन महैतारी मेटूं मैं तुझ विमारी ॥ प० ॥ १५ ॥ करूं इलाज जु होवे मुझ भैया खूब धीरप दीवी मैया ॥ आये पौषधशाला अंदर तप तेला कर जहां रैया ॥ याद किया दिल हिरनगवेषी चल आया वह उस दमसे ॥ हाथ जोडकर कहे देव यों क्यों बुलवाया कहो हमसे ॥ हाल कहा सब अपने दिलका सो सुनके यों उच्चारी ॥ प० ॥ १६ ॥ होगा भैया सही तुम्हारे आवेगा भर जोबनमें ॥ सो तो संजम जरूर लेगा खुशी र ो अपने मनमें ॥ ऐसा कहकर गया देव फिर हाल सुनाया जननीसे ॥ कोई कालमें चवके स्वर्गसे गर्भ रहा शुभ करनीसे ॥ नेक सायतमें जन्म भया है हर्ष भया घर घर भारी ॥ प० ॥ १७ ॥ सुरख रंग और नल कुबेरसा गज तालव कोमल काया ॥ माता पिता फरजंद नाम तव गजसुकुमार यों ठहराया ॥ दर हमेशा बडे मौजसे वहोत्र कलामें राक भया ॥ बार्वे मा जिनराज पधारे वंदनकू केइ शक्स गया ॥ माधव छोटे भाइ संग ले चले खुशी सज असवारी ॥ प० ॥ १८ ॥ सोमल ब्राह्मणकी एक लडकी खेल रही थी रस्ते अंदर ॥ रूप रंग भर जोबन देखी भये अचंभे हरि

मन दर ॥ शादी लायक छोटे भैयाकी ऐसा दिलमें मान लिया ॥ कौवारा जनानखानामें रक्खो यों चाकरसे किया ॥ आप गये जहा थे जगनायक धर्मकथा सुनने सारी ॥ प० ॥ १९ ॥ नाथ कहे तन धन अरु जोबन कबहु नहीं यह रहनेका ॥ मतलबकी यह सारी दुनिया पाप किया दिक्कत पावे ॥ अपनी करणी पार उतरणी ओर सग कछु नहिं आवे ॥ ऐसी समझ दिल धर्म धारना उतरोगे भवजल पारी ॥ प० ॥ २० ॥ बडे भ्राता निज महल पधारे गज सुकुमार करे अरजी ॥ तुम फरमाइ सच दिल जानी मेरी दीक्षाकी है मरजी ॥ हुकम ले आउ मातपिताका नाथ कहे मत देर करो ॥ चल आया सो अम्मा पासे दो आज्ञा मत देर धरो ॥ मैं लहु जोग प्रभूके पासे मोहजाल है दुखकारी ॥ प० ॥ २१ ॥ सुन सवाल यों फरजदका तब मूर्च्छा खाय पडी धरती ॥ क्षणमात्रमें भइ सचेतन आखें बुदनसे झरती ॥ रे जाया तू मत ले फकीरी तेरे किस कामका नहीं टोटा ॥ कृष्ण सरीखा बधव तेरा तीन खडमें हैं मोटा ॥ हाल चैन कर रह दुनियामें पिछे सजम ले धारी ॥ प० ॥ २२ ॥ जन्म मरण दिक्कत मेटनकी ताकत नहीं मेरे भैयाकी ॥ भोग हालाहल जहरमे जियादा खबर नहीं पलैयाकी ॥ काल जोरावर लगा सग मेरे कौन सायत ले जावेगा ॥ धन दौलत अरु माल खजाना यहाका यहा रह जावेगा ॥ इस वास्ते मैं लेउ फकीरी आज्ञा दे माता माहारी ॥ प० ॥ २३ ॥ बडे भाई दीक्षाकी सुनकर खोलेमें बैठाय कहे ॥ द्वारामतीका राज्य करो तुम अभीसे मत तू जोग लहे ॥ राज्य किया मैं वार अनती मेरेको नहीं कुछ परवा ॥ मैं तो चाहता प्रभुका शरणा भव सागरसे उद्धरवा ॥ हठ करो मत मुझसे कोइ खोटी हैं दुनियादारी ॥ प० ॥ २४ ॥ एक रोजका राज्य मनाकर दीक्षा महोत्सव मडवाया ॥ पच मुष्टि कर लोच सोच तज जगत जाल सन छिटकाया ॥ कहे देवकी सुनरे

भैया मुझको तूने रुलवाइ ॥ और मैयाको मत रुलाना यह मेरी कहनी भाइ ॥ आज्ञा प्रभुसे दे गइ मंदिर गज मुनिवर दी । धारी ॥ प० ॥ २५ ॥ हस्त जोडकर कहे साहेबसे मुक्तिपुरी सीधा रस्ता ॥ महाकाल मरघटमें धारुं भिक्खु पडिमा दिल बस्ता ॥ नाथ कहे तुम सुख होय ज्यों लेके हुकुम गए उस ठामे ॥ पलक खोलकर खडे ध्यान धर सिद्ध निरंजन शिरनामें ॥ सराजाम यज्ञका लेनेको गया था सोमल वनचारी ॥ प० ॥ २६ ॥ दिन थोडा यों दिलमें सोचकर मरघट रस्ते चल आया ॥ पहेचाने मुनिराज चष्मसे वहोत वहोत गुस्से आया ॥ बिन तकसीरी शादी छोडकर बिन चेताये जोग लिया ॥ वैरबदला मैं लेऊं इसीसे वहोत बुरा यह काम किया ॥ शिरपर पाल बांधी मट्टीकी खैर अंगारे दिये डारी ॥ प० ॥ २७ ॥ तड तड तूटे नसाजाल सिर चरड चरड चमडी जलती ॥ खदबद खीच ज्यों भेजी करती आंख छटक कर निकलती ॥ के वह दिक्कत मुनिवर जाने के जाने जगनाथ पति ॥ अटल खडे सुमेरु पहाड ज्यों गुस्सा नहीं दिल एक रति ॥ क्षमासागर ज्ञान उजागर चित्त शरण धारे चारी ॥ प० ॥ २८ ॥ अनंत वेर यह देह जली है नर्क बीच दुःख अनंता ॥ सह पडा तेरे तइं परवश फरमाया श्री भगवंता ॥ जो तेरा शिर हले जराभर घात होवे छह कायनकी ॥ लहनायत लेवनकू आया तैयारी रख देवनकी ॥ सुसरे दिया सिरपाव मुक्तिका राख जतन कर हुसियारी ॥ प० ॥ २९ ॥ तेरा चेतन अजर अमर है नहीं कटे हथियारनसे ॥ जले नहीं कुछ आतससे और बहे नहीं जलधारन से ॥ उडे नहीं यह हवासे कबही सडे नहीं कोइ रनसे ॥ पुद्गल पिंड सो नहीं है मेरा गरज नहीं इस कारनसे ॥ ऐ भाव चढे मुनिवरका चरण शरण बलिहारी ॥ प० ॥ ३० ॥ पनिहारीकी नजर घडेपे नट ज्यों नृत्यपर रखे सुरता ॥ कामीके

मन दर ॥ शादी लायक छोटे भैयाकी ऐसा दिलमें मान लिया ॥ कौवारा जनानखानामें रक्खो यों चाकरसे किया ॥ आप गये जहा थे जगनायक धर्मकथा सुनने सारी ॥ प० ॥ १९ ॥ नाथ कहे तन धन अरु जोबन कबहु नहीं यह रहनेका ॥ मतलबकी यह सारी दुनिया पाप किया दिक्कत पावे ॥ अपनी करणी पार उतरणी और सग कछु नहिं आवे ॥ ऐसी समझ दिल धर्म धारना उतरोगे भवजल पारी ॥ प० ॥ २० ॥ वडे भ्राता निज महल पधारे गज सुकुमार करे अरजी ॥ तुम फरमाइ सच दिल जानी मेरी दीक्षाकी है मरजी ॥ हुकम ले आउ मातपिताका नाथ कहे मत देर करो ॥ चल आया सो अम्मा पासे दो आज्ञा मत देर धरो ॥ मै लहु जोग प्रभूके पासे मोहजाल है दु खकारी ॥ प० ॥ २१ ॥ सुन सवाल यों फरजदका तव मूर्च्छा खाय पडी धरती ॥ क्षणमात्रमें भइ सचेतन आखें वुदनसे झरती ॥ रे जाया तू मत ले फकीरी तेरे किस कामका नहीं टोटा ॥ कृष्ण सरीखा वधव तेरा तीन खडमें हैं मोटा ॥ हाल चैन कर रह दुनियामें पिछे सजम ले धारी ॥ प० ॥ २२ ॥ जन्म मरण दिक्कत मेटनकी ताकत नहीं मेरे भैयाकी ॥ भोग हालाहल जहरमे जियादा खवर नहीं पलैयाकी ॥ काल जोरावर लगा सग मेरे कौन सायत ले जावेगा ॥ धन दौलत अरु माल खजाना यहाका यहा रह जावेगा ॥ इस वास्ते मैं लेउ फकीरी आज्ञा दे माता माहारी ॥ प० ॥ २३ ॥ वडे भाई दीक्षाकी सुनकर खोलेमें वैठाय कहे ॥ द्वारामतीका राज्य करो तुम अभीसे मत तू जोग लहे ॥ राज्य किया मैं वार अनती मेरेको नहीं कुछ परवा ॥ मैं तो चाहता प्रभुका शरणा भव सागरसे उद्धरवा ॥ हठ करो मत मुझसे कोइ खोटी है दुनियादारी ॥ प० ॥ २४ ॥ एक रोजका राज्य मनाकर दीक्षा महोत्सव मडवाया ॥ पच मुष्टि कर लोच सोच तज जगत जाल सब छिटकाया ॥ कहे देवकी सुनरे

भैया मुझको तूने रुलवाइ ॥ और भैयाको मत रुलाना यह मेरी कहनी भाइ ॥ आज्ञा प्रभुसे दे गइ मंदिर गज मुनिवर दी । धारी ॥ प० ॥ २५ ॥ हस्त जोडकर कहे साहेबसे मुक्तिपुरी सीधा रस्ता ॥ महाकाल मरघटमें धारुं भिक्खु पडिमा दिल बस्ता ॥ नाथ कहे तुम सुख होय ज्यों लेके हुकुम गए उस ठामे ॥ पलक खोलकर खडे ध्यान धर सिद्ध निरंजन शिरनामें ॥ सराजाम यज्ञका लेनेको गया था सोमल वनवारी ॥ प० ॥ २६ ॥ दिन थोडा यों दिलमें सोचकर मरघट रस्ते चल आया ॥ पहेचाने मुनिराज चष्मसे बहोत बहोत गुस्से आया ॥ बिन तकसीरी शादी छोडकर बिन चेताये जोग लिया ॥ वैरबदला में लेऊं इसीसे बहोत बुरा यह काम किया ॥ शिरपर पाल बांधी मट्टीकी खेर अंगारे दिये डारी ॥ प० ॥ २७ ॥ तड तड तूटे नसाजाल सिर चरड चरड चमडी जलती ॥ खदबद खीच ज्यों भेजी करती आंख छटक कर निकलती ॥ के वह दिक्कत मुनिवर जाने के जाने जगनाथ पति ॥ अटल खडे सुमेरु पहाड ज्यों गुस्सा नहीं दिल एक रति ॥ क्षमासागर ज्ञान उजागर चित्त शरणा धारे चारी ॥ प० ॥ २८ ॥ अनंत बेर यह देह जली है नर्क बीच दु.ख अनंता ॥ सहमा पडा तेरे तइं परवश फरमाया श्री भगवंता ॥ जो तेरा शिर हले जराभर घात होवे छह कायनकी ॥ लहनायत लेवनकू आया तैयारी रख देवनकी ॥ सुसरे दिया सिरपाव मुक्तिका रा जतन कर हुसियारी ॥ प० ॥ २९ ॥ तेरा चेतन अजर अमर है नहीं कटे हथियारनसे ॥ जले नहीं कुछ आतससे और बहे नहीं जलधारन से ॥ उडे नहीं यह हवासे कबही सडे नहीं कोइ ारनसे ॥ पुद्गल पिंड सो नहीं है मेरा गरज नहीं इस कारनसे ॥ ऐ भाव चढे मुनिवरका चरण शरण ँ बलिहारी ॥ प० ॥ ३० ॥ पनिहारीकी नजर घडेपे नट ज्यों नृत्यपर र े सुरता ॥ कामीके

दिल काम वमन है धर्मध्यान ध्या आतुरता ॥ शुक्लध्यानपर चढे मुनीश्वर कर्म शत्रुको मार दिया ॥ पाय केवलज्ञान उसीदम मुक्तिनगरमे डंका दिया ॥ पहले पहुच सिद्ध क्षेत्रमे पीछे देह पडी जहारी ॥ प० ॥ ३१ ॥ आनन्दमय दवी दवना गगन माहे जयकार करे ॥ फूल पानीकी कर जहा वर्षा गायन गति उछाह धरे ॥ दिन उगेसे भैया वदनकु सज असवारी चल आते ॥ एक बुढ्ढा नाताकत वदनसे देखा ईंटको उठाते ॥ रहीम दिलमे आई हरिके एक मेली घर मझारी ॥ प० ॥ ३२ ॥ मालकने जब ईंट उठाइ रखन देखी उन घरमें ॥ जवान सकडा मिलके उस दम सबही मेली मंदिरम ॥ प्रभुका वदना करी हरखस मन वचन तन भाव भले ॥ और सकल मुनिवरको वदे निजबधव वदनने चले ॥ देखे नहीं तब पूछे भैया कहा पभु पासे तब गिरधारी ॥ प० ॥ ३३ ॥ करुणा सागर कहे उजागर जिस कारण उन जोग लिया ॥ काम भया उसका सब सिद्धि एक शख्सन सहाय दिया ॥ मतलब सुनके गुस्से भराने कौन वो दुष्टी हत्यारा ॥ नाम पता उसका बतलावो जो भैया मारनहारा ॥ स्वामी कहे दिल गुस्सा छोडो वह तो हैगा उपकारी ॥ प० ॥ ३४ ॥ जैसे तुमने ईंट उठाइ दया आन दीनी साता ॥ ऐसे तुम समझो दिल अदर क्यों होना उसपर राता ॥ पहिचानू मैं कौन राहसे प्रभू कहे तुम घर जाता ॥ रस्ते अदर तुमको देखकर मर जावेगा थरराता ॥ वे तो चले सोमल कहे दिलमें नेमिनाथ जाने सारी ॥ प० ॥ ३५ ॥ डरके निकला घरके बाहिर मिल सामने हरि उसके ॥ थर थर धूजके पडा जमीन पर छुटे प्राण तब एक धसके ॥ घीसके काया पुरीके बाहिर जल छिटकाया रस्तेमें ॥ बुरे कामका बुरा हाल है पापी नरककुड धस्तेमें ॥ ऐसी समझ दिल करो धर्मको जो चाहते

भवजलपारी ॥ प० ॥ ३६ ॥ वसुदेव सरिखे जो पिता थे माता देवकीसी जिनके ॥ गरुडध्वज हलधरसा भैया कर्म न छूटे देखो उनके ॥ हसकर प्राणी कर्म बांधत रोतही छूटे मुष्कल ॥ ऐसा समझ करम बांधो शांत तबही चैन मिलेगा अचल ॥ शास्त्रमें देखा सो हम कहत मानो नसीहत नरनारी ॥ प० ॥ ३७ ॥ जय जय बोलो गजमुनिवर हद्द क्षमा कर सिद्ध भये ॥ ऐसी क्षमा करे जो बंदे उनकी जगमें सदा जये ॥ संवत् उगनीसे साल छत्तीसमें किवी निशानी यह चंगी ॥ तिलोकरिख कहे धन जिनमारग जय जय साहेब सरवंगी ॥ भव भव सरना हो जो मेरे तंइ वंदू मे वारंवारी ॥ प० ॥ ३८ ॥ इति श्रीगजसुकुमार की लावणी संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीसमकित छत्तिसी प्रारंभः ॥

॥ रे भाई सेवो साध सयाणा ॥ एदेशी ॥ समकित विण भमियो चउगतमें, दुःख पायो महाभारी ॥ अपूर्वकरण आया बिण भविका, समकित रहे सदा न्यारी ॥ रे भाई समकित रतन है भारी, राखो जतन सुविचारी रे ॥ भा० ॥ स० ॥ १ ॥ आउखो वर्जी सात कर्मकी, थिति गणलियो नर नारी ॥ एक कोडा कोडी सागर बाकी, अंतर मुहूरत हिण तारी रे ॥ भा० ॥ स० ॥ २ ॥ अनंतानुबंधी की चोकडी जाणो ॥ मिथ्यात मोहनी जहारी ॥ समकित मोहनी मिश्र मोहनी, उपशमे सातु ज वारी रे ॥ भा० ॥ स० ॥ ॥ ३ ॥ उपशम समकित आवे जेवारें, खपायाथी क्षायिक धारी ॥ कांइक उपशमे कांइक क्षय थावे ॥ क्षयोपशम नाम विचारी रे ॥ भा० ॥ स० ॥ ४ ॥ पडति सास्वादन वेदे सो वेदक ॥ पांचु ए नाम विचारी ॥ उपशम सास्वादन उत्कृष्टी, फरसे जीव पंचवारी रे ॥ भा० ॥ ५ ॥ क्षयोपशम असंख्या तिवारज आवे, वेदक एकही वारी ॥ क्षायिक आइ न जावे कदा फिर, सदा

काल रहे लारी रे ॥ भा० ॥ ६ ॥ पाछली चारमेंकी एक फरसे, अर्ध पुद्गलके मझारी ॥ पावे अजर अमर सुखनिश्चल, समकित की वलिहारी रे ॥ भा० ॥ ७ ॥ निश्चेमें समकित केवली जाणे, छद्मस्थ तो व्यवहारी ॥ सड्सठबोल अमोल आराधो, ते ते सुण जो विस्तारो रे ॥ भा० ॥ ८ ॥ प्रथम चार सद्दहणा सरधो ॥ मोक्षमारग ततसारी ॥ एहनो परचो करे निशिवासर, भवभवमें सुखकारी रे ॥ भा० ॥ ९ ॥ दुजीसद्दहणा मोक्ष साधनकी ॥ सेव करो हित धारी ॥ समकित भ्रष्टनी सगति वरजो, कुतीर्थी परिहारी रे ॥ भा० ॥ १० ॥ तीन लिंग वली समकित केरा, सुणजो आलस वारी ॥ तरुण पुरुष जिम भोगमें राचे, तिम प्रभु वाणी विचारी रे ॥ भा० ॥ ११ ॥ भूख्यो क्षीरभोजन करे आदर, तिम जिनवाणी सुप्यारी ॥ भणवाकी इच्छा मिले तस दाता, हरखे जिनवचन सभारी रे ॥ भा० ॥ १२ ॥ दशको विनय करे ननरगें, अरिहत सिद्ध भगवानो ॥ आचारिज उवज्झाय थिवरनो, गण सघ सातमो जाणो रे ॥ भा० ॥ १३ ॥ साधर्मी शुद्ध क्रिया धारक नो, बहुमान भक्ति करीजें ॥ तीन शुद्धताकरो भवि प्राणी, भवसागरसु तरीजें रे ॥ भा० ॥ १४ ॥ मन शुद्धता श्रीजिन ध्यावो, वचन थकी गुण गावो ॥ नमस्कार सो करो कायासु, अवर देव मत चावो रे ॥ भा० ॥ १५ ॥ पच लक्षणथी ओलख थावे, शत्रु मित्र सम भावे ॥ ससारशु उदास रहे मन, धाय ज्यु बाल रमावे रे ॥ भा० ॥ १६ ॥ आरम्भ परिग्रह त्यागणो वछे, अनुकपा चित्त मांई ॥ सूक्ष्मभाव सुणी नहिं मुरझे, दिढताई आणे सवाई रे ॥ भा० ॥ ॥ १७ ॥ पच अतिचार टाले समकितना, प्रभु दाख्यो सत माने ॥ पाखडीकी महिमादेख विशेषी, वछे नही कछु जाने रे ॥ भा० ॥ १८ ॥ करणी फल सदेह न आणे, परपाखडी नहीं परशले ॥

॥जावे नही तिण पासे चलाइ, संग सुगुण सो विध्वंसे रे ॥भा० ॥ १९ ॥ पंच भूषण पहेलो धीरजवंतो, दीपात्र मारग भारी ॥ भक्ति करे वलि चतुर विचक्षण, श्रीसंघ सेव हुसियारी रे ॥ भा० ॥ २० ॥ आठ प्रभाविकना गुण तावें, सर्वसिद्धांत सो जाणे ॥ धर्मकथा केहवे विस्तारी, न्यायसुं वाद सो ठाणे रे ॥ भा० ॥ २१ ॥ तीन काल सर अवसर जाणे, तप करे दुःकरकारी ॥ अनेक विद्याना जाण सो होवे, कवितामें बुध भारी रे ॥ भा० ॥ २२ ॥ छे आगार विचारसुं राखे, दान अन्यतीर्थी ने देवे ॥ राजा बलवंत जातिना भयथी, मातपित्र स्वयंमुख कहेवे रे ॥ भा० ॥ २३ ॥ देवता अटवी काल दुकालें, देवे पण धर्म न माने ॥ जयणा षट करे धरमीसुं, बोले पहेली प्रेम आने रे ॥ भा० ॥ २४ ॥ अधिक मिठाससुं प्रीति जणावे, प्रतिलाभे बहुमानो ॥ नमस्कार सो करे यथातथ, करता बडाई सयानो रे ॥ भा० ॥ २५ ॥ षट थानक वली धारो हियामें, धर्मरूपी तरु केरो ॥ समकित मूल कह्यो जगदीशें, संवर वृक्ष रहे गहेरो रे ॥ भा० ॥ २६ ॥ धर्म सो नगर समकित गढ सम, धर्म आभूषण जाणो ॥ सम दरिसण पेटी जिम कहिये, राखे अवेरीय नाणो रे ॥ भा० ॥ २७ ॥ धर्म सो मंदिर नियम सो समकित, इण बिण ठेरे नांई ॥ धर्म पदारथ समकित हाटमें, जतनसुं रहे तिणमांई रे ॥ भा० ॥ २८ ॥ धर्म सो भोजन थाली ज्युं समकित, राखो सुघड सदाई ॥ भावना खट वली छे सम तनी, भाव भव छे सुखदाई रे ॥ भा० ॥ २९ ॥ चेतना लक्षण जीवको परथम, सासतो एहिज युक्तें ॥ कर्मको कर्त्ता एहीज जाणो, पुण्य पाप एहि भुक्ते रे ॥ भा० ॥ ३० ॥ भवि जीव कर्म खपावे तो मुक्ति, नही तो भमे गति चारी ॥ ज्ञान दरिसण चारितर करणी, एही उपाय विचारी रे ॥ भा० ॥ ३१ ॥ सडसठ बोल व्यवहार समकितना, धारो हियामें तोली ॥ भव घटे सो [illegible] सेव्यां,

आगममें इम खोली रे ॥ भा० ॥ ३२ ॥ अक विना जिम शून्यज वरथा, जैसो लिंपण छारो ॥ तप जप किरिया लेखे न आवे, पराल कूटे जिम भारो रे ॥ भा० ॥ ३३ ॥ जिम सुई दोरा साहितज होवे, सो न खावावे पावे ॥ तिम समकित फरसे एक विरिया, निश्चेइ मोक्ष सधावे रे ॥ भा० ॥ ३४ ॥ देव अदोषी गुरु निर्लोभी, धर्मदयामें सदाइ ॥ ए शुद्ध सरधा परम पदारथ, राख्यो चित्त दृढताइ रे ॥ भा० ॥ ३५ ॥ समकित विण कोई मुक्ति न पहोंचा, वर्त्तमान नहीं जावे ॥ नहीं जावे वली आवते कालें, आगममें दरसावे रे ॥ भा० ॥ ३६ ॥ सवत उगणीसें छत्तिस सालें, कीनी एह छत्तीसी ॥ तिलोकरिख कहे समकित धारो, चढति रहे धर्म विसी रे ॥ भा० ॥ ३७ ॥ इति समकित उत्पत्तिफर्सण सरधा नाम व्यवहार समकितका ६७ बोलाधिकार साहित समकित छत्तिसी सपूर्ण ॥

॥ अथ श्रावक छत्तिशी प्रारभः ॥

॥ सिद्ध चक्रजीने पूजोरे भविका ॥ ए देशी ॥ देव निरजन केवल धारी, वर्जित दोष अठारा ॥ चोत्तिश अतिशय पेंतिश वाणी, भवजल तारण हारा रे ॥ भविका श्रीजिन आज्ञा आराधो, शिवपुर मारग साधो रे ॥ भविका श्रीजिन० ॥ १ ॥ गुरु गुण सागर परम उजागर, सत्यावीश गुण छाजे ॥ धर्म देवकी सेवन करता, सकल भरम भय भाजे रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २ ॥ धर्मजिन आज्ञा निरवद्य करणी, तरणी भवजल पारी ॥ इणसम अवर नहीं सुख दाता, तारिया अनन्त ससारीरे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ देव गुरु धर्म ए तिहु तत्त्व, निश्चल भावे सेवीजें ॥ अवर मत पराचित्त न दीजें, नरभव सफल करीजें रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ दशेरो दिवाली राखी ने होली, मिथ्या पर्व न कीजें ॥ धर्म पर्व सो सर्व मनावो, सुकृत लाहो लीजें रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ देव गुरु धर्म शास्त्र ए चारू,

रत्न परख करो भाई ॥ यत्न करीने राखो हियामें, भव भवमें सुखदाई रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ निज आतम सम जीव जगतका, जाणी दया घट आणो ॥ सचेत माटीसूं अंग नही धोजें, निरर्थक पाप घटाणो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ अणछाण्या जलमें नहीं न्हाणो, पीणो पण वर्जीजें ॥ मांसको भांगो घात पचेंद्रिय, निरर्थक नहीं ढालीजें रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ८ ॥ घृतसुं मोंघो ज ने थें ले ो, पूंजे सो आग न दीजें ॥ उघाड़ो दीपक मति मेलो, जयणासें जतन करीजें रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ९ ॥ पाणीसुं लकड़ी न बूझाणी, झटक फटक नहीं करियें ॥ छते मारग हरिकाय न चांपो, निरर्थक रंच न फरियें रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ १० ॥ रात्रि स्नान अरु भोजन वर्जो, रात्रे लीपणो टालो ॥ सलियो धान तावड़े नहीं दीजें, सालियो लक्कड़ मत बालो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ११ ॥ आटो बेसण दाल अरू भाजी, मत रांधो बिण जोई ॥ महोटो फल अथवा बहु बीजो, छेदो मत जन कोई रे ॥ भ० ॥ ॥ श्री० ॥ १२ ॥ दूध दही घी तेलको बासण, उघाड़ो मत मेलो ॥ जूं माकड़ तावड़े मत नाखो, चोपड़ जूवा मत खेलो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ १३ ॥ निर्दयी पणे गाढे प्रहारें, मत मारो पर प्र ी ॥ गाढो बंधण वजन घणेरो, लादो मति दया आणी रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ १४ ॥ आंधो काणो बहेरो पांगुलो, घेलो गुंगो नर जेहने ॥ कठिण वचन वलि हांसी न करियें, दुःख लागे जिम तेहने रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ १५ ॥ होय कलेश ` उपति ावो, पक्खी पाड़ णा मांही ॥ हद चोमासी जावा न दीजें, श्रावक व्रत कीजो चाही रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ १६ ॥ राज दंडे ˜ लोकमें भंडे ॥ तेहवो झूठ निवारो ॥ बिना विचारे त न कीजें, मर्म मोसो मत उच्चारो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ १७ ॥ विश्व घात करो मत किणसूं, थापण मत रा ` पराई ॥

लाच लेई झूठी साख न भरिये, परनिंदा दुखदाई रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ १८ ॥ रागद्वेष वश आल न दीज, पर अवगुण मत गावो ॥ पापको कारज होय कदापि, मनमें मति पोमावो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ १९ ॥ खोटो लेख लिखो मत कोई, मोटकी चोरी न कीजें ॥ कूडा तोला मापा ते वजा, चोरकू साज न दीजें रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २० ॥ कुवारी विधवा परनारी, वेश्या गमन तज दीजें ॥ तीव्र अभिलाषा न किजें भोगकी, शीयलव्रत रस पीजें रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २१ ॥ परधनकी अभिलाषा न करियें, निजधन समता राखो ॥ अधिक द्रव्य जो वधे त्यागसू, पाप माही मत नाखो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २२ ॥ दिशि मर्याद करी तिण ऊपर, अधिक मत जावो आगें ॥ पच आश्रवको त्यागन करियें, जावता त्याग न भागे रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २३ ॥ अभक्ष आहार छोडो तुच्छ भोजन, कर्मादान तज दीजें ॥ अनर्थदड कुचेष्टा कामकी, हिंसा उपदेश न दीज रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २४ ॥ घट्टी ऊखल मूसल सरोता, पावडा और कोदाली ॥ छुरा कटारी खड्गादिक शस्त्र, सग्रह करण दो टाली रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २५ ॥ गइ वस्तुको सोच न कीजें, दुख उपजे कोई आई ॥ निज कर्माको दोष बतावो, धीरज धरो मनमाई रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २६ ॥ धर्मकामर्मे होजो अगवानी, पापमे मौन करीजें ॥ भोजन वस्त्र हाट हवेली, शोभाकू शोभा न कहिजें रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २७ ॥ वृक्षने मनुष्यकी उपमा दीनी, सूत्र आचारग माई ॥ महादूषण इणमाहि जाणके, झाड कटावणो नाई रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २८ ॥ तीन वखत समभाव राखाने, सामायिक नित्य कीजें ॥ विकथा वात करो मत सुगुणा, दूषण दूर हरीजें रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २९ ॥ दोष अठारा टालो पोसामें, मुनि जिम भाव धरीजें ॥ निर्दूषण प्रासुक आहार सो, भावशु

साधु पड़िलाभीजें रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ३० ॥ चउदा नेम नित प्रतें चितारो, तीन मनोरथ कीजें ॥ दुःखीयो देख दया दिल लावो, शक्ति जिम सहाज सो दीजें रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ३१ ॥ ज्ञान ध्यान तप जपको उद्यम, सदा करो भाव धरीने ॥ क्रोध कपट छल छेद न कीजे, वरीजें मुक्ति स्त्रीने रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ३२ ॥ नव तत्त्वकी पाहिछाण करीजें, विनय भक्ति शुद्ध साधो, चिंतामणि सम नरभव दुर्लभ, समकित रत्न आराधो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ३३ ॥ तन धन जोबन सर्व अथिर है, सज्जन स्नेही परिवारो ॥ पुण्य उदय सब जोग जो पायो, पाप उदय नहिं थारो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ३४ ॥ दुःख आया शरणागत नांइ, भटके जीव संसारो ॥ तारक छे जैन धर्म जगतमें, इम जाणी उर धारो रे ॥ भ० ॥ [illegible]० ॥ ३५ ॥ अनंत जीव तारिया और तरसी, वरसी शिवसुख [illegible]णी ॥ तिलोकरिख कहे समजो भविका, साची श्रीजिन वाणी रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ३६ ॥ संवत उगणीशें साल सेंतीशें, महाशुद्ध दशमी जाणी ॥ वारभोम करमालापेठमें, श्रावक छत्तिशी व[illegible]णी रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ३७ ॥ इति श्रावक छत्तीसी संपूर्ण ॥

॥ अथ भोलप छत्तिशी प्रारंभ ॥

॥ संतां देखो दुनिया भोली ॥ ए देशी ॥ भविका दे[illegible] न्याय विचारी ॥ सुगुणा देखो० ॥ भोली दुनिया भूलि [illegible] भर्ममें, जाय जमारो हारी ॥ सु० ॥ ए टेक ॥ वीतरागको मारग तारक, जीवदया अगवानी ॥ हिंसा धरममें अधिकाराचे, करे जीवांकी हानी ॥ भ० ॥ १ ॥ दया दान विनय मूल धर्मसो, तीनुंही बात उठावे ॥ भगवंत चूका कहे अज्ञानी, भव भव में दुःख पावे ॥ भ० ॥ २ ॥ स[illegible]ायिक पोसाके मांही, विकथा मांडे कुडी ॥ धर्म कथामें चित्त न राखे, रह्यो पापमें बूडी ॥ भ० ॥ ३ ॥ ज्ञानसी [illegible] [illegible]ज दुखे, लडतां बुंबडी पाड़े ॥ स्तवन सज्झाय केहतां शर[illegible] वे,

ख्याल गावे अति गाडे ॥ भ० ॥ ४ ॥ धर्म दलाली पगला दुखे, पाप दलाली दोडे ॥ धर्मीने तो दूर वेठावे, पापीने राखे गोडे ॥ भ० ॥ ५ ॥ ताव तेजारी आवे तनमें, सात दिवस नहिं खावे ॥ धर्मनिमित्तें एक उपवासके, करता मन सुकडावे ॥ भ० ॥ ६ ॥ व्याह मोहोत्सवमें खरचे सेंकडा, धनमे आग लगावे ॥ जीव दयामें खरचण काजें, दमडीमें नट जावे ॥ भ० ॥ ७ ॥ धर्म काममें कायर अधिको, पाप करणने शूरो ॥ ले लोटो ने खावण दौडे, पर उपगारथी दूरो ॥ भ० ॥ ८ ॥ सज्जन कुटुंबी मिलिया हरखे, सत देख टल जावे ॥ मुनिवर वदता शर्मेज आवे, नीचने शीश नमावे ॥ भ० ॥ ९ ॥ पर्व पजूसण धर्मध्यान दिन, खेले चोपड पासा ॥ पापीकी तो करे बडाई, धर्मीका करे हासा ॥ भ० ॥ १० ॥ राड भाड नट ख्याल करे जठे, सगली रात जगावे ॥ ज्ञान ध्यान की होय जहा चर्चा, झुक झुक झोला खावे ॥ भ० ॥ ११ ॥ होय लडाइ चर्चा विकथा, विण तेडयो चल जावे ॥ धर्मकाज बोलावे कोई, मुखसें पट नट जावे ॥ भ० ॥ १२ ॥ पोतें तो अवगुण को सागर, परनिंदामें राजी ॥ लोक बुराइसु नहीं डरपे, आल देत पर गाजी ॥ भ० ॥ १३ ॥ अक्रोधी अमानी अमायी, अलोभी जिनराया ॥ जिनको समरण करेन घेहला, भेरु भवानी भाया ॥ भ० ॥ १४ ॥ लोक चढावे फूल फलादिक, देव देवे राखोडी ॥ तो पण विवेक अध नहिं समझे, फिर फिर जावे दोडी ॥ भ० ॥ १५ ॥ वाजे जैनी ब्राह्मण वाण्या, मानता करे फकीरी ॥ वे बिन पाणी परवश मरीया, सो काई देगा अमीरी ॥ भ० ॥ १६ ॥ भेरु भवानी कालिका चडी, बोकडा भैंसा चडावे ॥ आप मारिने आपही खावे, देवी नाम बतावे ॥ भ० ॥ १७ ॥ बेटा बेटी काजे पापी, बकरा भैंसा मारे ॥ परकू दुःख देकरके मूरख, अपनी शाता विचारे ॥ भ० ॥ १८ ॥ करे गणगोर पहेरावे गहेणां, गोरडी मगल गावे ॥

पूजा कर पाणीमें पटकी, बेटा बेटी चावे ॥ भ० ॥ १९ ॥ देवकी गई हरि निरखण काजें, वस्थपूजन मिश करकें ॥ सो तेहेवार मनावे भोली, बालकवंछा धरकें ॥ भ० ॥ २० ॥ घणा मनुष्य अरु रावण मरियो, वाज्यो नाम दशेरो ॥ सो दिन हर्ष मनावे अधिको, बांधे पाप घणेरो ॥ भ० ॥ २१ ॥ वीर जिनेश्वर मुक्ति विराज्या, दिवस दिवाली जाणो ॥ दया धर्मतो पाले नहीं ओर, करे जीवकी हाणो ॥ भ० ॥ २२ ॥ व्यभिचारिणी हुई होलिका, भांड हुई जगमांही ॥ कू मौत नें मारी गई पापिणी, सो तेहेवार थपाई ॥ भ० ॥ २३ ॥ धूल उडावे कीच मचावे, बणे होलीका पंडा ॥ बोले खोटा निर्लज हुईने, सजे नरक का झंडा ॥ भ० ॥ २४ ॥ पांचसें साधुको होमज करतो, ब्राह्मणनाम नमुची ॥ विष्णुकुमर वामन रूप धरकें, दियो पगा तलें कुची ॥ भ० ॥ २५ ॥ हेमाचल नृप आई तेहने, मारताके दियो राखी ॥ मंगत तेहेवार थाप कर भोला, हाथमें बांधें राखी ॥ भ० ॥ २६ ॥ घरको मनुष्य मरे जिणदिवसें, सोग कहे मुखसेंती ॥ श्राद्ध ठेराई माल जेखावे, उलटी रीत ए चेती ॥ भ० ॥ २७ ॥ मच्छ अवतार धर्यो कहे प्रभुजी, मच्छ खावण नहीं छोडे ॥ वराह अवतार कहे वली धार्यो, वराहा मारण दोडे ॥ भ० ॥ २८ ॥ गउ माताके लाठी मारे, तुलशी माता तोडे ॥ जवार माता कही पीसिने खावे, मनकी वातां जोडे ॥ भ० ॥ २९ ॥ पृथ्वी पाणी तेउ वायु, दिश वड पिंपल पूजे ॥ गाय गधेडा कन्या पूजे, अंतरज्ञान न सूजे ॥भ०॥ ३० ॥ इत्यादिकको पूजन थापे, करे न न्यायपरीक्षा ॥ घणा तुष्टे जो तुज पर एता, करशे आप सरीखा ॥ भ० ॥ ३१ ॥ देह अपावन परतक्ष सारी, उपर खाल पखाले ॥ न्हाया धोया धर्म होवे तो, मछलां जलमें चाले ॥ भ० ॥ ३२ ॥ श्रीजिन मारग उज्वल परतक्ष, तिणने भलो बतावे ॥ हिंसाधर्म मलीन सदाही, जिणने

अधिक सरावे ॥ भ० ॥ ३३ ॥ गावे बजावे तानज तोडे, जेहनी महीमा सखरी ॥ होय उदासी जगमायासु, तिणकी करे मस्करी ॥ भ० ॥ ३४ ॥ मोह करमके उदय करिने, भोलप कर दु.ख पावे ॥ भोलप छत्तीसी सुण कर शाणा, श्रीजिनमारग आवे ॥ भ० ॥ ३५॥ इत्यादिक भोलपता तजकें, धर्म ध्यान करो खासा ॥ तिलोकरिख कहे सुकृतकीधा होय मुक्तिमें वासा ॥ भ० ॥ ३६ ॥ सवत् उगणीसें छत्तिस फागण, वदि दशमी शनीवारें ॥ साईखेडा में एह निपाई, करवा पर उपगारें ॥ भ० ॥ ३७ ॥ इति भोलपछत्तिसी सपूर्ण ॥

॥ अथ पाच प्रकारना वैराग्यभाव उपर सवैया ॥

॥ आवत है तहेवार, तब करत स्नान, लोक करे अलकार, केश समारे नर नारी है ॥ पहेरत भूषण निज, वित्तके मुजब सब, खावत सरस माल, फिरत हुशियारी है ॥ वीतत तेहेवार तब, फिरत निज रुपहीसे, आवत महोत्सव तब फिर वोही त्यारी है ॥ कहत तिलोकरिख, मटक वैरागी रीत, आवत परब धर्म, करे नर नारी है ॥ १ ॥ डस मसक मच्छर जू, माकड अरु दुष्ट जीव, तनप चटको देत, दु.खत तें वारी है ॥ हाथसें खुजाल कर, माने समाधान सुख, घडी पल वीत्या बाद, दु ख न लगारी है ॥ तैसी रीत चटक, वैरागी नर जाणियत, परत सकट माने, ससार दुखीयारी है ॥ मिटत है कष्ट तब, भूलत है धरम ध्यान, कहेत तिलोकरिख, सोहीवी असारी है ॥ २ ॥ लागत भूख वेग, मिलत न अन्न नित मनमें विचारे सुखी, दीते अणगारी है ॥ परखदामें कर जोड, कहे मुनिराज सेंती, दीजीयें सजम मोय, ससार असारी है ॥ मात कहे नदनसें, आज्ञा है मेरी तुझ, भोजन जिमीने फिर, होजो दिक्षा धारी है ॥ खीचडी घृत खूब, जीमतही भूल्यो धर्म, खिचड्यो वैरागी रिख तिलोक उचारी है ॥ ३ ॥ तरुण

उमरमांही, र जावे ोई न, होवत उदास मन, झूरे नर री है ॥ सार असार ब, सपनाकी माया सम, एक दिन सबहीकुं, जाणो निरधारी है ॥ छोडीयें र फंद, करत विचार जन, बाळके स्नान करी, आवे घर री है ॥ मोह मदिरामें अंध, करे फिर घर धंध, मसाण्यो वैरागी रिख, तिलोक उचारी है ॥४॥, चटक मटक तीजो, खिचड्यो वैरागी जाण, मसाण्यो वैरागी चोथो, कह्यो सुविचारी है ॥ ऐसे जो वैरागी सो , कायरके मांही जाण, छोडे न संसार चारी, मुखके लबारी है ॥ करत वडाइ खाली, ढफोल संखकी रीत, आतमायें जोर सोतो, देत न लगारी है ॥ कहत तिलोकरिख, चारीकुं न लागे शीख, सूका चूना उपर जो, टीपनीणी सारी है ॥ ५ ॥ कीरमची रंग जैसे, धोवे कोइ खोम देवे, तार तार होवे रंग, उडे न लिगारी है ॥ तैसे भव जीव हीयें, धर्मरूपी लागे रंग, जाणत असार जग, नागणी नारी है ॥ धन सब धूल सम, परिवार फांस रूप, जानत अनीत वित्त, होय व्रत धारी है ॥ करणी तो करे शुद्ध, मन वच काय करी, कहत तिलोकरिख, वंदना हमारी है ॥ ६ ॥ इति पांच प्रकारना वैराग्यभाव उपर सवैया समाप्त ॥

॥ अथ उपदेशिक तथा ३२ असज्झाय उपर सवैया ॥

॥ सचित्त पृथवी खंड, पारेवासो करे तन्न, जंबुद्वीपमें न मावे, जीव एता जाणीयें ॥ जलबिंदु मधुकर, तेउ सरसव सम, वाउ एक झबुकडे, खस खस ठाणीयें ॥ प्रत्येक वनसपती, असंख्यात गुणाकार, साधारण सुई अग्र, अनंत प्रमाणीयें ॥ त्रस देह भिन्न भिन्न, कहत है तिलोक चिन, निज प्राण सम जाण, अणुकंप आणीयें ॥१॥ बारे सहस्र आठसें, चोवीस एक मुहूर्तमें, जनम

मरण पृथ्वी, पाणी तेउ वायमें ॥ साडी पेसठ सहेंस, छत्तिस करे निगोदीया, बतिस हजार सो, प्रत्येक हरिकायमें ॥ बेंद्रीमाही असी साठ, तेंद्रिमाहि मरण होय, चोंद्रीमें चालीस सख्या, कही सूत्र रायमें ॥ असन्नी चोवीश सन्नी, एक भव होवे हद्द, कहत तिलोकरिख धर्मी सो न जायमें ॥ २ ॥ आषाढ भाद्रव मास, कार्त्तिक पूनम चैत्र, असज्झायी चार एह, उरमें विचारियें ॥ श्रावण आसोज विद, अगण वैशाख धुर, पडवा चारुही इम, आठ ए सभारीयें ॥ प्रात.काल मध्यदिन, सझा और मध्यरात, असज्झाय चार नित, दो दो घडी टारीयें ॥ एव बारे असज्झाय, कही चोथा ठाणामाही, ज्ञान आराधक जन, सूत्रपाठ बारीयें ॥ ३ ॥ आकाश की दश असज्झाइ, फरमाइ प्रभु, उल्कापात दिशिदाह, गाज निज जाणीयें ॥ कडके गगन बाला, बीज चद्र जक्षु चेन, धुवर श्याम श्वेतरज, घात पहिचाणीयें ॥ दश औदारिक फुनि, हाड मास रुद्र रसी, विष्ठा स्मशाण चद्र, रवि ग्रहण ठाणीयें ॥ राजमृत्यु विग्रह सनि, मिलके बत्तीस एह, कहत तिलोकरिख, प्रभु वेण मानीयें ॥ ४ ॥ दोहा ॥ अशुभ कर्मके हरणकु, मत्र बडो नवकार ॥ वाणी द्वादश अगमें, शोध लियो तत्सार ॥ १ ॥ सवैय्या एकत्रीशा ॥ श्रीअरिहत भगवत बारे गुणवत, सिद्धमहाराज मूल, अष्टगुण धारी है ॥ आचारज सो तो, गुण छत्तिस विराजमान पचीस गुण उवज्झाय, ज्ञानके भडारी है ॥ साधु साधे आतमा सो सत्तावित गुण युक्त, सब मिली एक शत, आठ विसतारी है ॥ कहत तिलोकरिख, मन वच काय करी, सदाही उगते सूर, वदना हमारी है ॥ १ ॥ ज्ञान वधे ज्ञानी जोग, अनुभो प्रकाश भए, समकित बढे एक, निश्चलता धारेतें ॥ सजम बढत सो तो,

आश्रव तजत जेतो, तपस्या वधत तन, त निवारेतें ॥ क्लेश वढत टेक, करत न वि गम, अहंकार बढे परहीणताके भारेतें ॥ आपके औगण पर, गुण ढांके छल वढे, कहत तिलोक लोभ, त्रसना वधारेतें ॥ २ ॥ क्रोध घटजाय एक, क्ष के खडग ग्रहे, मान घट जात भाव, विनय गुण धारेतें ॥ कपट घटत सो तो सरल स्वभाव किये, लोभ घट जात एक, त्रसना निवारेतें ॥ हास घट जात सुख, सून कर लेत तदा, भय घट जात एक, धीरज धारेतें ॥ कहत तिलोकरिख, ज्ञान सों प्रमाद किये, किमत घटत एक, हिमतते हारेतें ॥ ३ ॥ दोहा ॥ जब लग मेरु अडग है, जब लग शशि अरु सूर ॥ तब लग आ पुस्तक सदा, रहेजो गुण भरपुर ॥ १ ॥



इति श्री सत्य बोध ग्रंथः

॥ समाप्त ॥

शुद्धिपत्र

पान	ओळ	अशुद्ध	शुद्ध
१	२६	उदगल	उदगल
५	४	वैक्रियमा	वैक्रियकी
७	२०	नित्य	नित्यमेव
१६	९	वदू	वदू
२०	२	वष्ठ	कष्ट
२१	१७	नमीश्वर	नेमाश्वर
२४	२१	दोयेशे	दोयेशे
२६	३	देवाड्ढि	देवाड्ढि
२६	१६	तर्जन	तर्जन
३४	६	वसुधर	विशुद्ध विशुद्ध
३४	१६	सुवण नो	सुवणनो
३५	१७	सहस्र	सहस्र
३८	८	पूरमें	पुरमें
३८	१४	कया वखत	वखत कया
३८	२१	तार्थकरें	तीर्थंकरें
३९	७	चक्रराज१७ पुरठाई १८॥	चक्र १७ राजपुर १८ ठाई ॥
४०	२०	१७, तज अनुकमें विचारो १८ ॥	ताज अनुक्रमें विचारो १७
४०	२०	१९	१८
४०	२१	२०, २१	१९, २०
४०	२२	जहारो ॥	जहारो २१
४२	५	हे	छे
५४	१५	सुनिवर	मुनिवर
५७	१७	मासामें	मासमें
७०	१	मा० ॥२॥	म० ॥२॥
८६	१	वामया	वमिया
८६	२२	रिधा	ऋद्धि
९०	९	ब्रम्हचय	ब्रम्हचय
१०६	२६	घणी	घणा
१०७	७	बिनु	बिन
१०८	२१	नवकर	नवकार

पान	ओळ	अशुद्ध	शुद्ध
११४	२४	ध्यान	ध्यान
११५	७	मेनैं	मैने
११५	१५	मदन	मदन
११९		१०१	११९
११९	१२	सुण	सुणे
११९	१४	अनुरागें	अनुरागें
१२७	४	छेन	छिन
१३०	५	अमृता	अमृत
१३४	१	॰	रे
१३७	१७	जानसा	जावसा
१३८	२२	आतरज्यामी	[illegible]
१३८	२५	सुजयत	सुजात
१३९	२	मूज	मुज
१४३	२	साल	सोल
१४३	१७	श्रणिक	श्रेणिक
१५२	१०	खरि	खार
१५२	२२	सूत्रक न्योंव	सूत्रने
१८४	२	वेल	बैल
१८४	२६	उ मुहा दाइ	उहामुहा
१९५	१	घनव्रत	धनरन
१९८	३	मुक्ति	मुक्ति
१९८	१८	कह	कहू
१९९	७	जवे	जावे
१९९	२५	द ख	दु ख
२००	२५	हाणी	हाणा
२२७	६	तिह	तिहूँ
२४३	१२	नादमें	नांदमें
२५८	१९	वोगानुं	वोलानुं
२६०	३	भिक्षा	भिक्षा
२६२	७	मुनिराय	मुनिरा[illegible]
२७९	२	अवररिद्धि	[illegible]
३०५	१२	करता	करत